CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu

श्रीधीरादेश

# पातञ्जल तीर्थावली

( श्री ३ युद्धप्रकाश )

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu

॥ श्रीः ॥

# श्रीघेरण्डेश पातञ्जलतीर्थवर्ती श्रीउड्डप्रकाश ।

संशोधक—

पं० षडानन्द ग० शुक्ल ।

प्रथमवार १००० ] १९९३ [ सर्वाधिकार सुरक्षित ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu

मुद्रक—
पं० रामचन्द्रमाधवराव पळसुले द्वारा
साङ्गवेदविद्यालय प्रेस, रामघाट,
काशी में छपा।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu

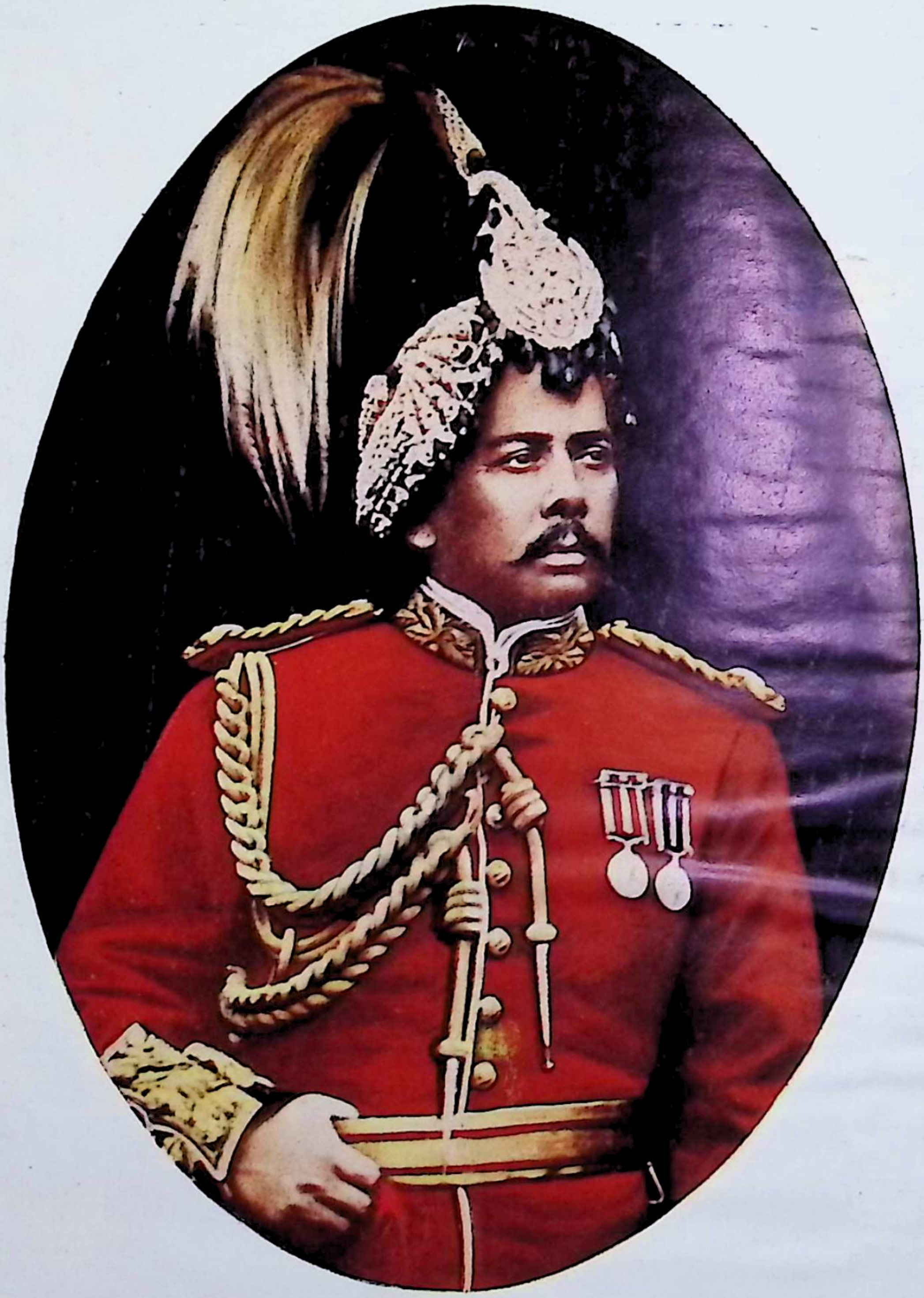

स्व० स्वस्ति श्री कम्यॉन्डर-इन्-चीफ़ जनरल धीर शमशेर जङ्ग
बहादुर राणा साहब, नेपाल।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu

# वक्तव्य

स्वस्तिश्री राणावंशमणि, महासेनसदृशप्रधानसैन्येश, अनेकसमर विजयी, शस्त्रशास्त्रउभयविद्याविशारद, ओजस्वी, तेजस्वी, यशस्वी, सदाचारी, देशहितकारी, परोपकारी, प्रजामनोहारी, न्यायकारी, परमदानी, गुणगौरवखानी, श्रीमद्राजकुमारकुमारात्मज कम्यान्डर इन-चीफ जनरल स्व० धीरशमशेरजङ्गबहादुर राणा साहेब बाट आफ्ना बाहु का प्रभावले भोट को समर विजय गरी बक्सियो। यस्तै लखनऊ मा बृटिश सरकार लाई पनी सहायता बक्सियो। स्वल्प-वयमानै विलायत मा नामी पहलवान् लाई मल्लयुद्ध मा परास्त पारी समुद्रपारी पनी अमरकीर्ति राखी बक्सियो। यस्तै अनेक प्रकार को पराक्रम र धर्मकीर्ति राखी बक्स्या को छ। वहां को वीरत्व, धर्म, कीर्ति, न्याय इत्यादिको वर्णन गरी साध्य छैन; अपार छ। यस्ता प्रभु लाई हृदय देखी धन्यवाद चढाउँद छू।

वहां का धर्म का प्रभावले वीर, पराक्रमी पुत्र हरु उत्पन्न भै नेपाल-राज्य स्वाधीन राखी राजनीतिपूर्वक प्रजापालन गरी राज्य चलाई बक्से को छ।

यस्ता प्रभु को चरमावस्था मा सबै प्राणी को उद्धार का निमित्त यो शुभसंकल्प उठे छ कि यो कलिकाल मा स्वल्प परिश्रम बाट कुन्धर्म ले मोक्ष को बाटो साध्य हुन्छ, भन्ने विचार भै राजपरिषद् मा सो विचारार्थ पेश गरी बक्सिदा विद्वान् हरु को बहु सम्मति तीर्थसेवानै ठहरेछ र तीर्थ प्राचीन नवीनके कति छन्, शास्त्रानुसार महत्व के छ, विधिवत् मातृ-भाषा मा दर्शाउन सक्ने विद्वान् को छ, भन्ने आदेश हुँदा; विद्वान् हरु बाट नेपाल-तीर्थका देवता धेरै पछि पछि भये का परमसिद्ध, समाधि सम्पन्न, तान्त्रिक हरु बाट स्थापित छन्। पौराणिक मात्र छैनन्। अतः

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



अनेक शास्त्रका विद्वान् लोकप्रसिद्ध सिद्धविद्वान्कुलोत्पन्न नूतन पुरातन सबै इतिहास जान्ने **पण्डित पतञ्जलि शर्मा ( गजुरेल् )** यस् कार्यभारका क्षम छन्, भन्ने उत्तर पाईवक्से का ले आफ्ना बाल्यावस्था देखिनै परिचय भये को हुँदा, अत्यन्त खुशी भै यो कार्य बक्सियो।

यो 'पतञ्जलिप्रणीत' सबै संसार का प्राणी को उद्धार का निमित्त बनवाई बक्स्या को प्रकाश गर्न न पाउं दै मोक्ष भै बक्सेको ले आफ्ना पिता को उद्देश्य पूर्ण गराउना का लागी यत्र तत्र भै परे को समुद्र-रत्न झैं एकत्र गरी आद्योपान्त निज कवि को हस्तलिखित लब्ध न भये को ले, अरुहरू ले यथाप्रयत्न लेखदा अशुद्ध जो भया को छ, तिम्रादाजुले बनाये को ले सुधार गर भन्ने,-सर्वस्वतन्त्रभूप, प्रजावात्सल्य दाक्षि-ण्यादि सहित, परमोदार, धर्मावतार, न्यायकारी, प्रजा-हितकारी, पितृभक्त करुणासमुद्र, अन्तःशुद्ध, जितक्रुद्ध, सकलशास्त्रप्रबुद्ध, अंशविशेषा-वतार, धीर, श्रीधीरात्मज, श्रीमदतिप्रचण्डभुजदण्डेत्यादि, ओजस्वी-राजन्य, प्रोज्ज्वल नेपालतारा, अतिप्रबलगोरखादक्षिणबाहु, पृथुलाधीश, **श्री ३ महाराज सर युद्धशमशेरजङ्गबहादुरराणा,** जी० सी० एल्० एच्०; जी० सी० एल्, जी० सी यस्० आई०; जी० सी० एस्० एस्० एम्० एल्०; जी० सी० आई० ई०; यित्तेङ्ग पावटिङ्ग शुन चियान् लुचियान् स्याङ्ग च्याङ्ग आनरेरी लेफटिन्यान्ट जनरल बृटिश आर्मी आन-रेरी कर्णेल अफ अल दि गोरखा राइफल रेजिमेण्ट्स इण्डियान्-आर्मी प्राइममिनिष्टर याण्ड सुप्रीम कम्याण्डर-इन-चीफ, बाट हुकुम् भै सुधारका लागी मेरा पूज्य अग्रज-प्रणीत पुस्तक मलाइनै बक्सेकाले सो हुक्म शिरोपरि गरी स्वमति-अनुसार तयार गरें।

प्राणी का उद्धार का निमित्त असीमअनुग्रह भै आज यो 'श्री-धीरादेश पातञ्जलतीर्थावली' श्री३महाराज बाट 'प्रकाश' भये को ले ठूलो हर्ष मनाई बांह्रा लाई धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष मिलोस् भनी यसमा लेखिया का सबै तीर्थ हरू संग हृदय देखि पुकारा गर्द छू।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu

स्वस्तिश्रीमदतिप्रचण्डभुजदण्डेत्यादि ओजस्वीराजन्य प्रोज्ज्वलनेपालतारा अतिप्रबल गोरखा-दक्षिणबाहु पृथुलाधीश श्री ३ महाराज युद्धशमशेर जङ्ग बहादुर राणा जी० सी० एल्० एच्; जी० सी० एल्, जी० सी० एस्० आई; जी० सी० एस्०, एस्० एम्० एल्०; जी० सी० आई० ई०; यितेङ्ग पावटिङ्ग शुन चियान् लु चियान् स्याङ्ग च्याङ्ग ऑनरेरीलेफटिन्यान्ट जनरल बृटिश आर्मी ऑनरेरी कर्णेल ऑफ ऑल दि गोरखा राइफल रेजिमेण्ट्स इण्डियान् आर्मी प्राइम-मिनिष्टर याण्ड सुप्रीम कम्याण्डर-इन-चीफ; नेपाल।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



यस्मा लेखिया को तीर्थ भक्ति पूर्वक जो भ्रमण गर्दछ, नित्य पाठ गर्दछ अथवा सुन्दछ तेस्लाई चारै फल, इच्छित फल मिल्द छ।

तीर्थावली का अन्तर्गत ३ अरु छन्, व्रतावली, प्रार्थना, श्रवण (तीर्थावलीमहिमा)। ग्रन्थ को अन्त्य प्राप्त भये को छैन।

यो ग्रन्थ अनेक अलङ्कार ले अलंकृत, अनेक छन्दले युक्त भये को ले मानो सानो गागर मानै सागर भरे को छ। काशीक्षेत्रादि वर्णन मा अनेक स्थल मा कवि को निरहंकारता छ। प्रार्थना पनी विचित्र ढङ्ग को छ। पुस्तक को वर्णन म अल्पबुद्धिवाला कहां सम्म गरुँ; उत्तमता अवलोकन ले ज्ञात हुन्यै छ।

हरिप्रबोधिनी १९९२
लोलार्क कुण्ड, काशी।

निवेदक —
षडानन्द ग० शुक्ल

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



## आवश्यक सूचना—

यो छ कि 'शुद्धिपत्र' बाट जो कि पुस्तकको पछाड़ी छ, अशुद्ध अक्षर अथवा टूटे को शुद्ध गर्नु पर्छ। छंद-नियम ले 'के' लाई 'क्य', 'झे=झ्य', 'रे'-'र्‍य', 'को' लाई 'क्व', खो=ख्व, छो=छ्व, झो=झ्व, टो=ट्व, डो=ड्व, ढो=ढ्व थ्यो=थ्य्व रो=र्‍व इत्यादि राखिए को छ। कहीं कहीं 'इन्हरु' इत्यादि शब्द छंद अनुसार ले दीर्घ पनी ह्रस्व पनी उच्चारण हुन्छ। कहीं दीर्घ उच्चारण-स्थान मा ह्रस्व वर्ण छ, तेस् ठाउंमा रुकेर उच्चारण गर्नु पर्छ। कहीं कहीं छन्द मिलाउन एक शब्द को एक दुइ अक्षर पहिले र १-२ अक्षर पछि बाट उच्चारण गर्नु पर्छ। ( ँ ) अर्ध अनुस्वार को ठाउँ मा ( ं ) अनुस्वार को चिह्न वहुत ठाउं मा छ, सो पनी विचार पूर्वक उच्चारण गर्नु पर्छ।

## प्रार्थना।

छापिए को मा मेरो अल्पबुद्धि ले भेटे सम्म शोधन गरें तथापि कोही सज्जन महानुभाव हरू ले हेर्दा भूल चूक हुन गये को मा कृपा-पूर्वक सच्याउन उपदेश गर्नु हुन्यैछ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu

# विषय सूची ।


| विषय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|
| मङ्गलाचरण … … … | |
| **प्रथम अध्याय ।** | |
| तीर्थोत्पत्ति, … | ५ |
| योगी, देवर्षि, मुनि हरु का नाम … | ६ |
| राजर्षि हरु का नाम … | ८ |
| अवतार का नाम … | १० |
| दक्ष र शिव को द्वेष को कारण, … | ११ |
| सती भस्म कथा … | १३ |
| **द्वितीय अध्याय ।** | |
| सृष्टि उत्पत्ति, सातलोक आदि | २२ |
| दिशा, दिशा स्वामीका नाम, … | २३ |
| सात समुद्र का नाम … | ,, |
| नौ खण्ड का नाम … | ,, |
| नदी हरु का नाम … | २४ |
| पर्वतका नाम, … | २५ |
| वन का नाम, … | २६ |
| क्षेत्र का नाम … | २७ |
| तलाउ का नाम, … | २७ |
| सप्त पुरी र चार धाम का नाम … | २८ |
| गया को महिमा र विधि … | ,, |
| प्रयाग को महिमा, … | ३० |
| काशी महिमा, अन्तर्गृही विधि, … | ३१ |
| मथुरा माहात्म्य, वर्णन, … | ३६ |
| **तृतीय अध्याय ।** | |
| बद्रीनाथ तथा हरिपुरी का तीर्थ … | ४८ |
| अयोध्या … | ५१ |
| जगन्नाथ ( पुरी ) … | ५२ |
| रामेश्वर … | ५३ |
| चौसट्ठि योगिनी … | ५७ |
| भारत खण्ड का मुख्य देश … | ६६ |
| कुछ देवी र तीर्थ … | ६७ |
| **चतुर्थ अध्याय ।** | |
| नेपाल ( पाशुपतक्षेत्र ) को सीमा … | ७० |
| सात गण्डकी र सात-कौशिका … | ,, |
| गण्डकी को उत्पत्ति,- शालिग्राम महिमा … | ७१ |
| तुलसी को महिमा … | ७२ |
| त्रिशूल गण्डकी … | ७३ |
| तादी नदी सातमती आदि-नदी नेपाल-कान्तिपुर का र चउतर्फ का देवी देवता | ,, |
| भेडा को शृङ्ग को कथा … | ७६ |
| **पञ्चम अध्याय** | |
| पाटन का देवता … | ८६ |
| मत्स्येन्द्रनाथ को कथा … | ९० |
| नेपाल शाखा का नगर … | १०२ |

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu




| विषय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|
| **षष्ठ अध्याय ।** | |
| पशुपति ज्योतिर्लिङ्ग-उत्पत्ति कथा ... | १०५ |
| कामदेव-भस्म, पार्वती-विवाह | ११४ |
| नन्दी ब्राह्मण को उद्धार ... | ११६ |
| श्लेष्मकवन को फल हरु को नाम ... | ११७ |
| " रुख " ... | ११८ |
| " लता " ... | ११९ |
| " फुल " ... | १२० |
| " चिडई " ... | १२१ |
| श्री शिव को मृग रूप को कथा | १२२ |
| पशुनाथ-स्थान को माहात्म्य ... | १२९ |
| **सप्तम अध्याय ।** | |
| ने मुनि, विरूपाक्ष ... | १३३ |
| ने मुनि र विरूपाक्ष को भेंट... | १३४ |
| चौसट्ठि लिङ्ग मा प्रथम कुशेश्वर माहात्म्य ... | १३५ |
| ( बीच मा अन्य पनी छन् ) | |
| **अष्टम अध्याय ।** | |
| गुरू मा, श्रीनन्दिकेश्वर-माहात्म्य ... | १५५ |
| अन्त्य मा, श्री बागेश्वर-माहात्म्य ... | १७४ |
| **नवम अध्याय ।** | |
| गुरू मा, श्री कीलेश्वरमाहात्म्य | १७६ |

| विषय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|
| अन्त्य मा, श्री कुम्भेश्वर माहात्म्य ... | १९४ |
| **दशम अध्याय ।** | |
| गुरू मा, श्रीगोलोकेश्वर माहात्म्य ... | २०० |
| अन्त्य मा, श्रीजलेश्वर-माहात्म्य ... | २१६ |
| **एकादश अध्याय ।** | |
| गुरू मा, श्रीगुह्येश्वर-माहात्म्य ... | २१८ |
| शिवलिङ्ग समाप्त ... | २३१ |
| **द्वादश अध्याय ।** | |
| वाग्मती महिमा ... | २३२ |
| वाग्मती यात्रा ... | २३३ |
| तीर्थयात्रा विधान ... | २४७ |
| तीर्थावली समाप्त ... | २४९ |
| **त्रयोदश अध्याय ।** | |
| व्रतावली प्रारम्भ ... | २५० |
| त्याज्य चीज ... | २६२ |
| शाक हरु को नाम ... | २६३ |
| त्याज चीज ... | २६५ |
| हविष्य, आमिष हरु चीज ... | २६६ |
| प्रार्थना ... | २६९ |
| (श्रवण) तीर्थावली महिमा ... | २८१ |

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu

* श्रीगणेशाय नमः *

सिद्धीहुन् जस्कि नारी सगुणसरुपकी भूँडि छ जस्क भारी,
पाश् अङ्कुश् वारि पारी दुइतिर कर मा उन्दुरू को सवारी ॥
माला छन् वीषधारी जउन प्रभुजि का दण्डवत् शिर्बजारी,
विघ्नै का भेलटारी लगिवकसनुहोस् जाड्यसामुद्रतारी ॥१॥
कहो सज्जन् हेरू धन जन र तन्‌ले कमि भई,
फगतसत्सङ् पाई प्रभुचरण मा मन् कयहि गई ॥
परत्रै को आशा सुन्यर यमपाशा ति डन्याका,
उपायै खोद्दा मा फगत भर तीर्थै कव पन्य का ॥ २ ॥
मलाइ् लाया भारी तिरथ सब सारीद्यउ भनी,
विषै ले लठ्भ्या को व्यहसल्य रह्या को त म पनी ॥
ज्वदेख्या सून्या का मुनि हरु बड़ा लेत भन्यका,
कयही जम्मा गर्छूं पछि पछि अरू केहि बन्यका ॥ ३ ॥
हजार्मुख् ले शेष् ले बयन गरि सक्नू न हुन्य बात्,
सहस्राजुन् लेखूनै नसकन्य म्यराता इ दुइहात् ॥
प्रभू ले मान्या का द्विजचरणधुल्धारि कयहिछयौ,
तिरथ् का नांउल्लेख्छू सुजनह्यरु बिग्न्या क श्वधि द्यौ ॥ ४ ॥
महाराजाधीराज् पृथिविविरविक्रम् नृपतिका,
प्रतापोज्ज्वल् राज् मा प्रभु श्रिरणउद्दीप गतिका ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



श्रिघोर्सम्सेर्जङ्का ललित मुखत्यारी समय मा,
हजार्पांच् लाइ पन्ध्रे वरष कमि यो जूग गय मा ॥ ५ ॥
मङ्गलाचरण गर्दछु उन्को,
संख्य गर्न मत सक्तिन गुन्को ।
मूर्ति यस्त्व भनि सक्नु न जुन्को,
नाम लिन्छु गहनाभ्रुजि सुन्को ॥ ६ ॥

॥ अथ मंगलाचरणम् ॥

यशोदाका लाला त्रिजगपरिपाला प्रभु ज्वहुन्,
बयन् गर्न् सक्न्या क्वथिय्व प्रभुका ती सकल गुन् ॥
कदाचिन्माता का उपर करुणा राख्यर पुरा,
गऱ्या को म भन्छू सुनि रहुँ भन्याझैं क्यहि कुरा ॥ ७ ॥
बगलमा श्रीकृष्णै लिइकन यशोदा शयनमा,
सुकाला पाल्न् भो बसिन जब निद्रा नयनमा ॥
उ हाउ् लौ आयो हाउ् भन्यर मुख ढाक्ती जननिलाइ,
उठ्या हांस्तै ख्वै हाउ् भनि गऱ्यकुरा कुण्डल हिलाइ ॥ ८ ॥
म आमै माछो भै बहुत डुल्यँथ्यां सागर महां,
जगत्सब् एक् छत्तै भइकन रह्या को थिय्वतहां ॥
घख्यां माछा ग्राहा सकल जलजन्तू हरु क्व भाउ्,
घखीन कस्तो छ कस्व गरि त्य्व आंउछ कहुन हाउ् ॥ ९ ॥
म आमै पाताल् गै ठ्वटरि भइ थाम्या पृथिविलाइ,
मथन्सागर्गर्दा परवत घुमाइ मान्यथ्यं चिलाइ ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



घरयां घोता दैत्ये हरुल्य झिक्यका चौधरतनाउ् ,
धखीन कस्तो छ कस्व गरि त्य्व आंउ्छ कहुन हाउ् ॥१०॥
म ग्याथ्यां वाहा भै जननि पृथिवी का तल तिरै ,
उठाजा दाहा भै दिइकनत दैत्यैकन पिरै ।
घरयां थ्यां नागराक्तस् हरु अन्यक ज्यूजातक्व बचाउ् ,
घखीन कस्तो छ कस्व गरि त्य्व आंउ्छ कहुन हाउ् ॥११॥
नृसिंहै भै आमै निकल्यंथ्यं फटिक्खम्ब त फ्वरो ,
तिनैलोक् कम्प्यो थ्यो हिरणकसिपू मारन्य खयरो ॥
जटाले हप्कींदा छिपिय सबतारा ग्रह लगाउ् ,
घखीन कस्तो छ कस्व गरि त्य्व आंउ्छ कहुन हाउ ॥१२॥
म वामन्भै आमै वलि छलि लिआथ्यां क्यहि जिमी ,
त्रिलोक् नापी लोआ त हिं परिगयेथ्यो रिमि झिमी ॥
घरयां थ्यां सात्स्वर्गै उभ्रतिर पुन्याईकन त्य्व पाउ् ,
घखीन कस्तो छ कस्व गरि त्य्व आंउ्छ कहुन हाउ् ॥१३॥
म भ्याथ्यां पर्शुराम् सकल नृप मान्र्या गन्यथ्यं काम् ,
म आमै सुन्नू भो डन्यथ्यँ फगता देखि यकराम् ॥
बहुत युद्धै गर्दा मुलुक घरयं धेलागियनथ्य्व घाउ् ,
घखीन कस्तो छ कस्व गरि त्य्व आंउ्छ कहुन हाउ् ॥१४॥
म राम् भै वन् डुल्यां युवति हन्य्व भूल्यां कपिसंगै ,
समुद्रै पुल्पारी दशवदनकुल्मारि त म गै ॥
जनावर् धेर्दैरयां बहुत दिन को त्यो म्यरु घुमाउ् ,
घखीन कस्तो छ कस्व गरि त्य्व आंउ्छ कहुन हाउ् ॥१५॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



म हूं वल्देव् भन्न्या कहि कन न गन्न्या बल महाँ,
हलो मूसल् फ्यांकी ध्यइजत गऱ्याँथ्यां खल महां ॥
वदार्दा मा भूमी नदि नगर घूमी पऱ्यथ्य पाउ्,
घ्यखीन कस्तो छ कस्व गरि त्य्व आंउ्छ कहुन हाउ् ॥१६॥
म बौद्धै हूँदा ता कस्व गऱ्यँथ्यं माता सुननुहोस्,
कुमार्गी दैत्यै को मन पनि गराञा तब ध्यहोस् ॥
मलाई चीह्नेनन् ज्वक्वहि सब भन्थ्या आउन आउ्,
घ्यखीन कस्तो छ कस्व गरि त्य्व आंउ्छ कहुन हाउ् ॥१७॥
जगत् सब् म्लेच्छै भो लियन हरिको नांउ् मुलुक ले,
तपस्मा शूद्रैभ्या द्विज लय छ्वड्य वेद्मन्त्र मुख ले ॥
भई घोडा कल्की खड्गपनि झल्की लिञथ्यं दाउ्,
घ्यखीन कस्तो छ कस्व गरि त्य्व आंउ्छ कहुन हाउ् ॥१८॥
सधैं डुल्छू आंगन् दहिच्वरन जान्छू घरघरै,
इ बाल्का एक्काल्का सँग ख्यलन जान्छू परपरै ॥
कतै क्यै भन्दैनन् न भयक्व त्य्वहाउ् भन्नु भयछ,
उठी हेऱ्यां मैले उ गय्व गय्व हाउ् भागिगयछ ॥१९॥
यती लालाजी का बचन जननी ले जब सुनिन्,
ख्वछोरोता मेरो ह्वइन जगको नाथ् भनि गुनिन् ॥
हुकुम् नाघ्न्याका हाउ् भयर जगमा लुक्न्य न डगी,
डुल्यां वाइह्लै भन्दै कहन्य अवतामैंकन ठगी ॥२०॥
सुनी कृष्णै हांसी गय्व जननि फांसी अब भन्या,
मलाई चीह्न् भो न विरसनु काम् सब् अब बन्या ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



सुनिन्न् एती गोपी प्रकृति ल्य त छोपी दुद बह्यो ,
प्यवो लाला भन्दा प्रभुकन त निद्रा परिगयो ॥२१॥
ज्वता बाल्गोपालका रुचिर इ त्वता बोलि पढनन् ,
फजिरूऊठो तिन्कै चरण मन लै जाइ धरनन् ॥
ति गर्नन् सन्सार्मा धन जनकन्न भोग् शोक नपरी ,
मरी सन्सार्सागर्तरि पुगन्यछन् मुक्तिनगरी ॥२२॥

॥ इति मङ्गलाचरणानि ॥

---

अथ प्रथमोऽध्यायः प्रारम्भः ।

सृष्टो भो अघि जन्तुको त नरमा तिन्गूनको काममा ,
तम् रज् ले गरि ढाकि सत्हरिजिंदा मन्गेन है राममा ॥
ज्यूमात्रै लगि पाप काटनु भनो सृष्टो गऱ्या तीर्थको ,
सेवा प्रेम्लयगरोस वा सुगति होस् ताहीं गई गोर्छ जो ॥२३॥

मन्त्रै केही नजान्न्या
नियम नभयको शास्त्र कैल्यै न सुन्न्या ,
दान् पुन् स्नान् क्यै नभ्याको
अरु कन ठगन्या भित्र ईश्वर् नगुन्न्या ॥
यस्तो सारा दुनीञा
पनि अगति न जावस् भनी खुप् दया आइ् ,
फर्माया तीर्थ सारा
सुगति तत्र मिलोस् जो छुवला मात्र तां जाइ् ॥२४॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



श्रीनारायणको त्रिविक्रमपयर् ब्रह्माण्डमा जब् छिऱ्यो ,
वेल्ह्यै तीर्थ मुहान भागिरथिजल् वैकुण्ठ देखी गिऱ्यो ॥
सागरराज् सुतको निहूँ जगतमा पापूहर्न्य भैन् जुन् नदी ,
तिन्लाई छ प्रणाम नित्य अघि जो श्रीशम्भुका शिर्छँदी ॥२५॥
ब्रह्माजिले तपूगरन् लगाई, श्रीविष्णु औतार भयेर जाई ॥
शिवूले पियारीक शरिर्वसाई, धेर्तीर्थ भैग्या सुन भक्त भाई ॥२६॥
तीर्थैंहुन् पैह्लच साक्षात् हरिचरणकमल् दोस्र्व भक्ती गुरूमा,
तेस्रो शास्त्रार्थ जान्न् चउथ्वधरम भो क्षेमगर्न् अरूमा ॥
पांचौ ईश्वर्चरित्रै भयकित धरणी छेटि तपूस्या गऱ्या की ,
अबूतपू गर्न्या ऋषी की लहरक्यहि कहिन्छे सबै पापूहऱ्याको ।२७।
नारायण् का चरण्मा शरणमुगति भ्या दैत्य वा नर्गजादी ,
भक्तीले श्रीगुरूका अलरकप्रभृती शास्त्रजानी शुकादी ॥
धर्मैले ती नृगादी शिविप्रभृति क्षमातीर्थ क्षेत्रादि सेवा-,
ले पाया औल्यै मुक्ती तस अरथ सबै तीर्थलाइ् मान मेवा ॥२८॥

सनक सनन्द(न) सनातन भन्न्या ,
सनतकुमार इ उत्तम धन्न्या ॥
विष्णु कि भक्ति कथामृत भोगी ,
तीर्थ पवित्र गराउन्य योगी ॥२९॥
नारद कपिल र दत्त ऋषवूदेव् ,
और पतञ्जलि माधव का भेद् ॥
अत्रि मरीचि वसिष्ठ प्रचेता ,
ब्रह्म शरीर धरी भयका ता ॥३०॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



और पुलह् क्रतु अङ्गिर कर्दम् ,
दक्ष वसिष्ठ भृगू हरु दश् हुन् ॥
कश्यप शुक्र बृहस्पति हेरू ,
ई सब देवऋषी गनि लेऊ ॥३१॥
आसुरि वोढुर पञ्च शिखाई ,
गालव गर्ग मृकण्ड ब्वलाई ॥
ऋचिक अगस्त्य पराशर शक्ति ,
विष्णुमहां लग्य का अतिभक्ति ॥३२॥
लिखित र शङ्ख एकत् द्वित त्रीत ,
सौभरि भागुरि वाल्मिकि भरत ॥
मांडव्य देवल व्यास र शूक ,
दर्भ-च्वमा कवि और्वसमीक ॥३३॥
अष्टावक्र विभाण्ड जैमिनि मुनी मेधा अरुण् नेमुनी ,
मार्कण्डेय दधीचि क्रोष्टुकि कवष् शर्द्वान् च्यवन् पाणिनी ॥
वात्स्यायन् र उतङ्क चन्द्र शरभङ् कौशिक् र मेधातिथी ,
इन्द्रप्रम् दर इध्म बाहु पिपलाद् जम्दग्नि ठूला अती ॥३४॥
दीर्घतमा भरद्वाज तुँवूरु, लोमस गौतम वायु र कूरु ॥
धौम्य र पैल सुमन्तुर वात्स्य, हारित धौम्र विभाण्डर काश्य ॥३५॥
याज्ञवल्क्य ऋषि शृङ्ग पुनर्वस् ,
तीर्ण जन्तु कच रैभ्य र शाकट् ॥
लोमहर्षण र भास्करि पिङ्गल् ,
अग्निजिह्व र उतत्थ्य र मुद्गल् ॥३६॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



वैशम्पायन गोरशीर्ष वक दाल्भ्ये सतानन्दजी ,
सालङ्कायन जातुकर्ण्य उपमन्न्यू और् विरूपाक्ष ई ॥
आष्टीषेण र यास्क ओर दुरवास् कौडिन्न्य कात्यायनै ,
मित्रापुत्र र अङ्गिरा परशुराम् ठूला कहीया इनै ॥३७॥
अश्वत्थामा कण्व धूम्र विश्वमित्र ,
आपस्तम्वै औधनञ्जेर मित्र ॥
वामदेव् चान्द्रायन् र सांकृत्य वाद्धिल् ,
देवरात् सातातप् हरी कर्ण गोभिल् ॥३८॥
आवकर्ण हरिकर्ण र वासिल् ,
वृद्धविष्णु अउ कौत्स र शाण्डिल् ।
बालखिल्ल्य हरु सम्भव कूप ,
किम्मतै गरन्य हुन् इ त खूप ॥३९॥
कवि र हरि प्रबुद्धै पिप्पलायन्दुमीळ ,
चमर सकर भाजन् आविहोत्राऽन्तरिक्ष ॥
इ नउ ऋषभदेव्का पुत्र हुन् सिद्ध पूरा ,
जिवनमुगति पाई जग्तलाइ देखन्य बूरा ॥४०॥
आमलप्रियरथीतरकाण, संकृतीशिनिरनैध्रुवपङ्क ।
मौन भार्गव पवभ्रु घ्यवस्थान्, एकपादल उगाक्षि जलासन् ॥४१॥
उग्रशील कलपान्तकलाधर् , ऊर्ध्वबाहु मृग शृङ्ग र जरजर् ॥
ऊर्ध्वपाद विरजा र सुकर्मा, अग्निमित्र घ्यवमित्र सुशर्मा ॥४२॥
महाशिल् शतानिक् र कालाग्निरुद्र ,
महाप्राज्ञ कैवल्ल्य त्यस्तै महासेन् ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



महाग्रीव् महाकाय गोषूर्ल्य शीशिर् ,
महाबल् महाबाहु श्वेत्बाहु पार ॥४३॥
काणाद् पारग आर्तपक्क र वेताल् पोष्यंजि वालायनी ,
लौगाक्षो बुधपाशधर्पट्टुवलाक् , होरण्यनाभ् ई पनी ॥
सुन्वान् वाष्कलि मागली कुमुद औौर्नक्षत्रकल्यै भया ,
कुक्षी कुल्य कुसोद पथ्य जय भन्न्या औौर्पनीधेर्थिया ॥४४॥
बिशालाक्ष शंडिल् करुण् मन्त्रविद् भ्या ,
श्वताश्वोतरै पैंजशालीय ई भ्या ॥
शुनक् जाजली सैंधवायन् र शांती ,
अकृत् व्रण् र कंकण् भयाका ति कांती ॥४५॥
शौक्कायनी जंगम कंठपथ्य ,
मोदोष ब्रह्मा बलि श्वेतसत्य ॥
वसू भया औौ जय आदि मूनि ,
का नाम् ल्यख्यां ई क्यहि शास्त्र सूनि ॥४६॥
श्रीस्वायंभुव् महाराज् भगिरथ अनि फेर् मानधाता भज्ञो ,
सत्यब्रत् भीष्म जह्नू जनक हरु सबै अम्बरिष् पिर्थु सब् ई ॥
तृण् विन्दू इन्द्र द्युम्नै नृग प्रभृति युधिष्ठि लगायत् जतीछन् ,
राजर्षी मा गन्याका अरुपनि बहुतै वार राजा अती छन् ॥४७॥
जिमूतवाहन त्रिशङ्कु अलर्क शोबी ,
श्रीकार्त्तवीर्य्य भुरिषेण् मुचुकुन्द वीर् ई ॥
श्रीरन्तिदेव र दिलीप यदू रघूराज् ,
षट्वाङ्ग वीदुर ययाति गन्या बड़ाकाज् ॥४८॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



गद्य शतधनु भन्न्या श्रौर्हरिश्चन्द्रराजा,
सगर ककुथ प्रद्युम्नै र प्रह्लाद् अवीक्षित् ॥
जनम्यजय र इक्ष्वाकू र रुक्माङ्गदादि,
वलि नहुष र सर्याती बडा हुन् परिक्षत् ॥४६॥
इन्ले तपस्य गर्न्यका घ्यउता पुज्याका,
पानी उमारि कन ईश्वर लाइ् बुझ्याका ॥
किम्मत् गरी जहं जहां किरती देखाया,
सब्तीर्थ हुन्भनि पुराण महा ल्यखाया ॥५०॥
श्रीविष्णुका त अवतार बुझी ल्यऊ अब्,
पैह्ले प्रभूक मुरती जगतैं ह्व यो सब् ॥
उस्मापनी क्यहि विशेष विशेष जाग्नू,
बल् शास्त्र धन् किमतले बढिलाइ मान्नू ॥५१॥
मत्स्य कच्छ वराह नृसिंह,
वामनै परशुराम् रघुसिंह ॥
कृष्ण बौद्ध नव भो अनि कल्कि,
मुख्य दश् अवतरण् हरिका ई ॥५२॥
नर् नारायण् ऋषव्देव् पृथु र हयशिरा मोहिनी व्यास नारद्,
धन्वन्तर् पृश्निगर्भै कपिल गुरुदत्तात्रेय राज् हंसयज्ञ ॥
पैह्ला कौमार भन्न्या चउध त प्रभुका अवतरण् ई जमा भ्या,
तीर्थ क्षत्रादिपुण्यै बहुत कन दिन्या ई प्रभू जां जहांग्या ॥५३॥
औतार् भयाको अरिमार्नग्याको,
उठी बसी हांसि ख्यली रह्याको ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



जुन् जुन् जगा होत किमत् गरयाको,
सब तीर्थभो चिह्न क्यही परया को ॥५४॥
सन्सार्मा जतिछन् विभूति हरिका ज्ञान् धन् र मान्ले बडा,
ओक्वैंक्वै अति ठूल्वकर्म गरन्या मन् खुप् गऱ्याका कडा ॥
तिन्ले सब् गरयको हरी चरित हो त्यस्लाइ् पनीमानन्,
मन्लाउन्या र गराउन्या जगतमा केवल् हरी ठानन् ॥५५॥
देवल् पाटि र ठाटि यज्ञ र पुराण् वाटो र पुल् वावरी,
पौवा कूप तलाउ धाम्व र कुवो घ्याम्पै हवस् वा भरी ॥
पुण्यात्माल्य गऱ्याक्व सब् तिरथ हो ओक्र्या सदावर्तभो,
गर्न्याको क्यहिपुण्य सर्छ सब लाइ् जो जो तहां मात्रगो ॥५६॥
सुन चरित्र सदा शिव को अब,
मन बहूत खुस्याल्व हुन्यातब ॥
अघित यज्ञ पितामहले गऱ्या,
ऋषि र देव् हरु सब् ज्वक्वही भऱ्या ॥५७॥
पहिल्य आइ् बस्यका शिवजी थिया,
पछित दक्षप्रजापति आइ् लिया ॥
सब प्रजापति माथि बहुत् बडा,
सब ऋषीं घ्यउता त भया खडा ॥५८॥
सबल्य मान प्रणाम गरी बस्या,
निजल्य ब्रह्मचरण् प्रणती धस्या ॥
नउठ्य का शिवलाइ् घ्यख्या जसै,
रिसल्य लालिनज भंइ ग्या तसै ॥५९॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu


भन्छन् हेदेव् ! ऋषो हो !
रिसल्य भरि खुसामत्कसै को नराखी ,
भन्छू म वाज्वि होवा
ह्वइन भन सबै घूस रोवत् नचाखी ॥
मेरी छोरी दिया को
मकनत यस ले पाउमा लाग्नु पर्‍या ,
काँगो उठनू ब्वलाउनू
अरु कुन्वत परै भन् पुलुक्कै नहेर्‍या ॥६०॥
ब्रह्माल्य झुकाइ दिया मलाई ,
छोरी दिआ यस् बहुलाह लाई ॥
गायत्रि भैं शूद्र थऔ गइन्ती ,
शाप्दिन्छुयस्लाइ अरु लाइ्छ विन्ती ॥६१॥
देवादि का सरहमा न मिलोस भाग ,
भुत्-प्रेत्-पिसाच-गण यस्कन साथ लाग ॥
बस्नू मशानबिच घस्नु खरानि त्यस्को,
हातमा कपाल लिइ भिक्षुक नाम यस्को ॥६२॥
सुन्यर द्विजसराप्यो शम्भुलाइ् पेचमारी,
भृगु त गदगदाया फट्फटाया त दाह्रो ॥
नजर च्वमच्वमाया खुस्भई मित्र आँत ,
हिलिहिलि गरि हांस्या पूष देखाई दांत ॥६३॥
ज्व क्हि अरुल्य काखी को गन्या शब्द भारी ,
तब वृषभ रिसाया शाप् दिया सेखि भारी ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



तिमि द्विज हरु शास्त्रै जानि हान्छौ त मर्म,
हुन्य छइन तिमीलाइ ज्ञान् गरौला त कर्म्म ॥६४॥
सुन्यर द्विज सराप् यो फेर्भन्या पेच हानी,
शिवभगत जतीछन् घस्न लागुन् खरानी ॥
जगत्य घस्यर गेरू माग्न्य पाखण्डि हूउन्,
ज्यतय मत्यपनि खानन् सूत्रशीखा ति फूउन् ॥६५॥
यो भिर्गु बात्सुन्यर शम्भु न बोलि गैग्या,
दक्षादि सब्मिल्यर जग्य समाप्ति भैग्या ॥
शम्भू र दक्षक तहां देखि भेट् भयेन,
कोट्यन्त वर्ष बिति गो त दगा गयेन ॥६६॥
कैदिन् दक्षप्रजापती ल्यत गन्या
क्वै जग्य भारी गरी,
देवादी हरु सब् निमंत्रित भया
आया जुवाजी छ्वरी ॥
आफ्ना स्वामि सहित् पोसाक गहना
लाइ् आयका तीयखी,
बेनिम्ता कि ति जान मन्सुब गरिन्
श्रीशम्भु को प्राणसखी ॥६७॥
कर्जोरी विनती सती कति कती
श्रोस्वामि थ भो अती,
जान्छू माइत भेटि भाइ भगिनी
ढिल्गर्न्य छैन कती ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



हेर्छू जग्य तमास पितृघर लाइ्
चांइ्दैन निम्ता अरे,
आज्ञा बक्सनु होस् प्रभो ! बरु छिटो
मआइ् पुगौंला भरे ॥६८॥

रोका दिया और विदा दिया पनी,
ई मर्न आंटिन् प्रभुले त यो गुनीं ॥
बूझाउनू भा बहुते घ्यखाई,
को मेट्न सक्ला विधिको ल्यखाई ॥६९॥

छोरी तिमी हौ पितृ की पियारी,
मथैं गरीरैछ विरोध भारी ॥
देखौलि जाइ्मेन्व गन्याक्र हेला,
त्यैछचौ हुन्याछ मरिजान्य वेला ॥७०॥

वाण्ले चिरी छाति लड्या क्र रण्मा,
उस्तो व्यथा पाउन्यछैन मन्मा ॥
आफ्नाल्य बाङ्गो बचनै ब्वल्याको,
शीतल् जनम् छैन शरीर्जल्याको ॥७१॥

बाबू ब्वल्वैनन् कसरी बसौली,
बैन्हीं हरु सब् गरनन् हंसौली ॥
मान्का पलङ् देखि जसै खसौली,
छूरी धसौली कि ज्वलन् पसौली ॥७२॥

जानू पिता घर्क्व न राख आशा,
नहौ विदा हेर यहीं तमाशा ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



येती भनी चुप्प रह्या त्रिनेत्र ,
सतीजि का कोप भयो त भित्र ॥७३॥
मुखहरि शिवजीको नेत्रभर्जल् गराईन् ,
लहवरि गरदी ती बाहिरै फेरि आइन् ॥
लहर दुखि भिनाज्यू दीदि हेर्को विमान्मा,
प्रभुक बचन नाघी जानु ठानिन् त मन्मा ॥७४॥
जसै दगुरि गैगइन् हडवडाइ मन्ले सती ,
पछाडि अरु चाकरो गरन्यहेरु लाग्या कती ॥
सवारि वृषमा गरीं जब पुगिन् ति जग्यै न्यरा ,
विचार गरदी छदी दिदि हरु हुनन्कां म्यरा ॥७५॥
दुखिन् लहर नारिको त्य्व सरदाम सब् भारि को ,
दया भय पनी त मान् गरन्य दक्ष डर्मारि को ॥
जसै क्वहि ब्वलेन थ्या फरकि यज्ञशाला गइन् ,
जुवात्रि हरुको सबै शिवक्व भाग् न देख्ती भइन् ॥७६॥
भन्छिन् पिता कनत हात उठाइ साहै,
आदर्नभ्याकि सति ले अति मानि गाहै ॥
बाबू भयौत क्य भयौ तिमि जस्त्व छोटो,
क्वै हुन्य छैन जगमा अति कर्म खोटो ॥७७॥
ब्रह्मादि देव जतिछन् शिवका कृपाले ,
यत्रो जगत्कन बनायर पालि हाले ॥
उन् लाइ सानु दुखि कर्म ख्व ठूल्व ठान्छौ ,
दुर्बुद्धि हो तिमि अवश्य खराप जान्छौ ॥७८॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



कैल्हे रिसाउनु हुंदा प्रभुता मलाई,
आउ् दत्तपुत्रि भनि डाक्नु हुन्या ब्बलाई ॥
दिग्भै म जान्नथ्यँ प्रभू थत्रि भन्थ्यँ आछ्रू,
यस्तो मती रह्यछ तिम्र भपो भुल्यांछ्रू ॥७९॥
ईश्वर्हेलन गर्न्य का जियह्यली उत्पन्न भ्याको ख्वतन्,
त्यागै गर्नु अवश्य प्राश्चित ह्वला भन्न्याछ निश्चै ख्वमन्।
पाजी चीज पऱ्यो भन्या शरिरमा छाड्नू भढोया भनी,
शम्भूका चरणारविन्द मनमा राखेर चुप्भैन् पनो ॥८०॥
शिवल्य अति कृपाले प्रेम्लगाई ब्बलाई,
धरिकन पनि कारव्मा म्वाञिखाई ब्बलाई ॥
शरिर पनि त आधा संपि प्राण् भैं गऱ्याको,
शरिरअगनिबालिन् सब्ल्यदेख्या मऱ्याको ॥८१॥
क्या विघ्न हुन्छ अब क्वन्नि भनी डराया,
घोता ऋषी हरु सबै मनमा खराया ॥
धिक्कार इन्क्व किन मान् गऱ्यनन् सतीको,
अब् नाश हुन्छ सबको घटियामतीको ॥८२॥
सतीका चाकर्तौं ऋषि हरु थञी जाइ परदा,
अघुल्टाले हानी रिभुग्वल्य ती ताहिं मरदा ॥
गया नारद् कैलास् कहिदिय सती देह जलिगो,
सुनीत्यो बात्त्यस्तो नयन शिवजीको खुलिगयो ॥८३॥
जटापीट्या भैंमा भइरव खडा भै कर ज्वऱ्या,
तं जा तेरा गण्ली जहिं हवन दत्तादिल्य गऱ्या ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



उजार्दै सब् मार्दै चउपटत पार्दै अगनिको ,
सुनी भैरव् गैग्या शिवकन अतो लाग्थ्यन निको ॥८४॥
तहां उत्पात् धेर्भो
बहन जब लाग्यो खन्व बतास् ,
गुरू प्रोहित् यज्मान्
हरूक हुनगो मन् अति अतास् ॥
सुन्या सो भैरव् को
प्रमथगणको झन् कलमलै ,
सबै दत्तादी ती
करम छुवडि गर्थ्या खलबलै ॥८५॥
जब त प्रमथगण्ले छोपियो यज्ञशाला ,
द्विजगणहरु को सब् गर्न लाग्या ति हाला ॥
कुटपिट हुन लाग्या हात् र लात् शस्त्र छाडी ,
सब चिज लय भरे को मण्डपैभो त खाडी ॥८६॥
शिर फुट्य क्वहि का ताँ भाँचया हात पाऊ ,
क्वहि भुरिड फुटि लोट्या कोहिका लाग्यघाऊ॥
युवति हरुक्व शाला फोरि भत्काइ थूत्या ,
प्रमथल्य अगनि मा जाइ् अघी थूकि मूत्या ॥८७॥
भृगु कन मणिमान्ले बांधि ऊखेल्य दारी ,
नयन झिक्य मितर्का नन्दिले ताज् पछारी ॥
चप्यट्य दिइ पुषा का चण्डले दांत झान्या ,
सब ति कुम नचाउन्या का क्वखा फोरिमान्या ॥८८॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



तहिं पछि यजमान्लाइ् पक्रि विर्भद्र ताहां ,
जमिन तल मिलाई घुट् घसी छाति माहां ॥
पकडि कनत केशूमा बेगले खड्ग छोड्दा ,
किमत चलयन तिन्को दक्ष को शीर तोड्दा ॥८६॥
सम्झि पशुपता का पाउ यो जुक्ति आयो ,
थिचि अच्यत्यर घांटी दक्षता चट् पटायो ॥
आफलन जब लाग्यो हात खुट्टा कराई ,
तब भइरव हात्को पाव्य तेस्ले मराई ॥९०॥
शिर्काटि यज्ञ विच हाल्यर पोलि त्यस्को ,
विस्कुन् मशान झन्नि पान्यर और शेष् को ॥
उत्सव् गरेर ति फिन्या विरभद्र लोक्मा ,
श्री शम्भु थैं सब कह्या उ थियात शोक्मा ।९१॥
चौपट्टै जब यज्ञ को भइ गयो मर्दा भया जो क्वही ,
बाकी क्वै छिरि भागि ब्रह्मथर्जिगै विस्तार्गन्या सब्स्वही ॥
तीविष्णू सँगभै चतुर्मुख गया कैलास पर्वत् महाँ ,
योगीवृन्द र भक्त जन् सहित भै शिव्जी रहन्थ्या जहां ॥९२॥
ब्रह्मा विष्णु अरू समेत् करज्वगी साष्टाङ्ग दण्डोत् गन्या,
नाना शास्त्र बचन् लय प्रस्तुति गऱ्या शम्भूजिकै भर्पन्या ॥
जन्माउनू अनिपालन् जगतलाइ् फाल्नू हजुर्को खुसी,
इन्को दण्ड भयो ह्यलागरन्यको वेकुफ् इ हुन् बेहुसी ॥९३॥
यज्ञसाङ्ग हवस् बचुन् सब जना अङ् भङ् भयाका सबै,
ब्राह्मण् हुन् मुख आफुका गरन्य होम् पाउनन्त चौतासबै ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



पाजी हेरुल्य राख्यनन् हजुर को भाग् यज्ञ माहां अत्र,
बाकीकर्म गरी रह्याको सरजाम् त्यो रुद्र भागभो तत्र ॥६४॥
ई भाग्यमानि रह्याछन् ख्यर गैगयाका ,
जान् नरक् तिर तयार इ भैगयाका ॥
ईश्वर्यलांगन्यक ई सबको त पाप्‌गो ,
ओकर्मथ्याजन हरु कनता ख्वछापभो ॥६५॥
सुन्यर हरि विरञ्चो ले गन्या का यत्र विन्ती ,
शिव ह्यलन गन्या को बात् न राखेर गिन्ती ॥
खुस भइ शिवजी ले यो बचन् जब् गन्याथ्या,
कयकयभनि प्रभु उठ्छन् भन्न्यइलें भन्याथ्या ॥६६॥
ई जावाहरु को दगाक्यक मलाइ् पीतीप्व लाग्यत्रवह्लाइ् ,
छ्वेंद्यो अमृत हस्तले तिमि तहां मगन्र्यछू फेर्लाइ् ॥
हेरुन् मित्र ब्वकाक नेत्रल्य भृगूजाइ् भन्नु दाह्रोफुका ,
पूखालाइ हुँदैन दांत जजमान्का नित्य सातू बुका ॥६७॥
हात्पाऊ अरुका तयार तिहुनन्, वोकाक शिर्छेद् गरी ,
जोद्यौं दक्षप्रजापती त्वविंतोस् हेरुन्सबै पेट्भरी ॥
जग्यै साङ्ग गरुन्भन्या शिवसमेत् आया त्यसै ठाउंमा ,
आज्ञा शंभुजिको बमोजिम गन्या औषध् फक्रा वाउमा ॥६८॥
मुखलियर ब्वकाको शंभु थ्यैं दक्ष आया ,
स्तुति गरन ति लाग्या वोक्त्र फैं तो कराया ॥
ब्वब्वब्वब्व थुर थुर्यौ शब्द सून्या प्रभूले ,
बहुत खुसिल्य हांस्या शोक देवी ति भूले ॥६९॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



आनन्द पाई सब खुस् भई ग्या,
श्रीशंभु ता प्यारि न्यरा गई ग्या ॥
मुर्दा अञ्जालीकन लाग्य रून,
कोसक्तथ्यो डर्ल्यनजीकहून ॥१००॥
किन मकन तिमीले प्रीति छोडेर आयौ,
बचन म्यच्व नमानी आज यो दुःख पायौ ॥
हरन प्रिय नजलैं स्नेहका बात बोली,
कपट क्यहि न राखी अन्दरै देखि खोली ॥१०१॥
हेप्राणप्यारि! तँ गइस् यमका त लोकमा,
बूढा मलाइ त बुडायर दीर्घ शोकमा ॥
बोल्नू मजोल्य क्यथजी क्यछ मेच्व साथ,
डुल्छू म अब् पृथिवि मा लिइ येहि गाथ ॥१०२॥
यति भनित सदा शिव् काँध हाल्या सती लाइ्,
शिव त फिरन्यभैं ग्या क्व बुझाउन्या न तिन्लाइ् ॥
बहुत वरष कैलास् शून्य भो देखि आँखा,
द्यवहरु मिलि फर्माइ् लाइ् दिया बड्के माखा ॥१०३॥
कीरापरी गलि शरिर्भरि ठाउँ ठाऊँ,
एकेक तीर्थ बनि ताहिं रह्यो त नाऊँ ॥
चौसठ्ठि जोगिनि पनी तिनलाइ भन्छन्,
ई पुण्य सिद्धिदिन्य शास्त्र महाकहन्छन् ॥१०४॥
जब शरिर सकीयो भैं गिरी ती सतीको,
मन गयव तप माहा भेष लीया यतीको ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



सति पनि हिमपर्वत्को छ्वरीहून आइन् ,
बहुत तप गरीफेर्शंभुलाई भ्यटाइन् ॥१०५॥

---

तीर्थावली यो ह्व विभूति माला ,
बनाउन्या हुन् हरिभक्तिवाला ॥
उत्पत्ति सब्तीर्थक्व यो त पूर्व ,
अध्यायहो ता पनि भो अपूर्व ॥ १ ॥

---

इति श्रीकविपतञ्जलिप्रणीते 'श्रीधीरादेश पातञ्जलतीर्थावली श्रीइयुद्धप्रकाशे' तीर्थोत्पत्तिनामकप्रथमोऽध्यायः ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu

# अथ द्वितीयोऽध्यायः प्रारम्भः ।

ब्रह्माले सृष्टि गर्दा पहिल्यत पृथिवी मृत्ति झाले मुसाऱ्या,
लामू मेरू परवत बनाइ माझ माहा घुसाऱ्या ।
छेडोतल्तीर निकस्यो तसकनत कुमेरू भनो नाउ गराया,
माथी मेरू त स्वर्ग भनिकन तसमा लोक धेरै भराया ॥ १ ॥

भूर्लोक् त्याही भुवर्लोक्
सुम्यरु तल तिरै स्वर्भनी स्वर्गलोक्भो ,
तांदेखी माथि झन्झन्
महजन तपछन् फेरउपर् सत्यलोक् भो ॥
यस्तै पाताल सात् छन्
अतल र वितलै फेर् सुतल् और् तलातल् ,
त्यस्तै पांचौ रसातल्
छइटउं त महातल् पछिल्लो त पाताल् ॥ २ ॥

चूल्ही मा सत्य वैकुण्ठ र अनि कइलास्
तीनलोक् मुख्य राखो ,
इन्द्रादी देवताका दशदिश त पुरी
मेरुका काखि काखो ॥
फेह्रा चार्पर्वतै छन् परवत पिछ्य चार्
वृक्ष वन् पोखरी छन् ,
धौता पर्यार् समेतै अमृत जल विषे
खाइ खेली रहन्छन् ॥ ३ ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



अमरावती पूर्व दिशा त इन्द्र को ,
क्रमैल्य तेजोवति हुन्त अग्निकी ॥
दक्षिण् दिशा संयमनी त कालकी ,
कृष्णा भन्याकी त निरित्यकोण कीं ॥ ४ ॥
पश्चिम्दिशा शुद्धवती वरुण् को ,
वायू कि हुन् गन्धवती भन्या की ॥
कुबेरजीको अलका कहिन् छिन् ,
यशोवती ईश्वर दिक् रह न्छिन् ॥ ५ ॥
पृथ्वी को काख् मेरुलाइ् माझ पारी ,
क्षारसागर् छ द्वीप छन् वारिपारी ॥
जम्बूद्विप् यो माझको पारि प्लक्ष ,
शाल्मल् कौश क्रौञ्चगोमेध पुष्कल् ॥ ६ ॥
क्षार समुद्र र क्षीरसमुद्र ,
दै घिउ मद्य चिनी जलशुद्ध ॥
सात समुद्र इहुन् बिच बिच्का ,
द्वीपदेखि परतीर नगिच्का ॥ ७ ॥
जम्बू द्वीप्का खण्ड नौ आहिं देखी ,
भारत् किंपूरूष् हरीमेरु देखी ॥
उत्तर्तीर्का कुरु हीरण्य रम्य ,
पूर्वापर्का दीर्घ ई खण्ड भन्न्य ॥ ८ ॥
माझ् खण्ड का माझ महाँ इलावृत् ,
भद्राश्व पूर्वै परतीर्क्यतूमाल् ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu


नौखण्ड मध्येक एव खराड भारत्,
पुरायै र पाप् को त कमाउन्य सारथ् ॥ ९ ॥
यसभारत् खराडमध्ये पनि नउ टुकुरा मध्य खराडै कुमारी,
जात् को वर्णं र शास्त्रै एव पनि त विवरण् आहिछ कर्म भारी ॥
श्रौताहेरू पनी सब् अहि जनम भया मुक्तिको जुक्ति गर्थ्यौं,
भन्दैं आफ्ना सभामा वरणन गरछन् जाह्नवी तीर मर्थ्यौं ॥१०॥
अब् य ए भरत्खराड महा भयाका,
ठूला नदी पाप् हरणै वह्या का ॥
संक्षेप् गरी सूननु चित्त लाई,
फलिमल्छ तन्को न नुहाउन जाई ॥११॥
श्रीगंगाजी यमूना अवरत सरयू नर्मदा तुङ्गभद्रा,
अब् टोदा कृष्ण वेणी कउशिकि वितता और देवी र विश्वा ॥
कावेरी भिम्रथी गोमति दृषद्वती चन्द्रभागा पयोष्णी,
तुङ्भद्रा ताम्रपर्णी सरस्वति खुरसा वाणगङ्गा असिक्नी ॥१२॥
अधः शोणत दोइनद् र शतद्रू मरुद्धा वेद्स्मृती,
ऋष्कुल्या र सुषोम सिन्धु निर्विंध्या और रोधस्वती ॥
ऊमन्दाकिनि चन्द्रवश् कृतमला वैतर्णि औ बाहुदा,
तापी फे वंरणा र सप्तवति औ चर्मण्वती फेर्ग्वंदा ॥१३॥
भोग्वती र फलगू सरावती,
सैतवाहिनि महा नदी अती ॥
वेत्रवत् भन्यकि और त्रिसामा,
पाप हर्न्य इ त्रिलोक कि आमा ॥१४॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



इरावती और शिवा विपाशा ,
हिरण्यदा इक्षुमती र प्लक्षा ॥
कुल्मासिका शुंध्रवती विदर्भा ,
बृहद्रथा और वधूसराम्या ॥१५॥
भोजान्तका और उदुम्बरावती,
मधूमती और् विमला गुरूनदी ॥
बिलोदका और् वनमालिका भइन् ,
कोकणूवती उत्पलिका बही गइन् ॥१६॥
पुष्पवाहिनि र ज्योतिरथा भै,
मत्तगा र तमसा उमा संगै ॥
त्त्रिपगा फिरि मही अनि रम्या ,
पूर्वभद्र भन्यकी त अगम्या ॥१७॥
परापभद्रा र प्रभावती द्वै ,
मित्रघ्न भन्या र एलासिताभै ॥
वेणा भन्या की पनि ठूलि गङ्गा ,
ई सब् गराउन्या सब पापभङ्गा ॥१८॥
जुन् पर्वतादी ग्रखि ई वह्यका नदी छन् ,
तिन्का पनी क्रमल्य नाम सबै गनिन्छन् ॥
प्रातःकालमा उठ्यर जस्ल्य सदा भनिन्छन् ,
पाप्कात भारि तिनका नदिमा खनिन्छन् ॥१९॥
मंगल्प्रस्थ रिषभ् त्रिकूट मलयाचल् सह्य और् ऋष्यमुक्
मैनाक् कोल्लक देव्गिरी कुशतिमान् श्रीशैलमाहेन्द्र एक् ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



विन्ध्याचल् र कुटक् र व्यंकट अनी द्रोण् चित्रकुट् रैवतै,
ऋत्ताद्री अनि पारियात्र कुकुभै गोकामुखै पर्वतै ॥२०॥
हेमकूट र निषध् प्रवर्षणै,
श्वेतदर्दुर र सैह्य मन्दरै ॥
क्रौञ्चवैदुरज्य और् उदयाचल्,
जौन् घर्षीत वहिग्या नदिका जल् ॥२१॥
कामपर्वत र इन्द्रकील् अनी,
पर्वतेश्वर ग्ववर्धनै पनी ॥
धेरछन् इ सनतान् हिमालका,
देश बीच भरताख्य खण्डका ॥२२॥
खुप् पाप काट्न्या बन छन् बहूत,
तिन्को पनी केहि कहिन्छ गीत ॥
नामुद् भयाका बहु पुण्य दीन्या,
पापूकाटनन् प्रात इ नाम लीन्या ॥२३॥
वृन्दावन् औ दण्डकारण्य भन्न्या,
बिन्ध्या सत्यै ई दधारण्यधन्न्या ॥
नैमीसारण् वद्रिका चम्पकारण्,
कल्हीकारण् कामिकारण् गुहारण् ॥२४॥
गहनारण्यै ऐल्यारण्,
भन्न्या धेरै इ पुण्यवन् ॥
भारत खण्ड महा धेर्छन्,
योगी तप् ताहिं गर्दछन् ॥२५॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



चेत्र छन् बहुत नामुद वाला,
पाप जान्छ तहिं बस्न ज्व जाला ॥
प्रात नाम् लिन्य ल्य वस्कित चाला,
छातिमा तन्न बसुन् यदुलाला ॥२६॥
गौतमाश्रम क्यदा भृगुचेत्र,
श्वेतद्वीप कनखल् रविचेत्र ॥
रामविन्दु तप्वदक् स्वगमार्ग,
ब्रह्मचेत्र कुरु अर्बुद चेत्र ॥२७॥
श्रीकण्ठै विनशन् दशाश्वमेध भो सूवर्णविन्दू पनी,
गंगाद्वा वंदरी र भद्रवट भो वाराहचेत्रै भनी ॥
कोकामुख् हरिहर पुष्कर भयो श्रीकन्कपिंगल्गयो,
गंगासागर पुण्यभूमि त्य भयो पूराणमा ई कह्यो ॥२८॥
पोखरी पनि त छन् बड़ा बड़ा,
जात्रुका हरन पाप लाइ् खडा ॥
विंदुसर् अउ पृथूद भन्न्य सर्,
फेर्विशालसर मानसरोवर् ॥२६॥
पञ्चाप्सरः सरत अर्जुनको त कीर्ति,
पंपासरोवर त वानर राम पीर्ति ॥
श्रीपर्शुरामजिल्य चत्रिय रक्तजल्का,
नौ छन् तलाउ कुरुमा बहु पुण्यबल्का ॥३०॥

---

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



अयोध्या मथुरा माया,
काशी कांचि अवन्तिका,
पुरी द्वारावती भन्न्या,
सातपुरी मोक्ष हुनू दिन्या ॥३१॥

पैल्हे चार्दिशका इ दिव्य मुरती साक्षात्प्रभूका भनी,
चारैधाम क नाम ली सब जना जान्छन् व्रती भै पनी ॥
पैह्ले श्रीपुरुषोत्तमै प्रभु भया तां देखि रामनाथ् गया,
द्वार्कानाथ् पछि औ हिमाल बिचमा श्रीबद्रिनाथ्जी भया ।३२।

जती छन् दुनीया गयामा गयाका,
तिनैका पुरूषा नरकमा रह्याका ॥
सबै उत्रि जान्छन् गदाधरक मर्जी,
बजांउ छन् यमैका दुतै लाइ गर्जी ॥३३॥

गयासुर्ले पैह्ले बहु तपल्य सब्देवकन लिंदा,
हरीले कब्लाई च्चपटियस्व का पिठ् पद दिंदा ॥
जगाजग्गा छौता बस्यर भयका तीर्थ अति छन्,
दुनीञा जुन् कम्ले गरद छ सराद्द भन्छु जतिछन् ॥३४॥

पैह्ले जाइ पुनः पुना नदि महां मुण्डन् गरी पिण्ड दीं,
तां देखीं त पुगी गया बिच जहां फल्गू कह्याकी नदी ॥
प्रोहित्को गरनू ठ्यगान वरणी मोदी घला सारजाम्,
पैसादी तस लाइ आफु व्रति भै रोज् रोजको गर्नु काम् ॥३५॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



पैह्ले फल्गु नुहाइ तात् पितृ पुजी जाउ् ब्रह्मकुण्डे महां,
प्रेत्शीला फ्यरि राम् शिला फेरि त रामुकुण्डे कहींयो जहां॥
काकोसी भनि पिंडपातन गरी मातङ्ग तीर्थैं गई,
वौधीग्या गरि जाउ ब्रह्मसरवर् उत्तर्मनस्तीर्थ भै ॥३६॥
सूर्यैकुण्ड उदीचितीरथ भयो तां देखि कंवल् गयो,
दक्षिण् भानु र जिह्वलोल् दुइ भयो श्रीविष्णुपद्मा गयो॥
लाग्यो षोडशि चन्द्रपद् पहिल्य भो श्रीब्रह्मपद् रुद्रपद्,
चौथो कार्त्तिकपद् सभ्याग्नि ओषग्राग्नी गार्हपत्याग्नि सात् ३७
इन्द्रैको पद दक्षिणाग्नि पद भो फेर् आवसथ्याग्नि भो,
श्रीलंबोदर सूर्य औदधिचिपद् मातङ्गपद्मा गयो॥
कर्णैकोपद ओर्करो वट तिरथ् अगस्त्यपद् काश्यपी,
रामूको पानु गया सिता दह भया पिंड्यौ गया शीर्पसी ॥३८॥
फेर्जाइ् पिण्ड दिनू गया कुप महा
फेर्मुण्डपृष्ठे भयो,
आदीग्या तव धौतपाद् फिरि भया
फेर्भिमुगयामा गयो॥
गोपद्तीर्थ गऱ्यो गदालवल गयो
पूऱ्यायव अक्षवट् महां,
घाट् गायत्रिक काकवली तहिं गऱ्यो
समाप्त भो तब् तहां॥ ३६॥
गाई दान भयो त खाटक्क पनी
भाँडार अन्नादिको,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



ज्यासख्ले पुण्यकोत दान गरन्
पितृक हुन्छ निको ॥
पितृरूप गरी लिन्या हरि तहां
गदाधरै नाम ले,
मुख्ले हांकि हुदैन खूसि प्रभु ता
श्रद्धागरी कामले ॥ ४० ॥

गयाजीक पिण्डन् बनारसक ढुण्डन्,
प्रयाग्मा गई गर्दछन् जो त मुण्डन् ॥
वखत् एक गै जाह्नवी मा त बूड्न्,
मरीहंस तिन्का वईकुण्ठ ऊड्न् ॥ ४१ ॥

जस्को नाम् तीर्थराजा भनि कनत
प्रयाग् शास्त्रमाहां कह्या को,
गङ्गा यम्नाजिको जल् मिलि कनत जहां
चुल्ठि पर्दै वह्या को ॥
माघ्मा जो जो नुहांउ् छन् प्रतिदिन त गरी
बेणिमाधव् को पूजा,
आमा बाबू समेत्का सयकुलक समेत्
पापको हुन्छ धूजा ॥ ४२ ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



श्रीकाशी विश्वनाथ् की भवहरणपुरी
मुक्तिकी हुन् ढुकुटी,
जां भैरवूका हुकुम्ले त्तणघरि विचमा
पाप जाइ् जान्छ छूटी ॥
फेर्जन्मै लिन् नपर्न्या मरिकिन जनले
शास्त्रका यो सहीमा,
लेख्तैनन् चित्रगुप्तै तहिंमरराय क्व नाम्
आफना त्यो वहीमा ॥४३॥
*लोलार्क केशव् दुइ भेर खूरा,
गंगाजि तांदो भइगैन्ति पूरा ॥
काशीधनू धर्म क्व शर्बनाई,
देख्यौ सदा शिव्क्व कलीहनाई, ॥४४॥
काशीं का सब देवता क्व गणना गण्नाथ सक्तैनहुन्,
साक्षात् मुक्तिपुरी क्व अन्त्यगरने जावो मनुष्यै मकुन् ॥
शास्त्रै मा कह्यको चलाय क्व अघी अन्तर्गृही क्रम्गरी,
नाम् लिन्छू क्वहि देवता तिरथको सब् भक्तको चित्भरी ॥४५॥
पैल्हे जायर मुक्ति मण्डप बसी
आचमन् प्रणायाम् गरी,

* याज्ञवलक्य ऋषिजी † यहिं आई, सूर्यको तपगरे मनलाई ॥
सूर्यले खुशिभयेर अशेष, गर्नुभो निगमको उपदेश ॥ १ ॥
यो छ कुण्ड अति पुण्यद खण्ड, कालभैरवजिको पनि दण्ड ॥
माफ पापि हरु लाइ यहां छ, मुक्ति ता सकल काशि महां छ ॥ २ ॥

† लोलार्क कुण्ड मा,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



संकल्पै गरि पाप काटनु भनी
मन्कर्णिका स्नान् गरी ॥
पूजा को सरञ्जाम ली
पुजिहिडुन् अन्तर्गृही देवता,
सात्फेरा परिकर्म हुन्छ
शिवको दर्शन् गरी यो यता ॥४६॥
पैल्हे श्रीमणिकर्णिकेश्वर भया कम्बल् अश्वत्तर दुई,
वासूकीश्वर पर्वतेश्वर फिरीं गङ्गा क्यशव् पांच ई ॥
देवी श्रीललिता जरासनध शिव् सोमूनाथ् वराह प्रभू,
ब्रह्मेश्वर्र अगस्ति ईश्वर अनी श्रीकश्यपेश्व स्वंभू ॥४७॥
हरिकेशव बैद्यनाथ् ध्रुवेश्वर,
गोकर्णेश्वर हाटकेश् प्रभूवेश् ॥
अस्थिक्षेप तडाग दर्शनेश्वर्,
उन्नैसौंपनि कीकटेश ईश्वर् ॥४८॥
भार्भूतेश् चित्रगुप्तेश्वर प्रभु इ
दुई चित्रघण्टा भइन्ती,
त्यैसौं हुन् ई पशूका पति फिरिति
पिता ह्मेश कल्शेश तिन् ई ॥
चन्द्रेश्वर् और वीरेश्वर कनत
पुजी देवता ई सताइस्,
शम्भूको एक् परिक्रम् भइगयव
यतिले घूमि दर्शन् ज्व पाइस् ॥४९॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



विघ्नेश अग्नीश र नागईश,
चौथा हरिश्चन्द्र त एकतीस ॥
चिन्तामणी नायकसेन् विनायकू,
वसिष्ठ वाम्देव त सातऊँ एक् ॥५०॥
त्रिसन्ध्या शिवै औविंशालाक्षिदेवी,
शिवै धर्म ईश्वर् शिवा विश्वबाहू ॥
विनायक् त आशा वृद्धादित्य तेहौं,
चतुर्वक्रस्वामी कह्याँ मैल्य चौधौं ॥५१॥
ब्राह्मीश्वर मनःप्रकाश शिवम्भ्या सत्रौं ति ईशान शिव्,
चण्डी चण्डप्रभू अठारउं भया उन्नैस् भवानी भइन् ॥
जम्मा ई त छयालिसै घुमि भयो दोस्रो परिक्रम् तहाँ,
अब् एकादश देवदर्शन गरी त्यस्रोपरिक्रम् जहाँ ॥५२॥
श्रीढुण्ढिराजजि भया फिरि राजराजेश्,
औलाङ्गलेश नकुलेश परान्नकेश्वर् ॥
पर्द्रव्यशम्भु र पराअपवादशम्भु,
फेर्निष्कलङ्कशिव आठउँ देव गन्नू ॥५३॥
गोकर्णेश्वर अप्सरेश्वर भया गङ्गेश् एकादश् भयो,
तीन्क्रम् साठ जमा भयो तब त ज्ञान्वापी नुहाउने गयो ॥
नन्दीकेश्वर तारकेश्वर महाकालेश तिन् ई गया,
चौथो दर्शन दण्डपाणि क गरी चारौ परिक्रम् भया ॥५४॥
महेश्वरं मोक्षेश वीर्भद्र ई तिन्,
गरी दर्शनै भो परिक्रम् त पञ्चम् ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



श्रिविश्वेश् अवीमुक्तनाथ् छेट्व फेरा,
श्रिविश्वेश दर्शन्ल्य सात् आध फेरा ॥५५॥

अन्तर्गेह ग्रखीत वाहिक अरु क्यै देवता भन्दछू,
काशीका सब देवता म बबुरो कैल्हे सबै गन्दछू ॥
जात्रूले दरशन् गरेर भन्यका प्रख्यात् गरेका पनी,
क्यै लेख्छू सब खोजि लेखु त भन्या विस्ता ह्वला की भनी ।५६।

श्रीसिद्धिनायक र साक्षिविनायके भ्या,
श्रीबुद्धिनायक र दुग्धविनायके ग्या ॥
औ यंव्विनायक भया अनि वृद्धनायक्,
यस्तै बहूत गणनायक छन् ति लायक् ॥५७॥

अल्पमृत्युहर आत्म विश्वेश्वर्,
काशि वास शिव और यमेश्वर् ॥
वृद्धकाल शिव और कृतेश्वर्,
यस्तई बहुत छन् तहिं ईश्वर् ॥५८॥

वेणीमाधव विन्दुमाधव भया,
श्रीसत्यनाराण् पनीं,
द्वार्कानाथ र राम कृष्ण प्रभु भ्या
विष्णू मुरत् धेर् अनी ॥
त्यस्तै मुख्य दशाश्वमेध क त घाट्
फेर्पञ्चगंगाजि को,
घाट् घाट् मा सब जाह्नवी क तिरको
स्नान् गर्नु उत्तम् निको ॥५९॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



श्रीमंगलागौरि र अन्नपूर्णा ,
दुर्गाजि सिद्धेश्वरि ढोगकर्ना ॥
राजेश्वरी श्रीललिता इ देवी ,
चौसट्ठिदेवी शिवका इ सेवो ॥६०॥
शीतला जालपा कालिका तिन् भया ,
विन्ध्यवासीनि को दर्शनै लाइ गया ॥
वागजीश्वरी छन् देवि का धेर गन् ,
दर्शनै गर्न इन्को लगायेर मन् ॥६१॥
आनन्द भैरव बटुक् अनिभून आशा ,
लाट् भन्न्य भैरव प्रभू सब दुःखनाशा ॥
गभस्ति अमृत लगत् प्रभृती कतीछन् ,
ती देवता को गणना तहिं वस्न्य गर्छन् ॥६२॥
संकटा प्रभृति बाँकि जती छन् ,
सब् म्यरा ति मरणान्त गतीछन् ॥
कालभैरव प्रभू जगत्पिता ,
पाप हर्दिन्य सबै म्यरा उता ॥६३॥

———❀———

हरिल्य बहुत दिन् तक् बाललीला गऱ्या की ,
बक प्रभृति दुरात्मा दैत्य धेरै मऱ्या कीं ॥
सब तिरथ महाँ की ठूलि क्या बात् मथूरा ,
भगवत प्रिय त्यस्का गर्न सक्ला क कूरा ॥६४॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



चौराशिकोश क्क परिक्रम यो त यात्रा ,
गोपालजी लय खेलय का वस्यका ति मात्रा ॥
काँ तक् म वर्णन गरूँ पदपद् को छापा ,
गोप् गोपि गोपपद ले पऱ्यका ति खापा ॥६५॥
प्रख्यात् गऱ्या क्व ब्रजवासि भगत् हरूले ,
शास्त्रादि मा पनि कह्या क्त्र ऋषी अरूले ॥
संक्षिप्त तीर्थ हरुको म त नाम लिन्छू ,
प्रात:कालमा समुझ लाइ म्यल्व लाइ दिन्छू ॥६६॥
विश्रामघाट पहिले अरि कंस मारी,
विश्राम् गऱ्याक्त्र भनि तीर्थय्त्र मुख्य भारी ॥
त्यैं छयौछ तिन्दुकर ओर् ध्रुवजो क्व तीर्थ,
त्यैं छयौ अनन्ततिरथै अनि बुद्धितीर्थ ॥६७॥
रंगेश्वर् शिव छन् तहीं नगिचमा समुद्रकूप् त्यैं न्यरा,
कुण्डै छ बलभद्र को त नजिकै भूतेश्वरै त्यैं न्यरा ॥
पोत्राकुण्ड र कृष्णकूप् कुब्जकुप् महाविद्या देवि छन्,
त्यैं छयौ सर्स्वति कुण्ड कोटि तिरथै गोकर्ण शम्भू त झन् ॥६८॥
गौतम् आश्रम त्यैं सरस्वति क्व सङ् दशाश्वमेध् तीर्थभो,
गङ्गा कृष्णजिकी र सोमतीरथै फेर्चक्रतीर्थै गयो ॥
घण्टावर्ण क्व तीर्थ मुक्ति तिरथै बैकुण्ठ घाट् तां पछी,
वारातीर्थ वराहजी क्व दरदशन् असिकुण्ड ताहां गछी ॥६९॥
शिव क्व ताल डुब्यो ग्व परिक्रमा ,
भइगयो मथुराजि क्व विभ्रमा ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



अत्र मधूवनिको परिकर्म यो,
तहिं द्यखी पनि जात्रु पुढो गयो ॥७०॥
मधुवन बिच मान्य को मधू लाइ्,
चतुरभुजा दरशन् मधुकुण्ड नूहाइ् ॥
तहिं द्यखिपुढ्व तारको त वनू छ,
कुमुदवनै कपिलै कन त दर्शनै छ ॥७१॥
सक्तूकुण्ड भयो तहीं पुढ्व गयो
बौल्हाहवन् आइ् पुग्यो,
स्नान्भो कृष्ण कन कुण्ड को तहिं पुढो
करैणु कुण्डै गयो ॥
तोषन् गांउ् ग्वपकुण्ड जाउ् तहिं पुढो
मुखूराइगांउ् मा गई,
राजाकृष्ण कव कुण्ड द्वै पनि नुहाइ्
ताहीं ललित्कुण्ड आइ् ॥७२॥
ताहीं कदम्ब रुखमा हरिको मुकुट् छ,
नारान् कन कुण्ड छ ग्वबर्धन तां द्यखिन्छ ॥
तैं गुल्म रूप ल्य त उद्धव छन् कहन्छन्,
गङ्गा त मानसि भन्याकि तहीं बहन्छिन् ॥७३॥
त्यो चक्रतीर्थ ह पुढो छ हदै बसाई,
रामघाट तहां द्यखि पुढो छ त दानराय ॥
गोवर्धनै भन्य कन गांउ् न्यरि कुण्ड पर्छन्,
रिन्मोच-धर्मरुचि-पापम्वच औग्वरोचन् ॥७४॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



क्यहिदिन भगवान्‌ले गाइ् चराऊन् गयामा,
सखिसंग बनमा जाइ् खेल लीला भयामा ॥
अति प्रियल्य बद्यो दुद् माइ् गईन् भेट्न ताहीं,
प्रभुकन लिइ काखमा भन्दछिन् खाइ म्वाओ ॥७५॥
दिनप्रति तिमि गर्छौ रासलीला ऱ्य भन्छन्,
त्यहिं द्यखि खुसि सब् भै ओधि तिम्रा सहन्छन् ॥
मकन पनि द्यखाऊ लौन त्यो रासलीला,
फरकि म व्रजजान्छू कत्ति होओस् न ढीला ॥७६॥
सुन्यर यति मुमाका बात् प्रभू शि र्भकाया,
मन मन असजीलो लाजले मुख् लुकाया ॥
खुसगरनु मुमा लाइ् मैल्य चाहिन्छ सांचो,
दिनुहुँदइन कूँचीं गोपका साथ नाचो ॥७७॥
यति ग्व मन बिचारी गोपको लाइ घेरा,
बिच बसि तिनका श्रीकृष्ण ता माइ नेरा ॥
भिक्यर अन्यक बोली वेणुको नाद लाया,
जगत भुलन्य नाचू त्यो माइ लाई द्यखाया ॥७८॥
क्वहि त थपरि मार्छन् नाचछन् कोइ घूमी,
क्वहि मुरलि बजांऊछन् जानुले टेकि भूमि ॥
हरिक्व चरित गाई एक सुर्मन् लगाई,
न्यवर क्व झमकाई देखियो पाउ् नचाई ॥७९॥
तब त जननि बोल्छिन् गोपिथैं खेल्द थ्यौरे,
भन्यर इ सब भन्थ्या काम जस्ता बन्यौरे ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



प्रभु ब्वल नु भयो ज्यू खेल यै ह्वो म्यराता ,
रिसल्य इ अरु बोल् छन् धिक हो इन्क्व माता ॥८०॥
यस्ता इ साधु सुत लाइ यसो इ भन्न्या ,
बालखूख लाइ् तर्हाण प्रित् गन्य भन्नु धन्न्या ॥
येती भनी मुख मुसान्यर म्वाजिखाइन् ,
गद् गद् भईकन फिरी ब्रज मा ति आइन् ॥८१॥
ताहां देखि पुढो छ गांउ यमुना यम्नाक तीर्पर्दछ ,
तैं नेरा अडि गाँउमा त पहिले कल्लोल क्वै कुराड छ ॥
बलूदेव् को दरशन् मध डुवककिलो परात्वली गांउ् एंढो,
तान् छ चन्द्रसरोवरै प्रभुल्य तान् रासूलाइ् धँस्याथ्या घुंडो ॥८४॥
श्रृङ्गार मन्दिर छ तां तहिं देखि दूर्छे ,
आन्योर गांउ् हरिचरण् बलभद्र तीर्थ ॥
गोविन्द गन्धरव अप्सर कुराड तीन् छन् ,
पूढो गऊचरण ग्राक् खुसवी शिला छन् ॥८३॥
सिंहासन्छ तहां घ्वखी पुंढ्व गई
गोष्पद् क्व छ चिह्न तां ,
पाउ् ऐरावत हाति का र हरिका
वाजन् सिंधुढैं शिला ॥
कुराडे छ सुरभी भन्या क्व पुढ्व गै
त्यो पुच्छरी गांउ मा ,
रामदास् भन्न्य क्व छ गुफा प्रभुल्य-
गोवर्धन् पुज्या ठाँउमा ॥८४॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



ताहाँ सुन्दर छ शिला ग्वबरधनूधारी क्व दर्शन् खडा,
बारी तुलसि क्व दण्डवत् पनि शिला त्यै कृष्ण मान्या बड़ा॥
गोपालपुर्ग्य्व सात मन्दिर जहाँ आचार्य्यको द्वारका,
नाथ्को विट्ठल नाथका प्रभृति छन्ताहां अनेक्पारका॥८५॥
ताँहाँ कुण्ड त चार एक सुकटा गूलाल एक् रुद्र एक्,
इन्द्रै को पनि कुण्ड कूप दुइ छन् गोवर्द्धनै को य्व भेक्॥
तांहां देखि पुढो त कामवन छ पांच् तीर्थ छन् कुण्डका,
यज्ञै धर्म र बामना विमल लङ्का भन्न्य ई पुण्यका॥८६॥

तांहां देखि पुढो त रास गन्यको
तिन्कुण्ड छन् तां पनी,
चक्रकुण्ड र पद्मकुंड् लुकुलुकू
कुण्डै इ तीर्थै बनी॥
आयो चर्ण पहाड चर्ण दरशन्
तीर्थै दधी भन्न्य जां,
ठाकुर्को वनको भत्यामुख चुठाइ्
ताञ् नन्दकुप् बट् जहां॥८७॥

सुर्भीकुण्ड षिसन्शिला तहिं पुढो तीर्थै थियो मानसी,
वाराकुण्ड र कामईश दरशन् यो कामवन्मा बसी॥
तां देखी कलवारगाँउ पुढ्व छ रास्को त मण्डल जहां,
बल्देव्को ग्रहकुंड संय्वगतिरथ् द्वै छन् नजीकै तहां॥८८॥
वर्षान भन्न्य तहिं देखि त गांउँ आंउ् छ,
सिंहासनै छ तहिं मोहिनिकुण्ड तैं छ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



यशूदा क्व कुण्ड तहिं मन्दिर छ हरीको ,
राधाक्व मन्दिर तहीं छ अनेक् परीको ॥८६॥

तांहां देखि त आय्व पीरप्वखरी पूंढो विमलकुण्ड भो ,
विम्लादेवि क्व दर्शनै तहिंगऱ्यो रासूकृष्णकुण्डै पऱ्यो ॥
तांहां देखि पुंढो त कुण्ड क्वहि छ चन्द्रावली गाँउ मा ,
यशूदा को ललिता क्व दर्शन गऱ्यो रास् छ त्यही ठाउँमा ॥९०॥
विशाखा विलासा तहां कुण्ड दुइ् छन् ,
पुरण्मासिकुण्डै पुरण्मासि दर्शन् ॥
म्वहन्कुण्ड भो और् यशोदा क्व कुण्ड ,
मधूसूदनैको पदम्तीर्थ कुण्ड ॥९१॥
तांहीं पहाड् चरण छ चरणै क्व दर्शन् ,
पन्हारि गांउ पुढ्व गै जलको छ पर्शन् ॥
ताहीं न्यरा रह्य क्व पानसरोवरै छ ,
मोतीतिरथ् छ छ्वहारि भन्या क्व कुण्ड ॥९२॥
ताँहां पनी रास क्व हेछ मण्डल् ,
गांउ् नन्दमा गौ क्व त कुण्ड मण्डल् ॥
तांहा द्यखी रास् फिरि आय्व चोतार् ,
ताहीं छ सारस् वन को त ओतार् ॥९३॥
करहल बगञीचा रास् छ तां दे क्व यात्रा ,
हरिजि क्व छ त कुण्डै कज्जली कुण्ड मात्रा ॥
तहिं फिरि चउतारा रासको गांउ् पिसाये ,
हरिल्य जल पियाको कुण्डजी छ विसाये ॥९४॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



बकासुरै मान्य क्व सूर्यकुण्ड ,
गरुड् भया कृष्ण तहीं प्रचण्ड ॥
तहां घखी आग्य कुमर्कह्यो वन् ,
तीर्थैभनी चार त कुण्ड तां छन् ॥६५॥
ताञ् कोकिला वन्छ त कृष्णकुण्ड ,
लालित्यकूप् ताहि ह्वरी प्रचण्ड ॥
तांहीं न्यरा फेर्पनि कृष्णकुण्ड ,
गोवर्धनै ठाँउ् गन्यको त्व खण्ड ॥६६॥
ऐरावत् हातिका पाउ् घखिन्य तहिं न्यरा
गाइ् घ्वड़ा कृष्णका पाउ् ,
कृष्णै को कुण्ड एक् छ अलिकति परगे
रासकुण्डै क्व जल् खाउ् ॥
ताञ् नेरा छ दधीकुण् दधि भन्य क्वत गांउ्
फेर्मधूसूद कुण्डै ,
शीतल् कुण्डै फिरी ताञ् सुरज्य क्व पनि एक्
च्चीरसागर् पुढो गै ॥६७॥
तांहां हरील्य श्यषशायि मुरत् देखाया ,
आयो यमून क्व बगर् बलभद्र आया ॥
खैंच्योक्व तैं ह्व हलले हन्यको त वाच्छा ,
त्यो ब्रह्मतीर्थ भय्व ब्रह्म क्व घाट अच्छा ॥६८॥
भूषण् भन्या क्व वन त्यैं हरि दर्शनै छ ,
राधा क्व तैं विरह भ्या क्व त गोपिवट् छ ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



चीर्घाट छ तहिं पुढो यमुना क्व तीर्मा,
श्रीकृष्ण ले हन्य क्व वस्त्र त जाड्व पीर्मा ॥९९॥
तहिं द्यखि पर नन्दै लाइ वरुण ले हन्या को,
भय भन्य क्व त गांउ छ नन्दघाट् तात् पऱ्या को ॥
वसहि भन्य क्व गांउ छ कृष्ण को तां छ दर्शन्,
प्रभुल्य फरमियाका वत्स सब् तांहिं चर्छन् ॥१००॥
तहीं नेरा रास् छ तहिं द्यखि पुढो गांउ छ अटस्,
तहीं राम्को मूर्ती गरुडलय द्यख्या को हरि क्व वस् ॥
तहां देखो पूढो नरिसिमरि गांउ छ बलजि नांउ,
किशोरी कुण्डै छ तहिं गरुड़ गोविन्द पनि गांउ ॥१०१॥
इन्द्रै पिछा पऱ्यथ्य तांहिं सटीकरा गांउ,
अन्नै लिएर द्विजपति लय आयको ठांउ ॥
वृन्दावनै तहिं द्यखी हुन लाग्व धाम,
नाग्लाइ कायम गऱ्या क्व त्यहीं ह्व ठाम ॥१०२॥
वसहजी तहिं ओर विहारी,
द्यवल राधिक वल्ल क्व भारी ॥
तहिं विहारि क्व घाट छ तीर्थ,
कुँजर रंगमहल् तहिं पर्छ ॥१०३॥
भृङ्गारवट् छ तहिं राधिक पाउ दर्शन्,
कालिन्दिमा चयन घाट् क्यसि को त भर्त्सन् ॥
ताहीं न्यरा धिरसमीर भन्या क्व घाट,
दुर्वास ले तहिं निल्या बहुरोटि भात ॥१०४॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



वंशीवट् छ प्रभूल्य वेणु त बजाइ्
खेल्या क्व होरी पनी ,
गोपेश्वर्शिव छन् तही नगिचमा
वृन्दा त देवी अनी ॥
चाणुर्मुष्टिक का त घर्तहिं न्यरा
श्रीब्रह्मकुण्डै छ ताँ ,
ब्रह्मा लाइ छकाय को त तँहि हो
गोविन्द मन्दि जँहां ॥१०५॥

राधारम्ण क्व घोल तांहिं निधिवन् तांहीं छ शृङ्गारवन् ,
राधामन्दिर तांहि कुञ्ज पनि छ राम्रो ब्यणू कूप भन् ॥
येती यो परिकर्म तीर्थ क्व भयो वृन्दावनी खेलको ,
जाहां देखि पुँढो त पारवन को खेल् पैल्ह्य वन् वेलको ॥१०६॥

माटगाम तहिं देखि पुढो छ ,
दै लुकाय क्व त भाण्डिरवट् छ ॥
तांहि खेल्य क्व प्रलम्ब क्व मारी ,
भाण्डिरक् कुप भन्या क्व छ भारी ॥१०७॥

विजौलि गांउ् विठ्ठलनाथजी छन् ,
मदन्म्वहन् मन्दिर भित्र बसूछन् ॥
कल्यानराय् गोकुलनाथ द्वै भ्या ,
नवूनीतप्रित् द्वारकनाथ द्वै भ्या ॥१०८॥

गोविन्द घाट् त्यैं जमुना क्व पर्छ ,
मन्दिर्तहां गोकुलचन्द्र को छ ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



आचार्य को मन्दिर ताँहिं नेरा,
अट्खम्बघाट् छ यमुना क्व फेरा ॥१०९॥
मन्दीर् एक तहीं छ सुन्दर मथूरानाथ को यत्ति हो,
गोकुल्को परिकर्म गांउ पिपरा माणिक्यशीला भयो ॥
लोहासु भगवान् ल्य मान्यथ्य तहीं श्रीकृष्णकूप् छ तहां,
गोपाल्पुर् तहिं गौचाहायक्त्र भनी महावनै छ तहां ॥११०॥
शकटासुर और तृणाबरत्,
मन्यको हो त्यहिं ठाउँ को सरत् ॥
महिमन्थन औयंशोदयाको,
तहिं कृष्णक्त्र नाल् छ्यदन् भयाको ॥१११॥
यमलार्जुन ढाल्यको तहीं हो,
मथुरानाथ क्व मन्दिरै तहीं भो ॥
द्वार्कानाथ् क्व पनी त छ पछाडी,
पुतना मान्य क्व रे छ टूल्व खाडी ॥११२॥
बाल्लीला गन्यको तहीं रमणघाट्
गोपकूप छ तैं न्यरा,
ताँहीं छ बलभद्र कुण्ड नजिकै
बल्भद्रजी खेलदा ॥
निस्क्याकी पनि रेवती तहिं प्व हुन्
गाँउ् छ हथोरा तहाँ,
चिन्ताह भन्यको त घाट तहिं छ
ब्रह्माण्डघाट् छ जहां ॥११३॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



माटो खाइ् भगवान ले मुख बिचै
ब्रह्माण्ड देखाइ् दिई ,
बन्दीगाम अलिक् पुढो छ तहिं छन्
नन्दी अनन्दी दुई ॥
द्वै नाम्का पान कुण्ड छन् तहिं पुढो
चार्कोस बल्देव गांउ् ,
दर्शन् गोकुलनाथको कयलघाट्
पुतना बगायाक्व ठांउ् ॥११४॥
राती श्रीवसुदेवले हरिजि लाइ्
तान्या क्व तां हो अरे ,
फर्की आउँदि खेरि ध्यान गर्‍यका
श्रीउत्तरेश्व परे ॥
बांसूघारी तहिं कर्णकूप तिरथै
स्नान् गर्‍यं ठाम् देखियो ,
चौरासीं क्व परिक्रमा ब्रजक्व यो
यत्ती जहां लेखियो ॥११५॥
चौरासी ब्रजका त चिह्न हरिका
नाना परीका ज्व छन् ,
ताल् दुइ् पोखरि छ सरोवर त सात्
येघारकूप् बाह वन् ॥
ठाकुर्की चरणारविन्द दरशन्
सात् राधिकाका त दुइ् ,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



बल्देव्को दरशन् त सात् फ्यन्व हुन्या
चौबिस् बघैंचा त दुइ् ॥११६॥
देवीको सात दर्शन्
परवत पनि पांच् आठ् वटा छन् महाद्यौ ,
हिन्डोला छन् छ ओटा
बइठक पनि आचार्यका बाइस् गनी ल्यौ ॥
दान्लीला छ शिला ग्यार्
कदम खनडि पांच् दुइ् लिला छ सिंहासन् ,
छत्तीस् मन्दीर घाट् बिश्
चउरसि तहिं कुण्डै पऱ्याका रह्या छन् ॥११७॥
श्रीनन्दलाल प्रभुका चरणैकमल्ले ,
छापा पऱ्याकि दरशन् अतिपुण्य बल्ले ॥
तिल्तीलभ सब ठ्य तीर्थल्य खालि छैन,
यो मुख्यगिन्ति ह्व निखानु किमत् छईन ॥११८॥

---*---

तीर्थावली हो य्व विभूति माला,
बनाउन्या हुन् हरिभक्ति वाला ॥
पृथक् पृथक् धाम क्व नाम् कहीयो ,
अध्याय दोस्रो पनि यो भईगो ॥ २ ॥

इति श्रीकविपतञ्जलिप्रणीते 'श्रीधीरादेश पातञ्जलतीर्थावली
श्रीरयुद्धप्रकाशे' विविधतीर्थ वर्णननामकद्वितीयोऽध्यायः ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu

## अथ तृतीयोऽध्यायः प्रारम्भः ।

त्रैलोक्यनाथ प्रभु जो बद्री निवासी,
भारत् एव खण्ड बिच बस्न्य क्व पापनाशी ॥
श्रीधर्म्मका सुत भई दुइ मूर्त्ति धारी,
चार्धाममा पनि त उत्कट यो छ भारी ॥१॥
जो बद्रिकाश्रम भनी सबशास्त्र गाँउछ,
भक्तादि सिद्धमुनि तांति जहां त धांउछ ॥
जस्ठाममा पुगि भगत् सब मुक्ति पांउछ,
प्रात्कालमा उठ्यर सम्झन्य यस्त्व ठांउछ ॥ २ ॥
बद्रीनाथप्रभू भया वरिपरी प्रह्लादधारा भया,
गौरीकुण्ड ऋषिप्रयाग र कुबेर् फेर् इन्द्र धारा गया ॥
घण्टाकर्ण र अन्नपूरण भइन् उद्धव् अदीती पनो,
नर्नारायण व्यास पुस्तक भयो केशव् प्रयागै अनी ॥ ३ ॥
नारद्शिला धर्मशिला कुबेर्शिला,
लक्ष्मी यशोदा त्यहि ठांउँमा मिला ॥
श्रीवेदधारा अनि कर्णधारा,
त्यैरुद्रधारा वसुका त धारा ॥ ४ ॥
द्वारगणेश गणेश क्व तीर्थ,
ब्रह्मकपालि र और् ऋषिगङ्गा ॥
नारद सूर्य र तप्त सुकुण्ड,
और गरुड कि मूर्ति प्रचण्ड ॥ ५ ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



हरद्वार मा छ कुशावर्त भन्न्या ,
तहींका तिरथ् को समथैं छ गन्न्या ॥
बडोनीलपर्वत् अरु नीलधारा ,
तिरथ् का त नाऊँ अनेक् छन् तिसारा ॥६॥
गुपत् काशिमा और विश्वेश्वरै छन् ,
यमूना र गङ्गापनी ताहिं भन्छन् ॥
यकेक् तीर्थका चार वर्मा रह्याका ,
सबै भन्नको सक्छ तांहाँ भयाका ॥७॥
विल्वप्रयाग्मा गुरुद्वार तैं छ ,
रुद्रैश्वरै रुद्रप्रयाग् पर्नी छ ॥
धारा भन्याकी पनि देवी तैं छन् ,
जगत्र लाइ् पालन्य ती भई छन् ॥८॥
त्रिजूगिनारायणका नगिच्मा ,
शाकम्भरी देवि त तेहि विच्मा ॥
आगो त्रिजुग्को छँदईछ तांहां ,
श्रीविष्णुगङ्गा भन्यकी त जांहां ॥९॥
स्वर्णप्रयाग् मा पनि तीर्थ ठूलो ,
धर्मैं क पाइन्छ जहां त कूलो ॥
गणेशजी छन् शिरहीन भ्याका ,
निसुपाप हुन्छन् ज्व कहीं गयाका ॥१०॥
केदार्नाथ प्रभू जहां रहनु भो मन्दाकिनी छन् तहां ,
स्वर्गद्वार महोदधी सरस्वती श्रीदुग्ध गङ्गा जहां ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



पांच् पाण्डव् हरुका पनी मुरति छन् श्रीशम्भुजीका सँगै,
जुन् दर्शन् गरि मुक्ति पाइन्य भनी जान्छन् दुनीञा सबै ॥११॥
उखिमठ तिरथै मा छन् उखादेवि भन्न्या,
गउरि भन्यकि गङ्गा मध्यमेशोरि धन्न्या ॥
नगिच तहिं ब्रह्याकी छन ति आकाश गङ्गा,
पुगन्य जनहरू को गर्दिन्या पाप भङ्गा ॥१२॥
तुङ्गनाथ प्रभुका तिरथैमा,
छन् उखा भन्य कि देवि त धन्न्या ॥
रुद्र ईश्वर तहीं शिवजी छन्,
चार निश् रहन्य सब् कप्व गन्छन् ॥१३॥
गोपेश्व र्मा रुद्र गङ्गा बड़ी छन्,
नर्सिङ् दुर्गा वासुदेव् श्रो गरुड् छन् ॥
जोशीमठ् छ सिद्ध हेरुक थात,
ज तप् गर्न्या ताञ् बसी क्या छ बात ॥१४॥
विष्णु प्रयाग् तीर्थ बडो छ भारी,
गङ्गा तहाँ छन् धवला त पारी ॥
अलख्य गङ्गा पनि फेरि त छन्,
सब् ताहिं जान्या कन मुक्ति दिन्छीन् ॥१५॥
श्रापाण्डुकेश्वर महां हनुमानजी छन्,
श्रीयोगचण्डिजननी प्रभु वासुदेव् छन् ॥
जान्या मनुष्य हरुको हरन्या इ पाप,
वैकुण्ठ जान भनि तिन्कन लाग्छ छाप ॥१६॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



नन्द प्रयाग् मा पनि नन्ददेवी ,
मन्दाकिनी छन् नदि मा कि सेवीं ॥
नन्देश्वरी छन् अनि विष्णुनाशन् ,
जात्रू हरुको सब पाप तारन् ॥१७॥
कर्ण प्रयाग् मा पनि कल्प केदार् ,
पिण्डार्नदी आद् वदरी पनी सार् ॥
एकेक ई तीर्थ बडा भयाका ,
पाप्का हरण् शास्त्र महां कह्याका ॥१८॥

——❀——

प्रभुक्क जनम भ्याकी सूर्यवंशैक्क पूरी ,
जनम जनम का पाप् काटनाकी ति छूरी ॥
अतिरमणिय हो त्यो भक्तलाई अयोध्या,
सुरगण हरु जांहां बस्नलाइ् नित्य खोज्थ्या ॥१९॥
सरयुनदि जहां छन् रामजीकी पियारी ,
कलिकलमसमळ् लाइ् धून लाई तयारी ॥
बहुत नृपक्व अश्मेध् अमृत स्नान् गर्‍याकी ,
प्रभुचरणकमलका धूलि चक्क पर्‍याकी ॥२०॥
जहां छन् हन्मान्जी प्रभु क्व किर्ती गाइ रह्याका ,
सियाराम् लक्ष्मणक्का मुरति बहुतै छन् ति भयका ॥
पुरी सातमा जेठी मुगति जसक्को केटि बन्यकी ,
अयोध्या श्रीरामक्को प्रिय ख्व सब शास्त्रैल्य भन्यकी ॥२१॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



सीता लिई बन गई दशकण्ठ मारी ,
भारी यत्र भूमि क्व सबै अति दूर सारी ॥
श्रीराम कीर्ति कि बनायकि ती ढुकूटी ,
गर्ला स्यवा ज्वजन जोन्य छ तालु फूटी ॥२१॥

जोहुन् त्रैलोक्यका नाथ्
ब्रज बिच ख्यल्यका नाउँ जस्को जगन्नाथ् ,
पृथ्वी छोडेर जांदा
प्रभुक्व उहिं कलेवर् रह्यो भूमिको साथ् ॥
राजाइन्द्रद्युमन्ले
गरिकन तपले स्थापना यो गऱ्याको ,
साक्षात् वै विष्णु मूर्त्ती
जगत मुगति लाइ् नीलपर्वत् सऱ्याको ॥२३॥
साक्षात् लक्ष्मी जगत्की जननि तहिं रही
भांनसा रांधदीछन् ,
ठकुर्का भोग निम्ती बहु गुण गरि सब्
चिज् बनाई लिंदीछन् ॥
थोरै चिज् ले बहुत्साद् बहुत तहिं भयो
जो गयो पूर्ण पायो ,
भोग्मा छाप् लागनाले सरवर दुनिआ
चारई जात् ले खायो ॥२४॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



जुन्ठाकुर्का प्रसाद्को
बयन गरि नसकून् कुनै शास्त्र माहाँ ,
जुन्नैवेद् खाइ मात्रै
चतुर भुज हुन्या त्यसत्वओर् ठाँउ काँहाँ ॥
तिन्मूर्ती जो प्रभूका
बहिनि सहित भै बस्नु भ्याको द्यखिन्छ ,
एक् चोट् जो शिर्भ्कावस्
तब यम बहिमा पाप छैनन् ल्यखिन्छ ॥२५॥
इन्द्रद्यूम्न भुपाल रोहिणि क्व दुइ
मार्कण्डको तिन् तलाउ ,
गङ्गासेति भइन् वटे कृषण भ्या
श्रीचक्रतीर्थै नुहाइ ॥
लेऊ खुब् लहरी महोदधिजिका
रथ्को त जात्रा ह्यरी ,
मन्पर्दो गरि खाउ लाउ जगमा
आउनू पन्वैन फ्यरी ॥२६॥

प्रभूरामले रक्षको कूल मार्न ,
फउज् त्यो कपीको पनी पारितार्न ॥
नहोस् विघ्न ञा पारिलाइ् पुल्बनेर ,
भनी थाप्य शिव् रामईश्वर् भनेर ॥२७॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



काशी घखी जल उठायर जाह्नवीको ,
शिर्मा चढाउन सक्यो भन्य शम्भुजीको ॥
फ्यांक्रोस् त्ख कामरु लगेर समुद्र माहाँ ,
त्योमिल्न जान्छ पछि प्राण् छुवडि ब्रह्म जांहां ॥२८॥

तिन्का वरीं परि रह्याकत तीर्थ भन्छू ,
ठूला ठुला उ पनि थोरइ पो म गन्छू ॥
छोटो म ईश्वर चरित्र निखार्न सक्न्या ,
कैले थिआ अमर हेरु पनी त छक्न्या ॥२९॥

देवल् बाहिर का लछोमनजिको श्रीरामजीको दुई ,
ब्राह्मण् हत्य क पापनाश रिण मोचन् स्मेत चार्कुण्ड ई ॥
अग्नीको र अगस्ति चक्रतिरथै तस्तै महालछिमको ,
गायत्री र सरस्वती क्व तिरथै सात्फेरि सावित्रिको ॥३०॥

साध्यमृत्तीर्थ एक् भो घवल भितर का
शेष शिव् सूर्य ई तिन् ,
चन्द्रैको तीर्थ आर्को फयरि पनित गया
तीर्थ जम्नाजिको और् ॥
निलूतीर्थैं गन्ध माधव् तिरथ नल तिरथ्
और्यती तीर्थ जाई ,
श्रीरामेश्वर्क्व दर्शन् तहिं पछि गरन्
पूर्णफल् हुन्छ भाई ॥३१॥

गणेश् हनूमान् स्वमकार्तिकेश्वर् ,
श्रीअन्नपूर्णा अरु काशि विश्वेश् ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



फेरी जटाध भ्वंगराम ईश्वर् ,
तेतीस्त्रवटी दर्शन गर् ऋषीश्वर् ॥३२॥
श्रीराम् लद्दमणजी फ्यरी ति हनुमान्
सुग्रीव् गुरु पार्वती ,
ह्यूं पर्वत् र फिरी तहां सखि ग्वपाल्
श्वेत् विष्णु मादेव जी ॥
गौरी को दरशन् क्कटेश्वरजि को
फेर्काल भैरव् भया ,
तीर्थैं भो धनुषा महोदधि तिरथ्
रत्नाकरै स्नान् गया ॥३३॥
ब्रह्म् हत्या मोचतीर्थैं गवइ फ्यरि गयाट्
तीर्थ दुइ् सर्व तीर्थैं ,
दर्ग्येशन् भूपती भ्या लछिमिजि र जग
न्नाथ रामकुण्ड तीर्थैं ॥
लद्दमण् कुण्ड र चक्रतीर्थ हनुमान्
जनार्दनै लाइ् ग्यखी ,
श्रीरामेश्वर का परिक्रम महां
तीरथ् इ हुन् ल्यौ ल्यखीं ॥३४॥
राम् झोषा टिप्प माहां दरशन गरिन्या
नल् र सुग्रीवजी को ,
पद्मासन् लद्दिमजीको दद्दिण त जगनाथ्
ओर नारायणै को ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



सुग्रीव् अंगद्जिका दुइ् ड्ववकिल्व दुइ छन्
पाण्डवै कुण्ड एकू भो ,
दर्शन् पाण्डव् क्व ब्रह्माजि क्व गरित पछी
भद्रकाली नजभों ॥३५॥
बैजनाथ विमला अनिमाई ,
शिव् तलाउ महां लच्छिमि जाई ॥
तां पछी प्रभु श्रिरङ्ग नगिचू मा ,
काव्यरी नदि जहां तहिं बिचू मा ॥३६॥
चक्रतीर्थ पनि तांहिं नुहाई ,
नौषमा नवग्रहै पुज भाई ! ॥
जाउ् तहां घखि हरीव्वल खाडी ,
कुण्ड भैरवजिको सब छाडी ॥३७॥
जगाजगाका अरु तीर्थ गन्छू ,
जान्या सुन्या सम्म क्व मात्र भन्छू ॥
जटायुको तीर्थ भन्या क्व ठांऊँ ,
ब्रह्माजि ले होम गरेको नाऊँ ॥३८॥
शिवूकांची चउसट्ठि जोगिनि भया गणेशजी पार्वती ,
विष्णूकान्चि अनन्त तीरथ भया यस्ता कती छन् कती ॥
विष्णू शान्ति नृसिह दर्शन भयो लक्ष्मी र देसिंगरै ,
कामाची जगदम्बिका पनि भइन् बालाजि दर्शन् परै ॥३९॥
सर्वतीर्थ अज शेष वराह ,
पाप नाशिनि नदी क्व तराह ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



स्वर्ग गङ्ग र ग्वविन्द क्व दर्शन्,
फय गॅरुन् चरण तीर्थक्व पर्शन् ॥४०॥
अब् शम्भू प्रभुले सतीजि क्व शरि
बोकेर जांदा महां,
तिन्का अङ्ग गली गली गिरि गया
देश् देश माहाँ जहाँ ॥
त्यस्त्यस् ठाउँ क्व पीठ शंभु ज्व भया
जस्जस्ल्य तप्स्यागऱ्या,
कर्मै सींत म लेख्तछू तिरथ ती
जां भक्त हेरू तऱ्या ॥४१॥
पैल्हे आइ न्यपाल गुह्य खसिगो श्रीगुह्यकाली भइन्,
देवादी हरुले तपस्य गऱ्यको इच्छा पुरण् फल् दिइन् ॥
छाती कामरु मा खस्यो त्व्यपिठमा कामाच्चि देवी भइन्,
चक्रेश्वर्शिव भ्या त यक्षगणको इच्छा पुऱ्याई दिइन् ॥४२॥
काशी मा गइ तालु ता खसि गयो
देवी विशालाच्चि हुन्,
विश्वेश्वाशव छन् तपस्य गऱ्य थ्या
गन्धर्व ले पाइ गुन् ॥
पौर्बन्धन्ग्यश दाइ हृत्य कर्ण त खस्यो
त्यै पिठ् शिवा अम्बिका,
शम्भूजी त धनेश्वरै थिय तहां
सब्दैत्यगण्का निका ॥४३॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



काश्मीर्मा गइ ज्यू त्र ता खसि गयो
माई तहाँ शारदा,
अङ्धारेश्वर शम्भु किन्नर गणै
ले पाप लाइ मारदा ॥
छाला कान्यकुवज् महाँ खसिगयो
कङ्केश्वरी माइ हुन्,
दुग्धेश्वर्शिव छन् तहीं दशवदन्
ले पायथ्यो सर्वगुन् ॥४४॥
पूरण्गीरि महाँ त वाञ्भ्र गिऱ्यो
पूर्णा गिरी देवि छन्,
चन्द्रेश्वर्शिव छन् तपस्य ल्य बडा
भ्या अप्सरा का ति गन् ॥
अम्र्दाचल् गिऱ्य नङ् प्रकम्पिक शिवा
इच्छा मरु केश शिव्,
जां नारद् ल्य तपस्य ले खुसि गराइ
तिन्लोक डुलछन् सजीव् ॥४५॥
अस्ताचल् गिऱ्य्व दाहिना पनि त हात् कर्मेश्वरीदेवि का,
निद्रेश्वर्शिव छन् जहाँ तप गरी कृष्णै कि भैन् राधिका ॥
एकोर्देश त वाञ नाक गिरिगो सिद्धेश्वरीदेवि भै,
दम्भेश्वर्शिव छन् श्मशानहरुले तप्स्या गऱ्या ताहिं गै ॥४६॥
त्रिसन्देश ग्रुद्देवि मानेश्वरीजी,
त्रिशीरेश शम्भू यमै देखि रीझीं ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



कामै लोष्टमा करउ गो कामिनीछन् ,
तपस्या पृथीवी क्क कालेश शिव् हुन् ॥४७॥
कैलासमा दाहिना पाउ् गिरि कन दुरगा
पार्वती नाउँ ले भै ,
विश्वंभरशंम्भु ब्रह्मा तप गरिकन भ्या
सृष्टि गर्न्या तहां गै ॥
भृग्देशमा त उपल्लव दांत त गिऱ्या
मीनाच्चिदेवी तहां ,
सत्येश्वर्शिव छन् त धर्मल्य सबै
पाया तपस्यै जहां ॥४८॥
केदार्मा वाज्रहात् गो
पिठपनि त्यहिं भो देवि केदार केशी ,
कोटेश्वर्शम्भु ताहां
वरलिन्य त एकादश् रुद्र् तप्ल्य पेशी ॥
चन्द्रापुर् दाइ्न्य आंखो
त्यहि पिठ दुरगा सिद्धिकाली महादेव् ,
आकाशेश्वर्इ दिक्पाल्
वरमिलिकन ग्या त्यै तपस्या ल्य एक् खेप् ॥४९॥
श्रीपुर्मा तालु गिर्दा
पिठ भय्व तहिं श्रीदेवि भद्राच्चि बस्छिन् ,
कम्लेश्वर्शम्भु पुज्दा
वसुगण त बड़ा भै गया खूप लच्चिन् ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



एकावीरदेश नाभी
भगवति यक वीरा त पिठ् एक मन्न्या ,
हाट्केश्वरशम्भु पूज्या
इ सरपगणले भ्या कसै लाइ् नगन्न्या ॥५०॥
जालान्धर् तल्लवठ् गो पिठ पनि त्यहि भो
जालपादेवि तां छन् ,
शम्भू छन् तां पिशाचेश्वर तपगरि तां
कामदेव् मोज माछन् ॥
माल्लादेश् बाउँपाऊ
खसि पिठ भय्व मल्ला महा कालि देवी ,
भूमातेश्व प्रभ् छन्
अदितिसुत ल्य तैं पाय वर् नित्य सेवी ॥५१॥
कुश्लान्तक् केशखस्ता त्यहि पिठ त्यत्र मशान्
कालि बस्छिन् च्चिरेश्वर् ,
नक्षत्रैका गणैले तप गरिकन त्यै
भ्या ति आकाशका भर् ॥
दाइ्ना हात् देवि कोट् गो पिठ पनि तहिंभो
पूज्य भद्राक्षिदेवी ,
भानेश्वर्छन् त राशी तहिं तप गरदा
पाय वर्नित्य सेवी ॥५२॥
गोकर्णे बाजकान् गो
त्यहि पिठ तहिं भो भैरवीदेवि मान्छन् ,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



ईश्वर् तां छन् जलेश्वर्
तपगन्यन्थत विष्कम्भ आदी इ योग् हुन् ॥
मातूलेश्वर् त दाइ्ना स्तन गिरि त्यहि पीठ्
देवि योगेश्वरी हुन् ,
शम्भू हुन् दुग्धराजेश्वर ऋषिहरुले
पायथ्या तांहि सब् गुन् ॥५३॥
अट्टहास् देश् तल्वओठ् गो
त्यहि पिठ तहिं भो देवि भूमालिनी हुन् ,
शम्भूछन् सप्तभूतेश्
नन्दिगण ल्य तपस्यागरो ग्या सबै खुन् ॥
विश्वादेश् वाजतन् गो
पिठ पनि त्यहि भो देवि छन् भूवनेशी ,
शम्भू छन् कृष्णवर्णेश्
तप गन्य प्रभुश्रीकृष्ण ले चित्त पेसी ॥५४॥
राज्गृहे दाइ्ह्वयकूह्र् त्यहिं पिठ पनि भो
राज्गृहेशी भवानी ,
हर्णेश्वरशंम्भु वायूगण ल्य तप गरीं
पाइ वर् भ्या ति ज्ञानी ॥
माहापथ् दाहिनाहात् पिठ पनि त्यहि भो
देवि छन् पूर्ण चण्डी ,
विश्वामित्रेश्वरै छन् अपसरगण ले
तप् गन्याथ्या अखण्डी ॥५५॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



कोलापुर् ओठ गीं·यो तहिं पिठ त्य्व भयो
श्रीमहालक्ष्मिदेवी ,
शम्भू ता छन् श्मशानेश् गरुड ल्य तहिं वर्
पाइ भ्या विष्णु सेवी ॥
एक्पुर् दाइ ह्वा घुंडो गो यकपुर पिठ भो
देवि साध्वक्ति हुन् ती ,
उन्मत्तेश्वर्शिवै छन् पथर हरु ल्य सब्
तप् गरी पाय गुन् ती ॥५६॥
ओङ्कारेश्वर् उपल्लोवठ पनि त गि·यो
पिठ् त्यहीं मातृका छन् ॥
सन्तानेश्वर्शिवै हुन् कलपरुखहरु
तप् ल्य ज्या माग्यव दिन्छन् ॥
पुर् जाँहां त्यो जयन्ती कल्यज्व खस्य क ठांउ्
पिठ् र देवी क त्यै नांउ् ,
कल्पेश्वर्शम्भु तां छन् कुश तुलसि ल्य तैं
तप् गरी पाय खुप् नांउ् ॥५७॥
उज्जैनी रक्त ढेला खसि त्यहि पिठ भो
ताञ् महाकालिका छन् ,
झङ्केश्वर्शम्भु पूजी परवत सबका
नृप हिमाले भया छन् ॥
दाइ ह्वया चाइ ह्वया करङ् गो चरितपुर महां
पिठ् त्य्व स्वर्णेश्वरीं छन् ,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



वायव्येश्वर्व पूजा गरि ज्वगिनि क्क गण्
वर्ल्य पूरा रहन्छन् ॥५८॥
त्वीरींका पूरि भूँडी त्यहि पिठ दुरगा
श्रीयुगाद्या बसीछन्,
शम्भू छन् ती सहस्रै नयन भनि पुजा
मातृका हेरु गर्छन् ॥
दाइ्ह्लाकूहनू खस्यो हस्तिनपुरि बिच मा
पिठ् त्य्व चण्डेश्वरी माइ्,
सूसूखारेश शम्भू सुदरशनचकर्
मार्न्य भ्या तांहिं वर्पाइ् ॥५९॥
ऊडीत्वा शीर गीऱ्यो
त्यहि पिठ विमलादेवि यत्वेशमादेव्,
तप्स्या गर्न्या हनूमान्
तहिं वर मिल्यका टूल्व पाई गया वेग् ॥
फोक्सो गीऱ्यो प्रयाग्मा
पिठभय्व त्यहिं ताऊ् सुन्दरी माइ हुन् ती,
माहेन्द्रेश्व शिवै छन्
गइ तहिं दश औतार्ल्य प्या सिद्ध गुन् ती ॥६०॥
मिगौला विश्वदेश् मा त्यहि पिठ तहि भो
देवि भक्केश्वरी नाम्,
कूटेश्वर्शम्भु पूजी अति गुणि भइग्या
विश्वकर्मा त्यही ठाम् ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



मायापुर्मा फियो गो त्यहि पुर पिठ भो
देवि माया भन्या का,
पञ्चेश्वरशंम्भु पूज्या चउसठि शिवले
सिद्धि आफैं बन्या का ॥६१॥
मल्यागिर् बाउँकुम्ह् गो त्यहि पिठ तहिं भो
मालिकादेवि बस्ता,
कुश्दल् पारेश पूजी प्रचत-भुत र पिशाच्
दिव्य भै ग्या ति सस्ता ॥
मल्लागिर् चाक गीऱ्यो त्यहि तहिं पिठ भो
ताँहिं वज्रेश्वरी भै,
शम्भू योगेश पूजी वर मिलि सत्ययुग्
सब् ले मान्नू भयो गै ॥६२॥
सेन्देश् मा मूटु खस्ता
त्यहि पिठ त उमादेवि पाप्केश्वरै छन्,
तप्स्या गर्दा ग्रहै ले
वर मिलि त तहां नित्य आकाश बस्छन् ॥
मेरूपर्वत् गुदद्वार्
पिठ त्यहि छ कराली भवानी तहीं छन्,
सत्जिह्वेश्व संदा शिव्
तप गरि सब नाग् वीषधारेर बस्छन् ॥६३॥
दाइहूतिग्रो महेन्द्राचल गिरि त्यहि पिठ्
देवि ईशा भइन्ती,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



तारेश्वर्शम्भु पूजी
लक्ष्मि त बडि भै विष्णु प्या भैं गइन् तो ॥
वामन्पुर् वाजकुम् गो
त्यहि पिठ भइ कामेश्वरीदेवि ठूली ,
दांतेश्वर्शम्भु पूजीं
कमलहरु सबै पूजिया ती त फूलीं ॥६४॥
गर्भस्थान् हिर्णपुर्मा खास पिठ त्यहि भो
देवि रत्नेश्वरी हुन् ,
नार्देश्वर्का पुजाले सरस्वति वर पाइ्
हून ग्या शास्त्रका गुन् ॥
महालक्ष्मी पुरै मा करङ त गिरिग्या
तेहि पिठ् कामलाक्षी,
विकूटेश्वर्शम्भु पूजी वर मिलि तरिग्या
अष्ट सिद्धी त साक्षीं ॥६५॥
डँडाल्नू उद्यान्मा त्यहि पिठ त्रिपुर्सुन्दरि अनीं ,
शिवै छन् भवेंश्वर् म्यघ गणल्य वर्पायथ्य पनी ॥
छयाक्षेत्रै बांकी शरिर गिरि छत्रेश्वरि भइन् ,
पिशाचेश्वर्पजी भइरव ति आठ् भै गय बयन् ॥६६॥
यती शम्भूजी ले सति शरीर भैंमा छरि सक्या ,
विरागी भै ग्याका प्रिय विरह ले तप् गरुँ लख्या ॥
म नारी अब् छून्या छइन भनि जब् गर्न्य भय तप् ,
तपस्या तार्कासुर्ल्य गरि जिति लीयो ति द्यव सब् ॥६७॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



अब म गन्यर लिन्छु भारतै खण्डका देश्,
फरक फरक हुन्छ चालि बोली अनेक् भेस् ॥
अन्यक तरह पूजा देवताऽनेक हुन्छन्,
तस अरथ ति नामी तप्सिलै ले गनिन्छन् ॥६८॥
अङ्ग वङ्ग र कलिङ्ग र केरल्,
चीन गौड र किरांत र नेपाल् ॥
आन्ध्र आभिर विदेह र वाल्हिक्,
लम्बकर्ण कुरुक्षेत्र र मागध् ॥६९॥
सर्वेश् काश्मीर कामरूप्
विदरभ मलयान् पाण्डु सौवीर वङ्गाल्,
उज्जैनी चोल काम्बोज्
उतकल खुरसान् सीलहट् मद्र पाञ्चाल् ॥
मालव् कर्णाट् अवन्ती
खसहुन मरुदेश् हंस गुज्रात मुल्तान्,
कोशल् सौराष्ट्र तैलङ्
रिण अरबुद कीकट् र कोकण् र श्रैकान् ॥७०॥
महाचीन् महाराष्ट्र आर्यावरत् भो,
सइन्धव् इलाम् और बर्बर् विराट् गो ॥
कईकेय कुन्तल् अवर् ब्रह्मपुत्र,
सिंहल् शूरसेन् लाट्व कच्छ पुलिन्द ॥७१॥
ई देश देश हरुमा जति देवतीर्थ,
वन् पोखरी नदि र पर्वत बीच पर्छ ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



ई लेखनू सब क्व सकूछ स्वयंभु बाहिक्,
जान्न्या उनै प्रभुजि छन् गिरिजाजिनायक् ॥७२॥
क्यहि क्यहि सुनिया का तोकिया का लयख्याका,
भगत हरु तिरथ् यात्री लय डुल्दा घख्या का ॥
ऋषि हरुलय कह्या का क्यै पुराण् मा म भन्छू,
सब लयख्यन न भन्नू थोन्न थोरो म भन्छू ॥७३॥
उत्तरापन्थ की श्रीप्रभू मालिका,
कलक्कता पूर की दिव्य रुप् कालिका ॥
हिङ्गलाज् माइको गर्भवास् मेट्न्य गुन्,
विन्ध्यवासोनि ती कृष्ण की वैह्नि हुन् ॥७४॥
अरब् क मक्केश्वर मारवाड् का,
श्रीचन्द्रकुप् स्वामि कहोन्य वट्का ॥
पश्चिम् क रत्नाकर तिर्प्रभास,
श्रीनासिका पञ्चवटी क पास ॥७५॥
महाकाली तीर्मा
भगवति त ज्वालामुखि रहिन्,
शिलादेवी भन्न्या
शिल गडि महां बिच् रहि गइन् ॥
चिनींआ च्याङ्गरासो
तुलसिपुर पाटन् घवि भइन्,
ड्वटीकी माल्देवी
ढलख त्रिपुरासुन्दरि थिइन् ॥७६॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



चतुरमुख ल्य डाकी पृथ्वि को भार हर्न ,
भगत हरु क्व काम्लाइ् आफु लाइ् भोग गर्न ॥
प्रभुल्य रच्यकि द्वार्का पूर्ण ऐश्वर्य गर्न ,
स्मरण गरन्य जन्लाइ् यो जगत् सिन्धु तर्न ॥७७॥
बिच्मा प्रभू क्व बन्यकी अति दिव्य डेरा ,
हज्जार सोह गृहका चउतर्फ घेरा ॥
जां विश्वकर्म क्व सिपारत दील भर्को ,
नौलाखका गिनति हुन्थ्य्व जहां ति घर्को ॥७८॥
जां आइ इन्द्र कि सभा रुव पारिजात् को ,
आठौं निधी कुब्यरका वरुणे क्व हात् को ॥
सब् भर्ति जां मणि जुहार जड़ाउ घर्मा ,
जो क्वै थिया प्रभुश्रिकृष्णजिका त भर्मा ॥७९॥
एक् तर्फ तीर अठचालिस कोस् भया की ,
सारा यदूविर कुमार हरु रह्या की ॥
हाल् मा रह्या कि जल बीच महां ज्व द्वार्का ,
छैनन् अरु शहर मुक्ति दिन्या थ्व पार्का ॥८०॥
प्रभु कि अति पियारी मोक्षलाई तयारी ,
प्रतिदिन समझन्छू चित्तका बीच पारी ॥
तिरथ मुल प्रभूका पाउ छापा पऱ्या की ,
यति मुनि कवि सब्ले नित्य तारिफ् गऱ्याकी ॥८१॥

———✻———

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



तीर्थावली यो ह्व विभूति माला ,
बनाउन्या हुन् हरि भक्ति वाला ॥
बिचू बीचका तीर्थ क्यही भयाको ,
तृतीय अध्याय भई गया को ॥ ३ ॥

---

इति श्रीकविपतञ्जलि प्रणीते 'श्रीधीरादेश पातञ्जलतीर्थावली श्रीश्युद्धप्रकाशे' यत्रतत्रस्थतीर्थवर्णननामकतृतीयोऽध्यायः ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu

## अथ चतुर्थोऽध्यायः ।

भरत्खण्डका तीर्थ मा तीर्थ छानी ,
कह्यां और् कती छन् कती तीर्थ पानी ॥
त्यसै को पनी यो गन्याको प्रकर्ष ,
न्यपाल् हो तहाँ को बयन् सून पर्ख ॥ १ ॥
अब् नेपाल् यो पाशुपत्क्षेत्र भन्न्या ,
मेलो आयो तीर्थ जाका त गन्न्या ॥
वाहा पश्चिम् कालि देखा त पूव ,
सब् देव्ता ले मानिया को अपूर्व ॥ २ ॥
सात् गण्डकी पश्चिम छन् त यस्का ,
सात् कौशिका पूर्व तरफ् त जस्का ॥
खाल्डै महां सात मती बह्या को ,
नित्यै जहां पशुपतिनाथ् रह्या को ॥ ३ ॥
कालो सेती वृद्धगन्डी र मोदी ,
मर्स्याङ्दी पांच् त्रैशुली और मादी ॥
सात् गण्डक् ई पश्चिमै तर्फका हुन् ,
सात् कौशिक्का भक्त भाइ ! नाउँ अब् सुन् ॥ ४ ॥
कोसी काठ्याकोसि औ भोट्यकोसी ,
सुन् तावां की दुग्धकोसी र रोसी ॥
नेपाल् देखी पूर्व दीशा रह्याका ,
सब् पाप् हर्दै श्रीअरुण् मा बह्याका ॥ ५ ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



मध्यस्थल् यो नेमुनी ले त पाली ,
ई पृथ्वीको नाम् रह्यो तब् न्यपाली ॥
ठूलो जग्गा यो हिमाले क्व चीठ ,
देवादी का सब् यहां छन् त पीठ ॥ ६ ॥
मुक्तीनाथ् झारकोट् मा बसिकन प्रभु ले
गण्ड देखी बहाया ,
जल् सब्को पाप हर्न्या भनिकन तसलाइ
गण्डकी नाम् कहाया ॥
नाना रूप् चिन्हधारी पथर मुरति भै
गर्भ तिन्का बस्याका ,
नाशन् छन् मुक्ति पाउनन् भगतजन सबै
जत्ति ताहां खस्या का ॥ ७ ॥
पूजा ले पार हुन्छ यस भव ढ्यखि त्यो
बोकि बोकी लिया ता ,
पृथ्वी बोक्याक्व फल् छ त्यहि दिन सक्यता
दान् भइन् भूमि माता ॥
ध्यायो पूज्यो नुहायो जनम जनम को
पाप त्यस्ले चुहायो ,
फुल् लायो पानि खायो प्रति दिन त भन्या
कृष्णको दास् सुहायो ॥ ८ ॥
नैमिष् जान्हवि औप्रयाग् हरु पनी
दश् गुन् छ पादोदकै ,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



केवल् मुक्ति दिन्या छ चन्दन पनी
नैवेद्यता भन् यकै ॥
वर्णन् को गरि सक्छ पर्श क्व पनी
शालग्रामिका चक्रको ,
वैकुण्ठै पद मा निवास गरनन्
लेखा छ क्या इन्द्र को ॥ ६ ॥
बाबूको श्राद्ध गर्नन् ज्व क्वहि ज्य क्यहि काम्
नित्य नैमित्य गर्नन् ॥
दान् गर्नन् वा नगिच् मा त्यहि ज्व पथरका
पितृ साथ् भै ति तर्नन् ॥
घर्मा मात्रै छ ढुङ्गो सकलतिरथ हो
मर्न क्या विष्णुपद् गो ,
क्या बात् धन्न्यै शिला यो मरन्य वखत मा
पानि खाइ् मुक्ति भै गो ॥१०॥
एकादशीं ग्यखि पुढो व्रत छैन केहा ,
श्रीकृष्ण देखि दुसरो नहिं इष्ट को ही ॥
शालग्राम पाउ् जल ग्यखी ठुल्व तीर्थ छैन ,
तुल्सीं ग्यखी दुसरि पापूहरि कोहि भैन ॥११॥
देखूतै छूंदै तुलसि पाप् हर्न गर्छिन् ,
लामा मञ्जर् देखि विष्णू खुशी छन् ॥
विष्णू पूजा गर्नू तुलसी दलै ले ,
वैकुण्ठै मा बस्न पाउूला बलै ले ॥१२॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



शम्भूले विष खाइ गर्मि न सही
आई त्रिशुलले खिल्या,
जल् निस्क्योर तलाउ मा शिव सुत्या
नीलकण्ठ लाइ सुख् मिल्या ॥
त्रैशूल् जल् बहि आयको भनि इता
त्रिशूलगण्डक् भइन्,
नेपाल् लाइ परिवेष्टनै गरि दषिन्
त्रिशूलगंगा बहिन् ॥१३॥
श्रीशम्भु लाइ भेटन सूर्य गेछन्,
उन्ले पनी कुण्ड बनाइ हेछन् ॥
त्यो जल् पनी ता नदि भै गई छन्,
तादी शिवप्रा भनि तीं बही छन् ॥१४॥
वाग्मती मणिमती र नागमती,
इक्षुमत् शिवमती हरीमती ॥
सातऊँ पनि त पुण्यमती हुन्,
शेषमती मिलि प्रयाग फल् दिउन् ॥१५॥
प्रभावती और ग्वदावरी पनी,
बडा नदी उत्तरवाहिनी ई ॥
हन्माननद् पश्चिमतर्फ आउन्या,
इन्मा नुहाउन्या बहु पुण्य पाउन्या ॥१६॥
चार्व्यूहनारायण चार्दिशा बसी,
नेपाल मा मन्र्यंक्व पाप सब् कसी ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



गराउनू मुक्ति भनी बस्याका,
केवल् इ वैकुण्ठ घस्तो खस्याका ॥१७॥
दोलागिरी पर्वत वासुदेव् हुन्,
श्रीचक्रनेमी त वराहजी सुन् ॥
श्रीमत्स्य औतार इ चङ्गु भन्छन्,
फर्पिङ् प्रभू आफु अनन्त हुन्छन् ॥१८॥
सूर्यविनायक सिद्धिविनायक्,
चाबहिलीं सँग रक्तविनायक् ॥
काठ्मण्डुका मडुका त अशोक,
हुन् ति विनायक हर्दिन्य शोक ॥१९॥
शम्भूका पुत्र जो हुन्
सकलदुनिञको विघ्न हर्नू महां एक् ॥
सूर्यादी चा टुंकूचा
तिर बिच कमलाजी बडा यक् विनायक् ॥
नेपाल्का मुख्य ई हुन्
अरु बिच बिच श्रीगणेश् मूर्ति धेर्छन्,
ठीमी नेरा गणेश् एक्
सकल दुनिञका घाउ् खटीरादि हर्छन् ॥२०॥
अब सुन तिमि नाथ का त ताँती,
आदीनाथ च्वभार शैल माथी ॥
गोरख्नाथ् ग्वरखा मछिन्द्रना ता,
ललितापत्तन मीननाथ साथ्या ॥२१॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



आद्या दक्षिण कालि हुन् पशुपती का गुह्यकाली बड़ा ,
वन्काली तहिं भद्र रक्त अनि श्वेत् नील् कालि काठ्माणुका ॥
तारा सांखु कि देवपत्तन कि वागेशी र फर्पिङ् कि यक् ,
ई हुन् योगिनि का पुरा सुनकुरा औ मूर्त्ति जो जत्ति छन् ॥२२॥

मन्कामना और पलान्च्वकेय्या ,
श्रीभैरवी घाट महां बसैय्या ॥
श्रीविश्वकर्मा ल्य बन्याकि नाला ,
कालिन्च्वको थैं अति शून्य जाला ॥२३॥

रावण् ले अघि पूज्यको पछिलिया सीतापती राम ले ,
उन्कै वंश कुजायनी भइ रहिन् सद्भक्तिका कामले ॥
नेपाल्मल्ल भनी रजाइ् ति रह्यका वेला पुग्यो गै गया ,
ती देवी तुलजा क दर्शन गऱ्या निस्पाप सब् भै गया ॥२४॥

भद्रकालि टुँडिखेल् नटदेवी ,
श्वेत कालि चिह्ननन् बहुसेवी ॥
रक्तकालि त नगर्व पछिम् कुन् ,
लुच्मढी भन्यकि नीलकालि हुन् ॥२५॥

कङ्केश्वरी हुन् शिवदूति भन्न्य ,
बीजेश्वरी ता बगला ति धन्न्य ॥
नाथ् हुन् इ सब्का पनि टङ्क ईशान् ,
विष्णूमती पारि त जस्क छ थान् ॥२६॥

कान्तीपूर कि संकटा भगवती शोभा भवानीश्वरी ,
दुर्गा नोवटि अन्नपूरण पनी अन्नादि गर्छिन् भरी ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



नङ्सालूकी दुरगा टुडाल् भगवती भाट्भट्नि हांड्गाउँकी,
मान्मानेश्वरि लाइ् स्तुती छ म्यग्व छिन्मस्तापनी चांगुकी ॥२७॥

मञ्जु श्रीहाटकेशो भन्थकि भगवती
सिम्भु माहां रह्या की,
रुद्राणी खोकना की लुंभुं कि पनि महा–
लक्ष्मि नामा कह्या की ॥
हर्सिद्धा हरिसिद्धिका त धुलिखेल्
की भगवती ठेमिका,
बालकौमारि वराहि का पनि समेत्
मूर्ती सबै देविका ॥२८॥

गठ्देवी चापगाऊँ मनमयजु पनी
भद्रपुर् इन्द्र शक्ती,
श्रीचण्डेशी बनेपा पशुपति शितला
वत्सला ताञ् रह्या की ॥
देवी ध्योपूरकी और् विद्यावरकि कुशा
फुल्च्वकी देवि चम्पा,
सेती का तीर बारालहरि त त्रिपुरा
दोलषा मुक्ति सम्पा ॥२९॥

नील् वाराही बोज्य की सिद्धिदाता
चापागांउ् की वज्रवाराहि माता ॥
श्रीकामधेनू हुन् ग्वदाओरि शीर
संसारै को हर्दिन्या हुन् ति पीर ॥३०॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



सरस्वती टिङ्नि कि साङ्गिनायक् ,
सांगा तहल्चोक भइरवै एक् ॥
नीलकण्ठ नांउ् जलशयनै हरी जुन् ,
तीं सत्यनारान् मुगती दिन्या हुन् ॥३१॥
हांडोगाउँ वराह स्वप्न तिरथै
वैशाख लाग्दा ट्वखा ,
दह्चोक् इन्द्र जि को तलाउ् भइउमा
स्नान गर्न्य हुन्छ च्वखा ॥
चैत्पूर्ण्या पनि बाइस् प्रणालि ति नुहाइ्
बालाज्यु को शीतजल् ,
बाहौं वर्ष त सिंह अस्त भदऊ
गोदावरी पाउ फल् ॥३२॥
भीमृढुङ्गा का और तीन् पूर का तीन् ,
खोपासी की द्रौपदी रानि एक् हुन् ॥
जग्गा जग्गा भीम भैरव् जती छन् ,
पूजा जप् तप् गर्न्य का तीं गती छन् ॥३३॥
भैरव् नेपाल मा छन् बहुत पुजिय का कीर्तिमुख् देवपाटन् ,
लेले टीकाभईरव् कृतिपुर ब्रिचका बागभैरव् खडा छन् ॥
लून्या कून्या भईरव् बुगमति बसन्या पृथ्विनारान् हुन्याऊ,
पचली टेकू द्भमान् का सब भय हरन्या जाउ पाऊ कन्याऊ ॥३४॥
महाकाल भैरव् शह कान्तिपूर ,
बटुकनाथ् भ्यटौला लगन्खेल् दगूर ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



श्रीकालाभईरव् शहर्का त माझ्मा ,
सदा दर्शनै गर्न् जायेर साँज्मा ॥३५॥
नारान्हिटो चार्जुगका मुकुन्द ,
विष्णू मुरत् छन् अरु अन्धधुन्ध ॥
दक्षिण् ढ्वका का प्रभु नीलनारान् ,
जैसीघ्वल् छयौ वइकुण्ठनारान् ॥३६॥
वासूदेव् अट्कुनारान् प्रभूता ,
बांग्यामूढा प्रद्युमन् हुन् कि ऊ ता ॥
कान्तेश्वर्ले कान्तिपुर्यो ब्वलायो ,
आकाशभैरव् इन्द्रचोक् मा चलायो ॥३७॥
जैसी घ्वल् सँग कुमार् सहकाल् दिन्या छन् ,
श्रीकोटिलिङ्ग पनि पाप् सबको लिन्या छन् ॥
सेतामछिन्द्र पनि चन्द्र क्व मूर्ति भन्छन् ,
जैन् हेरु साक्यमुनि हुन् भनि फूर्ति गर्छन् ॥३८॥
ढोका महां नृपति का हनुमान दुइ् छन् ,
ठूलो प्रताप् दिन्थ नृसिंह पनी तिहीं छन् ॥
सिंहै सवार मुरती शिवको तहां छ ,
यस्तो अपूर्व महिमा अरु ठाम् कहां छ ॥३९॥
जगन्नाथ् प्रभू छन् विशन्घोल भित्र ,
वमन् भैरवै छन् अगाडी विचित्र ॥
इ मूर्त्ती सबै हुन् पछी थापिया का ,
बहुत् मन्त्र जान्न्या लय हुन् भावियाका ॥४०॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



ह्वेकन्तला टांस् अञ्जिना त चिप्रे,
लुते गणेश् लाइ सिंधु लिप्रे ॥
कान् दुखन्य त्रिन्मुग्ल ठ्वकेस् करूवा,
बांग्यामुढा गाड् किल्व दांत् मरूवा ॥४१॥
कीलागल् मा छ भ्यडा को त सीङ,
जाँदा तां छयौ दाहिन्या पारि रीङ ॥
त्यो छ जाज्वल् लाग्छ वेला कुवेला,
ठक्कर् लाग्या मान्छ्य ता पर्छ फेला ॥४२॥
फकिर्सिद्ध भेडा क्व सिङ् गाड़िया को,
भयानक् छ त्यो पत्थरै मै खियाको ॥
सुनो यस्क्व विस्तार लामू कथाहा,
बहुत् खूश भै मोज पाउ्ला अथाहा ॥४३॥
पाटन् महां क्वै अघि भूप हेछन्,
राती चिवा निम्ति ति डुल्न्य भेछन् ॥
पर्देश् ध्यवी काजि त आइ् पुग्ये छन्,
त्येस्कै कशंसो त्यहि रात् कुरे छन् ॥४४॥
काजी सुते छन् कज्यनी ल्य कोई,
तुल्यायको हेछ पियान्व पोई ॥
अहाइ त्यस्लाइ तँ काजि लाइ् हान्,
मानेन त्यस्ले प्रभुले दिया ज्ञान् ॥४५॥
आफै ल्य आंटी पतिको त घांटी,
निद्रा महां खड्ग लियेर काटी ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



आयो क्य मन्मा पछि यो गरीं काम्,
पानी खन्यायेर जपी छ राम् नाम् ॥४६॥
हा राम! हा प्रभु! हजुर्किन आज छोड़ी,
जानू भयो मकन प्रीति क्व सूत्र तोड़ी ॥
यस्तो गती हरि ल्य तिम्र क्य हा! गराया,
स्त्री का त हात घ्वखि हा! प्रभु हा! मराया ॥४७॥
एती भनीं कनत मुड्कि पिटेर छाती,
फेर् म्थाल् उघार्यर कराउँदि भै त्य्व राती ॥
गुहा गुँहार् च्वर ल्य काट्य छ काजि लाइ् आउ्,
मता सती बस्यँ कहीघउ भूप थैं जाउ् ॥४८॥
एतीं सुनी त नृपती दरबार आया,
काजो मन्या क्व समचार विहान पाया ॥
दुत् लाइ् भन्या न प्वलनू म न आइ् कज्यानी,
सब् कर्म गर्दि भइ त्यो सतितीर्थ मोनी ॥४९॥
राजा गई गन्य यकान्त कज्यानि सीत,
सांज्मा उसो अइल्य यो किन भो त रीत ॥
हामी च्यली यस्व उसो पनि द्वै तरफ् छौं,
यो बात् सुनी नृप ब्वल्या सँगिनी कतीं छौ ॥५०॥
रानी यौटी चौतरानी त यौटीं,
म जाइ् जान्छू बांकि हुन्छन् ति दोटी ॥
राजा बोल्या कैल्ह्य घ्वखू नू चरित्र,
शिव्रात्रीमा पिप्लखमा विचित्र ॥५१॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



यति सुनि नृप फर्क्या त्यो सतीलाइ् जलाया ,
नृप परखिरह्याथ्या पिप्लका पात् पह्लाया ॥
शिवनिसि जब आयो हर्यो पोसाक लाई ,
नृपति चढ्य पिपलमा रात्रिमा तांहिं जाई ॥५२॥
रानी चौतार्नि साहेब् दुइ पनि त तही
रात्रि माहां गयाछन् ,
नीलोबाती जगाई कज्यनि मरि भनी
फिक्रमानी न्वया छन् ॥
जांउ् दीदै आज कूजा नृपति क विह्यमा
सात्समुद्रै छ पारी ,
भन्न्दै हान्या अन्चेता रुख सम्यत तिनै
पुग्य सामुद्र तारी ॥५३॥
जग्यै मा दोटि जाई बहुत खुस भई
मांगलै गाउन् लाग्या ,
पोसाक् रुख् राखि राजा पनि वहल्यर गै
जन्तिका बीचमा ग्या ॥
देशी देखेर तिन् लाइ् दुलह्न तँ भइ दे
दुइ् घरी तिन्ल्य भन्दा ,
माहुर्लायेर पाल्की चढिकन दुलहो
भै गन्या सब्ल्य धन्दा ॥५४॥
राजा घुम्छन् ति माडो मुखह्यरि दुइको
घर्कहन्छन् दुल्हे लाइ् ,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



चौतार्नी विन्ति गर्छिन् दुलह्न त महाराज्
जस्त्व लाग्यो ग्व मै लाइ् ॥
ठिक् भन्छयौ रानि भन्छिन् दुलह्न त कुज्व यो
हेनछ राम्र हेछन् ,
जांउ् चांडो कुख्न्व वास्यो भनिकन ति हिंड्या
भूप झन् चांडूव ग्येछन् ॥५५॥
फेर् ऊडाया त्थ्य रुख् ता पुगि गय्व उहि ठांउ्
द्वै गया ठांउ ठाउ्मा ,
राजा उछेर जाई सुतिकन त रह्या
रानिले छोइ पाउ्मा ॥
आछु सप्ना बिगार्दी चिस्व किनत्यन्व हात्
ढाक्य न छ शिरक्ले ,
क्या स्वप्ना हो हुकुम् होस् भनिकन त भनो
सब् कह्या पेच् फिरक्ले ॥५६॥
तिमि र चउतरानी द्वैवटी रागढाली ,
पिपल पुजन गेछो हातमा ली कणाली ॥
गरन कनत लागे छो अरे भांति भांति ,
वरिपरि घुमि घूमी नील्व सल्काइ बाती ॥५७॥
अगतिपरि भन्याका ल्याइ बालक् जगायो ,
तिनकन त खेलायो सुत खानू लगायो ॥
गन्यउन्य कज्यनीको फिक्क पोली भनेर ,
म पनि तहिं रह्याछू हर्यो पोसाक् गरेर ॥५८॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



बिद्य ह्यरन कुजाको मन्सुवा तब् गरेर ,
रुख उडि पुगिगेछौ सात्समुद्रै तरेर ॥
तिमि भइ मगल्यानी म भआछू दुलोही ,
मुखम्यन्च तिमि हेर्न्या बात पेच्ता ठुलो भो ॥५६॥
मजिल्य घुम्यछु माडो दुलूहि लाइ लाइ अगाडीं ,
तिह्मयरु द्धवटि आयौ रे तहाँ जग्य छाडी ॥
अघि उछिनि म आआ रुख मा बस्न पाआ ,
तरि फिरि उछिनी ऐ यस्त्र स्वप्ना बताआ ॥ ६० ॥
शीत् का हुन् सपना अनेक् तरहका
देखिन्छ राती भनीं ,
ऊठ्या भूपति पक्कि ताँहिं जगटा
लात् मारदा भ्या अनी ॥
प्रात् मा चौतरिया बोलाइ नृपले
सम्चा सँबै यो कह्या ,
द्धैटै लाइ त देश् निकाल् गरि दिया
आनन्द मा तीं रह्या ॥६१॥
क्वै दिन् फकिर एक आइ नृप लाइ
विद्या सिकाऊछू भन्यो ,
राजा ले त्यन्यनन् त आज त्यसका
विद्याले पो काम् बन्यो ॥
डाक्या फकिर लाइ भूपति तहाँ
ज्ञान् सिक्तथ्या गुप्ति ले ,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



आर्काका जिउ मा अकाश बिच मा
जान्या बड़ा गुप्ति ले ॥६२॥
सागर्पारि पर्नी विहा त सकियो
माग्या दुलै जन्तिले ,
कन्याका पितृले भन्या ष्वइ सिंधुर्
हाल्न्या कहां ग्या ति ले ॥
ल्याऊ् कन्या पहिले दुलो सँग भई
ल्याई घखाँउ् छौं भन्या ,
कूजो ल्याइ घखाउनू त न हुन्या
कूरा त उल्टा बन्या ॥६३॥
दुल्वह्ह त न घखाई कन्य लाई दियेनन् ,
घुमन्य ति अघि माडो भूप तांहां थियेनन् ॥
जनति फिर्न्यर गै ग्या चीठि लेखिन् दलैले ,
शुघि क्क गल बँधाई भूप थैं भेजि तैह्ले ॥६४॥
राजा बैठक मा थिया तक्कहि दिन्
मयाल्का डँडाली महाँ ,
घांटी मा चिठि बांध्यको क्वहि शुघा
आई बस्यो है तहां ॥
पक्षीं खोलि ह्यन्या त वै दुलहि ले
लेख्या क्व हेछ कुरा ,
सिन्धु हौं भन्य आंउ्न पांउ् नतर और्
खोजेर जान्छू शुरा ॥६५॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



नृपति ल्य पनि लेख्या वर्ष दिन् भित्र आउली ,
आइन भन्य घखा देख् निश्चयै प्वैल जाउली ॥
तर म क्यहि रकम् मा अट्क्य को छू पियारी ,
तिमि कन लिन आंउन् सर्वथा छू तयारी ॥३६॥
यति ल्यखि त्यत्र शुघीका घांटि मा बांधि घण्टा ,
शुघि गइ नृपती लाइ् ज्यादि लाग्यो त्यत्र टन्टा ॥
फकिर सित त जल्दी जल्दि सीक्या सबै ज्ञान् ,
त्यत्र कुन्व पनि कह्या सब् गुर्ज्यु को राख्य त्यो मान् ॥६७॥
अब् जांचौं महराज् भन्यो फकिरले
ज्यू मा त सर्न्या कुरो ,
राजाका सँगमा कुकु र्यक थियो
फकिर्त कपटी पुरो ॥
मारी यस्न पस्कनु जै प्रभु ! भन्यो
भूप् ता कुकुर्मा पस्या ,
भूप्को लोत् पसि आफु डाक्यत्र अरुलाइ्
लौ ञा फकिर्ता खस्या ॥६८॥
यो देखी नृप ले त पाप तसको निस्केर जल्दी गया ,
पोल्यो आफनु लोत त्यस् फकिरले राजा अलत्रै रह्या ॥
उर्दी भो सब मार कुक्कुर भनी कान्कान् र कुन्कुन् चल्यो,
राजाको जिउ राखनू कठिन भो उर्दी त आगो बल्यो ॥६९॥
शूघा क्वै दुनिञा क्व तत्त्क्षण मरी आफाल्यको हेछ भैं,
राजा ले त्यव कुकुर देह पनि झट् छोडी पसीग्या त तैं ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



शूघा भै उडिग्या हराय्त्र जब डर् समुद्र पारी गया ,
रानी का नगिचै पुग्येर त्य खबर् विस्तार् बतांउ्दा भया ॥७०॥
चीठी लेखन लाइ जुक्ति पनि सब्
सीकाइ् दिया रानि लाइ् ,
आफ्नू लोत न पाउँदा दिन बित्या
तेही शुघी लाइ पाइ् ॥
उस्तै चीठि ल्यखिन् फिरी दुलहिले
पठाइ् दिइन् शूघि लाइ् ,
चांडै आँउ्छु भनी ल्यख्यो त्य-
अपराधी ले त्यही लोत पाइ् ॥७१॥
जब त उब्यर आयो रानि का खोपि माहां ,
नृप शरिर त्य भोग्को मन्सुवा गर्छ्र तांहां ॥
दुलहिल्य करजोरी विन्ति यस्तो जनाइन् ,
त्यसकन बहु सन्मान् ले सुविस्ता गराइन् ॥७२॥
म त दुलहि उ दिन् की ढाक्यको मूख मेरा ,
श्रवण बिच मलाई पार्नु भ्येथ्यो त्य कूरा ॥
म त अहिं क्व ह्वईन सात्समुद्रै क्व पारी ,
तिमिकन लिन आंउ्नू कर्म ठूलो छ भारी ॥७३॥
म त बहुत सिपालू उड्न सक्छू गगन् मा ,
अरु क्व शरिर बिच्मा पस्न सक्छू मगन् मा ॥
नतर अरु त आहां आउनू कोण्त्र सक्थ्यो ,
कपिवर प्रभु वाहिक् औंर्त जल्मै त्य्त्र बग्थ्यो ॥७४॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



यस्व हुकुम हजुर्को जग्य बिच्मा सुन्या थ्यां ,
घ्रखिन हजुर मूहार् बात मात्रै गुन्या थ्यां ॥
उठ्यर भय्व सवारी बात आधा सिधा भो ,
अब सन्यक्क हजुर्लै देखनू मन्सुवा गो ॥७५॥
सुन्यो येती विन्ती भयक्क त न राखेर गिनती ,
पशू ल्याउ् भन्दो भो नृपजन त सांढ् ल्याइ दिन्यती ॥
थिची मार्‍यो भेडो पस्य्व तस महां लोत् जब पर्‍यो ,
शुघा देखी प्राण् ता निकल्यर भुपालूको तहिं सर्‍यो ॥७६॥
जब नृपति खडा भ्या मन्त्र ले बांधि भेडो ,
लियर दुलहि साथ् भै आफु मा जो छ टेढो ॥
ललित नगर ल्याया वेस् गरी बाध्न लाया ,
शहर सब घिसार्‍या कुट् र पिट् सास्ति ख्वाया ॥७७॥
दुनञ सब खड़ा छन् गल्लि मा शस्त्र लोई ,
घिसियर हतियालै त्यो शरि गो त खोई ॥
तइ पनि न मर्‍याको फूटि अङ् सब् धुला भ्या ,
बखत बखत मा सो गर्छ तांहाँ त्यव भ्या भ्यां ॥७८॥
फूट्या हाड् चुँडिया नसा धुल्व भयो
मासू अबाज् भ्येन जब् ,
फ्यांक्या वाग्मति पारि शंख मुल मा
मर्दो न ज्यूँदो त्यव तब् ॥
जागी लागन लाग्य्व रात्रि बिच मा
दिन्मै पनी सो गर्‍यो ,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



स्नान् गर्नै पनि ता महाइ् भय्व तहां
लोक् ता डरैले मन्यो ॥७९॥
कुह्यन जब त्व्य मासू मन्त्रवाला फकिर्को ,
बहुत गुणि रहेछ आह्नि एक् कान्तिपुर्को ॥
तहिं बसि जपि मारी टाउक्व लैगी पुरै मा,
खन्यर तहिं घुसारयो कील गल्का सुरै मा ॥८०॥
आफू योगि भयेर सिद्धि मिल्यको श्रीवाग्मती मा परी,
तीर्थै पायर शङ्खमूल पनि भो मन्स्या क्व खान्या गरी ॥
चित्तै शुद्ध न भ्या तिरथ्ल्य क्यगरोस् जस्तो मती सो गती,
सीताका रिसले शुघा मरय भजी गङ्गा क्व फल् भो खती ॥८१॥

तीर्थावली यो ह्व विभूति माला ,
बनाउन्या हुन् हरि भक्ति वाला ॥
नेपाल मध्ये इ क्यही ल्यखीयो ,
अध्याय यो चौथ्व जती घखीयो ॥ ४ ॥

इति श्रीकविपतञ्जलिप्रणीते 'श्रीधीरादेश पातञ्जलतीर्थावलीश्री३युद्धप्रकाशे' नेपालीतीर्थवर्णननामक श्चतुर्थोऽध्यायः ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu

अथ पञ्चमोऽध्यायः प्रारम्भः ।

नेपाल् मण्डल मध्य कान्तिपुर यो
श्रीराजधानी पुरी ,
सोख् ऐश्वर्य विचित्र भोग हरुकी
मानू बन्याकी कुरी ॥
तेस्का बिच् चउतर्फका क्यहि कह्यां
द्यौता तिरथ् जान्यका ,
अब् भन्छू क्यहि समझि पाटन तरफ्
द्यौता हरु मान्यका ॥१॥
यो जो लालित्य पत्तन्
तिन शहर महां मानियाको जनैले ,
जांहां छन् कृष्ण स्वामी
वर वरणिनि ली पुर् उजाल्या तनैले ॥
सिद्धीनायक् जहां छन्
मरुतसुत भया मूर्त्ति जो नर्हरीको ,
सालिक् जोगेन्द्रमल्लूको
अरु पनि त चमत्कार्छ नाना परीको ॥२॥
मूर्त्ती छन् धेर्गणेश्का अन्यक तरहका
सूनका छन् त धारा ,
आठौ दिश् मातृका छन् बउध चइत्यका
मूर्ति देखनू छ सारा ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



वाराही वाग्मती मा क्यहि पुरब गई
चण्डि चामुण्डका छन् ,
पुर्का पूर्वै कुमारी नईरित दिश मा
श्रीमहालक्ष्मि बस्छिन् ॥३॥
ब्रह्माणी छन् ति पश्चिम् नखुनदि तिरकी
वैष्णवी हुन् कहन्छन् ,
इन्द्राणी शम्भुरानी भनिकन पनि ई
बीच बिच् मा रहन्छन् ,
स्वठ्नारान् हातिनारान् भइरव हरु और्
नासलादी बहुत् छन् ,
पाटन्का देवताको यति भनि गणना
गर्न सक्न्या क्पो छन् ॥ ४ ॥
नान्मूढा बुद्ध ठूला बउध चइत एक्
सिम्भु भन् आदि भन्छन् ,
जित्पुर्का पाचमान्या अरुत यति भनी
बुद्ध सब् कोप्व गन्छन् ॥
नारान् ले अवतार्ग-याक भनि यो
नाँउ् लेखियो बुद्ध को ,
दश् औतार महां नवौं भनि जग-
न्नाथ्जी भया शुद्ध को ॥ ५ ॥
मत्स्येन्द्रनाथ् कन पनी इ त बुद्ध भन्छन् ,
जो जान्न्य शैव हरु सूर्य भनेर गन्छन् ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



लोक्पालना कन भया जब लोकनाथ,
जैन् हेरु नाम मिलदा गन्य बुद्ध साथ ॥ ६ ॥
दक्षिणायन हुँदा त बुग्मता,
उत्तरायण त पाट्न को गती ॥
नुन् नखानु हुन्य रथ् प्रभु बस्ता,
सूर्य हेर निध्व रोगन घस्ता ॥ ७ ॥
ब्रह्मादि तिन् देव् यक्र मूर्ति भन्छन्,
रथ् मा त सात् हाँस् वृषताद्दर्य गन्छन् ॥
ब्राह्मण् लय वेद् बोलि चलाइ हुन्छ,
इन् लाइता बुद्ध त मूर्ख भन्छ ॥ ८ ॥
ई सिद्ध हुन् गवरखनाथजिका त गूरु,
नेपाल आय गवरखेश्वर शूरु शूरु ॥
भिक्षा दियेन कहिले ब्रलदा अलख्ख,
रिस्ले प्रचण्ड भइ संभ्कि लिया भ्कलक्क ॥ ९ ॥
नेपाल का पक्रडि नाग् सब बांधि ल्याया,
जाई मृगस्थलि बसी तिन लाइ् वछ्याया ॥
पानी परेन जब भो अनिकाल देश् मा,
यो जानि मन्त्रि हरुले गन्य बुद्धि तेस्मा ॥१०॥
जैसी पराडीत धामी बहुदिन क बुढो
देशका बात जान्न्या,
क्वै अक्रल् धेर्भया को क्वहि गुणि बहुतै
ध्यान्ल्य देवादि मान्न्या ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



सब् लाइ् जम्मा गराई बहुत तरह ले
हेरनू बुध्नुलाया ,
यो दुर्भिक्षै क कारण् कति पनि न बुझी
सब् जना बीलखाया ॥११॥
श्रीराजा ति नरेन्द्र मल्ल नृप लाइ्
धन्दा बहूतै पऱ्या ,
हाती मा चढि रात रात डुलदा
निद्रा र भोक् सब् मऱ्यो ॥
एक् दिन् काठमण्ड मा त राति डुलदा
यक् सिद्ध का घर् न्यरा ,
ज्वै प्वैले गऱ्य को सुन्या यहि कुरा
ठान्या पुग्यो काम् म्यरा ॥१२॥
बन्धुक् भन्न्य रहे छ सिद्ध त्यव अघी
शिवमार्गि आचार्यवही ,
बौद्धै मार्ग महां गये छ पछि त्यो
जान्या बहूतै स्वही ॥
राजा ले भ्वलिपल्ट डाक्न दुत ग्या
डराइ आंउदो भयो ,
खामस् आदर ले स्वध्या यहि कुरो
थापी लगन् सब् कह्यो ॥१३॥
गोरख्नाथजि आइ् मृगस्थलि महां
नाग् आसनै बांध्य छन् ,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



तब् यो वृष्टि भयेन छ ह्य महाराज् !
रिस्ले त पाप् ठान्य छन् ॥
इन्का छन् गुरु कामरू पिठ महां
श्रीमत्स्यनाथ् राज्कुमार् ,
आया तीं भन्य गोर्खनाथ उठनन्
जान्या छ यो दुःख भार् ॥१४॥
यतिमुनित्यत्र सभाले हर्ष भो भूप बोल्या ,
तिमि बहु गुणि रेछौ बेस् होला बात खोल्या ॥
कस्व भइ जनम्या छन् ई दुईको रह्या छन् ,
कचहरि सुनि पाओस् दुःख अब् पो गया छन् ॥१५॥
बन्धुक् कर्ज्वरि विन्तिगर्छ नृपथैं
धेर्शास्त्र पर्मानले ,
क्वै दिन् स्वर्ग महां सभा बिच महां
धौता गया सानले ॥
ब्रह्मा विष्णु शिवादि सब् तहिं थिया
शंभू त हांसीब्बल्या ,
भन्छन् सब् हरिले त मोहिनि भई
दैत्यादि लाई छल्या ॥१६॥
त्यै मूर्ती ह्यरनू क मन्सुब म्यरा
माधव् ! देखाउनू हब्रोस् ,
लौ बेस् भन्नु भयेर त्यैं दवि गया
सब् लाइ भई गो ब्यहोस् ,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



त्यै सुन्द र्द्यखि यो नगिच् वघत्रिचा
मान् बसन्तै भयो ,
त्यैं बिच् सुन्दरि रूप विष्णु क्र द्यखी
शिव्को त सुध्बुध् गयो ॥१७॥
काम् मोहित् भइ शम्भु जाइ परदा
भाग्या हरी स्त्री भई ,
ज्यादीं भो भनि चक्रले शिवजि को
लिङ् छेद् गऱ्या बीज् गई ॥
लिङ् को पूजन भो पछी हरिजि ले
बुझाइ् लिया शम्भु ग्या ,
त्यो बीज् निष्फल भो भनी हरिजि ले
हातमा लिई डुल्न्य भ्या ॥१८॥
शम्भू पुत्र मिलुन् भनी अनजनी
क्वै स्त्री तपस् गर्द थी ,
डाक्या केशरि नाम बानर तहीं
बोल्या त्यहीं बीज् मथी ॥
यो लैगीं तिमि अञ्जनी गरभ मा
प्रवेश् गराइ् द्यौ भन्या ,
वायू डाक्यर यो त गर्भ बिचमा
राख् द्यौ बड़ा वीर्बन्या ॥१९॥
लैगीं बानर ले त कान बिचमा हाली दिया बीज त्यो,
वायूले त ठ्यगानमा लगि दिया धेर् वर्ष ताहीं बित्यो ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



बाबू तीन भया हरी उपकरी हनुमान को जन्म भो ,
निःसङ्ग ल्य जनम् हुँदा जनमभ तप् ब्रह्मचर्यै रह्यो ॥२०॥
त्यो वीर्य रूप्यर त हात ध्वया नदीमा ,
माछा ल्य खाइ रह्यको क्व गरोस् महीमा ॥
जल्हारि ले पकडि भूप थञी पुऱ्यायो ,
खायेर रानि क्व त रज् तहिं गर्भ पायो ॥२१॥
तै निखेन भन्येर गोबर लिई हातमाडदा विष्णु ले ,
तत्क्षण् गोरखनाथ शम्भु अवतार् तिन्के अगाडी मिले ॥
तब् दाज्यू इनका गुरू भनि जहां दण्डोत लाइ् आउनन् ,
छोड्नन् आसन नाग भागि महाराज् जल् वृष्टिलाइ् पाउनन् २२
यति सुनि नृप खुस् भ्या त्यो सभा खारिजी भो ,
अब कसरि ति सिद्धै लाइ ल्याऊनू य्व मन् गो ॥
अघि दशरथ भुप्ले युद्ध गर्दा शनी थैं ,
खुसगरि बर पाई सुख् गरायाथ्य यो भैं ॥२३॥
म पनि जिउ दिई ती सिद्ध लाइ् ल्यांऊछु भन्न्या ,
हठ गरि त्यहि बन्धुकूलाइ् ब्वलाइ् क्यै नगन्न्या ॥
गन्य सब यहि कूरो ल्याऊन मत्स्येन्द्र लाई ,
कस्व गरि कन होला कामरू पीठ जाई ॥२४॥
बन्धुक् ब्वल्यो हे प्रभु ! जाइ ल्यांऊला ,
हजूरको मन्सुब म पुऱ्यांऊला ॥
सहाय चाहिन्छ भनेर राजन् ! ,
कर्कोट नाग् मन्त्यर ल्याय्व ताजन् ॥२५॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



ललितपत्तन को त ज्यापु ललित्या भादगाउँ का भुप् भया,
नाग् साथी लिइ बन्धुकादि हरु चार्फक्कि भंई ती गया ॥
नाग्ले रत्न गऱ्यो त बीच बिचमा खोला महाँ पुल् भयो ,
चारै त्यै घशमा पुगीकन बस्या सहाय गर्दै रह्यो ॥२६॥

भूपका पुत्र त पाँच् थिया बुझि ह्यऱ्या
चीन्ह्या र मत्स्येन्द्र लाइ्,
नाग् लाई भन्य भूपका उदरमा
पस् सानु भै तांहिं जाइ् ॥
मार्नू छैन तुल्याइ रोगि तन लाइ्
आउ्लास्त कामुपा लगाइ्,
भन्दा रोम प्रमाण अन्न बिच जाइ्
पेट् मा पुग्यो भूप् ल्य खाइ् ॥२७॥

शुलको रोग् नृप लाइ् भयो सुकि गया
हात् पाउ पेट् ता फुल्यो ,
नाना औषधि यत्न निष्फल भया
तिन्को त बाटो खुल्यो ॥
परदेशी क्यहि जान्द छन् भनि लग्या
माग्या क घूंला भनी ,
बाचा बन्धन सत्य ले गरि तहां
ओषत् गराया पनी ॥२८॥

झार्फुक् पैह्लय गरेर ओषति दियो बन्धूक ले भूप लाइ् ,
छाद्दा सूक्ष्म भयेर नाग निकल्यो सुख् भो भन्या अब् मलाइ् ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



ल्यौ क्या माग भन्या सबै सँग बसी त्यै पुत्र माग्दा भया,
उत्तम्पुत्र दिनू बड़ो कठिन भो लै जाउ् बचन् गै गया ॥२९॥
यक्लास् मा भ्यटि यो सबै कुन्व कह्या विन्ती गऱ्या सिद्ध थैं,
जान्छू म तर रून्य छन् इ जननी यो रूपले जान्न त्रै ॥
चोला छोड्यर मौहि रूप गरि म आउन्या छु डाक्यौ भन्या,
आया चार जना फिरी कन जहाँ चोखो जगा तब् गुन्या ॥३०॥
लगन्खेल बिच्मा बनायेर चौका,
कलश् सूनको तांहिं राखेर भोका— ॥
गऱ्या जप् निशीमा ति भूप् बन्धु जाई,
रुमाल् पाटको हात दीयो भुपाल् लाइ् ॥३१॥
जप् गर्थ्यो प्रतिदिन् प्रभू क अवताऱ्याको जसै जानियो,
दिग् बन्धन् गरि चार्दिशा कलशमा मौही क स्वर्मानियो ॥
ढाक्नु झट्ट रुमालले हजुरले म बोल्न्य छैन भन्यो,
राजा शुद्ध भई बस्या जप गऱ्यो आउन्या व्यला तब् बन्यो ॥३२॥
कलश् महां जब् पस्यथ्या मछिन्द्र,
भूपालका नेत्र बसी छ निन्द्र ॥
भ्रमर् उडीगो नृप ता भुले छन्,
रिसाय्व बन्धुक् प्रभु ता डुले छन् ॥३३॥
होस् राखनू होस् महाराज फेरी,
खुस्काउनू भ्या फिरि उति खेरी ॥
खराप जाला मिहनत् भन्यो जब्,
आर्को पटक् मा पनि खुस्कि गो तब् ॥३४॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



धेरै चेताइ भूप् लाइ् जप गरन बस्यो
जब् पस्यो मोहि तांहां ,
राजाको देखि निद्रा घुर्च्याटि दिय्व ग्वडा
ले छ्वप्या नत्र काहां ॥
राजाको पेट कोप् भो मन खजिचि त्य्व काम्
पूर्णता गर्न लाग्या ,
धातूका मूर्त्ति भित्रै कलश बिच धरी
पूजदा दुःख भाग्या ॥३५॥
वैशाखमा श्रीपशुनाथ लाई ,
आर्या तिरथ्का जलले नुहाई ॥
पूजा लगाइ् ब्राह्मण भोज गर्नू ,
भन्थ्या मछिन्द्रै किन दुःख गर्नू ॥३६॥
यो आज्ञ पाई पशुनाथ लाई ,
वैशाखमा रुद्रि पढी नुहाई ॥
अगम्यरूप्ले गइ गोरखेश्ले ,
पानी पऱ्यो पाय छ सुख्ख देश्ले ॥३७॥
द्वै मत्क त्यो बन्धुकले त तिन्लाइ् ,
पूजा गरायो दुइ मार्ग लिन्लाइ् ॥
पूजारि राख्यो तिनका त बांडा ,
सुन्चाँदिका भूपल्य राख्य भांडा ॥३८॥
बन्दोवस्त गरी सबै नृपतिले
बन्धूकका साथ भै ,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



यात्रा पूजनहेरुको दुनिञ लाइ्
आनन्द दान्या सबै ॥
द्यौता डाक्न्य रुयरीं घुचेटि दिय को
गोडाल्य भूपूको त कोप् ,
सम्झया कै थियव बन्धु ले नृपति थैं
विन्ती गऱ्यो छोडि खोप् ॥३९॥
हजुर्लाइ् मञोले प्रभू लाइ छोप्ता ,
छ्वञा थ्यां पयलें उठ्याको ह्व कोप् ता ॥
हजु र्ता मलाई दया गर्नु हुन्छ ,
त्य्व अप्राध मेरो मलाई ब्यगुन्छ ॥४०॥
मेरा उपर्छ भन्य हे महाराज् ! करूणा ,
काटी बक्सस् गरनु नर्क महां न रुना ॥
सूनी भुपालल्य त्य्व अन्तकरन् क्क बात ,
त्यो पाप् तँ लाइ कतिछैन हुँदैन घात ॥४१॥
बन्धुक् ब्वल्यो भूपतिको त मन्सा ,
पूगेन ता धर्म रहन्छ खुन्सा ॥
लात् लाग्व मार्नू परन्या चितायो ,
काट्यौन ता हे महाराज् ! रिसायौ ॥४२॥
पीठा क्क म सालिक ल्यांऊछु भूप !,
काटेर त्यस्लाइ् रिसले त खूप ॥
प्रतिज्ञ पूरा हुन्यछ हजुर्को ,
मलाइ् पनी पाप क्क जान्छ झर्को ॥४३॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



लउ भनि नृपती ले कीर्त्य मूर्ती गिराया ,
मरि गय्र त्य अचार्ता भूपत्य मन्मा पिराया ॥
म पनि अब न बांचू भन्न्य मन्ली भुपाल्ले ,
शरिर छ्वडि दिया छन् तत्त्वणै मा अकाल्ले ॥४४॥
ती देवका भक्त दुवै हुनाले ,
सब् धर्मले पाप सबै धुनाले ॥
राजा र बन्धुक् दुइ मुक्ति पाया ,
मछिन्द्र का पाउ दुइमा ति आया ॥४५॥
अपूर्व यात्रा त न्यपाल माहां ,
यस्तो जगन्नाथ विना छ काहां ॥
रय्मा धमा भै त्यहि नाग बस्छ ,
पाङ्ग्रा महां चार्भइरव् क्व गच्छ ॥४६॥
यस्तै अनेक् देव् ललिता नगर्मा ,
बस्छन् अनेक् तीर्थ पनी वगर्मा ॥
अब् भक्त पत्तन् क्व बयान् म गर्छू ,
थोर्शास्त्र धेलौकिक भ मं पर्छू ॥४७॥
हन्माननद् क्व गिरदी भइरव् क्व पालित् ,
देवल् र सुन्दर विहार त्य पूर्ण लालित् ॥
श्रीमङ्गलेश्वर प्रभू ल्य गन्याकत्र मङ्गल् ,
हो त्यो अघी विमल नाम गन्याक्व जङ्गल् ॥४८॥
श्रीसूर्यनायक प्रभूल्य त विघ्न हर्दा ,
जांका ति नाग र सबै सुख भोग गर्दा ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



आनन्दले भजदछन् हरिका त पाऊ,
श्रीभक्तपत्तन महां सुख खोज्न्य जाऊ ॥४९॥
श्रीवालिमकेश्वर प्रभू अइश्वर्य भन्र्या,
श्रीकालभैरव अनेक विपत्ति हन्र्या ॥
धन् धान्न्य पूर्ण गरन्या तुलजा भवानी,
तब् तां रहन्छ दुनिञा अति मोज मानी ॥५०॥
बिस्कयाट उत्सव जहां गरि लिङ्ग ठाडो,
आउछन् सबै दुनिञ ह्यर्न न मानि टाढो ॥
घ्यौता तिरथ् सब तहां गनि सक्न्य को छ,
सून्या घ्यय्या कत्र कयहि लेवुँ कि भन्न्य यो छ ॥५१॥
दश्दिशमा भिन्न भिन्नै घ्यञल घ्यवल मा
मातृकाका त गन्छन्,
पांचूछान्या घ्यौञ भित्रै जगत कि जननी
सिद्धिलक्ष्मी ति भन्छन् ॥
तिल्माधव् वंशगोपाल् हरुल्य सुखियका
घर्घरै मा रहन्छन्,
श्रीदत्तात्रेय गुर्ज्यू हुनु हुन्य हुन्यले
ज्ञानि सब् छन् कहन्छन् ॥५२॥
निलकण्ठ नांउ् जल् शयनै हरी जुन्,
तो सत्यनारान् मुगती दिन्या हुन् ॥
विशङ्खनारान् बस्य चक्रनेमी,
पर्वत् महां हुन् भनि जान तोमी ॥५३॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



अब् नेपाल महां बडा भगत ले
ईश्वर्प्रसन्नै हुँदा ,
थाप्याका प्रकटै पनी त भयका
क्यै फल् दिन्या जाइ् छुँदा ॥
कोही मन्त्र क सिद्धिवाल् पुरुष ले
थापूना गऱ्याका पनी ,
जम्माई कहिया त मुख्य भयका
सामान्य मा क्यै अनी ॥५४॥
अब सदर न्यपालका जत्ति शाखा नगर्छन् ,
तहिं रहन्य जना जो तीर्थ सेवा ति गर्छन् ॥
तस अरथ तिनैको नाम तप्सील लेख्छू ,
खलि कपुर गराऊन् सकन्य छैन म देख्छू ॥५५॥
सानागांउ बन्यपा लुभू र धुलिखेल्
ठीमी पनौती च्वभार् ,
ख्वकनाच्व ख्वंकना र वुग्मति ठ्यच्वो
फर्पिङ् च्वपु मंद्रपुर् ॥
चापागांउ् र सुनागुठी किसिपिढी
तिष्टुङ् र चित्लाङ् पनी ,
हांडीगांउ् नङसाल् बलम्बु सतगोल्
ई दुइ् त थाङ्कोट् मनी ॥५६॥
पुलूचोक् नाला र हलूचोक् थरमथलि नगाउ्
सांघु लेले र चौकोट् ,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



सांग्ला पांगा बड़ेगांउ् ठवहिलि कृतिपु–
शङ्खु नकूदेश् नुवाकोट् ॥
बालागांउ् मछिगांउ् भो बउध क्व गिरदी
वोड्य प्याङ्गांउ् र पालुङ्,
बूलूगांउ् चप्लिगांउ् भो अरु चिच चिचका
समझि समझी क्व हालुन् ॥५७॥
खँडपुर ख्वउपाटन् ठैव जित्पूर गोर्खा,
ग्वकरण हरिसिद्धी चांगु खिन्च्यात टोखा ॥
पुरब तरफ दोल्खा मालिगांउ हांडिगाउ् वोक्,
जगतकि ठकुरानी बस्तछिन् ती पलान्चोक् ॥५८॥
जति जति इ नगर्का भेकमा छन् त गांऊँ,
भनिकन न सकीन्या ई सबैका त नाऊँ ॥
तहिं तहिं रहन्या जन् जौन जौन् तीर्थ मान्छन्,
जउन जउन द्यौता लाइ् पुजागर्न जान्छन् ॥५९॥
इ सबकन नमस्का दण्डवत् दीन्नगाई,
चढि परवत भन्ज्याङ् माइ् द्यौरालि लाई ॥
कहिं चुनि कहिं कामधेन् नाग् महांकाल् ध्यरैछन्,
ति कन पनि नमस्का चारदिशामा म्यरैछन् ॥६०॥
दह पनि दुइचा छन् सिद्धले झीकिया का,
इ पनि तिरथ जानीं स्नान गर्छन् त पाका ॥
भगतपुर छ सिद्धै पोखरी को त भूप,
टउदह पनि चोभार्को बयान् को छ खूप ॥६१॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



धापाखेलको नागको हो दहै त्यो,
हातीवन् को ग्वाल्दहै शुद्ध भ्ये थ्यो ॥
बिच् बिच्मा का को गनी सक्छ साना,
धेरै यस्ता छन् मिठापानि खाना ॥६२॥

—※—

तीर्थावली यो ह्व विभूतिमाला,
बनाउन्या हुन् हरिभक्तिवाला ॥
नेपालका टाप्टिप तीर्थ लेख्यां,
अध्याय ता पांचउँ भो ख्व देख्यां ॥ ५ ॥

इति श्रीकविपतञ्जलिप्रणीते 'श्रीधीरादेश पातञ्जलतीर्थावली श्री३युद्धप्रकाशे'
नेपालतीर्थवर्णनो नाम पञ्चमोऽध्यायः ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu

## अथ षष्ठोऽध्यायः ।

पशुपति प्रभु जो हुन् शुद्ध कैलासवासी ,
जनम जनमका सब् हर्दिन्या हुन् ति फांसी ॥
परम निरगुणै हुन् ज्योति लिङ्गै कह्याका ,
हरि विधि शिव नाम्‌ले एक मूर्त्ती भयाका ॥ १ ॥
अब म पशुपतीको वर्णनै गर्छु सून ,
हृदय बलन्य बाती आफनू सोहि गून ॥
सुनिकन मथिलीनू शास्त्र का यो सहीमा ,
जगत क धनि चिह्नू ध्यू भन्ञो जो दहीमा ॥२॥
सन्सार्यों रवि, चन्द्र, इन्द्र, प्रभृतो
सात्‌लोक पाताल् पनी ,
जल्मा डूबि निराल भै प्रलयमा
दुइ् बांकि थिया अनी ॥
ब्रह्मा विष्णु रजस्तमो गुण चड़ी
वीवाद गर्दा भया ,
मालीक् म जगको बनाउन्य भनी
ब्रह्मा कराँउँदै रह्या ॥३॥
म पो हूँ जग लाइ पालन गरी राख्न्या जगतमा डुबी ,
सब्‌लाइ् कामलगाइ् अरिष्ट त भगाइ् येस्तो मथैं छ खुबी ॥
यस्तो यो झगडा हजार्वरष भो शम्भूजि ले जानियो ,
द्वै का बिच् निकलेर जोति सुत भैं लामू भई तानियो ॥४॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



चारोव बँढदो अती ठुल्व भई दृष्टी न पुग्दै गयो,
हर्लें कोशभरी ति भाग्यर गया ज्योती अनन्तै भयो ॥
आकाश्वाणि भयो ह्यब्रह्म! तिमिलाइ हङ्कार भ्येछ खडा,
जन्तूलाइ जनमाउन्या भन्न भनी त्यत्तील्य क्या हौ बडा ॥५॥
हे विष्णो ! तिमि पाल्दछौ जगतलाइ
कस्को क्रिमत् चिन्दछौ,
जो यो जोति क अन्त्य पाइ कहुला
वै पो बडा बन्दछौ ॥
यो सूनीकन ब्रह्म ले हरिजि लाइ
पातालमा जाउ भन्या,
आफू मास्तिर अन्त्य खोजन भनी
सात्लोक नाघ्दै गया ॥६॥
भेट्या काम्ध्यनुलाइ कुशलकन स्वधीन्
सन्मान् गरिन् ब्रह्मको,
काम् सोधिन् र सबै कह्या कुन्व तहां
अन्त्यै स्वध्या सम्मको ॥
यो हो श्रीशिवको त लिङ्ग, म जहां
चढाउ छु दुद् छेउमा,
अन्त्यै पाञिदईन हे प्रभु ! जहाँ
काखमा त जस्की उमा ॥७॥
ई छन् बन्धुक पुष्प केतकि जपा
फुल्मा पियारा इ हुन्,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



आफू फर्कनु होस् भनिन् ति गउले
ब्रह्मा ब्वल्या फेरि खुन् ॥
ढाट्नू मैल्य पन्यो तिमी हिंड संगै
साछी बसीद्यौ वहां,
हिंड् तँ केतकि पुष्प जांउ् तब भन्या
गाई ब्वलिन् फेर्तहां ॥८॥
ढांटनू अधिक पाप छ अरे,
पितृता सब नरक् महां परे ॥
झूट बोलन्यक्क सत् सब जान्छ,
धन् र जन् पनि त पाप ल्य खान्छ ॥ ९ ॥
एकान्त मा पाप् लुकि गर्छु भन्छौ,
ई देख्न्य लाइ् कुन् छयउ राखि गन्छौ ॥
पाप् धर्मका बाह इ साछि हुन्छन्,
ज्या ज्या गऱ्याको गनि लेखि लिन्छन् ॥१०॥
आकाश वायू रवि चन्द्र आगो,
पृथ्वी र मन् चित्त त सांघि लाग्यो ॥
पानी र दिन् रात्रि र सांज दोई,
बस्छन् इ ता कर्मक्क साछि होई ॥११॥
येती सुनी ब्रह्म ब्वल्या ह्यधेनू !,
आपत्ति मा यो म्यऱ्व बात लीनू ॥
ब्राह्मण् र गाइ्को उपकार गर्दा,
झूटा क्क पाप् छैन विपत्ति पर्दा ॥१२॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



ला बेस् भनी सब् मिलि फर्कि आया ,
विष्णू त पाताल् बहुदीन धाया ॥
शेष् लाइ भ्यटाया सतकार पाया ,
विस्तार यो सब् स्वधदा बताया ॥१३॥
शेष् भन्छन् हात जोरी हजुरक र म्यरो
एक ज्यू हो विचारीं ,
विन्तीं गर्छू क्यहीं बात् ग्व शिव क्व मुरती
अन्त्य पाउनू छ भारी ॥
बिचमा नाग् लपटि हेछन् मकनत ति फुकी
कोश चालिस् उडांउछन् ,
ता देखी फेर्कतीं छ पहिल्य तिनिहरू
आग्नि लाई बुडांउछन् ॥१४॥
जानूहोस् जिद्दि छोडी विनति म्यःव गडोस्
लौ भनी विष्णु आया ,
देख्या धेनू र ब्रह्मा फुलहरु सबती
झेलको मेल्व पाया ॥
सोध्या ब्रह्माल्य कूशल् कस्व कस्त्र भय्व है
कामको थीति आफ्नू ,
हाम्रा काम्को त विस्ता मं मुखल्य क्य भनू
इन्सितै सोधि राख्नू ॥१५॥
विष्णू बोल्या इमान्दा क्यहि कुःव गरदा
साच्छि चांइ दैन भन्छन् ,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



लुच्चा झुट्टा पुरुष् ले अरुकन छल लाइ्
साछि ग्वाहा कहन्छन् ॥
लौ धेनू क्या दुखीथ्यौ भन भनि भनदा
अन्त्य पाई इ आया ,
लौ फुल् हेरु बताऊ फुल हरु ति ब्वल्या
ब्रह्म ले अन्त्य पाया ॥१६॥
विष्णू मैले त देखीन भनि शिर झुकाइ्
हान्य भैं जब् मलिन् भ्या ,
आकाश् वाणी त शिव्को जब भय हरिलाइ्
साछि ई चार किन्भ्या ॥
कान्धेनू धिक तिम्रो सकल जग पवित्रै
गराउन्या लवाभैं ,
लोक्मा खुसबी चलांउन्या तिमि फुल हरु सब्
झूट बोल्यौ गँवाभैं ॥१७॥
हेकाम्धेनो ! तिमीले
मुखल्य झुट ब्वल्यौ मुख् अशुद्धै असत्तौ ,
होला है पुष्प जात् हो
तिमिहरु कन मैलाइ् चढाउन्या अभक्तै ॥
हे विष्णो ! खेद मान्नू
परदइन तिमी लोक मा पूज्य होला ,
येती वाणी सुनाई
गगनतल विसे बन्द भैग्या ति भोला ॥१८॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



ब्रह्मा र विष्णु य्व सुनी स्तुति गर्न लाग्या,
हे शंभु ! हामिकन मायल्य शुद्धि भाग्या ॥
गर्नू क्य हामिल्य कृपा बकसै नजर्होस्,
पाल्छौं हजूर क्र हुकुम् न हवस् त बेहोस् ॥१६॥
येस्तो स्तोत्र सुनी सदाशिव पनी
त्यै जोतिका बीचमा,
रूप् देखाइ दिया ति ब्रह्म हरिलाइ्
कामधेनु नाजीकमा ॥
पद्मासन् शिरमा जटा-मुकुट बिच्
गंगा शशी पंचमुख्,
बान् चांप् शूल् डमरू र नाग गहना
देखी भयो द्वै क्व सुख् ॥२०॥
बाजाकाख् तिर पार्वती कन दृख्या
त्रैलोक्य-मोहन् स्वरूप,
काञ्ची कुण्डल बाजु कङ्कण कड़ा
नाना भुषण् ले अनुप ॥
चार्बाहू बिच पाश अंकुश बरा
भीती भवानी दृखी,
लाठो पसून्य भञी प्रणाम् स्तुति गन्या
कत्ती नराखी स्यखी ॥२१॥
त्यत्ती ख्यरै त्य्व रुप ता शिवले दबाया,
लिङ्गै भई तहिं चतुर्मुख रूप् बनाया ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



पीठ्का उपर् गउरिले त अँगाल्व हालिन् ,
त्यो जल् हरी परि बस्यो भइगो प्रणालिन् ॥२२॥
बोल्या सदाशिव म हूँ सबको त ईश ,
हे ब्रह्म ! सृष्टि तिमि अब् गर छोडि रीस ॥
हे विष्णु ! पाल तिमि सब् जग लाइ गिन्ती ,
यो सूनि ब्रह्मल्य गऱ्या शिव थैं ख्व विन्ती ॥२३॥
जल्मा डुब्यो जगत यो जल शोस् दिनू होस् ,
तब् म इ प्राणि जनमांउ् हरि ता गरुन् पोस ॥
बेस् लौ भनी गणपती रवि अग्नि जन्माइ् ,
पानी स्वसाइ् दियर तब् पृथिवी नजर् आइ् ॥२४॥
बोल्छन् सदाशिव म बस्छु ख्व शुद्ध थल्मा ,
यैं रूपले बहुत काल ख्व पुण्य बल्मा ॥
पूजा सबै गर तिमी यहि जोति रूप्को,
पुष्पाऽक्षता र नइवेद् दिप गन्ध धूप्को ॥२५॥
जब् द्वापरान्त कलिजुगल्य छ्वला दुनीञा ,
राजा हरू पनि त म्लेच्छ हुनन् ति मीञा ॥
दबून्या म छू तहिं न्यरा पृथिवीतलैमा ,
पाप् हून्य छ बहुत तीन् हरुका बलैमा ॥२६॥
ब्रह्मा गोर्कण जानन्
हरि पनि त ढला पर्वतै मा ति सर्नन् ,
भाग्न्या काम् और गर्नन्
इ गउ पनि सधैं ञाहिं आइ् दूद झार्निन् ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



यो जानी म्लेच्छ हेरू
 ष्वरस्यर ह्यरनन् देखनन् तब् ख ज्ञोती ,
तत्क्षणमा मुक्त हूनन्
 म त पशुपति भै बस्न्यछू बोल्य येतो ॥२७॥
हेब्रह्मन् ! सृष्टि गर्दै रहु तिमि दुनिञा
 पाल विष्णू जगत्लाइ् ,
ञाहीं पूरी बसाऊ सुवरण खचितै
 प्राणिका ता भगत् लाइ् ॥
येती आज्ञा भयो जब् सब कुन्व पुगदै
 गो भयो यो सबै बात् ,
खोर्सी पृथ्वीं घखो जोत् सब ति नृप हरू
 मोक्ष भ्या म्लेच्छ का जात् ॥२८॥
ब्रह्माले जानि गोकर्ण घखि उठ्यर आइ्
 रत्नका लिङ्ल्य ढाक्या ,
विष्णू आयेर कालो पथर क मुरती
 ताहिं मास्तीर राख्या ॥
ब्राह्मण् लाई लगाया पशुपति पुजन्
 ठूल्व उत्सव् चलाई ,
श्रीविष्णू ले दुनीञा भगत हरु क्व सब्
 पाप दीया जलाई ॥२९॥
तल्ला ओडार को जो पशु क्व छ मुरती
 जो छुनन् ढोग दीनन् ,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



त्यस्ता अन्नी मरी फे जंनम जनममा
क्या पशूजोनि लीनन् ॥
स्नान् गर्नन् वाग्मतीमा पशुशरिर छुवई
देखनन् पशूपती लाइ,
नाचनन् शिव्का अगाडी शशि मुकुट धरी
झट्ट कैलास जाई ॥३०॥
जो गर्नन् त प्रदक्षिणा शिवजिको
यज्ञादि फल् क्या निको,
दण्डोत् गर्न्य ज्वहुन् त पक्षि जिमिमा
पांउछन् ति पद् ज्ञानिको ॥
वै माथी स्तुति पाठ् गरी हरघरी
पूजा क सदौम् भरी,
ती हुन्छन् प्रभुका त पार्षदगणै
फे र्जा नआउन्या गरी ॥३१॥
जो रोगी छन् त दुःखी विकल शरिर भ्या
पीडियाका दशाले,
शत्रूले पेलियाका नृप भयल्य कही
मान देखी खसाले ॥
ठूला उत्सव् गन्यामा अरु क्यहि मनका
मत्लपी काम छोला,
दर्शन् पूजा प्रभू श्रीपशुपतिक गरोस्
कामना पूर्ण होला ॥३२॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



तीर्थावली यो ह विभूतिमाला,
बनाउन्या हुन् हरिभक्तिवाला ॥
उत्पत्ति जोत् लिङ्ग क्व यो कहीयो,
ईश्वर्चरित्रै क्व भयो बहीयो ॥

पैहै श्रीशंभुजी ले सति शरिर छरी
जीमिमा आइ वैराग्,
तप्मा बैठ्या म पत्नी छुन्य छजिन भनी
सब् विषे को छूवड़ीदाग् ॥
तेस् बिच्मा तारकासु तप गरन्य भयो
वर्दिनू ब्रह्म आया,
वर्माग्यो दैत्य ले ता न मरूँ पऱ्यव भन्या
शम्भु ले पुत्र पाया ॥ १ ॥
शम्भू त्यस्ता रह्या का सकल जिति लियो
दैत्य ले तीन लोक्मा,
धेरै काल् बीति जाँदा सब गण द्यवता
बस्तथ्या ज्यादि शोक्मा ॥
ह्यूँ पर्वत् की कुमारी भइ सति जनमीन्
तप् गरीन् शम्भुजी कै,
धौता को यो चतूऱ्याञ् लगि दिय तन लाइ
शम्भुजी का नजीकै ॥ २ ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



आंउथिन् रोजरोज् टहलमा रुजु रहि शिवका
चाकरी ले रिझाइन्,
पुत्रीका भावनाले क्रम सित तिन ले
काख मा बस्न पाइन् ॥
ढाक्कै आयो उमेलैं सब द्यव ति मिली
मन्त्रणा यस्त लीया,
जाउन् काम्देव् रती ली शिवकन त ब्यधुन्
बेस् भनि भेजि दीया ॥ ३ ॥
जसै गउरि हांसदै शिवजिका बसिन् काखमा,
पियान्व गरि शम्भु ले मुख मुसारदा चाखमा ॥
पछाडि बसि कामले जब त बान् प्रहारै गऱ्या,
उदेक भयन शम्भुलाइ् किन इन्द्रियै भुल् पऱ्या ॥ ४ ॥
थप्या फिरि त द्दस्त्रबान् करपुऱ्याइ काम्देव कान्,
विवेक छ्वडि मन् तहां विषय को लियो त्यस्ल्य ठान् ॥
कयहा यस्त भयो भनी ह्यऱ्य प्रभूल्य चारै दिशा,
द्यख्या जब त कामदेव्कन रिसाइ पाऱ्या दशा ॥ ५ ॥
तृतीयनयनै खुली बल्यर अग्नि त्यो भस्म भो,
गइन् डरल्य पार्वती रति रुजिन् बडो शोक भो ॥
खसम् तिमि त पावली यदुपती क छोरो हला,
डराइ द्यवता गया तपगरी रह्या ती भला ॥ ६ ॥
त्यहीं गयर चाकरी शिवजिको गऱ्या देवले,
तपस्य गरि वर्मिल्यो विह्य भयो बड़ा पेचले ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



प्रिया कन लिई प्रभू जब डुलून्य भ्या देशमा ,
ति देवहरु सब् गया गरन चाकरी तेसमा ॥ ७ ॥
तब तहिं घखि शम्भू गौरि साथ् भै डुल्यामा ,
हिमगिरि क यत्र काखमा देखि शम्भू भुल्यामा ॥
श्ल्यषमक वन बिचमा वाग्मती को चलाई ,
चहुँवर वन माहाँऽनेक फल्को फलाई ॥ ८ ॥
अघी कोहीं काल्मा क्वहि नृप मुसलमान् मृग शिकार् ,
गरीं जाहां आयो गयत्र जल पिई वाग्मति क्व पार् ॥
ज्वरो आयो वन्मा समझि फिरि मन्मा त त्यहि जल् ,
मरी ब्राह्मण् त्यो भो फिरि गन्य्त्र तपस्या जल क्व फल् ॥९॥
रहेछ नांउ् नन्दी तप गन्य्त्र यत्र मन्दी शिव महां ,
वइशाख् पञ्चाग्नी सुति रह्य थ्यत्र माघ् शीत जलमा ॥
बहुत् वर्षै बीत्या शिव खुसि भई आइत्र त्यहि ग्या ,
घखी आह्लाद् पायो शिवजि वर माग् तँ भनन्य भ्या ॥१०॥
भगत् माग्यो तेस्ले त्यत्र दिइ रुप आफ्नू गरि लिया ,
भन्या घ्योता आउनन् स्व जन मकनै तँ कहि दियास् ॥
यती व र्दी शम्भू गउरि सँग भै श्लेष्मक गया ,
नदी तीर्मा जाई फिरि गउरि लाई क्यहि कह्या ॥११॥
अब तिमि बस जाहीं देवता खोज्न आउनन् ,
तिमि जब कहि घ्योली देव् मलाई भ्यटाउनन् ॥
मइल्य कह्यँ तिमी लाइ् गुह्य कुरा खसोली ,
टुनिजल्य तिमि लाई भन्न्य छन् गुह्य काली ॥१२॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



यति बचन प्रभूले प्यारि लाई अहाया,
उपर गइ सदाशिव् त्यो वनै लाइ् सहाया ॥
मृग हरु त अनेक् जात् खेल्न्य हयाछन् त्स्व वन्मा,
हृदय बहुत खुस् भै बस्नु भो तेहि वन्मा ॥१३॥

अम्बा केरा खजूरी कटहर नरिवोल्
आंप दारीम् बिमीरो,
चाकुसी ज्यामि चंखत्रो भ्वगट्य मलयगि-
र्लसि काफल् निभारो ॥
डुम्री टूनी र साधन् जगर कुटमिरो
साकिन् भोर्ल्य खिर्रो,
शङ्खत्रो जल्लिबिर्भो बयर सिपलिकान्
बांभ खस्रू अमारो ॥१४॥

नारङ्गी सुन्तला स्याउ्
बडहर अमला ज्यामनू जाम्न्यमान्द्रो,
काग्ती निब्वा र किप् भो
भकिमिल्व तिमिली आरु अम्फी धत्रारो ॥
सीमल् ओख फलांट् शाल्
तिंदु पन्यरु मइनफल् तमाल् ताल हिम्ताल्,
दाख् ऊखू का बहुत् जात्
बर खयर र निम् धूपि श्रीखण्ड का डाल् ॥१५॥

मन्दा पाट ल् अगस्ती सजिउन टट्यलो
लांकुरी बांस् निगालो,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



भोर्लो अम्ली फरींडो चिउलि र मलहो
धेर्लता को अँगालो ॥
खुर्पानी ऐंस्यलू भो कनिक्य ठुल्वकुरो
कांग्य्र चुत्रो शमी भो ,
दाल्चीनी आरुबखूडा सिरिस अमनसे
औ कंदम्बै जहां गो ॥१६॥
सत्तीशाल र लोत् सतोबयर भो भुजूपत्र हिंग्वार वेल् ,
कालो सेति र काठ् पञ्जू पिपल भो पाखर् अशोक् कैथि भेल् ॥
पारीजात पियाल् सुपारि र पलाश् मोवा मलायो खरी ,
सल्लो अर्जुन देवदारु र उतिस् बैंस् काभ्र आंक् पाखरी ॥१७॥
वर्रो हर्रो र क्वैराल्
कटउँज कमला चिन्ड्य केश चिलाउन्या ,
नारान्पाती बिजैसार्
म्यहल पनि त नासूपाति सौर् औ बिलाउन्या ॥
रीठो लाकु कंपासी
हड्यबयर बकाइनू सिलङ्गी मलायो ,
यस्ता नाना अनेक् रुख्
घखि शिवजि क्क मन् ताहिं बस्नू भुलायो ॥१८॥
कैंजल् अचंल् रुइस् दा भिंगनु र छतिउन्
साज् महेल् औ गिनारी ,
घोरेटो पानिपोथ्रो दुदिल्व र रुधिलो
रक्तचन्दन् खमारी ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



हाकूलाल् बज्रदन्ती खनिजु अजइपाल्
गोल दारिम् घँगारू ,
रुद्राक्षे सानुपात्या मढिल्व बडविही
बांस मा श्रेष्ठ तारू ॥१९॥
फलामकांडो मडिलो पुवाल्या ,
आंखातरूवा अरु भालुकांढ्या ॥
राजवृक्ष अखौल्व वदाल् र कागत्यै ,
वल्ली कहन्छू अब मत ग्वाक्कै ॥२०॥
गुर्जो बेत् नागवल्ली तरुल र गुफलो गीठ्व भ्यागुरं भ्वलैं ,
राती सेतीं ग्यडी पान् कनत्रिरनु र बल्ध्याङ्न्व घुर्रो वसन्तै ॥
चाभो पाङ्ग्रो र हड्चू सिंगट्व चरचऱ्या ओं विराली र पूर्णी ,
कुक्कुर्डाइनू र पिप्ला विरि अरखु गुधेर्गानु काउल्हो असूर्नी ॥२१॥
गोलकाक्रि बाखूऱ्या लहरो इ दुइ् भ्या ,
बाट्टलपात् पूर्णनवा भई ग्या ॥
एक् सग्रखण्डे भन्य को छ कोही
पोथ्रा क्व जात् क्यै म कहन्छु सोही ॥२२॥
भैंसयकांढ्व जव्यलो चितु सिश्नू ,
वीहिं प्यागुनु कचींड्व र किम्बू ॥
सनइरु ध्वविनि आंक् र अरारी ,
कूरिलो अरिड थाकल भारी ॥२३॥
जव शिवजि ल्य खुश् भै डुल्नु भो तेहि वन्मा ,
रहनु मइल्य कुनूरूप्ले भनी आय्व मन्मा ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



फुलक्व द्यखि तमाशा खुशिवले भ्येर हर्ष,
टिप्यर क्रमल्य वन्मा गर्न लाग्नू भ्व पर्श ॥२४॥
चांपो जूहो मालती कन्कचम्पा,
वेली चूवा गन्धराज् चीन चम्पा ॥
इन्दीव कंल्हा कंमल् रातजाई,
वार्मास्याऽनेक् श्रो गुलाब् शुद्ध जाई ॥२५॥
रातो सेतो द्वै धतूरो कणेल् भो,
गाभा भैंचम्पा ग्वदाओरि फुल् भो ॥
केतक् ठाडो केतकी श्रो कंपासी,
गाइ तीघान्या कुन्द मन्दार खासी ॥२६॥
लङ्कासानी गोल्सजन् शङ्खपुष्पी,
विष्णूकान्ता चोरपुष्पीं क्व खुसबी ॥
द्वारे चांग्या श्रो त्रिसन्ध्या दमन् भो,
देखो त्यस्तो फुल् सदाशिव् क्व मन्गो ॥२७॥
लाहून्या श्रो ग्यान्तिका चीनिञा फुल्,
पैञ्जाकेश गुंजमुज्या तुलिस बाकुल् ॥
बन्धुक् कूमुद् बाँसफुल् वन्चमेली,
खस्नू चुल्स्या कर्णिकार्की त वेलीं ॥२८॥
इन्द्रकमल् गुणकेशरि टक्कर्,
हाड्यलसुन् क्यवरा र धसिङ्गर् ॥
सूर्यकमल् गजवेलि जयन्ती,
बावरि खुप् खुशबो दिन्य हुन्तीं ॥२९॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



सेपत्री र सिकन्धरी मखमली सुन्पाति सौगन्धिवाल्,
तारामगडल सुँप् अपुत्र र जुंध्या गूशस् जवापुष्प फुल् ॥
आशारे गिरिकर्णिका अजमरी द्रोणपुष्प सूपारि फुल,
भैरव्पाति र स्वर्ण थूथिर कुसुम देखी भया शम्भु भुल् ॥३०॥

चडइ हरु रव देखो वन् महां खुप् तमाशा,
पशुपति प्रभुजी का आँउन लाग्या त हांसा ॥
वरपर उड्यका ती पक्षि को फौज देखीं,
बसनु भान तहीं मन् गै गयो देखि पेखी ॥३१॥

हांस् मूजुर् भग्यन्व चिमे जुरेलि ठ्योवा,
काकाकुल् गउँथलि कोकल्या र कौवा ॥
हूहूचिल् चम्यन्व धनेश् बटै जलेवा,
क्वैली को सुनिन्य बहूत बोलि मेवा ॥३२॥

भद्राई ढुकुर चुञ् शुघा चखेवा,
चिल् सारो सिमकुखुरो र वन्परेवा ॥
माटीको लुंइच्य बकुल्ल्व लामुचुच्चे,
जलडूकु कलचउँडो र प्यूंन्वबुच्चे ॥३३॥

सारस् बाज् बाहुनिचरी र म्याम्र्यान्या भो,
लाम्पुछ्र्या तितरि कन्याङकुरुङ् र टुरों ॥
धोबीनी त्वरिचन्व डांफ्या भार्य चङ्के,
हुट्टीट्यांउ् घरव्य प्रभुले चरा असङ्खे ॥३४॥

भूंडीफो लांट्वक्वसयरो र जम्ल्यकाठो,
बौडाई कट्यन्व बगेन्व गिद्धनाठो ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



न्याहूलो कुलढुक बाढि काल्यफिष्टो ,
चाखूरो मुहुनल ल्वाँख्य त्यो कनिष्ठो ॥३५॥
क्वैशलो खरानिचरी र भैरवी भो ,
लांहांचे लाट्वचरि सुन्क्वसेन्व श्यामो ॥
पट्टू भो शनिचरि सूभि अग्निटनूटन् ,
तुलूगांडो म्वति चुपिचल्ल्व च्चिलम्य भन्छन् ॥३६॥
यस्ता अनेक गुण युक्त घसी त्य्व वन्मा ,
बाघ् भालु बानर बँदेल बुवास्व गन्मा ॥
नेक् जात का मृग हरू बस्यका मगन्मा ,
मृग् मै बसूं भन्य भन्नी तब आय्व मन्मा ॥३७॥
एक् सिङ् त्रिनेत्र पद एक भया क्व रूप ,
श्रीशम्भु को भय्व त्य्व मूर्ति त दिव्य रूप ॥
मृग्फौज का बिच महां शिव खेल्न लागा ,
छत्तीस्सये वरष ग्या सब चीज जाग्या ॥३८॥
मृग् का फौज् छन् पछाडी प्रमथगन भन्नी
खेल्द छन् बीच वन्मा ,
आनन्दै ले रह्या ती डर छइन कती
व्याघ्र हेर्को त मन्मा ॥
च र्छन् मोठ त्य्व घांस् मा जलपिनत सधैं
वाग्मती को ति जान्छन् ,
बस् छन् ओडार पाई शिव सित सुखमा
मानु कैलास ठान्छन् ॥३९॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



गर्मी मा पनि सूर्य कम् गरि तप्या शीत् मा शशो कम् भया,
आगो आयन वायु का गण पनी खुश्बी चलाउँदै गया ॥
जां जां शम्भु चलाइ गरी रहनु भो फल् फुल् गिराइ् रूख ले,
मृग् जाती जति छन् ति चाकरि गरी बस्ता भया सूख ले ॥४०॥
जब त शिव ख्व सेवा गर्न ग्या छन् ति इन्द्र,
लियर सब ति द्यौता हेरु को मुख्य वृन्द ॥
शिवजि त छइनन् आ पार्वती लाइ पाई,
तब तिनि हरु पगल्या सुस्कयरा लामु आई ॥४१॥
जब त शिव हराया देवता सब् कराया,
हरि विधि मघवान् ई हड्बडाई खराया ॥
ढुडन्य भय जगतमा सात पाताल लोक्मा,
कतइ पनि न देखी पर्नग्या ज्यादि शोक्मा ॥ ४२ ॥
पृथिवितल डुल्या छन वन् र पर्वत् अनेक् देश्,
मिल्यन शिवजि को ता काज् न काहीं त्यत्र उप्देश् ॥
ख्वहि दिन ति पुगे छन् पाशुपत्क्षेत्र माहाँ,
भ्यट गन्य त्यहि नन्दी ब्राह्मणै बसथ्य्त्र जाहाँ ॥४३॥
आदर्गर्न्यो तसल्य देवहरू ख्त्र ताहीं,
विस्तार्गर्न्या सब कुरो शिवजो त नाहीं ॥
मेरो तपस्य परिपूर्ण गरी गयाथ्या,
यै बाट्ब दक्षिणदिशा तिर लाग्न्य भ्याथ्या ॥४४॥
तै भ्येन लौ कस्व गरौं शिवको ठ्यगाना,
ब्रह्मा विचारनुहवस् गरि अन्त्र ध्याना ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



लौ बेस् भनी ह्यरि द्यख्या मृगको त रूप ,
हीड्या तहां द्यखि सबै खुश भेर खूप ॥४५॥
कहि दिन ति पुग्ये छन् वाग्मतीतीर वन्मा ,
शिवजि अहिं हुनन्की भन्न्य आयोर मन्मा ॥
मणिमय बगरै मा एकली एक कुमारी- ,
कन जब द्यखन्या भ्या पैहकी दिव्यसारी ॥४६॥
मृग क नयन शोभा कोटि कन्दर्प राम्रो ,
अमुलिय गहनाले काम् भयो ठान्य हाम्रो ॥
सब द्यव नजिकी गै हात जोऱ्या तिनै थैं ,
हजुर त गिरिकन्या हौ कि भन्न्या पऱ्यो भ्रै ॥४७॥
यति सुनि द्यवका बात् मुस्क हाँसनू भ्य गौरी ,
प्रणति गऱ्य सबै ले पक्षि जस्तो ह्व लौहो ॥
उभिकन करजोऱ्या शम्भु कां हूनु हुन्छ ,
बुझनु हजुर हुन्छ कै दिया खूप गुन्छ ॥४८॥
सुनी यो द्यौता को बनचन गिरिजाले यस्व भनिन् ,
उभो दक्षिण् वन् मा शिवकन द्यखौला नयनतिन् ॥
मृगै को रूप् होला मृगगण महां एक सिंगले ,
यती बोली गौरी अलप भइगैन् देव उकले ॥४९॥
अति रमणिय चौर्मा मिर्ग को फौज बिच् मा ,
थरथर ति द्यवता ग्या शम्भुजी का नजिक्मा ॥
बहुत स्वरुप राम्रो नेत्र तिन् देखि एक् सिङ् ,
मृग-शरिर प्रभूको देखि ऐश्वर्यको तङ् ॥५०॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



शिवकन पहिचानी गर्न लाग्या स्तुती तो,
क्यहि पनि तिम्हृयरूको कत्ति लागेन थीती ॥
पशु शरिर प्रभूको बेस्व भैछ जांऊँ,
पकडि झक झक्याऊँ पैह्लय जाइ् सिङ् समाऊँ ॥५१॥
यति भनि दगुरी जाइ् पकृय सिङ् तेहि थातमा,
सिंग टुटि रहय्त्र तिन्का तीन टुक् हात हात्मा ॥
मृग स्वरुप उडोगो देखि आकाश बिच्मा,
डरलय गरि उँचाशिर्हाज्ज्वड्या तैं नजिक्मा ॥५२॥
सूनी स्तोत्र ति देवको शिवजिले
बोल्दा भया खुस् भई,
सिङ् पायौ खुशि ह्वौ न खोज जिउ यो
थाप् द्यौ ठ्यगान् मा गई ॥
लोक् लाई बढिया हुन्या कुन्व सुन्यौ
भन्छू म द्यौता सबै,
ज्योतिर्लिङ्ग जहां म्यरो छ नजिकै
बस्छू म जहां जबै ॥५३॥
ब्रह्माण्ड मा जत्ति छ तीर्थ को ढाक्,
तिन्कोटि मा थप् गरि औ पंचास् लाख् ॥
सब् खैंचि यस् क्षेत्र महाँ म ढाक् छू,
पाप् फालि सब् धर्म क बाट्व राख् छू ॥५४॥
सुभिक्ष होला बहु अन्न होला,
चांइदो परी जल् बगनन् इ खोला ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



योदेखि बाणासुर राज्य गर्‍या,
थाङ्कोट त्यसको दरबार पर्‍या ॥५५॥
भाइ लाइ लगाइ थुन्न्य छ बाग्मतीलाइ,
नाग ह्रद भनी नाम् गरला रजांइ खाइ ॥
टलपल् ह्वला जल् जब यो न्यपाल् भर्,
शोभा ह्वला आसिंक्व चार्दिशा भर् ॥५६॥
नाना विरङ्ग् रङ्ग् फुलला कमल् फुल्,
ग्राहादिको देखिन्य छ बहुत् हुल् ॥
हजार तीस् वर्ष म डुबूछु जल्मा,
वासूकि साथ् लीयर योग बल्मा ॥५७॥
हे विष्णु ! जब् कृष्ण तिमी हऊला,
प्रद्युम्न नाम्का हुन्य छन् त चेला ॥
ति मार्न्य छन् दैत्य क कुल् तहीं पुल्,
काट्न्या तिमी छौ जब गर्न्य छन् हुल् ॥५८॥
खुल्ला सबै जल् जब जामिया को,
देखीयला सब् नदि नद् बह्या को ॥
बस्ती बसो सब् जब राज्य बन्छ,
पैहे मुसल्मान् क्व हुकूम हुन्छ ॥५९॥
ति ज्योति देखी कन मुक्त हूनन्,
फे तीन्हिरू बाटत धर्म फूनन् ॥
फे तिंससये वर्ष बितेर जाला,
किराति ले राज्य न्यपाल् क्व खाला ॥६०॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



जब त रघुवरै का वंश आइ् राज्य पाल्नन् ,
इ सब नृप किराती लाइ मारी निकाल्नन् ॥
जनपद सब चारै वर्ण धर्मात्म हूनन् ,
पशुपति दरशन् ले पाप आफ्ना ति धूनन् ॥६१॥
इ नदि मुख द्यखी जब् आयकी वाग्मती हुन् ,
कति कहुँ द्यवता हो म इ गङ्गाजि को गुन् ॥
रहन्य छइन जाहां मर्न्य का पाप को खुन् ,
कलि वरष हजार् पांच् जाइ ई जाह्नवी कुन् ॥६२॥
यो वाग्मती जल क्व क्या महिमा बताउँ ,
धे तीर्थ छन् इ विषये बहु ठाउँ ठाऊँ ॥
इन्को त जल् मकन जस्ल्य चढाउला है ,
बस्ला विकुण्ठ गइ श्रीहरिको मूरत् भै ॥६३॥
थोपा गनी गनि हजार वरष् त्य्व बस्ला ,
फे यंस् जगत् भुलन्य भै किन त्यो त खस्ला ॥
येस्तो अनेक् गुण बखान् गऱ्य वाग्मती को ,
फे हर्जिज्वऱ्या यति बचन् सुनि लागि नीको ॥६४॥
हामी गरौं क्या प्रभु अब् हुकुम् होस् ,
शम्भू ब्वल्या त्यो सिङ थापना होस् ॥
ब्रह्मा तिमी थाप उप र्लगी सिङ्,
गोकर्ण नाम् राख्यर पूज त्यो लिङ् ॥६५॥
विष्णू लगी थाप त्य्व सिङ् रसातल् ,
नाग् राक्षसै लाइ ह्वला पुजाबल् ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



शृङ्गेश्वरै नाउँ भनी बुझाया ,
हे इन्द्र ! स्वर्गैं लगि यो पुजाया ॥६६॥
जब् दैत्य हेरू जितनन् तिमी लाइ्
त्यो लिङ्ग ल्याइ् पश्चिम सिन्धुती जाइ् ॥
गोकर्ण थाप्नन् महाकाल भन्नन् ,
मेरा महां क्षेत्र महां ति गन्नन् ॥६७॥
म बस्त छू ज्योति सरूप माहां ,
मृग् रूप् तहीं मन्तिर का गुफा मा ॥
म मोक्ष दिन्छू सब काटि फांसो ,
नाम् यस् क्व हो उत्तर को त काशी ॥६८॥
यति भनि हरिणेश्वर् अल्पिया त्यै आकाश्मा ,
विधि गइ् सिंग थाप्या चन्द्र भाग क्व पास् मा ॥
पुजन गरन्य राख्या विश्रवा नाति आफ्नू ,
दुनिञ गय्व स्यवालाइ् शम्भु को भक्ति चाख्नू ॥६९॥
श्रीपार्वती ल्य रुप देख्यर मिर्ग को त्यो ,
विन्ती गरिन् म बसुँ कां प्रभु भो य्व धोको ॥
शिव् बोलनू भय्व प्रिये ! तिमि वत्सला हौ ,
मेरा अगाडि बस आहिं तिमी कला हौ ॥७०॥
अघि तिमि ल्य सतीतन् छोडदा बोकि हीड्यां ,
दुख द्यखि हरि ले तन् चक्र ले छेडि गींड्या ॥
गुह्य पतन भयाको स्थान यो हो न्यपाली ,
अति रमणिय पिठ् यो भन्न्य छन् गुह्यकाली ॥७१॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



तब गणपति बाबूका अगाडी त पूर्व,
रहनु भय्व शरी लीं मूंडिवाला अपूर्व ॥
दक्षिण तरफ राजन्नू राजराजेश्वरी भो,
नइरित्य तिर वन् मा कालि आसन् परीगो ॥७२॥
पश्चिम तिर प्रभूका भूवनेशी विराजीं,
पशुपति प्रभु का औ गंन् पनी राजिवाजी ॥
नगर द्यवल सब् ठाँट् विश्वकर्मा क्व सीप,
शहर प्रभु क्व देखनू मानु नेपाल दीप ॥७३॥
पशुपति गहना जो वासुकी रूपधारी,
जब बसनु भये थ्यो पुर्भयो ज्यादि भारी ॥
सब द्यव तहिं बस्ता देवपत्तन् ब्वलायो,
अगम तिरथ भन्न्या देश मा नाम् चलायो ॥७४॥
कार्तिक् शुक्ल चतुर्दशी दिप दिन्
शिवरात्रि पाइ् जागन्,
मङ्सी कृष्ण चतुर्दशी मृगथली
धान् छर्न जाइ् लागन् ॥
नित्यस्नान गराउन् नदि क्व जल्
चढाउन् विल्वदल्,
आर्या तीर्थ क्व अन्त्यकाल त मिलोस्
कैलास को पूर्ण फल् ॥७५॥
कार्तिक् माघ् बइसाख् हविष्य यक छाक्
श्रीवाग्मती को धुवाइ्,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



पूजा श्रीपशुनाथ को सुनि पुराण्
यो कल्पवासी नुहाइ् ॥
मैन्हाभर्निरजल् गरी रहनु भो
पुराण भन्नू भयो ,
ब्राह्मणभोज् कइलास मा गरि रह्यो
त्यो नित्य कैलास् गयो ॥७६॥
जग्गा घर् र पसल् घ्यवल् अति असल्
फुल्वारि जो राखुत छन् ,
तिन्कै बाबु बराज्यु ले सहित भै
कैलास् क्व भोग् चाखुत छन् ॥
राजा भै रहन्या पछी तिह्यरु हुन्
को सकूछ भन्नू ति गुन् ,
पुन् गर्न्या क्वत साथ् सहाय र बखान्
गर्न्या पनी एक हुन् ॥७७॥
स्नान् गर्न ब्रह्मनाल् मा
शहरकन घुमी गौरिघाट् नाघि जानू ,
दर्शन गुह्येश्वरी को
गरि मृगथलि गै आउनु ओहाल्व सानू ॥
त्रैविक्रम् मूर्ति मानी
तरिकन फिरि वार् दी पशूलाइ् पानी ,
दर्शन् श्रीवत्सलाको
गरि परिक्रमन् मङ्गलागौरि जानी ॥७८॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



भित्तामा दरशन् सरस्वतिजिको
भस्मेश तांहां पछी ।
नाघा तेत्तिसकोटि कीर्तिमुख के
श्रीशीतला लाइ् गछौ ॥
दाइ्ना वर् त गरी पटाङ्गिनि घुमी
वासूकि लाइ् ढोग् दिनू ।
लम्बोदर् ढुवगि मुक्ति मण्डप पुगी
थकाइ मारी लिनू ॥७६॥
आउनू दक्षिण दर्वजा क्व दरशन् पैल्हे प्रभूको हवस्,
पश्चिम् उत्तर पूर्व सुखक्रन घुमी स्त्रोत्रादि पढ्दै रहोस् ॥
यस्तो पूर्ण नियम् गरी शिवजिको जो नित्य सेवा गरुन्,
ती संसार-समुद्र लाइ सहजै गोपद् तुल्याई तरुन् ॥८०॥
भित्ती पीढी र सीढी चउतर दिपका
उच्च पानस् मईदान्,
वारी पारी ध्यवल् भया जल शयनक्व
घाट् जाह्नवीको पनी थान् ॥
मृगथल् आम्नाय मूर्ती अरु पनि झिलिमिल्
चौतरफ्मा तुल्याया,
राजा श्रीजङ्गबाहादुरजिलय कइलास्
जान शम्भू फुल्याया ॥ ८१ ॥
राजा रणोद्दीप अनाथका नाथ्,
सत्सङ्गि पूरुष् हरुका ज्व हुन् माथ् ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



श्रीगुह्यकाली द्यखि ब्रह्मनाल् जाइ्,
सुन्दर्सेडक् राखनु भ्व शम्भु खुस्लाइ्, ॥८२॥
प्रभू जङ्गबाहादुरै का कुमालें,
वृषभ् राखनु भो रामनाथ् काऽनुसालें ॥
जगत् छक् रह्यो देखि ठूलो अजङ्ग,
जगत्जङ्गका पापको भोत भङ्ग ॥८३॥
अब शिव प्रभुजी का मूर्ति चौसट्ठि लिङ्गै,
तिन फ्यन्व गरि ज्ञाहीं पूजियाका त रिङ्गै ॥
भसम गरि दिया थ्या पाप् विरूपाक्षजीका,
क्रम सित म कहन्छू भक्तलाइ् लाग्न्य नीका ॥८४॥११६॥

—※—

तीर्थावली यो ह्व विभूतिमाला,
बनाउन्या हुन् हरिभक्तिवाला ॥
श्रीपशूपतीनाथ क्व उत्पती यो,
छैटो ख्व अध्याय भनी लयखीयो ॥ ६ ॥

इति श्रीकविपतञ्जलिप्रणीते 'श्रीधीरादेश पातञ्जलतीर्थावली श्री३युद्धप्र काशे'
श्रीपशुपते रुत्पत्तिवर्णनो नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu

## अथ सप्तमोऽध्यायः प्रारम्भः ।

मरीची का छोरा तप गरन आया ति क्वहि दिन्,
ने नाम् भ्या का योगी मणिचुड़गिरी माथि गयछन् ॥
भजन् सेवाऽऽराधन् गरिकन रह्या तारिणि क्व धेर्,
जबै पाया दर्शन् स्तुति प्रणति गर्दा भय ति फेर् ॥ १ ॥
हुकुम् भो माता को वरकन म दिन्छू मुनि भई,
तँ मेरो भक्तै भै यत्र मुलुक तँ पाल् साथ् भ्यन्त्र रहो ॥
त्यरो नाऊँ हो 'ने' तत्रि लय गरि पाल्या क्त्र यत्र भनी,
न्यपाल् भन्न्या देत्रै पशुपति प्रभू को भयत्र अनी ॥ २ ॥
यती वर्दान् पाई सकल दुनिआ पालन्य भया,
ति ता ताराजो का चरण भजि तांही रहि गया ॥
सबै नेपाल् का ई तिरथ र धऊता प्रकट लाइ्,
अरु बन्दोवस्तै पनि गरन्य तो हुन् किमत पाइ् ॥ ३ ॥
अन्तर्वेदी देश मा धर्मशर्मा,
एक् क्वै ब्राह्मण् हेछ त्यो सत्य धर्मा ।
छोरो हेछ एक् विरूपाक्ष भन्न्या,
बाबू आमा लाइ त्यो क्यै न गन्न्या ॥ ४ ॥
जूवा रंडीवाजि गांजा चलाई,
आर्का का घर् राति केलाइ् कुलाई ।
रक्सी मासूको लियो स्वाद तीखो,
त्यस्तै त्यस्ता को भयो त्यो त नीको ॥ ५ ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



आमा पर्न्या लाइ् तुल्यायेछ नारी ,
त्यस् लाइ् छोड्या सबूल्य जान्या अनारी ।
आङ्मा निस्क्यो कुष्ट दुख् पाय्व दुष्ट ,
जातै देखी भै गयाको त्व्य भ्रष्ट ॥ ६ ॥
लज्जाले त्यो डूलदो देश देश्मा ,
पाप्ले माया लाग्थन क्वै क्व तेस्मा ।
कोरा घाऊ पिप् वग्याको कपाल् मा ,
फिका गर्दै फीर्द्ध आयो नेपाल् मा ॥ ७ ॥
लीलावती कौशिकि सङ्ग माहां ,
दुम्जा भनी व्यॉंसि कहिन्छ जाहां ।
तोर्मा बसी रून्थ्व वछ्याई ढुङ्गा
तर्दा द्यखो नेमुनि को त डुङ्गा ॥ ८ ॥
जाई पऱ्यो पाउ महां त तिन्का ,
विस्तार्गरी रोय्व ति पापगन्का ।
खामस् दिया आय्व दया मुनी लाइ् ,
स्नान् गर्जहां दर्शन गर्तहां जाइ् ॥ ९ ॥
जाहां तपस्या गरि देवताले ,
दैत्यै जित्या थ्या दुरगा कृपाले ।
तसर्थ यो हो दुरगा क्व तीर्थ ,
स्नान्ले जहां पाप सबै क पिर्छ ॥१०॥
यस्तै न्यपाल्मा चउसट्ठि लिङ् छन् ,
दर्शन् सबै ग तब मुक्ति दिन् छन् ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



हवस् भनी स्नान् गऱ्‍व कऱ्‍चनै भो ,
संध्या महां लिङ्ग नगीचमै गो ॥११॥
शिव्‌रात्रि को दिन् थियव बत्तिबाली ,
पूजा र जाग गरि रात्रि गाली ।
सोध्या तहां को महिमा त राती ,
श्रीनेमुनीले कहँदा त जाती ॥१२॥
ब्रह्मालय पर्वत् इ बनांउन् लाई ,
तपले खड़ा लिङ् गऱ्‍य को ह भाई ।
कुश् ले पुजा लिङ्ग क यो गऱ्‍या थ्या ,
वर् पाइ ब्रह्मा फिरि गै गया थ्या ॥१३॥
अन्तर्वेदि महां जनम् भयक्‍व कोइ्
ब्राह्मण् महां को अधम् ,
माहांपातक पञ्च युक्त भयको
गरेछ त्रै को गमन् ॥
कुष्टी आयर त्रै नुहाइ् शिव छ्वई
आङ्‌मा विभूती घस्यो ,
कौशिकूती मंरि जाइ्वले अउँसि मा
कैलास मा गै बस्यो ॥१४॥
तसर्थ यो लिङ्ग त आदि जानी ,
पूजा गरी सब् थ्वक पांउ् छ ज्ञानी ।
पारन् गऱ्‍यो औंसि नुहाइ खोला ,
भऱ्‍या विरूपाक्षलय दुमज्य मेला ॥१५॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



पूजा गऱ्या नेमुनिको खुसी भै,
घुम्छू म चौसट्टि हजु र्क्व साथ् गै ।
लौवेस् भन्या पायव गुरू ति पक्का,
जांदा भया तां ध्यखि द्वै छलखुवा ॥१६॥
कौशिक् र सुन्कौशिकि सङ्ग माहां,
द्वै गै गऱ्या स्नान ध्यवतीर्थ जांहां ।
भीमेश्वरै को गरि दर्शनादि,
वार्ता गऱ्या राति पुजेर जागी ॥१७॥
भीमेश्वरर्क्व महात्म्य सुनूत कहि द्विज् श्राद्धै गरी बाबुको,
फेर्फेर्खायछ जन्म पायछ बदेल् को लाग्यव गूफा निको ॥
हान्यो तब् त शिकारिले भयल्य गै देव्तीर्थको जल् पियो,
बान्का पीरल्य देह छोडि फिरि त्यो ब्राह्मण् क चोला लियो॥१८॥
जल्को फल् सब थोक जान्न्य भइ त्यो आयो यही तीर्थमा,
स्नान् तर्पन् गरि भीमशम्भु नजिकै गो पाप सब् गीर्छ जां ॥
शिव्रात्री तिथि पाइ् गऱ्यो ब्रत पुजा जागर्निराहार्गरी,
पाई रुद्र क रूप रुद्र शर मा कैलास गो फुल्भरी ॥१९॥
शुम्भादिले पीडिय का नुहाया,
ध्योता ले तांहां वरदान पाया ।
शंभू प्रकट् भ्या ध्यवतीर्थ नाम्भो,
दुःखै बताया शिव मात कोप् भो ॥२०॥
भैरव् स्वरुप्ले ति भिमेश्वरै भ्या,
देवील्य दैत् मारि ति स्वर्ग गै ग्या ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



पालन्‌ल्याकै देवि ल्य कीर्ति राखिन्,
विर्पाक्ष ने तां ग्रखि लाग्य काफिङ् ॥२१॥
सुन्कोशि और् शैलमती क सङ् मा,
सुवर्णतीर्थै डुग्नि भूति आङ् मा।
श्रीकाफिकेश्वर् क गरेर दर्शन्,
पूजा गरी रात्‌भरि बात गर्छन् ॥२२॥
क्वै खोकी लाग्न्य बूढो कफ भन्य क्व थियो
तस्क्व छोरो त काफी,
तेस् ले धेर्वर्ष तप् ले शिवजिकन खुस्याइ्
दर्शनै पाय्व साफी।
त्यो भैगो मुक्त ग्राहीं, सुवरणतिरथै
मा पनी म्लेच्छ नारी,
फल्मुल् ख्वद्दै हिंड्या की ल्वट्य र जल नुहाइ्
पाइ कैलास भारी ॥२३॥
दोसै लक्ष्मी भन्नो मै चिह्न्यन क्वहिल्य तां
घर्महां सोध्न लाग्या,
लक्ष्मी हो पार्वती हो सरस्वति प्व हुकी
भन्दई दूर भाग्या।
हाज्रोरी स्वामि थैं त्यो घर कि महुँ भनी
सब् कही त्यो त कूरा,
लोव्या को रूप पाया क्व पनि खसम लाइ्
लैगि चोभेर पूरा ॥२४॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



आया प्रमथ् गण र हालि विमान लैग्या ,
जो देख्न्य सुन्न्य परियार समेत गै ग्या ।
सोध्छन् विरुप् अरु क्व पाप कसो गरी गो ,
भन्छन् ति नेमुनि त्व्व धर्म सबै सरी गो ॥२५॥
न गन्य क्व पनि पुराय पाप क्वैले ,
सरि सरि जान्छ पराइको त जैले ।
बसि उठि जुठ्वखाइ छुवाइ ब्वलाइ ले ,
तब सुजनै क्व त गर्नु सङ्ग भलाइ ले ॥२६॥
यो बात् सुनी प्रात गरेर पारन् ,
सुनी तँहा को अघि को त कारन् ।
लाया कफीश्वर् क्व प्रसाद चन्धन् ,
आया तहां देखि दुवै ति मन्दन् ॥२७॥
श्रीकश्यपेश्वर् क्व गरेर दर्शन् ,
श्रीकाश्यपै कुराड गरेर पर्शन् ।
पूजा भजन श्रीशिवको त राती ,
सोध्या तहां को महिमा त जाती ॥२८॥
कश्यप् ले सृष्टि लाई तप गरि वरषैमा प्रकट् भ्याइ लिङ्ग ,
वर् पाई सृष्टि गर्थ्या अहि क्वहि दिन आयो नपुंसक् अलिङ्ग ।
हाङ्गोरयो जन्मधिका गरि कन अहि डुब् मन् चिताई भन्या जब् ,
डूबी पूरुष भै भूप् भइ बहुत रजाइ स्वर्ग गो द्विज् भई तब् ॥२९॥
यति सुनि महिमा यो खुस् विरूपाक्षजी ले ,
गरन भन्यर पारन् पैल्ह्य नैवेद्य नीले ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



बहुत बढिगयो बल् सूनि यो शंभुलीला ,
न्यमुनि कन अघी लाइ् ती पुग्या फट्कशीला ॥३०॥
हिमस्रवाका र ति चन्द्रकान्तिका ,
संगम् महांकान्ति भन्या क्त्र तीर्थ ता ।
नुहाइ जाइ् स्फाटिकशम्भु लाइ् पुजी ,
रात्रो महां बात स्वध्या गुरु बुझी ॥३१॥
भन्छन् नेमुनि ब्रह्म ले अहि तपी यो लिङ्ग देखी लिया ,
वर्दान् ले जग को त सृष्टि गरथ्या श्रीचन्द्र जैल्हे खिया ।
तीर्थै येहि नुहाइ तेजि भइग्या देवादि सप्पै पनी ,
येती सून्यर हर्ष भै त्रिशूलले पर्सद लाया अनी ॥३२॥
तांहां देखी आय ती द्धै बनेपै ,
चण्डेश्वर् को पाइ दर्शन् अनेकै ।
पूजा स्तोत्रै उग्रतीर्थै नुहाई ,
राती रुद्रीपाठ् गरया जल् चुहाई ॥३३॥
रूपावती रुद्रमती को सङ्ग ,
त्यो उग्रतीर्थै भय्व पापभङ्ग ।
तस्को महात्म्यै मुनि भन्न लाग्या ,
विपाद्द का पाप् सब कन्न लाग्या ॥३४॥
अघी चण्डासुर् ले तप गरथ्य बहुत् उग्र रित ले ,
ति लिङ्गै ताञ्थीया च्यवन क्व तपस्या क्व थिति ले ।
प्रसन्नै भै शम्भू वर दिय न मर्नू क्वहि घखी ,
य्व उग्रै तिर्थै भो तप ल्य त त्यरा उग्र विलखो ॥३५॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



जित्यो घौता दैत्यै चउधभुवनै भूपति भयो,
चिलाइ हात्को मार्नु शिव थजि लडाञ् माँगँन गयो।
पुजारी वर् माग्यो लडुयव प्रभु थञी लाग्व शुलले,
भन्यो शिव् शिव् त्यस्ले बलियव भयव फेर् शंभुजि भुले ॥३६॥
प्रमथ्गण् थैं लड्थ्यो सब कन जित्यो विन्ति यव गरच्या,
हजु लुंक्नू होञ्रोस् नतरत सवै ई गण मरच्या।
सुनी शम्भू लुक्या पुज्यर वर माँग्नू भनि गयो,
घखेन शंभू लाइ् बहुतर पुका त्यों गरन्य भो ॥३७॥
भवानी तां निस्किन् बहुत लडय्व चंडासुर तहां,
शिरश्छेदन् तस्को खडग लय गरिन् फौज बिच मा।
गराया फुल् वृष्टी अपसर त नाच्या सुख भयो,
इ चंडेश्वर् चंडी भनि कन जहां नाउँ यव रह्यो ॥३८॥
अब यहि तिरथै मा स्नान् गरी जाँउँ पारी,
प्रभु शिवजि धनेश्वर् छन् तहीं नागधारी।
भनि गइ गरि पूजा जागरन् राति द्वै ले,
महिम स्वधन लाग्या त्यो न जान्या क्व क्वैले ॥३६॥
तपस्या शुक्रै ले गरि कन त यो लिङ्ग निकली,
दिया वर् शंभू ले चिरजिवि भया तेज लय बली।
पछी क्वै वैश्यै ले तप गरचर पायो त बहुधन्,
धनेश्वर् तब् भन्छन् धन खवजन्य ले ल्याउँद छ मन् ॥४०॥
अब् द्रोणावंत् मनि जाँउ भन्छन्,
शंभू तहां श्रीविकटेश्वरै छन्।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



यती भनी आय ति भक्ति चाख्मा ,
सांगा द्यखो पूर्व तरफ् रव काख्मा ॥४१॥
मुख्य तीर्थ जल मा त नुहाई ,
शम्भु का उपर गन्ध चुहाई ।
विल्वपत्र रत्र चढायर माला ,
राति मा स्वध्य त्थ्य तीर्थ रत्र चाला ॥४२॥
मारूँ मिर्ग भनी विकट् यवन ले यो तीर्थ मा जल् पियो ,
आयो ज्ञान प्रभाव ले त जलका शस्त्रादि फ्याँक्तो थियो ।
धेरै वर्ष तपस्य ले जिय गल्यो वर् दीन लिङ्गै भया ,
त्यै नाम् हो शिव को त आइ दुत ले कैलास मा लौ गया ॥४३॥
यति भनि भ्वलि पल्टै द्वै गया ती पनौती ,
शिव थिय तहि इन्द्रेश्वरप्रभू दिव्य जोती ।
शचि तिरथ नुहाया पाप सब् तास् बहाया ,
पुजन गरि प्रभू को रात्रि मा बात् कहाया ॥४४॥
जनक् पुर् का लिग्मा गउतम भन्या का ऋषि थिया ,
अहल्या नाम् भ्या की अति रुप कि पत्नी सँग लिया ।
बयान् सूनी तन् को लहड चल्थ्य मन् को त घटिया ,
करांसो इन्द्रै ले कुरि कन रह्या संझि पटिया ॥४५॥
कही दिन् रात् धेरै रह्य छ मुनि ता स्नान् गरन ग्या ,
त्यत्र अन्तर् पाइ इन्द्रै भितर गइ रुप् त्य गरि ठग्या ।
म कामातुर् भ्यां आज् फरकि न नुहाइ आज त्यत्र सुनिन् ,
पत्याईनन् पैह्ले पछि रुयहि बुझाया तत्र मुनिन् ॥४६॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



मुनी ले तिल् बिर्सी फरकि घर आई सुन्य कुरा ,
छिरच्या इन्द्रै भयाल् मा मुनि पनि त सब् बात ल्य पुरा ।
वछ्यान् मा स्त्री देखी हरनु भनि त्यो सन्ठ क स्यखी ,
क होस् भन्दा काम्दा कर ज्यास्य क्त्र इन्द्रै कन द्यखी ॥४७॥
तँ लपट् का ज्युउ मा भरि भग हुउन् भन्दिय गया ,
शची का साम्ने गै यत्र खबर कही इन्द्र ति ऩ्वया ।
रिसाइन् धिक्कारिन् गुरुकन ब्वलाइन् सब कहिन् ,
यव तीर्थै बत्ज्ञाया लिइकन पुरुष् लाइ् तहिं गइ् न् ॥४८॥
यो कुञ्ज पर्वत् मनि तप् गरच्या जसै ,
शचीं पनी नित्य नुहाउन्य भैन् तसै ।
धे र्वर्ष मा लिङ्ग प्रकट् भई शिव् ,
वर्दान् दिया दिव्य ह्वला त्यसो जिव् ॥४९॥
यै तीर्थ मा स्नान् गरि योनि जानन् ,
यौटा त शिर्मा मुनि शाप मानुन् ।
यो लिङ्ग नाम् तिम्र ह्वला ह्य इन्द्र ! ,
जाउ् स्वर्ग मा पाल यत्र देववृन्द ॥५०॥
यति शिव ल्य अहाया इन्द्र शुद्धै गराया ,
शिव त तहिं हराया गौतमै श्राप् मराया ।
पछि फिरि क्वहि बाहुन् श्रुतश्रवा भन्न्य आयो ,
जहिं बसि गरि पूजा शुद्ध कैलाश पायो ॥५१॥
ज्व क्वहि गरलि पूजा चारवर्णै कि नारी ,
बहु धन सुख सौभाग् पावली त्यो त भारी ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



यति भनि ति दुवै ग्या त्यो निकुञ्जाचलै मा ,
भरन्थ गरच्या मेला चिन्डुरोखी जलै मा ॥५२॥
अघी सती ले त शरीर त्यागी ,
बोकी महादेव ल्य देश लागी ।
निधा खसी लिङ्ग भया इ भालेश् ,
पूजा गरी रात अहीं तँ गालेस् ॥५३॥
यती भनीं गन्धरवै क्व तीर्थ मा ,
नुहाय ढैले सब पाप गिर्छ जां ।
पूजा गरच्या शम्भु क्व राति सब् पुरा ,
माहात्म्य सोध्न्या गरदा भया कुरा ॥५४॥
क्वै गन्धर्व सुमुख् ल्य श्राप परदा रम्भा क्व तांहो गई ,
आहीं स्नान् गरि मुनि गालव भ्यटी विस्तार् गऱ्यो सब् कही ।
पूजा गर्अहि पूगला मनसुवा भन्दा वरष् दिन् रह्यो ,
व पाइ् स्वर्ग गई त्यही सखि भई कैलाश मा फेर् गयो ॥५५॥
हिंज्य जब ति दुवै प्रात् भाल्यश्वर् लाइ मानी ,
नइरित दिश लाग्या गाड् कत्ती न मानी ।
शिर उपर जटाजूट् धारच्य का केलि रौले ,
गुपतशिव पुग्या छन् भोलि पल्टै खिरौंले ॥५६॥
विरूपाक्ष ले धारि रुद्राक्ष राती ,
स्वध्या लिङ्ग को तीर्थ को पुण्य जाती ।
शिलारस् प्रभावत् नदी सङ्ग माहां ,
बडो सिद्धतीर्थै भनी मान्नु जांहां ॥५७॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



भन्छन् नेमुनि केहि काल् तप गर्‍यो
वृकासुरै दैत्य ले,
मासू काट्यर होम् गर्‍यो शिर पनी
आंट्यो बड़ा हत्य ले।
खुश् भै शम्भु गया दिया वर जसै
डर्लागदो बोल्य्व बात्,
त्तणमा भस्म हवस् प्रभू म जसका
शिर् मा लगांउला त हात् ॥५८॥
लौ भन्दा गउरी हरण् गरु भनी हात् लै ग्य्त्र शिव् माथ मा,
भाग्या शम्भु घुम्या चतुर्दशभुवन् आया यही थात मा।
तेज् आफालि लुक्या प्रभावति बहिन् मार्‍या अरी विष्णु ले,
वै मूर्त्ती प्रभु को छ देव हरु सब् भक्त्यादि ले सब् भुले ॥५९॥
क्वै बाहुन् ल्य अघी त पुस्तक च्वरी त्यो ब्रह्मराक्षस् भयो,
क्यैदिन् यै जल पीइ ब्राह्मण भयो भर्द्वाज् मुनी थैं गयो।
ज्ञान् सोध्यो जहि जा भन्या जहिं नुहाइ कुब्जाद्रि माथी गयो,
गुप्तेश्वर् क्व पुजा प्रभाव ल्य पछी कैलाश जांदो भयो ॥६०॥
गया तां घली छै मुकुन्दाद्रि काखमा,
तिलेश्वर् न्यरा शम्भु का भक्ति चाखमा।
मनःश्री नुहाइ तीर्थ लेले उपल्लो,
स्वध्या रात्रि मा पूजि माहात्म्य जल्दो ॥६१॥
क्वै दिन् देव गुरू हिंड्या पृथिवि मा सब् तीर्थ यात्रा गरी,
आये छन् जहि माघ संक्रमण मा तिल् का महादेव् धरी।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



पूजे छन् दरशन् मिले छ शिव थैं माग्या मनोरथ् ज्वहो ,
आज्ञा भो शिवको सरस्वति ब्वलाइ माङ्न्या कुरो ताज्यवहो ॥६२॥
हवस् भनी डाक्य सरस्वती लाइ ,
सराप् गर्‍या भिर्गुल्यता तहीं जाइ ।
सुख् छोडि मेरो किन आहि आयौ ,
जल् होइ जाउ यत्ति सराप पायो ॥६३॥
सरस्वतीले पनिता सरापिन् ,
तिमो पनि पानि भई वितुन् दिन् ।
सरस्वती कुण्ड भयो त पानी ,
खोलो भया भिर्गु सराय मानी ॥६४॥
त्यो कुण्ड को जल् गुरुलेत पीया ,
सब् शास्त्र जानी गुरुजी भई ग्या ।
शिव्ले सराप् फोइ ति दुई स्वरग्ग्या ,
भृगू मरी शुक्र भई जनम्भ्या ॥६५॥
मनोवती श्रीनदि को त सङ्ग ,
मनःश्रि हो तीर्थ ग्व पाप भङ्ग ।
जांउ आ द्यखी हिंड् नजिकै छ पश्चिम् ,
श्रीचंपकेश्वर् प्रभु ताँहि बस्छन् ॥६६॥
यति भनि ति दुवैग्या लेख्यको मध्य गाँऊ ,
सरस्वति नदि माहां स्नान् गर्‍या तीर्थ ठाऊँ ।
निशि गर्‍य शिव पूजा आड् महां लाइ खरानी ,
स्वध्य महिम विरुप्ले भन्न लाग्य ति ज्ञानी ॥६७॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



अघी क्वहित यक् मन् भन्यक्व शास्त्र पढ्न्या थियो ,
भुलेर परचवा महां पढ्यर शास्त्र सब् बिर्सियो ।
बृहस्पति सितै गई कहिन्वयो त्थ्व बाहुन् तहां ,
बताइ् दिय उहो तिरथ् सरस्वतीक्व कुण्डै जहां ॥६८॥
गयेर जब तां डुब्यो न पढ्यको समेत् सब् बुझ्यो,
मुगत् हुन्य त मन् गरी तिनि तिलेश्वरै लाइ् पुज्यो ।
हुकुम् भय्व प्रभूक्व तब् तप गरी तँ मुक्ती भयास् ,
हवस् भनि त चांप्व फुल् टिपि पुजा गऱ्यो लाय्व रास् ॥६९॥
फुलै घखि प्रकट् भया तब इ चम्पकेश्वर् कह्या ,
कसैल्य मृगमाऱ्य्व त्रै लिइ प्रमथ्त केलाश् गया ।
द्यखीय्व तसले पनी शिव भजी तहीं तप् गऱ्यो ,
क्वही वखत मुक्त भो शिव क्व दर्शनै पाइ् मऱ्यो ॥७०॥
अब तिमि हिंड रामेश्वर्भनी दोइ आया ,
दरशन तब टीकाभैरवै मा त पाया ।
निशि गरि शिवपूजा श्रीप्रभातीर्थ माहां ,
स्वधन विरुप लाग्या कुन्कुरो भ्येथ्य्व जाहां ॥७१॥
कार्तीवीर्य भुपालका ति सुतले जमदग्नि लाइ् मारदा ,
पर्शूराम् पितृ दुःखले फिरन्य भ्या गुहार खोद्दाछँदा ।
आया छन् घुमि तीर्थ घेरइ जहां नुहाइ् प्रभातीर्थ मा,
बाबूको रिपु साधना गरुँ चिताइ् तप्स्यागऱ्या मास्छमा ॥७२॥
राम् ले लिङ्ग प्रकट् गरऱ्या तब तहां भैरव् स्वरूप् भै ब्वल्या ,
बाबू मारि दिया इ चत्रियल्य अब् इन् लाइ् म मारूँ स्वल्या ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



यक्कैस् पटूक निचत्रियै गरि सबैले मान्नुभ्या लोकमा ,
योवर्दान्मिलिकामत्यो सब गरया पार् उत्रिग्याशोकमा॥७३॥
यो तीर्थ क महात्म्य सुन् बलिकि क्वै छोरी कुरूपा थिई,
आ को वर्णन सूनि साथि सँगली आई नुहाइ् जल् पिई ।
त्यै निस्किन् ति प्रभा स्वयं भगवती वर्दान् दिइन् अलिपइन् ,
राम्रोभै र बुहारि कृष्णकि भई द्वार्का महां बसनगैन् ॥७४॥

अब् जाउँ हिंड् भनि गया नइरित्यको कुन् ,
कालेश्वरै प्रभु जहां बस्यका त टुङ्गन् ।
कालमोचनै तिरथ वैतरणी जहां छन् ,
ती घर्घगनदि क पर्न गया क्त्र त्यो सङ् ॥७५॥
जाइ् स्नान् गरया तिरथ मा परवत् शिखरैँ ,
रात्री महां पुजन जागरणै हुवै भै ।
सोध्या महात्म्य तसको विरुपाक्षले जब् ,
श्रीनेमुनील्य बतलाउन लाग्य त्यो सब् ॥७६॥

आई काललय कोहि दिन् अहिं नुहाइ् पर्वत् चढ़ी तप्गरया ,
बाहौ वर्ष महां शिवै प्रकट भै वर्दान् मिल्यो सब् डरया ।
मान्यभ्या जगजाइ् पछी क्तहि त व्याध् लम्कर्ण आहींगयो ,
आहीं स्नान गरी इनै शिवपुजी कैलाश जांदोभयो ॥७७॥
अब हिंड त्रिकुटाचल् पर्वतै पश्चिमै जांउ् ,
शिव तहिं रह्या का छन् श्रीनटेश्वर कहाइ् नांउ् ।
तिरथ छ तहिं ब्रह्मा उत्तरवाहिन् क भेक ,
यति भनि गय माल्टा माहद्योटार् क लेक ॥७८॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



रात्री मा गरन्थ्यर पुजा जगाइ दीप,
नाचे छन् वरिपरि शम्भुका त खूप ।
हर्षँ ले बिति गयन्र रात भ्येन थाहा,
सोद्धा भ्या विरुप मुनी सितै कथाहा ॥७९॥
तार्कासु ल्यँ पिरथ छ देवता त भागी,
आये छन् यहि त्रिकुटाचलै क्व नागी ।
आतीया शिवक्कन कांहि तो न देखृता,
मारे छ असुर ल्य देवता क्व मेखृता ॥८०॥
ब्रह्मा ले भन्य अब शम्भु को भजाना,
सब् मीली गर ञहिं वाद्य को त गाना ।
निस्कन्छन् प्रभु ञहि तिम्र गीत सूनी,
भन्दा मा भजन गरच्या य्व चित्त थूनी ॥८१॥
हाहा हू ह्युरु सँग ली मिलाइ ताली,
नाना गितस्वर क्व लियेर दिव्य चाली ।
धेरै काल् गरच भजना प्रभू ल्य जांच्या,
खूसी भै प्रकट भयेर शम्भु नाच्या ॥८२॥
द्योता हो तिमि ल्य खुस्याइ मलाइ नचायौ,
दैत्यै को बध गरन्या त वर्ष्व पायौ ।
नाम् मेरो भय्व अब लौं नटारभेश्वर्,
अन्तर्ध्यान् भय यति बात् गरेर ईश्वर् ॥८३॥
द्यौ शर्मा भन्य क्व थियो बडोत्व्य जान्न्या,
राजमन्त्री ज्व क्वहि सबै दुनीञ मान्न्या ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



दान् दिन्थ्या सब तस लाइ् थियो त्य पाकल्,
आफू ले गरयन छ दान् भये छ माकल् ॥८४॥
साठ्हज्जारवर्ष बित्या त्य योनि भुल्दा,
दिन् काट्यो बहुतर त्यस्ल्य भाडि डुल्दा।
खायो यै तिरथ का पानि त्यस्ल्य क्वै दिन्,
शम्भू लाइ् छुवइ मरि स्वर्ग गो तिरचो रिन् ॥८५॥
व्याघ्राचल् परवत जांउ् हिंडो विरूप,
खुस् होला मन तिमरो रमाइ खूप।
तीर्थै छ कनखल नाम को अमोल,
भन्दै ग्या फरपिंग मा त हांसिडोल ॥८६॥
स्नान् गरी कन त रुद्रकुण्ड मा,
भूति भूषित गरेर मुण्ड मा।
रात्रि जागरि उदालकेश को,
पूजनै गरि स्वध्या त्य्व देश को ॥८७॥
उद्दालक् क्वै मूनि थोया प्रतापी,
उन्ल्यै पूजा यो गरचा लिङ्ग थापी।
योगी भै ग्या त्यै भगत् ले शिवै का,
औ माहात्म्यै सुन् तँ राम्रा उनै का ॥८८॥
कश्यप् को एक् पुत्र थोयो त भूव्या,
दैत्यै मा को खुप् बलीयो त्य्त्र मूव्या।
द्यो पितृ लाइ् दाज्यु भाइ् लाइ् न दीई,
खान्थ्यो त्यै पाप् ले गयो त्यो त खीई ॥८९॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



नारद् का उपदेश ले आय को त्यो ,
श्रीगोपालेश्वोर लाई त्यत्र खोध्थ्यो ।
उद्दालेश् लाइ लाइ भक्ती वरष् बाह् ,
व पाइ फन्मोटो भयो बल् द्ववर्चार् ॥६०॥
रिस् ले संभयो विष्णुलाइ तांहि आया ,
युद्धै गर्दा विष्णु ले हार खाया ।
शार्ङ्ग काट्यो चक्र हानी पठाया ,
उद्दालेश् ले पाशुपत् ले हटाया ॥६१॥
आजि भर्या का विष्णु का आइ पसोना ,
खोलै लाग्यो रुद्र बोल्या मसीना ।
मेरो भक्तै भैस् तँ जा मन्दिया थ्या ,
शिव् दुत् आइ कैलास तस्लाइ लग्या थ्या ॥६२॥
अब् हिंड् उत्तर्तीर जा देखि जाऊँ ,
गोपालेश्वर् छ प्रभू को त नाऊँ ।
तीर्थै तां छ यज्ञकुण्डे खन्या को ,
भन्दै पूग्या गाउँ फर्किङ् भन्या को ॥६३॥
त्यो मर्कटाचल विषे जब द्वै ति आया ,
स्नान् यज्ञकुण्ड गरि श्रीप्रभु लाइ नुहाया ।
पूजा गरी निशि भरी घृतदीप बाली ,
सोध्या तहां क्व महिमा अति दील हाली ॥६४॥
श्रीविष्णु ले बहुत दैत्य क्व नाश गर्दा ,
पाप् क्यै न हुन्य पनि हूल महां ति पर्दा ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



पाप् लागि विष्णु बहु दिन् रहि मत्त चालमा ,
सब् तीर्थ तीर्थहुलि आइ पुग्या न्यपालमा ॥६५॥
श्रीवाग्मती नदि नुहाइ चढ्या उकालो ,
कामधेनु लाइ् ग्वखि सुध्यांउ् भनि उन्कत्र पालो ।
जल्दो गया उ उडिगैन् र ब्वलाय फेरो ,
आइन् स्वध्या खबर हो त पियारि मेरो ॥६६॥
बोल्छिन् जहां शिवजि छन् म चहांउद् छू तीर् ,
खोर्सी हरी पुजनु होस् मनता हला थीर् ।
मन्मा चिताय क्व दिनन् प्रभु पाल्नु होस् गाइ् ,
गोपाल नाम् हजुर को हुन्य छ य्व यश् पाइ् ॥६७॥
मेरो हजूर क्व पनी रहला य्व शालिक् ,
त्रैलोक्य का हजुर हूनु हुन्या छ मालिक् ।
येती भनिन् ति गउ ले खवरस्या हरी ले ,
पूजा बहुत् गरय हरी ल्य अनेक् परी ले ॥६८॥
यज्ञै लाइ् कुण्ड थापी बहुत हवन भो
डाक्य भागीरथी साथ् ,
उत्सव्, तीर्थै ग्वपालेश्वर भनि कहलाइ्
बस्नु रित्नाद्रि को काख् ।
पाऊ देखी बगाई शिखरिणि नदी
विष्णु जाहीं छँदै छन् ,
क्वै बाहुन् मुक्त भ्याको, अरु पनि त कथा
हे विरूपाक्ष ! तँ सुन् ॥६९॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



काञ्चीमा रामशर्मा भन्यक्व क्वहिथियो
भ्रष्ट बाहुन् खराप् चाल् ,
देशै मा त्यो न औडी फिरद्ध दशदिशा
आइ पूगे छ नेपाल् ।
शिखोणो यज्ञगङ्गा सँग हुन्य जल मा
पानि न्यूहेर खायो ,
बाघ् आई पक्रि लैग्यो लच्यर ठुल्व शिला
बाघको गीदि आयो ॥१००॥
द्वै ले ताञ् प्राण छोड्या
द्विज त बड्वऋषी बाघ् त राजा भया ई ,
त्यागी भै द्वै ति आया
तिरथ घुमि घुमी यै ठ्यगान् भेटपाई ।
बस्ता सत्कार्गऱ्या द्वै
फजिर गइ नुहाइ् फर्कि जातिस्मरन्भो ,
ठूलो प्रीती महीमा
गरि शिव पुजि क्वै दिन्त कैलास् मिलीगो ॥१०१॥
यति सुनि विरुपाक्षै लाइ् भयो जाति सम्रन् ,
ऋषिकन अघिलाइ् ग्या चम्पकेश्वर्क्व त्योवन् ।
पुण्य जब ति विसङ्खेल् ब्रह्मतीर्थै नुहाया ,
शिवपुज गरि रातमा सोध्नलाइ् बात् चुहाया ॥१०२॥
वाणसु र्जा बस्याको थियत्र तसक्व सुबाहू भन्याको त चाकर् ,
पूजालाइ् फूललीनू भनिकनअहिं चांपा क्व वृक्षै चढ्योफेर् ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



फुल्को झोला लि वल्ह्यौं फुल पस्य्त्र टुप्टका
तीन चार्दिन् यसै भो ,
खोर्सी देख्यो त शिव् लिङ् अति भजन गरो
त्यो त कैलाश मै गो ॥१०३॥
इ चन्द्र कान्ति र इ रत्न कि कान्ति सङ् मा ,
यो ब्रह्म तीर्थ क्वहि दिन् त नुहाय ब्रह्मा ।
मुक्ती भया क्व छ जहाँ पछि कोहि बाहुन् ,
कौत्सुक् भन्या क्व फिरि त्यो गति क्वै न पाउन् ॥१०४॥
मित्रै को पनि हर्दा फुटिकन सब जिउ् कोढ् भया को त्य्त्र डुल्दो ,
आयो नेपाल जाहीं डुबिकन निक्क भो ज्ञान भै जा न भुल्दो ।
जम्दग्नो भेटि मूनी जगत बुझि खुनी ज्ञान को बात् सुध्यायो ,
चंपेश्वर् लाइ् ध्यायाया बहु दिन जहिं है वर्मिली मोक्ष पायो १०५
यति भनि भ्वलि पल्टै स्नान् र पारन् विहानै ,
गरचर ति दुइ गैग्या स्वर्णतीर्थै नुहाउनै ।
पुण्यथ्य जब ति तिष्टुङ् देखि उन्मत्तशिव् लाइ् ,
गरन्य कुन्त्र सबै भो बोल्न्या भ्या ति सिप् लाइ् ॥१०६॥
अन्तर्वेदी माथि यो विष्णुभद्र ,
पाग्र्या को त्यो हेछ शास्त्रै समुद्र ।
सब् लाइ् हेल्यायो पुजा पाठ जग्य ,
गर्नू जान्न्या जीति गर्थ्यो मनग्य ॥१०७॥
त्यै पापले भो बौलहा देश डुल्यो ,
जात् आफाली आइ नेपाल भूल्यो ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



आयो क्वै दिन् स्वर्णतीर्थै नुहायो,
रोग् नाश् भै गो तां पछी शुद्धि पायो ॥१०८॥
आफ्ना काम् सब् सम्झि पीटेर छाती,
हा शिव्! हा शिव्! भन्द भो दीन राती।
निस्क्यो लिङ्गै धे गर्‍यो आरधाना,
शिव् निस्की वर्पाइ पूग्यो ठ्यगाना ॥१०९॥
ब्राह्मण् थीयो मैत्र भन्न्या नुहायो,
राक्षस् पारीवाट खान् लाइ आयो।
त्यो जल् छूँदै ज्ञान भो घुर्घुरे लाइ्,
पाउ् मा लोट्यो तांहिं मैत्रे सितै जाइ् ॥११०॥
शम्भू इन्कै गर्पुंजा भन्दिया जब्,
खूपै आराधन् गर्‍यो वर्ष दिन् तब्।
दर्शन् पायो, आइ शिव् का गनै ले,
प्राण् छोड़ी गो दिव्य पाई तनै ले ॥१११॥

—❋—

तीर्थावली यो ह्व विभूतिमाला,
बनाउन्या हुन् हरिभक्तिवाला।
चौसट्टिलिङ्गै क्व महात्म्य हो यो,
अध्याय ता सुन्दर सातऊँ भो ॥ ७ ॥

—❋—

इति श्रीकविपतञ्जलिप्रणीते 'श्रीधीरादेश पातञ्जलतीर्थावली श्री३युद्धप्रकाशे' नेपालस्थचतुष्षष्टिलिङ्गमाहात्म्यवर्णनो नाम सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu

## अथाऽष्टमोऽध्यायः ।

जब् नेमुनी र विरुपाक्ष गया ति तिष्टुङ्,
श्रीनन्दिकेश्वर इ गाँउँ घ्यसो त दक्षिण् ।
स्वर्णप्रभा र तनकान्ति क सङ्ग माहां,
जां नन्दितीर्थ छ पुग्या ति दुवै त ताहां ॥ १ ॥
जलमा डुबी गरि पुजा निशिभजँगाई,
बत्तो लगाइ नइवेद् शिवनाम गाई ।
सोध्या तहां क महिमा विरुपाक्षजो ले,
खूशी भई कहन लाग्य ति नेमुनी ले ॥ २ ॥
नन्दी भृङ्गी प्रभू का
रहन्य दरवजा भृङ्गि क्वै दिन् भ्रमर् भै,
शिव् का खोपी गये छन्
सुनि न कहन्य बात् स्वामिन लाई कह्या गै ।
त्यस्ले फैलाउ गर्दा
शिवजि त रिसिया नन्दि लाई शरापै,
हाझोड़ी विन्ति लाया
मइल्य त क्यहि जानीन यो काम् खराप् भैँ ॥ ३ ॥
साथी भै जान्नु पर्न्या ह्व तजि ल्य कहिनस्
श्राप् गर्‍याँ बाह वर्षें,
मानिस् भै तीर्थ डूबी मकन त सम्भयास्
तां ह्वला तब् त हर्षे ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



आया होवस् भनी तो यहि तिरथ नुहाइ्
नन्दितीर्थै कहायो ,
तप् ले लिङ्गै खडा भो शिवदुत ल्य लग्या
नन्दिकेश्वर् सुहायो ॥ ४ ॥
अर्को सून कथा क्वही यवनिले पाई छ आधा छ्वरो ,
एक्कान् पाउर हात नेत्र भयको फ्यांकी न जिम्दो म्वरो ।
राजा भैकन धर्म आय् गरि छ्वड़ी आधा शरीपायको ,
क्वै व्याधाल्य लगेर पालखतमलाइ् रूँदो न दुद् खायको ॥५॥
पच्चीस्वर्ष महां घुँडो घिसि हिंड्यो दिग्हारिले आइ् जहीं ,
स्नान्ले दोडन्य भो घ्यलो क्वहि मुनी हारित् भन्याका तहीं ।
पूजा पाठ् गरदा घ्यलो भगतिल्ले एक् हात्ले सद्दाम् गऱ्यो ,
श्रद्धा भक्ति गरी इनै शिव पुजो प्रमथ् भयो जब् मऱ्यो ॥ ६ ॥
अब तिमि हिंड गांउ्का माझ्न जां गोखुरेश्वर् ,
गउ तिरथ जहां छ स्नान् गरो पुज्नु भर्पुर् ।
यति भनि गइ छूवी गोखुरेश्माऽधिवासी ,
तब महिम तहां को सोधदाम्या ति खासी ॥ ७ ॥
कोहि बाहुन् जहां गाइ पाल्न्या थियो ,
त्यो दधीकर्ण नाम् गाइ् चराई लियो ।
कोहि दिन् पूग्यछ गाइ का तीर्थ मा ,
गर्मिका तोडले स्नान् गरे छ वहां ॥ ८ ॥
गाइ ता रत्नकान्ती नदी त्यै नुहाइ् ,
माथिगे खोर्सि नाचूतीभइन् दुध् चुहाइ् ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



गाइ खेदू भनी त्यो पनी ताञ् गयो ,
दुद् पखया को ग्वलो खोर्सि हेर्दो भयो ॥ ६ ॥
देखय जब् गोखुरेश्वरप्रभू लाइ तैं ,
हाति एक् लोरिले खोर्सि हेरेथ्यव भैं ।
दर्शनै ले प्रभू का भयो शुद्ध ज्ञान् ,
रोज रोज् ताहिं गै दुध् चढाइ गर्द्द मान् ॥१०॥
कालका चालमा मर्द्द भो कोहि दिन् ,
लीन तेस्लाइ आइ् पूग्य तैं शम्भुगन् ।
दिव्य वीमान् चढी जांद्ध कैलासमा ,
त्यो छँदै छ अझै शम्भु का पासमा ॥११॥
हे विरूपाक्ष ! अब् जाउँ श्रीपण्डुकेश् ।
भद्रतीर्थैं भन्याको त तांहां छ वेस् ।
लौ भनी द्वै हिंड्या गाउँ पाहुङ् वहां ,
स्नान् पुजा सब् गरी बात सोद्धा तहां ॥१२॥
मरीची का छोरा ऋषि कहि थिया पण्डुक मुनो ,
अनेक् तीर्थैं घुम्दै जहिं पुगि गया तारिफ सुनी ।
इ रेवीका भन्न्या नदि कर इ रेतोवति कत्र सङ् ,
नुहाइ शम्भू भजूदा प्रगट भयको हो ग्य शिवलिङ् ॥१३॥
ति मुक्ती पाइ् गै ग्या पछि त सुनि नारद् मुनि मुखै ,
कतही शङ्कूकर्णै भन्य कत्र दइत्यै ले खत्रजि सुखै ।
नुहाइ् यै तीर्थैं मा प्रतिदिन गर्‍यो पूजन जहां ,
सदाशिव् खूशी भै मिल्थ्व पशुपतास्त्रै तत्र तहां ॥१४॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



जित्यो द्योता दैत्यै स्वरग गइ सब् लुट्पिट गऱ्यो,
द्यऊता भागीग्या हरण गरि ऐरावत चढ्यो।
बहुत् काल् राज् गर्दा द्यव हरु सबै ब्रह्म थजि ग्या,
यो विस्तार्सब् खोल्या हरिशरण जाऊ भनन्य भ्या ॥१५॥
गया वैकुण्ठै मा हरि सित गऱ्या दुख् पुकरना,
त्रढी पच्छोराज्मा गरनु भनि दैत्यै क्व मरना।
भयो आई युद्धै दइत्य जिति लुट् देवल्य गऱ्या,
उठ्यो शङ्कूकर्णै जब ति द्यउता मूर्छित पऱ्या ॥१६॥
गरुड् ले रुख् पर्वत् लियर जब हान्या सब गिऱ्यो,
सदाशिव् को शस्त्रै समभिकन सब्लाइ तब पिऱ्यो।
सुदर्शन् छोड्या जब् हरिजिल्य दुवै शस्त्र ति लड्या,
जगत् उड्न्या जस्तो भय्व जब सदाशिव् तब भड्या ॥१७॥
भन्या श्रीशम्भूले मइल्य दियको वर् न मरन्या,
त्य्व हाती लै जाउन् इ सब द्यवता युद्ध गरन्या।
मनाइ् दीया विष्णूल्य द्यव गय हाती लिइ सबै,
विमान् डाको कैलास् तिर भ्यजि दिया तेसूकन तबै ॥१८॥
अब हिंड विरुपाक्ष चारकोश् मा,
त्रिकुट भनी परवत् क्व नाउँ जसमा।
प्रभु तहिं रह्यका कुटेश नांउमा,
यति भनि ग्या ति त आगन्य व्याँसि गांउमा ॥१९॥
श्वेतकान्तिमति गण्डमती का,
सङ्ग गालवतिरथ् गइ ती ता।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



स्नान् गरी शिव पुज्या निशि प्रितमा ,
प्रश्न भो त इतिहास क्व रित् मा ॥ २० ॥
अघो गालव् भन्न्या मुनि गण महां मुख्य ति थिया ,
यसै सङ्गम माहां डुबि उपरगै तप् गरि लिया ।
यो गालव् तीर्थैं भो सकल जन को पाप हरन्या ,
विरूपाक्ष ! हे सुन् पुगद छ ठ्यगान् जाहिं मरन्या ॥ २१ ॥
उपर्ग्या ती गालव् बहु दिन तपस्या त गरदा ,
य्व कुट् मा लिङ् निस्क्यो पुजि मुगत भ्या अन्त्य परदा ।
कथाहा आकों सुन् इ प्रभु क्व जहां छ बहुत गुन् ,
क्वही राजा मुक्तो भयथ्य्व सब मेटेर तब खुन् ॥ २२ ॥
विराट् देश् को राजा फउज लिइ गर्दो मृग शिकार् ,
द्यखी बान् पूँग्यायो मृग त्य्व पनि भागे छ कठसार् ।
लगारी जैं आया मृग फटकँदा लिङ्ग छ्वइयो ,
भयो जाती सम्रन् भय छ्वडि त्य्व मृग् बोलद्ध भयो ॥ २३ ॥
म कौशल् को भूप् हूँ म पनि गरथ्यां यस्तइ शिकार् ,
विना पाप् ले मार्‍यां त्य्वत नृपति भो म मृग विकार् ।
हजार्चोट् म मृग् भ्यां उ पनि नृप भै मार्‍यथ्व मलाइ ।
हजूर्को जो खूशी अब म बच्न्या छैन य्व बह्लाइ ॥ २४ ।
नुहांउछू तीर्थैं मा य्व शरिर म छ्वड्छू ह्य महाराज् ! ,
हजूर् मृग् भै जाहीं यवन ल्य त मार्दा मिल्य क्व राज् ।
य्व बात् बोली वर्ह्ल्यो तिरथ तिर मृग् भूपति गयो ,
डुब्यो जल् मा छोड्यो शरिर क्षण मा शिव् गण भयो ॥ २५ ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



उदेका ई राजा भयर जब ताजा भगति मा,
छ्वरा लाइ राज् दीई शिव शिव जप्या शुद्ध मति मा।
त्रिकूटेश्वरशम्भू प्रभु क्व बहु वर्षै गरि भजन्,
प्रमथ्गन् ले लैग्या शिव पुरि पुगी पायथ्य्व मगन् ॥२६॥

तांहां द्यखी दुइ् गय लाग्य तांती,
प्रसङ्ग शिव् को गरि भांति भांती।
शक्रावती भानुमती क्व सङ्ग,
असित् ह्व त्यो तीर्थ त पापभङ्ग ॥२७॥
पुग्या जसै त्यो महादेउ ब्यांसो,
काटिन्छ जां किल्विष को त फांसी।
नुहाइ् गऱ्या श्रीअसितेश अर्चन्,
विस्तार् तहां नेमुनि आफु गर्छन् ॥२८॥

असितमुनि कह्या का काशि देखी ति आया,
तप गरनु हिमाल् मा यै ठ्यगाना भ्यटाया।
तिरथ यहि नुहाई माथि गै लिङ्ग थाप्या,
वरष भरि गऱ्या तप् शम्भुको मन्त्र जाप्या ॥२९॥
शिव प्रकट भई वर् पाय सब् लोक छकून्या,
चतुर गुणमयी मा दूर देश् हिंडून सकून्या।
फिऱ्यर ति घर आया रोज् समुद्रै नुहाया,
दरशन अहि गर्दै रोज् घरै भात खाया ॥ ३० ॥
कहि शुदर कि नारी राति मा गर्भधारी,
फजिर उठ्यर देखो भालयकुस्रो अनारी।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



कुखुऱ्य मुख छूवरो पाइ् भो पक्षी त्यो त दिक ,
हिंडि गय्व परदेशै आय्व नेपाल ठिक ॥३१॥
असित मुनि सितै सब् गई भो दुख् पुकारा ,
वरणन गरि दीया तीर्थ माहात्म्य सारा ।
गऱ्य्व तहिं तप तेस्ले आइ शिवदूत् ल्य लैग्या ,
कुखुऱ्यमुख त्य्व गन् भो साथि तेस्का तिनै भ्या ॥३२॥
यति सुनि महिमा ती हर्ष भ्याका विरूप ,
पहिऱ्यर फुल चन्दन् गै थकाई त खूप ।
भइरवशिव पूजी काट्न लाइ् जन्म फांसी ,
हिंडि दुइ पनि पुग्या त्यो नुवांकोट ब्यांसी ॥३३॥
शिवप्रा नदी गण्डकी का त सङ् मा ,
नुहाई विभूती लगायेर अङ् मा ।
निशीभर्गरी पूज बत्ती जगाई ,
महात्म्यै स्वध्या शम्भुभक्ता लगाई ॥३४॥
कालाग्नि रुद्र भइ शम्भु जगत् प्रलै लाइ् ,
निःशेष् गऱ्या धरणि मा जिव जन्तु सब् खाइ् ।
आई यही जल महां बस्यका इनै हुन् ,
दिव्यै हजार वरषै बितिग्या अहीं सुन् ॥३५॥
फेर् ब्रह्म आइ् स्तुति गऱ्या शिव खुश् गराया ,
वर्पाइ सृष्टि गरि जन्तु जगत् भराया ।
हज्जार तीस् वरष मा पछि शूद्र एक ,
मुक्ती भई गय्व अरे लिइ दिव्य रूप ॥३६॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



पासा लियेर यउटा खयलन्या जुवा यो,
पाप् गर्दै भो छल ल्य धन् हरदो छ्वया को ।
त्यै पाप ले भयर कानु खिज्याय सब् ले,
रूँदो भयो गयर ब्राह्मण थैं त सब् ले ॥३७॥
तीं धर्मशर्म ल्य भन्या तजिले गरीछस्,
पाप् पूर्वजन्म क भयो त्यसका परिस् बस् ।
घ्यौता क बत्ति बलदो न सकी लगीछस्,
शम्भूजि लाइ दिप दीकन रात्रिभर् बस् ॥३८॥
एती भन्या क त्य्व हिंड्यो बहुतीर्थ घूमी,
आई न्यपाल यहि टेकन पाय्व भूमीं ।
श्रीभैरवेश्वर पुजी बहु सारजाम् ले,
सांझ् मा जगाय्व दिप सम्भयर ओहि काम् ले ॥३९॥
ज्वाला ठुलो गरि जगाइ समाइ बाती,
जल् मा पस्यो दिन भनी कन त्यो त राती ।
देखी उज्यालव जल जन्तु ल्य पक्रि खायो,
त्यस्ले त तत्क्षण गरी कइलास पायो ॥४०॥
एती सुनी त्य्व कथहा खुशि भै अथाहा ।
प्रात्काल् नदी डुबि प्रसाद क राखि चाहा ।
दूर्दृष्टि भ्या विरुप का भइरव् उपासी,
हींड्या तहां घ्यखि दुवै कपिलास व्यांसी ॥४१॥
सिद्धरसानदि ब्रह्मपदीको,
ब्रह्म तिरथ् त्य्व नुहाइ् अति नीको ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



ब्रह्मशिवै पुजि दीप जगाई ,
सोऽन्य कथा अति दील लगाई ॥४२॥
अघि क्वहि प्रलयै मा साठि हज़ार वर्षैं ,
जगत रह्य क्व खाली लाउँ भन्ठानि गर्षैं ।
यहि तिरथ नुहाई तप् गऱ्या माथि जाई ,
वरष बिति हजारौं मूर्ति यो उब्जि आई ॥४३॥
ब्रह्मेश्वर् कहिया मिल्यो वर तहां ब्रह्मा प्रसन्नै भया ,
जीव् जन्तू सब चारजात रचि यो भर्पुर् गरांउदै गया ।
धेरैकाल पछी त ब्राह्मण क्वही मुक्ती भयो लिङ्ग मा ,
एक् दैत्यै पनि शम्भु रूप् भइगयो अद्याऽपि छ सङ्ग मा ॥४४॥
क्वै ब्याधा गयको शिकार् मृग न पाइ् बँदेल् धपाइ् आउँदो ,
देख्यो राक्षस उै डराइ शर ले हान्दा व्यथा पाउँदो ।
जाइ् लाग्यो दगुरी झ्यटाइ पक्रड़ी घोक्रो फ्वरी रक्त पी ,
पायो तीर्थ यही र ब्राह्मण भई ज्ञानी भयो त्यो तपी ॥४५॥
नांउ् तेस्को ब्रह्मवर्मा तिरथ तिरथ मा
डुलदो सत्य धर्मा ।
आयो याहीं नुहायो उपर चढि ख तब्
ज्योतिर्लिङ्ग् देखि पायो ।
नैवेद् खायो नुहायो घृतबरति जगाइ्
ढोग्‌दिई घूमि लीयो ,
बीस् दिन् मा लाख् प्रदक्षिण् जब भय्व तसका
ज्योति मा जोत् मिली गो ॥४६॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



राक्षस् त्यो पनि बाण का त पिरले प्राण् छोडि यै तीर्थ मा ,
बाणासुर् बलिको भईकन छ्वरो देवादि लाइ् पीर्थ्य्वं जां ।
बाबू देखि त कम् भञा बल महां भन्ठानि ऐ आइ् तप्यो ,
दिव्यै बाहवरष् बित्या शिव पुजी पञ्चाक्षरी खुप् जप्यो ॥४७॥
प्रत्यक्षै भइ वर्दिया शिवल्य जब् सब्मा बलीयो म हूँ ,
बाहू हुन्त हजार् भन्यो शिव ब्वल्या हेर् दैत्य एक् बात् कहूँ ।
माग्याको सब पाउलास् त्यरि छ्वरीका निम्ति हात् काटिनन् ,
तब् तोलाइ गरी चिरायु लगुला सब् देवता ढोग् दिनन् ॥४८॥
यो सूनी दरबार शोणितपुरी आई बस्यो शिव् जपी ,
नाती कृष्ण क्व बांध्य्व छोरि निंहुले आया प्रभू बल् थपी ।
ठूलो युद्ध गरी छिंयालि दिय हात् शिव् आइ विन्ती कह्या ,
मेरो भक्त भन्या जसै दुलहि ली श्रीकृष्ण द्वार्का गया ॥ ४९ ॥
तब तसकन शम्भूले तुल्याया महाकाल् ,
प्रमथगण क्व मालिक् शम्भुकै छ सबै चाल् ।
अब हिंड विरुपाक्ष कार्तिकेश्वर् म्यलैमा ,
भनि हिंड्य ति त कार्त्तिक्या ब्यंसीका खलै मा ॥ ५० ॥
पूजा भजन् गन्यर रात्रि बिताइ् भगत्ले ,
नैवेद्य दीप्कन दिया धनका सकत् ले ।
प्रीती गया क शिवमा विरुपाक्ष सोध् छन् ,
चन्द्रप्रभा क महिमा न्यमुनी कहन्छन् ॥ ५१ ॥
तार्कासुरैल्य जब पिर्दिय्व देवतालाइ् ,
श्रीकार्तिकेय प्रभुलाइ बहुत् दया आइ् ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



ऐ आइ् नुहायर भयो तिस्थै यत्र स्कन्द,
ऊपर्चढेर शिवको तब थाप्य लिङ्ग ॥ ५२ ॥
बार्वर्ष दिव्य गरि तप् शिवजी प्रकट् भ्या।
त्रैलोक्य जित्न्य वर पायर दैत्य चट् भ्या।
और् ब्राह्मणै पछि दुई भय मुक्ति नाहीं,
यस्को सुनी महिम यस्त्वत काहिं नाहीं ॥ ५३ ॥
कोइ् देशमा द्विज दुई रह्य छन् स्वरापी,
ये देशमा बँधल भै जनम्यात पापी।
डुल्थ्या भयो भ्यट यही तिस्थै क्वहो दिन्,
खुप् युद्ध भो जल महां परनै गया छिन् ॥ ५४ ॥
योटा सबै डुब्थर बांकि रह्यो त शीर,
अर्को घुचेटन्य क्व शिर्डुब्य्य ज्यू त तीर।
जल् ले छ्वया क्व जति भो नर देह तांहां,
जाती स्मरन् भइ उदेक् रह्य द्वै ति जांहां ॥ ५५ ॥
आङ् शिर् दल्या गयर लिङ्ग महां दुवैले,
प्रीती बडो गरि रह्या शिवका छुवैले।
ज्ञान्ले पुजा गरन्य भ्या बस्य वर्ष एक् मा,
प्रान् छोडि दिव्य जिउ भै गय रुद्रलोक् मा ॥ ५६ ॥
अब हिंड शतरुद्रेश् छन् मृगेन्द्राचलैमा,
डुबिकन नरसिंहै तीर्थराज्का जलैमा।
यति भनि हिंडि ग्या ती नाघि ऊकाल्व सारा,
शिवपुरि चुह्नि पुग्या जां थिया वागधारा ॥ ५७ ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



ज्येष्ठीला विश्वगङ्गा मिल्य क्व जल नुहाइ चूल्हिमा शम्भु पूजी,
रातीमादीप बाली गरि शिव भजना भक्तिले दुःख भूजी ।
सोध्या तांको महीमा विरुपनयनले नेमुनीले बताया,
राजा श्रीसूर्य्यकेतू जहिं तप गरि क्वै दिव्य कैलास पाया ॥५८॥

नृसिंहले मारि हिरण्यकश्पू,
आया प्रभू जाहिं भनेर बस्छू ।
क्वै दिन् डव्यालो चल्य्व डाकि गङ्गा,
स्नान् जै गरी गर्मि क्व भो त भङ्गा ॥ ५९ ॥
धेर्दिन् जही बस्नु भ्व चीस्व जल् लाइ,
इ विश्वगङ्गा बहिगै त भल्लाइ ।
आराधना शम्भु क्व गर्नु भो धेर्,
शम्भू प्रकट् भ्या सयलिङ्ग ले फेर् ॥ ६० ॥
बीती गया दिव्य त वर्ष बाह,
वैकुण्ठ जान् भ्व हरेर भार ।
तब् तीर्थ यस्लाइ नृसिंह भन्छन्,
पुराणमा यस्कन खूप गन्छन् ॥६१॥
वैह्लै श्रीपर्शुरामले
नृप हरु सब मार्दा त एक्कैस् पटक् मा,
राजा रजपूत हेरु
तइ पनि न सक्या डुल्न्य देख्या सडक् मा ।
यो काम् होई न सक्न्या
ठहऱ्यर मनले सूर्यकेतू भुपाल् लाइ,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



पृथ्वी सब् सम्पि दीया
गऱ्य तिनलयत राज् बाह वर्षै सबै पाइ् ॥ ६२॥
आयो वैराग्य तिन्लाइ् सब लिइ परिवार्
राम लाइ् राज्य फर्काइ्,
छोरे रानी संगै ली यहि परवत आइ्
तप् गऱ्या दिव्य वर्षाइ् ।
छोरी चन्द्रावती थी दिय यदुपति का
पुत्र प्रद्युम्न लाई,
अन्त्यै मा ती कईलास् गय ति भुपति खुप्
पुष्प वृष्टी चलाई ॥ ६३॥
अब हिंड दुइकोसमा पूर्व जांउ् हेविरूप!,
तहिं प्रभु रह्यका छन् काकईश्वर् स्वरूप।
यति भनि पुग्य द्वै तो गांउ् शिहान् काग्यशोरी,
बस्य तहिं क्व गुफामा रात् बिताया कसोरी ॥ ६४॥
आकाश गङ्गा जल तीर्थ डूबी,
पूजा गऱ्या दाहिनु पारि घूमी।
जपी सदाशिव् क्व अमोलि मन्त्र,
सोध्या तहां को अघि को त तन्त्र ॥६५॥
अघी शम्भूजीले गउरि सित यो बात् गरनु भो,
म्यरी माया कोही बुझ्न सकतैनन् तरनु भो।
तिमी क्यै जानौली भनि प्रभु ल्य सोद्धा त रिसिइन्,
क्व जान्ला भन्दीथिन् शिव अलपिया ती त हिसिइन् ॥६६॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



पुरासुलें देउता कन पिन्ख खज्या शम्भुकन धेर् ,
डुल्या चौधै भूवन् घुमि फिरि जहीं आइ पुग्य फेर् ।
प्रभूता गूफा मा जल क्व छहरा भित्र लुक्य का ,
पुकाऱ्या गौरी लाइ् शिवकन भ्यटाउनै तिढुक्य का ॥६७॥
गरी कागूको मूर्त्ती गउरि गइ देखाउंदि भया ,
पुग्या देउता शम्भू रुप छूवडि त आकाश् उडिगया ।
पुज्या घ्यौताले लिङ् शिवजि त हराया फिरि चल्या ,
खतीर्थैं स्नान् गऱ्या क्व मुरति पुज्या पाप् सब जल्या ॥६८॥
अघी अर्का लाई न दिइ सब खाइ् म्लेच्छ भयको ,
शिकार् खेल्दै जाहीं मृग ख्यदि गुफामा त गयको ।
घखी शम्भूलाई सुमति तब आई यहिं रह्यो ,
नुहाइ् आकाश् गङ्गा शिव पुजि पछी दास् हुन गयो ।
सुनी लाया चन्दन् विरुप त भया भक्ति-सर-बूड् ,
हिंड्या तां देखी द्वै पुगि गय सरासर्ति मणिचूड् ।
मणीहद् मा न्हाया जल रुपि सदाशिव् कन पुजी ,
बस्या राती जागृत् स्वधनि गऱ्य तैं को खुजि बुझी ॥७०॥
प्रभू जब् ऊड्याथ्या फिरि ति घवता आइ् पुग्य जहीं ,
घखेनन् शम्भू लाइ् जप तप गऱ्या माइ क्व तहीं ।
भवानी रुद्राणी जगकि ठकुरानी तिमि भयौ ,
पियारी शम्भू की भयर पनि काख् मा तिमि रह्यौ ॥७१॥
मिल्यन शिव क्व उपदेश् माइ् खगीनी कृपा होस् ,
सुन्यर गऱ्य क्व विन्ती दीनु भो दर्शनै बेस् ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



उपर तिमि चुह्लो जाउ् पल्लिरूप् ले म आंउ्ला ,
मन्यर हुकुम यो भो शम्भु लाइ् म यखांउ्ला ॥७२॥
यतिभनि अलपीइन् देवता ता उपर्ग्या ,
यहि दह यखि डूबी यै चउर्मा भरी भ्या ।
अतिरुप कि चरी आइ् घूमिदी यै दहै मा ,
भजन गन्य प्रभू को दैत्य पिर्का बहै मा ॥७३॥
प्रकट् भ्या श्रीशम्भू हुकुम गन्य हे देवगण हो ! ,
म जान्छू स्वर्गैं अब् तिमि हरु क दैत्यै क्व भय गो ।
मणीचूड् यो कुण्डै सकल जन को पाप हरला ,
ठुला जाग् को फल्पाइ् मणिमति नुहाउ् पाप तरला ॥७४॥
यती बोली शम्भू यवगण सहित् भै गइ गया ,
पछी सुन्चोर् व्याधा भइ यहि गरे छ त मृगया ।
तृषाइ जल्पीयो पउरि रुयलदा लिङ्ग छुवइयो ,
त्यही रात् ताज् मर्दा शिवदुत हुना लाइ गइ गो ॥७५॥
एती कथाइ सुनि लाय विरुप् ल्य पाती ,
जत्ती यख्यो जति सुन्यो उति लाग्य्व जाती ।
लाग्या वहाल्व डुबि भक्त महां त केवल् ,
श्रीवज्रयोगिनिजि का पुण्य द्वै ति देवल् ॥७६॥
नुहाया जसै योगगङ्गा क्व तीर्थ ,
जहां योगधारा यखों पानि गीर्छ ।
मिल्यो दर्शनै शक्ति शिव् एकरूप ,
पुजा जागरन् भो निशीमा त खूप ॥७७॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



स्वध्या माइ ञा ब्रस्नु भ्या को कसोरी,
ब्वल्या नेमुनी आउनु भ्येथ्यो जसोरी।
हरीका नयन्मा रहिन् योग माया,
मधूकैटभै मार्न विन्ती लगाया ॥७८॥
गऱ्या सृष्टिकर्ता ल्य पर्वत् मणी को,
प्रभू शम्भु आया त मानेर नीको।
उनै योगनिद्रा भइन् शम्भु साथी,
सबै देवता का उपर्छन् इ माथी ॥७९॥
सप्तर्षि का ई तप का गुफा हुन्,
आकाश ऊग्या कति म कहूँ गुन्।
खुस्यायकी योगि ल्य हुन् इ माई,
तब् योगिनी नाम भयो य्व भाई! ॥८०॥
तब त न्यमुनि बोल्छन् गर् स्तुती तारिणीको,
शिवजि खुश हुन्या छन् ञा महात्म्यै इनैको।
तब विरुपनयन् ले कर्ज्वऱ्या श्लोक पढैं,
मुख ह्यरि जननी को लोटदै ढोग गर्दै ॥८१॥
जगत कि तिमि माता ब्रह्म लाइ् सृष्टि लायौ,
हरि कन त य्व पाल्नू शम्भुलाइ् स्वामि पायौ।
जगत कन त पोनू शङ्करै लाइ लाई,
जगत क य्व ब्वकायौ तिन् जना लाइ् बहाई ॥८२॥
हरांउन्या भरांउन्या भुमरी मरांउन्या
हजुर्को स्वभाव् भक्त मुक्तो गरांउन्या।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



स्मरण् पाप् जरांउन्या जगत् सब सहांउन्या ,
कृपा दृष्टि होस् म गरिब् छू करांउन्या ॥८३॥
यति सुनि जगदम्बा खूसि भै बोलि बर्दिन् ,
भगतकन तुल्याई चीरजीवी त गर्दिन् ।
तँ त तिरथ क्त्र यात्रा गर्दईरह् न्यपाल्मा ,
जिवन मुगत तँ भैस् लिन् ह्व तास् कोहि कालमा ॥८४॥
यती हुकुम् भो जगदम्बिका को ,
भन्छन् ति ने फेर्त्यहिं क्यै भयाको ।
कलिङ्ग देशूमा थियन्न देविदास् भूप् ,
नारद् घखो जा को बयान् सुन्यो खूप् ॥८५॥
आयो कुमार्लाइ रजाज्ञि दीई ,
आई पुग्यो त्रै अति प्रेम लीई ।
योग्तीर्थ डूबेर लगाइ भक्ति ,
पूजा जपादी गरि कीर्त शक्ति ॥८६॥
नौमी दशैं को थियन्न रात्रि जाग्यो ,
विमान् चढी स्वर्ग तिरै त्यन्न लाग्यो ।
हिंड्यो भ्वलींपल्ट वहाल्व खेदी ,
द्वै लक्ष्य गाँउ् का ति पुग्यात फेदी ॥८७॥
श्रीमाइ का चरल्य बज्र-शरीर भयाका ,
त्यो कर्णतीर्थ पुगि जल् परसी रह्याका ।
नारायणेश्वर क पूजन भक्ति भाव्ले ,
सोद्धा भया क्यहि कथा अधिका हिसाब् ले ॥८८॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



भन्छन् नेमुनि जा तपस्य गरदा नारायणै ले अघी,
पर्कट् भो जहिं लिङ्ग नाँउ् यहि रह्यो नारायणेश्वर् कही।
जलूको कुण्ड भयो बह्यो नदि गयो नारायणी नाँउ् कह्यो,
व्याधा एक् तन्य को कथा सुन फिरी जै आइ मुक्ती भयो ॥८९॥
साची भै न ब्वली नसूनि हिंडदा बैहो किराती भयो,
खेल्दै आइ शिकार डुम्रिरुख मा फलूखान माथी गयो।
हांगो भाँचि पछारियो दहमहाँ उत्रेर पाला महाँ,
लिङ् तीर्थ क्व प्रताप ले अति पुढो को शब्द सून्यो तहाँ ॥९०॥
ज्ञान् भै वर्ष भरी रह्यो तपगन्यो मन्योर कैलास् सन्यो,
योसूनी विरुपाक्ष त्यसतइ भयो प्रसाद पारन् गन्यो।
लौ जांउ हिंड् भनि द्वै जना तब हिंड्या त्यो तीर्थ घुम्न्या भक्का,
ज्योतिर्लिङ्ग प्रभू न्यरा पुगि गया सांखू क उत्तर द्वका ॥९१॥

नारायणी रत्नवती क्व सङ्ग,
योग् तीर्थ मा स्नान् गरि पाप भङ्ग।
रात्री महाँ पूज्यर बालि बाती,
प्रसङ्ग भोक्या महिमा क्व जाति ॥९२॥

सनक ऋषि क्वहीदिन् जाहिं आई नुहाया,
जप गरि शिवभद्रा ज्योति लिङ्गै ध्याया।
चिरंजिवि बहमज्ञान् पाइ् गयाथ्या ति जोगी,
क्वहि द्विज अपराधी भैथ्य कैलास भोगी ॥९३॥

क्वहि निर्घिनि वाहुन् धेर खान्या अशूची,
पुरब जनम पाप् ले जिह्व थीयो त तोखी।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



जहिं भ्यटव मुनि हारित् भन्न्यलाई पऱ्यो पाउ,
सब दरद बतायो यै घखाई दिया ठाउ ॥६४॥
हरण हुन्यछ पाप् को सूनि आइ् जै नुहायो,
बहुतर गरि पूजा पांचदिन् भक्ति लायो।
जप गऱ्या शिवजीका पांच अक्षर्व बीज,
शिवगण हरु आई लैग्य पायोर चीज ॥६५॥
यति सुन्यर नुहाया फूल चन्दन् लगाया,
फल मुल क्व फलाहार् खाई भोक् तृष् भगाया।
गय दुइ ति उकालो चर्व नेपाल् भरीमा,
न्यमुनि विरुप पूग्या माहद्यौ पोखरीमा ॥६६॥
मणीहद त्यत्र नुहाई रत्नचूडेश् प्रभूको,
निशि भरि गरि पूजा लाइ नैवेद्य अपूप्को।
भजन गऱ्य क्यही बेर्जप् गरी जब् सकीया,
विरुपले महिमा तब् तांहिको सोधि लीया ॥६७॥
अघी ब्रह्माजीले यहि दह बनाई तप गऱ्या,
मणीको शम्भू को मुरति य्व बनाई जहिं धऱ्या।
बह्यो जल् नौधारा भइकन जसै यो दह घखो,
गया ब्रह्मा लोक् मा ऋषिनरपणी जोग् तहिं घखो ॥६८॥
अघी बाहुन् कोही मलिन अशुची भ्रष्ट भयको,
मरी भाइ्जो जन्म्यो सब तरह ले खेर गयको।
पिशाचै नाम् त्यस्को पिर दिन्य सबै लाइ जब भो,
मरी आमा आफैं पितृ पनि विरक्तो भइ गयो ॥६९॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



पचिस् वर्षै थीयो डुलद्ध जब गङ्गा तिर पुग्यो ,
भयऱ्यो मुनी यौटा द्रवगदिन पनी पाउ कर लग्यो ।
न छो भन्दा ज्ञान् भै मुगति हुन्य बाटो स्वधि न्वयो ,
घखाइ् दीया जहीं सरसर जहीं आंउद्ध भयो ॥१००॥
यव जङ्गल् मा आई जज्ञ बिच नुहाई शिव पुज्यो ,
खुशी भै वर्षायो शिवदुत क्व लस्कर् त्यहि पुग्यो ।
पुग्यो त्यो कैलास् मा बसन्य भय्य शम्भू नगिच मा ,
तिइ वहीं आया वाग्यश्वरि क्व पुछार् खेत बिच मा ॥१०१॥

वीरानदी तीर त्य्त्र वीर तीर्थ मा ,
स्नान् भो र वागेश्वर लिङ्ग छ जहां ।
पूजा प्रदच्चिण् गरि भक्ति भाव् ले ,
माहात्म्य सोध्नू विरुपाक्ष ता ब्नले ॥१०२॥

क्वै वाक्नामा मुनीश्वर्
अहिं बस्यर नुहाइ् वर्ष सय् तप् गऱ्या छन् ,
थाप्या छन् लिङ्ग एही
शिव प्रकट भई वर्दिई गन् भया छन् ।
मेला हो पूर्णिमा को
ऋषितरपणि दिन जांउँ हिंड् अब् च्चणै मा ,
भन्दै लाया प्रसाद् द्वै
हिंडिकन त पुग्या चांगुनारायणै मा ॥१०३॥

——✻——

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



तीर्थावली यो ह्व विभूति माला,
बनाउन्या हुन् हरि भक्तिवाला।
चौसट्ठिलिङ् को महिमा ग्व मान,
अध्याय यो आठउँ हो त जान ॥ ८॥

इति श्रीकविपतञ्जलिप्रणीते 'श्रीधीरादेश पातञ्जलतीर्थावली श्री३युद्धप्रकाशे'
नेपालस्थचतुष्षष्टिलिङ्गमाहात्म्यवर्णनो नाम अष्टमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu

## अथ नवमोऽध्यायः ।

जब ति पुण्य ढलागिर्पर्वतै मा त माथी ,
विरुपनयन का ती नेमुनी मेर साथी ॥
डुब्यर जब ति आया शङ्खहद् मा प्रदोष् मा ,
शिव पुजन गरी बात् गर्न लाग्या ति तेस्मा ॥ १ ॥
अघि पशुपति ज्योति लिङ्ग को आज्ञ पाया ,
गरुड चढ्यर नारान् बस्नलाइ् जाहिं आया ॥
मुर दइत्य ल्य तपस्या वर्ष हज्जार गर्दा ,
वर मिलि त्य्व रजायो दैत्य सब् पाउ पर्दा ॥ २ ॥
जिति सब घवता लाइ् त्यो त लाग्यो लगार्न ,
सब घव मिलि आया विष्णु थैं दैत्य मार्न ।
खजि खजि त्य्व त आयो देवता सब् खराया ,
हरि ! हरि ! प्रभु ! विष्णो ! मार मन्दै कराया ॥ ३ ॥
चढ्यर गरुड माथी देवता लीइ साथी ,
चकर धनु गदा ली जाइ् पऱ्या दैत्य माथी ।
असुर ल्य जब तोमर् बाण शूल् शक्ति फाल्या ,
परवत सब रिङ्कै दैत्य ले छोपि हाल्या ॥ ४ ॥
यम वरुण कुबेरादी पनी हान्न लाग्या ,
ढहव्व ति हतियार् को जाल चम्केर जाग्या ।
अध्वर भय्व त्य्व सङ्ग्राम् दैत्य घौता क्व भारी ,
हरि ल्य जब चलाया चक्र सब् दैत्य मारी ॥ ५ ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



अगनि सब जलाँउन्या जल् ल्य बारुण् बगांउन्या ,
नख मुखल्य चिथोरी निर्ऋती ता भगांउन्या ।
पवन पनि उडांउन्या इन्द्रवज्रै बुडांउन्या ,
यम लियर त दण्डै दैत्य माथी बुडांउन्या ॥ ६ ॥
गरुड ल्य जल लीया वाग्मती को पखेटा ,
परवत लिइ मुखले दैत्य लाइ दी चपेटा ।
ख घख्यर मुर आयो देवता सब् भगायो ,
हरिकन रिसुठांउने दूत लाईं लगायो ॥ ७ ॥
बँचन्य मनसुबा भ्या देवता लीइ भाग ,
लच्छिमि कन मलाइद्यौ यो लडाञ् मा न लाग ।
नतर मञिल्य सब् को गर्छु ऐल्हे विनाश ,
इ गरिप घवता को ज्यूँनु व्यर्था न नाश ॥ ८ ॥
ख सुनि रिसिइ विष्णू जाइ लाग्या त कोप्ले ,
भय ल्य पशुपतास्त्रै दैत्य ले हान्ख खोप्ले ।
सुदरशन उजाई जाइ लाग्या त मार्न ,
गगन-बचन आयो विष्णु का कान पार्न ॥ ९ ॥
मञिल्य त अजराऽमर् दीय को दैत्य लाई ,
छ्वड तिमि ख लडाञो पर्वतै मा त जाई ।
ख सुनि हरि गई ग्या पर्वतै देव पालन ,
दइत्य पछि पछी आइ् शैल लाग्यो उचालन ॥ १० ॥
हरि त हडबडाया शम्भु लाइ् सम्भ्रँदा भ्या ,
शिव त हरि अगाडी लिङ्गरूप् ले खडा भ्या ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



भइ दिय जब कीलो पर्वतै भो बलीयो ,
तहिं द्योख शिव लाई श्रीकिलेश्वर् भनीयो ॥११॥
शिवलय भन्य मुरारे ! देवता ले त हारे ,
इ दइत्य मिलि तिस् लाइ् जे न्यरा गाह्व पारे ।
भज तिमि गउरी लाइ् शीर काटी चढाऊ ,
भजन गर तिनै को स्तोत्र गर्दै सहाऊ ॥१२॥
यति भनि शिव अल्प्या विष्णुले शिर् चढाया ,
गरुड उपर आफू देवता लाइ् बढाया ।
मुर लय पनि त लड्नू आयको त्यस्त्व देखी ,
गरुड कन त हान्यो बढ्ध्व भो तेस् क सेखी ॥१३॥
हरि क्व शरिर देखी छिन्नमस्ता प्रकट् भैन् ,
सब गण हरु साथ् भै दैत्य लश्कर् महां गैन् ।
गन्धव दइत्य लय ठूलो माइ थैं युद्ध भारी ,
तृतिय नयन ज्वाला छोडि दीइन् त मारी ॥१४॥
द्यव हरु सब मीली पुष्प वृष्टी गराया ,
दइत्य सब ति भाग्या देवि देखी डराया ।
नचन्य अपसरा भ्या और ले गीत गाया ,
तब त गरुडनारान् भन्न्य लोक् मा कहाया ॥१५॥
और् भन्छू कथहा म राम्र अथहा श्रीविष्णुभद्रै थिया ,
ब्राह्मण् ती मरुदेश का बहुगुणी सब् शास्त्र जानी लिया ।
तीर्थाटन् गरि द्वारका ति पुग्य छन् जे मनं मन्मा लिया ,
यो जानी प्रभुले त्य्व ज्ञानिजन लाइ् स्वप्ना द्यखाई दिया ॥१६॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



जा मर्न तजिले छईन हिँउ का पीठ् मा न्यपाल् मा म छू।
दोलागिर्पर्वत् छ जाँ तहिँ बस्यास् सन्देह छैन कछू।
साँचो मान्यर आइ जै गरि पुजा अष्टाक्षरी मन्त्र ले।
प्राणायाम ल्य देह छोडि हरि का जोत् मा मिल्या तन्त्र ले ॥१७॥
आर्को सुन् इतिहास किन्नर स्वही सुग्रीव नामा थियो,
श्राप् ले घोड्मुख भै जहीं वरिपरी गीत् रामरा गाइ् लियो।
कोइ् दिन् शम्भु उनै पुजी निशिभरी गित् गाउँदा खुश् भई।
मित् भैस् तँ पनि वृष् चढाइ् भ्यजि दिया ठूलो भयो तैं गई॥१८॥
दोस्रो ब्रह्माण म्लेच्छ वृत्ति गर्न्यको पांच् पातकी देश् छवडी,
आइ् पूग्यो जहिं खाइ फलफुल सधैं बस्तो भयो मन् गडो।
कार्तिक् शुक्ल युगादि राति हरि हर् देवी क भजना गर्‍यो,
पाप् को छेदन भो हरी हर कृपा प्रात्काल मा जै मर्‍यो ॥१९॥
हरि हर गण आई लोक लै जान लाई,
पर्न्यत्र तिन्हरु स्व युद्धै ऽनेक शस्त्रास्त्र छाई।
ज्वगिनिहरु को लश्कर् आइ द्वै फौज् गलाया,
त्यसकन तिन्हहरूले देविलोक् मा चलाया ॥२०॥
नाग् खान्यात कवल् थियो गरुडका जै ल्याइ खांदै ति छन्,
जानी नाग त शङ्खपाल् जल भिकी तप्स्या महां बैठ्य छन्।
शम्भू विष्णु खुशी भई वर मिल्यो यो शङ्खहद् नांउ् रह्यो,
येती सूनि विरूपले मुनि सहित् प्रसाद खांदो भयो ॥२१॥
जो यस् पर्वत मा चढी हर हरी गौरी क सेवा गरोस्,
भोकै जागृत मन्त्र जाप् पनि गरोस् बत्ती जगांउदै रहोस्।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



वाजूपे अश्वम्यधादि दान् तिरथका क्या त्यो हिसाब् लावला ,
कोटन् जन्म क पाप सब् भसम भै सायुज्य त्यैं पावला ॥२२॥

सुन्यर एतिबात् त्यो विरूपले ,
दुइजना मिली तां ग्यली चले ।
पुग्यर भादगांउ् वीरभद्रको ,
तिरथ मा नुहाइ् लाग्न गो निको ॥२३॥
शिव थिया प्रभू वाल्मिकेश्वरै ,
गरि पुजा र जप् रात् रह्यो थ्वरै ।
कुन्व भिन्ग्या विरूप्ले महात्म्यको ,
कहन लाग्य ने लागन्या निको ॥२४॥
अघि जहां त वीर्भद्र ले नुहाइ् ,
तिरथ को त यो वीर नांउ् कहाइ् ।
उठ्यर वाल्मिकी काशि देखि आइ् ,
मुरति थाप्यको वाल्मिकेश् कहाइ् ॥२५॥
सुन्य क राम्चरित् मत्त भै कपी ,
जहिं नुहांउ्द छन् रोज् शिवै जपी ।
अरु पनी कथा छ जहां क सुन् ,
शिव क्व नांउ् लिन्या वांहिं जाइ् बसुन् ॥२६॥
प्वढ्यनि क्वै जहां रैछ दुर्मुखो ,
शिवपुरी गई फल् खजी दुखी ।
जन्म्य छ छ्वरो आफलेर आइ् ,
सुत्क्यरी त्यत्र बाट् मा त दुःख पाइ् ॥२७॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



डुलद्ध क्वै प्वढ्या देखिल्याइ् छ्वरो ,
दुखल्य पाल्य को बैंस् भयो थ्वरो ।
डुलद्ध त्यो शिकार् ञै घख्यो कपी ,
डुब्यर ञै बस्याका ति शिव् जपी ॥२८॥
तिनि भञो नुहाइ् ञाहिं शिव् जप्यो ,
ठ्वकर मा त जल् ल्याइ ञै थप्यो ।
घर कह्यो सबै काल् पुगेर गो ,
मध्यस मा त्य्व भूप् विश्वकेतु भो ॥२९॥
गन्यर राज्य धेर् दुख् दियो सबै,
वइरि ञाइ् हन्या राज्य सब् तबै ।
दिक भई ञहीं आइ तप् गन्यो ,
शिवपुरी पुग्यो जैल्य त्यो मन्यो ॥३०॥
यति कुरा गरी जल् प्रसाद् लिया ,
हिंड्य तहां घखा मङ्गलेश् पुग्या ।
शहर भित्र त्यैं नासलै न्यरा ,
निशि गन्या पुना सारजाम् घ्यरा ॥३१॥
गणेश् थान जान्या त्य्व सांघू मनी द्वै ,
नुहाया त्य्व भद्रावती तीर्थ द्वै तैं ।
कथाहा तहां को कह्या नेमुनी ले ,
विरूपाक्ष ! हेञा क्व बात् तँ सुनी ले ॥३२॥
अघी क्वही मङ्गलनांउ् भया का ,
ब्राह्मण् ञहीं आइ् तप धेर् गन्याका ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



एस् वन् क्व नांऊं ह्व विमल् अरण्य ,
सैवर्ष तक् शम्भुजि के शरण्य ॥३३॥
इ मङ्गलेश्वर् भनि लिङ्ग थाप्या ,
मुक्ती भया तप्स्य गर्न्या क्व फाप्या ।
पछी जहां म्लेच्छ त कोहि आयो ,
नाचूता सदाशिव् कन देखि पायो ॥३४॥
चांपा क्व फुल् ल्याइ् शिव पुज्न आयो ,
अन्तर्दध्या लिङ्ग यत्र देखि पायो ।
नामै ह्व तेस्को अनि ऊर्ध्वकेशी ,
छ मैन्ह तक् तैं बस्य्व चित्तपेसी ॥३५॥
भदौ चतुर्दश् छुटि गो शरीर ,
दूत् ले लग्या तब् कइलास तीर ।
यतो सुनी द्वै भदगाउं का टोल् ,
छोडी गया तां द्वखि ता सिपाडोल् ॥३६॥
निकुञ्जाद्री नेरा विमल शिव को पूजन गरी ,
विमलगङ्गा न्हाया भजन गरि घूम्या वरिपरी ।
विरूपाक्षै सोध्न्या कहन्य न्यमुनी तां क्व महिमा ,
भजन् सेवा गर्न्या तरदछ यत्र शास्त्रै क्व सहिमा ॥३७॥
विमल् भन्या बाहुन् सकल पढि शस्त्रै गुणि थिया ,
कुट्या छन् भानिज्लाइ् अघि र शिरकम्पाउन्य भया ।
पछी दिक् भै आया तप गरुं भनि येहि पिठमा ,
सुमोऱ्या गङ्गा लाइ् प्रकट भयकी हुन् इ पिठमा ॥३८॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



गऱ्या शम्भूको ध्यान् शिव शिव जप्या लिङ्ग निकल्यो ,
गरी पूजा वर्पाइ् बहुतप गरी ज्यू पनि गल्यो ।
समाध् ले ज्यू छोड्या शिवगण भया लाउन्य जनै ,
सुनी यो पर्साद् खाइ् तिदुइ पुगि ग्या गुराडु क्व वनै ॥३९॥
अनन्तलिङ्गेश्वर को गऱ्या मान् ,
ऋषी तिरथ् मा त गऱ्या बहुत् स्नान् ।
मर्शत् गऱ्या जागरण प्रदच्छिन् ,
विरूपजी ता महिमा ति सोध् छन् ॥४०॥
ऋष्यादि भन्न्या परवत् अघी यो ,
ऋषी हरू को कुल जाहिं थीयो ।
श्रुतश्रवा माठर च्चारपाणी ,
प्रमूख मूखू भन्यका अरू पनी ॥४१॥
अघो कह्या का पनि सब् जहीं थिया ,
स्वायम्भु ले नित्य त अर्ति यो दिया ।
शम्भू दुसो छैन शरण्य अर्क्व कोइ् ,
सन्सार को मेटि दिन्या त फर्क्व यै ॥४२॥
सूनी सबै शम्भु क्व गर्थ्यं सेवा ,
कथाह सुन्थ्या अति मीठ्व मेवा ।
माटो खन्या छन् बृहदग्निद्विज् ले ,
सब् लाइ् दुखाया मन लागि चिज् ले ॥४३॥
देख्या सब् ल्य खडा भया क्व शिवलिङ् ,
तीस् हात तलक् त्यो खन्या ,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



पायेनन् जब अन्त शिवूकन चिन्ही
अनन्तलिङ् नांउ् भन्या ।
नाना फल् फुल धूप दीप हरु ले
पूजा गऱ्या सब् मिली ,
सब् ती शिव् पुर मा गया अरु पनी
कथाह सुन् मन् खुली ॥४४॥
क्वैकाल मा अति खराप थियो त बाहुन्
एकूलै त्य्व खान्थ्य्व परियार कहाँ त पाउन् ।
चोरेर ल्याइ निशि ऊलुक झैं त्य्व खान्थ्यो ,
त्यै पाप् ल्य लाट्क्वस्यऽऩ मुख् लिइ डुल्न जान्थ्यो ॥४५॥
त्यो म्लेच्छ जन्म लियको ख्यलदो शिकार ,
सब् साधु गर्थ्य तसलाइ संधै धिकार ।
ञै आइ् पुगेछ क्वहि दिन् ऋषिको द्यख्यो चाल् ,
ञै स्नान् गरी शिवपुजी छ महिन् बित्यो काल् ॥४६॥
शम्भू प्रसन्न भइ वर्मिलि त्योत घर् गो ,
छोड्यो शिकार क्व रकम् शिवको त भर्गो ।
दर्शन् गरूं भनि कहो दिन आंउद्ध बाट्मा ,
मर्दो भयोर शिवदूत ल्य लैग्य थात् मा ।४७।
यति भनि कथहा ती द्वै जना पार्नु खाया ,
शिवजि कन स्यवालाइ् पश्चिमै लागि आया ।
हिंड तिमि विरुपाक्ष भक्ति माहां भुल्या छौ ,
भनि पुग्य तरखाल् का गांउ् मनी का कुलै छ्यौ ॥४८॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



ती बृद्ध गङ्गा डुबि सोमतीर्थ ,
रुद्राक्षमाला र विभूति शीर् छ ।
पूजा गऱ्या विश्वरुपेश् प्रभू को ,
सोध्या कथाहा अतिलाग्न्य नीको ॥४६॥
बूढा ब्राह्मण एवै श्रुतिश्रव भऱ्या
का कोहि देश् मा थिया ,
छोरा स्त्री मरिग्या विरक्त भयती
थेर्तीर्थ डुली लिया ।
आये छन् जहिं तिर्षि भागिरथिलाइ
डाक्या प्रकट् भै बहिन् ,
स्नान् पान् सब् गऱ्य मूलफल्ख्वजि गया
शिवमूर्ति ताहीं थिइन् ॥५०॥
पूजा पाठ् तप ले गऱ्या अति भगत् गायत्रि जपूता थिया ,
एकदिन् श्रीप्रभु विश्वरूप् कन द्यख्या दण्डोत् लगाई लिया ।
हज्जारौं शिर पाउ नेत्र मुख हात् माला त नाग् का अती ,
आह्लाद् मा डुब्यका उठाइ गणले लैग्या मिल्यो सद्गती॥५१॥
कोही द्विज् सुतपा जहीं तपगरी
गङ्गानुहाइ शिव् पुजीं ,
स्नान् का वखत महाँ त अप्सर मिली
जा आइ ख्यला को बुझीं ।
च्युत् भो वीर्य भ्यरुण्ड पक्षिणि तहां
आइ खाइ रुख्मा थिई ,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



गर्भैं भो फुलपाइ् पकाइ फूवरदा
मानुष्य देखी लिई ॥ ५२ ॥
पाल्या बाह्रवरष् उडेन त्रिशिरा छोड्या पितृ मातृ ले ,
डुल्दो त्यो वन मा घरव्यार ऋषि ले सोद्धा भया खातृ ले ।
विन्ती सब् व्यह्वरा गऱ्यो अहिं पुजा गर् भन्दिया प्रेम ले ,
पूजा वर्ष भरी गरेर त्रिशिरा शिवूपुर् गया क्षेम ले ॥५३॥
हींड्या ताँ घखि ली प्रसाद शिवको
सोम्लिङ्ग टार्को सिहान् ,
दर्शन् श्रीप्रभुसोमलिङ्ग क्व गऱ्या
जाँ पाप हुन्थ्यो गिरान् ।
स्नान् सोम्तीर्थ महाँ क सोमनद का
पद्मावती सङ्गमा ,
रातभर् पुजि प्रदक्षिणा गरि स्वध्या
कथाह त्यै लिङ्ग मा ॥५४॥
पैह्ले क्वै दिन दक्षका छ्वरि हरु सत्ताइस् दिया चन्द्र लाइ् ,
क्यै बात् मा त रिशाइ श्रापूकन दिया घटूतै गया रोग आइ् ।
हाहाकार पऱ्यो जगत् सब डऱ्यो देवादि आई ह्रऱ्या ,
देखी त्यो विपती विरञ्चिसित गै विस्तार सब् यो कह्या ॥५५॥
ब्रह्मा ले यहि तीर्थ जाउ् भनि दिया
ती सुस्त आया अहीं ,
स्नान् को ली सरजाम नित्य ति डुब्या
श्राप् रोग् लय छोड्यो तहीं ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



सम्भया श्रीशिवलाइ लिङ्ग उब्ज्यो
सोम्‌लिङ्ग सोम्‌तीर्थ भो ,
शम्भू पूजन ले मनोरथ पुग्यो
आपू बांकि एक् पक्ष भो ॥५६॥
तेज् पाईकन अश्वमेध गरदा निम्ता सबै लाइ् गन्या,
तारा भन्न्य बृहस्पती कि गृहिणी गुर्मा पऱ्या की हऱ्या।
छोरो जन्म्य्‌व पऱ्यो दुई कन झगड़ा ब्रह्मा ले सोद्धा तहाँ ,
चन्द्रै को सुत हो भनिन् बुध छ्‌वरो तेस्तो अरु को कहाँ ॥५७॥
सोम् लाई त सरापन् गुरु उठ्या
छेक्या त ब्रह्माजि ले ,
तारा लाइ सराप् गन्या व्यसुइ भ्यास
धिक्कार् तँथैं म मिले ।
एती श्राप् गरि छोड् दिया सुनि कुरा
नारद्‌जिथैं तीर्थ को ,
तारा आइ्‌ जहिं स्नान् गरी सुरुपि भैन्
खसम् ल्य मान्या निको ॥५८॥
साभा मा इन्द्रजी का क्वहि त गवइत्रा
सुस्वरै भन्न्य गाँउ्थ्यो ,
चार्चस्माजोरि इन्द्राणि तिरत ह्वरदा
त्यो डुबो मुख् न चांउ्थ्यो ।
जान्या श्री महाराज इन्द्र ल्य सप्या
लाटो मनुष्यै भयास् ,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



भन्दा नारद अर्ति ले त्यव अहिं न्हाइ्
श्राप् शुद्ध भो स्वर् खलास् ॥५९॥
जव गन्ध्व भजना श्रीसोमलिङ् को त तेस्ले,
छ महिन विच शम्भू गए् गई लैग्य जस्ले।
यति सुन्यर प्रसाद् लाइ् खाइ् छुट्यो दुःख पीर,
न्यमुनि विरुप द्वै ग्या पुग्न ग्या लूभु तीर ॥६०॥
गोमति चक्रमती क त सङ्ग,
तीर्थ बडो कहियो गउश्रृङ्ग।
स्नान गरो ग्वभराच्यश पूज्नू,
राति गन्या कथहा सुनि घुम्नू ॥६१॥
जो हुन् श्रीपशुका पतीकन धै
दुद्हाल्न्य कामधेनु गाइ्,
तीं छन् चन्द्रवशैल का गुहर मा
गो श्रृङ्गिनद् तांहिं आइ्।
श्री गोदावरिनाम जस्क्वत बडो
सिङ्हस्त मा जां नुहाइ्,
तिन्कोटी र पचासलाख् तिरथ को
फल् मिल्छ एक् चोटि जाइ् ॥६२॥
यो चक्रनेमि परवत् दखि आयकी जो,
चक्रावती नदि इ हुन् कहिया कि हीजो।
उै श्रृङ्गियोगि ल्य नुहांउ्दथ्य गाइ आइन्,
धौपाट्न देखि गइगन् तहिं गोवन्याइन् ॥६३॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



केवल् सदाशिव बुझी पुज्य गोत्रलिङ्ग,
ती श्रृङ्गि ले प्रकट भ्या तहिं शम्भुलिङ्ग ।
गोश्राट ईश्वर भनी कहिया नेपाल् मा,
निर्वाणपद् ति पुगिग्या पछि केहि काल् मा ॥६४॥
योटा नपुंसक विरक्त त वैश्य आयो,
यै तीर्थमा त क्वहिदिन् स्थ्व नुहांउन पायो ।
पूरुष् भयो खुशि भई शिव का नजिक् गो,
सूना र चाँदि ल्य गरी शिव पूजदो भो ॥६५॥
योता क्व थान् रुच्व सुवर्ण क्व लाइ छानी,
सन्सार मा शिव यखी अरु क्वै न जानी ।
जग्गा पसल् बघञित्रा शिवलाइ् चढायो,
सब् का यखै उडि गयो दुनित्रा सहायो ॥६६॥
येती सुनीं शिवकथा खुशिभ्या अथाती,
नैवेद् प्रसाद लिइ चन्दन लाइ जाती ।
फल् मूल को गन्यर पारण मूख चूठा,
द्वै ताँ यखी जब गया पुग्य सूनगूठी ॥६७॥
श्रीभृङ्गेश्वर को गरेर दरशान्
त्यो सिद्धरस् तीर्थ मा,
स्नान् पान् सब् गरि रात्रि मा शिव पुजी
बाल्या दियो पर्थमा ।
गाया शम्भु भजन् प्रदक्षिण गरी
जल् धार रुद्री पढ्या ;

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



सोध्या तां क कथाह तीर्थ क्व पनी
भक्ती महां ती बध्या ॥६८॥
नन्दी भृङ्गि दुवै सदाशिवजिका द्वान्या रहन्थ्या सँधैं,
ब्रह्मादी पनि पस्न पांउदइनथ्या आज्ञा विनाले कभैं ।
शम्भू गौरि क बात हुन्थ्ये बहुतै एकान्त मा ज्ञान का,
भृङ्गी मौहि भइन् सुनी सब कुरा पर्ब्रह्म का ध्यान का ॥६९॥
आई त्यो विजया थजीत कहाछन्
साभा महां भन्दि भै,
जानिन् पार्वति ले कहिन् शिवजि थैं
शम्भू रिसाया तबै ।
हे भृङ्गी ! तँ मनुष्य भ्यास् भनि दिया
श्रापान्त लाइ् कर्ज्वरी,
कर्वीर् वन् पसि तप् गऱ्यास् म दरशन्
दी ल्यांउँन्याछू फयरी ॥७०॥
यो सूनी अहिं आइ् बहुत् तप गऱ्या ज्योती स्वरूप् देखिया,
पूजा स्तोत्र गऱ्यार इन्कनत भृङ्गेश्वर् भनि लेखिया ।
लिङ्गै मा प्रगटै भई वर दिया कैलासमा लै गया,
जो जो स्पर्शन गर्न्यका त अँगुठी तांबा क सुन् भै गया ॥७१॥
यो देखी ऋषि हेरु सिद्धरस का
ताल् को बयन् गर्दथ्या,
एक् राजा उड़िसा क क्वै पछि भयो
सब् भूप पाउ् पर्दथ्या ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



दान् का जोर्ल्यत इन्द्र भो सुनि वयन्
नेपाल को कोहि दिन्,
ब्राह्मण् लाइ विमान् ब्बकाइ वहल्यो
दुःखी भया विप्रगन् ॥ ७२ ॥
जा भैग्यास् अजिगर् भन्या जब खस्यो
एक्कोस लामू भई,
सब् जान्न्या द्विजश्रापम्म्यटाउन भनी
बेही रह्यो जै गई ।
आंट्या छन् गरुडै ल्य खान तसलाइ
भृङ्गील्य हप्काइ दिया,
जां तक् ठाउँ छुवड्वैन वर्ष त हजार्
ताहां पछी खाइ लिया ॥७३॥
यो सूनी त गरुड् बस्या त धरना
एक्दिन् भ्वकाइ बाइ ह्गो,
जाइ लाग्या र गरुड् हजार् वरष मा
तिन्लाइ खाजा भयो ।
सुन्दर् देह भयेर स्वर्ग त्य्व गयो
यो तीर्थ ठूलो भयो,
तत्त्वण् शम्भु खुशी हुन्या तिरथ भो
वैसाख् नुहांउनू ज्व गो ॥ ७४ ॥
यति भनि शिवजीको ढैल्य लाइ खाइ प्रसाद ,
शिव भगतिल्य गर्दा छोज्य सन्सार् फसाद ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



हिंड्य ति दुइ ललितवन्मा खुशी भै ब्यलूका,
पुगन गय ति लिङ्गेश् पाटनै बाहलूखा ॥७५॥
पूजा गऱ्या विरुपले शिवभक्ति लाई,
बत्ती जगाइ शिव का गुण नाम गाई।
रात्र्यन्त मा विरुपले स्वधदा कथाहा,
ती नेमुनी कहँदछन् खुशि भै अथाहा ॥७६॥
यो हो सबै बन महां अतिराम्र जङ्गल्,
नाना विचित्र फल फूल्ल्य सं धैछ मङ्गल्।
नाना चिडै र मृग ले बहुतै य्व पालित्,
तस्अर्थले वन क नाँउ रह्या क्व लालित् ॥७७॥
घोता हरु पनि जहां बहुतै रमांउछन्,
पूजागरो इ शिवका गुण गीत गांउछन्।
तीर्थै छ यो त मणिकुण्ड कलेश् हरांउन्या,
ई हुन् त्रिलिङ्ग शिव ऽनेक सुखै गराउन्या ॥७८॥
जहाँ अघी त्रितमुनील्य तपस्य थाल्या,
धेर्वर्षतप् शिवजपी कन देह गाल्या।
शम्भू प्रकट्भय कुमार् गिरिजाल्य साथ,
तिन् लिङ् घखी पुज्य मुनील्य त राख्य माथ ॥७९॥
मुक्ती भया मुनि पछी क्वहि दुष्टबाहुन्,
ताल् जङ्घ चोर् भइ क्वही हिंडनै न पाउन्।
ग्वार् आख्व दुद् ब्वक्यर मान्यर दूद लैगो,
डुम्री क्व रुख् मनि घख्यो यहि लिङ्ग थीयो ॥८०॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



लाग्योर ठक्कर पछारिय्ख दुद् प्वखीयो,
स्नान् भो प्रभू क शिवरात्रि क दीन थीयो ।
शिव् शिव् भन्यो भयर ज्ञान् मरिजाँ य्ख ठान्यो,
कैलास् गया मञ्यर शम्भु क्व भक्ति जान्यो ॥८१॥
लौजाँउ् विरुप् अब नजीक अहीं छ वन्मा,
भन्दा प्रसाद लिइ खूशि भयेर मन्मा ।
हींड्या तहां यखित खायर पार्नु केश,
ती छै पुग्या नजिक भीम्सिनथान नेश ॥८२॥
जब पुग्य कुपितेश्वर् शम्भु का ती नजीकै,
डुबिकन उदकुण्डे तीर्थ मा शम्भुजी कै ।
गरिकन निशि पूजा और् प्रद्चिन् र जाप ,
तब ति स्वधन लाग्या नेल्य दीया जबाप ॥८३॥
छितमुनिल्य गऱ्याथ्या धेरदिन् खुप् तपस्या ,
खुश भइ शिव आई गौरि साथ् जै बस्याथ्या ।
वर मिलि मुनि मुक्ती भै गया हे विरूप !
पछि कहि मुगती भो सुन् कथाहा छ खूप ॥८४॥
अघि कसइल्य बालक् लाइ् सिकाये छ ढांट्न ,
जनम लिय्ख फिरी त्यो ढांट्न्य भै जन्म काट्न ।
दुनिञ कनत ढांट्तै वन् पोसी लूकि खान्थ्यो ,
जबर पुरुष देखो डर्पनी केहि मान्थ्यो ॥८५॥
जुन्यल्व लियर जान्थ्यो स्त्री र बालख् चखांउ्थ्यो ,
छवर त्यवर् चोवर् दिन्छु भन्दै फाकांउ्थ्यो ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



मखिकन पनि ढांट्थ्यो क्या अरूको त कूरो,
ठग्य छ क्वहि मुसल्मान् भृङ्ग भन्यात शूरो ॥८६॥
शिवनिशिक्व थियो दिन् भोक्व है भोलिखेश,
जुन्यल्व मुख्यर खायो जे न्यारा थीय्व डेश।
रुख चढ्यर त बेलूका पात् खसायेर सूत्यो,
ख्वजि ख्वजि गय्व भृङ्गी देखि जे बाण थूत्यो ॥८७॥
तब लग्यर हात् कान् छोड् दियो ताक्यरै बाण्,
बिउँभ्यर त्यहि पिर्ले छूट्यभैं भै गयो प्राण्।
रुख घ्वखि त्य्व पछारीयो फ्यरी लात मान्या,
मुठि र मुग्यन्व ले फेर् हानि आत्यन्त पान्यो ॥८८॥
शठ त्य्व त शिवलिङ्गै मा अभ्कारी बभ्कारी,
शिव ! शिव ! भँनि रूँदै लिङ्ग मा पैटमारी।
शरण शरण शम्भो ! भन्दथ्यो प्राण पान्या,
रिसिइ शिव प्रकट् भै नेत्र ले म्लेच्छ मान्या ॥८९॥
तब त इ कुपितेश्वर् नाउँ भो शठ् मुगत् भो,
ऋषिगण सब आई जा बड़ो उत्सवै भो।
अब हिंड विरुपाक्ष ! आहिं उत्तर् नजिक् जांउ्,
भनि हिंड्य दुइ कुम्भेश्वर् जहां टोल को नांउ् ॥९०॥
गौरीकुण्ड महाँ नुहाइ दुइ ले सर्वेश पूजा गऱ्या,
बत्तीबालि प्रदक्षिणा गरि भजन् गर्दै चरण्मा पऱ्या।
रात्री को चउथो पहर् जब भयो भीक्या विरूप् ले कुश,
श्रीमृत्युञ्जय को कथाह गरन्या भ्या नेमुनी ती पुरा ॥९१॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



गउरी जहिं तप् गरी बसिन् ,
जल आइ् कुण्ड पऱ्यो र मन् कसिन् ।
शिव खूश भई मिल्या पनी ,
उब्जाऊन्य अगस्त्य ई मुनी ॥६२॥
अघि जै क तपस्य ब्रह्म को ,
फिरि कश्यप् ल्य जगत् क सृष्टि को ।
पछि क्वै विरुपा सुरूप भै ,
जल को त्यो बल इन्द्र साथ गै ॥६३॥
कहि एक किराति की छ्वरी ,
बहुतै रूप् नभयाकि धिग् गरी ।
पितृ मातृ ल्य मूख हेऱ्यनन् ,
बिह्य भो ता पनि पोइ् ल्य टेऱ्यन ॥६४॥
विरहै गरि मर्न जाहिं आइ् ,
घुमि लिङ्गै प्वखरी त नाउँ गाइ् ।
गरि फाल् डुबि म्लेच्छ ले झिक्यो ,
ह्यरि छाया जल मा कुरुप् लुक्यो ॥६५॥
समचार् लग्य स्वर्ग मूनि ले ,
तहिं आइ् स्वर्ग त इन्द्र ले लगे ।
पछि ब्राह्मण एक मुक्त भो ,
सुन समृचार अजुक्त जुक्त भो ॥६६॥
क्वहि बाहुन भ्या क्व गाङ्गतीर् ,
मरि चाण्डाल अनेक पाइ पीर् ,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



गरि चोरि कुटुम्ब पाल्दथ्यो ,
द्विज को काम् छ्वडि दीन फाल्दथ्यो ॥९७॥
रिसिई कन नारि लाइ् कुट्यो ,
मरि गै त्यो क्यहि दिन् मुट्ट फुट्यो ।
डुलदो बहु दिन् बयन् सुनी ,
उहिं आई बस्यको थियो खुनी ॥९८॥
क्वहि दिन् मुनि का सभा पुग्यो ,
भन्य तिन् ले त्यन्व काल आइ् पुग्यो ।
त्यहि लिङ्ग महां अँगाल्व हाल् ,
सुनि जल्दी गरि तेस्ल्य हाल्यव फाल् ॥९९॥
यम का दुत आइ् पुग्या तहीं ,
घस्य तेस् लाइ त लिङ्ग आइ् भञी ।
कसरी वरसारि मारऊँ ,
यस लाइ् पाश महां त पारऊँ ॥१००॥
द्विज भाइ् तिमि लाइ निम्त्व छ ,
हिंड भोज् खान भन्या क्व सुन्द छ ।
मरन्या ग्व बखत् क्य खान जां ,
भनि छोडेन त्य्व लिङ्ग ता तहां ॥१०१॥
छ्वड्य पाश् तिन्हरू ल्य बेहियो ,
शिवलिङ्गै सम्यते फुकीं गयो ।
तब हपकि गऱ्या ति दूत ले ,
किन बस्छस् अपराधिरूप ले ॥१०२॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



क्व ह्व रत्तक लौ त्यरो जहां ,
वरआ छोड् शिवलिङ्ग त्यो तहां ।
पिटुँ की थिचुं की बजारुँ की ,
भनि हप्काउँद्छ भो म मारुँ की ॥१०३॥
सुनि आत्तियर त्यो त गङ्गदास् ,
तहिं कान् मा परदो भयो बतास् ।
नडरा नडरा ग्व मंत्रजप् ,
घरि दुइ् चार् इन्ह्यरु क्व खप् कि खप् ॥१०४॥
जप्यव मंत्र त शैवदूत आइ् ,
हपकाया यमका त दूत लाइ् ।
क्य भनिस् किन त्यो छ्वडिस् डुवरी ,
किन ईश्वर् क्व त लिङ्ग लाइ् ब्यही ॥१०५
शिवलिङ्ग छुन्या क्व पाप् कहां ,
प्रभुको नाम जपी लियो जहां ।
तिमि खुप् गरन्या निसाप है ,
अब तिम् लाइ् ग्वधन्या ब्यला यत्र भै ॥१०६॥
येतो बात गरी प्रमथ्गण मिली
यम्दूत लाई कुट्या ,
हात् भांच्या कति का कती पग टुट्या
धेर्का कपालै फुट्या ।
आया चण्ड प्रचण्ड नाम भयका
यम् का त सर्दार धे् ,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



छाड्या दण्ड र शक्ति पाश् तिन्हरु ले
शिवदूत् लगान्या त फेर् ॥१०७॥
वै बाहुन् नन्दि आयो यमगण विषये
पत्थरै वृष्टि लायो,
आकाशवाणी सुन्यो जब् यमगण कन ता
तँ नहान् दुःख पायो।
बन्दोबस्तै इ गर्न्या सकल जगत का
यो सुनी छोडि गैग्या,
गङ्गादास् लाइ ठूलो उतसव गरदै
झट्ट कैलास लैग्या ॥१०८॥
यम का दुत गै फिराद् गर्न्या,
यमथैं लश्कर हामरा मर्न्या।
लिनु होस् ख्व त दण्ड पाश् हजूर्,
हुकुमै ता प्रभु को भयो उजुर् ॥१०९॥
यति भनि रुन्य घाइता देखि यम् ता रिसाया,
ख्व ग्रखि छडि र पाश् द्वै नेत्र जाइ ताञ् खसाया।
भिकि ह्यन्य बहि तेस्को पाप सब् मेटिये छन्,
छकपरि यम बोल् छन् शिवचरण् भेटिये छन् ॥११०॥
न गर तिम्हरु यस्तो काम थीञा म भन्दै,
म्यन्व हुकुम न मानी काम् गर्न्यौ क्यै न गर्दै।
शिव र हरि क्व वार्ता हून्य ठाऊँ बचाऊ,
न ह्यरनु तसतर्फै कत्ति जांदै न जाऊ ॥१११॥

द्विज त फट भये छ पाप् सखी हेर् बही यो ,
शिव भगत भये छ तब् प्व तेस्लाइ सही यो ।
शिव ! शिव ! हर ! शम्भो ! शूलपाणे ! गिरीश ! ,
प्रणमति गन्यँ मैले होस् दया छोडि रीस ॥११२॥
यस्तो छ ञा क्व महिमा इ त कुम्भशिव् को ,
मृत्युञ्जयै भनि कह्या क्व महाबयन् को ।
जांउ् हिंड् तँ रुद्र तिरथै शिव छन् ग्वलोकेश् ,
भन्दै गया बलखु का तिर मा अती बेस् ॥११३॥

तीर्थावली यो ह्व विभूतिमाला ,
बनाउन्या हुन् हरिभक्तिवाला ।
चौसट्ठिलिङ् को महिमा ग्व मान ,
अध्याय ता यो नवऊँ ह्व जान ॥ ६ ॥

इति श्रीकविपतञ्जलिप्रणीते 'श्रीधीरादेश पातञ्जलतीर्थावली श्री३युद्धप्रकाशे'
नेपालस्थचतुष्षष्टिलिङ्गमाहात्म्यवर्णनो नाम नवमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu

## अथ दशमोऽध्यायः ।

ब्रह्माजि ले अघि जहीं तप खूप् गऱ्या छन् ,
गोलोक देखि शिव खुश् भइ जै भऱ्या छन् ।
गोलोक ईश भनि नाम् तब यो रह्या को ,
सब् थोक् किमत् तब त ब्रह्माजि को भया को ॥ १ ॥
एक् केकराक्ष भन्य को अघि कोहि राक्षस् ,
तिर्षाइ पानि पिय्व जै मृग पक्षि भक्ष ।
ज्ञान् भो ह्यऱ्यो वरिपरो छ्यखि ज्योतिरूप ,
भक्ती लगाइ् गरि पुजा यक वर्ष खूप ॥ २ ॥
त्यस्को छ्यखी भगति गण् शिव का त आई ,
राख्या विमान तन लै गय गीत गाई ।
दोस्रो कथाह पनि यो सुन हे विरूप ! ,
त्यो मित्रहित्य तन्य को बढिया छ खूप ॥ ३ ॥
कश्यप् क्व पुत्र अघि वृत्र भन्या क्व दैत्य ,
हज्जार्वरष् तप गरी बर पाइ् अनित्य ।
और् क्वै न मारन सकोस् बस होस् त्व्य इन्द्र ,
साम्ने लडाञि बिच क्वै न हवस् त वृन्द ॥ ४ ॥
वर्पाइ यस्त्व जग लाइ गराय्व दास ,
सर्दार् अह्राय्व अमरावति जाइ नाश ।
त्यो देखि इन्द्र भयले डरि भागि जान्थ्या ,
नारद् भ्यथ्या कहि कुरो शिर न्यूह्हि मान्थ्या ॥ ५ ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



दोस्ती गरी रहुँ भन्या गन्य मित्र जस्तो ,
स्वर्गैं थिया त पनि बल् घखि त्यसुक्ष्व सस्तो ।
चित् स्थिर् भयेन त्रिहिं आइ् वर तिन् ल्य पाया ,
डांडा महां गइ बस्या प्वखरी बनाया ॥ ६ ॥
नन्दी थिया सँग महां मितलाइ खोद्द ,
त्यो दैत्य आय्व तहिं इन्द्रजि लाइ सोद्धै ।
किन् दुःख पाइ् बसनु भो भनि प्रेम् ल्य सोध्या ,
अपराधि इन्द्रल्य तहीं मितलाइ गोध्या ॥ ७ ॥
राज्यै फुका भय्व घ्यन्यो जब मित्रहत्या ,
धैर्वर्ष दुःख मिलि नारद थैं त स्वत्थ्या ।
यै तीर्थ को गन्य बयन् तब न्हाइ त्राहीं ,
हलका भया तइ पनी जिउ शुद्ध नाहीं ॥ ८ ॥
यै इन्द्र हद् लग्यर यज्ञ गराइ न्हाया ,
तब् इन्द्र श्राप् म्वचन भै बहु सूख पाया ।
भादौ म्यला भय्व तहां दहचोक नाऊँ ,
हींज्या तहां घखि महाघउ भन्न्य गाऊँ ॥ ९ ॥
बाट् मा गन्या त दरशन् अनि मत्स्यनारान् ,
स्नान् मातृतीर्थ क्व गन्या सब पाप तारान् ।
स्वद्धै गया त महिमा दुइ तीर्थ को तात्र् ,
विस्तार गर्न्य भय नेमुनि तीर्थ को म्यात्र् ॥१०॥
मत्स्यावतार गरि श्रीहरि ले त वेह्लै ,
वेद् ल्याइ ब्रह्म कन समृपि दिया त पैह्ले ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



क्यै दिन प्रभु जहिं रह्या सब लेत मान्या,
जा स्नान् गरी रहन्य ले हरि लाइ जान्या ॥११॥
अब् मातृतीर्थ क बयन् सुन हे विरूप !,
आमा मरी छ यउटा कि न्वये छ खूप ।
विष्णू क मूरति अँगाल्य छ पीटि छाती,
ब्राह्मण् स्वरूप् ल्य हरि आइ गन्य बात जाती ॥१२॥
आमा त्यरी कन घसाइ म दिन्छु हिंड् जाँउ्,
भन्दै लग्या हरि ल्य हात समाइ यै ठाँउ् ।
बार्वर्ष को त्य्व बबुरा जल मा घस्यो माइ्,
घर् मा लगी दिनु हवस् सुख पाउँला जाइ् ॥१३॥
ब्राह्मण् ब्वल्या घर महां इ त जांदिनन् रे,
स्नान् गर् घ पिण्ड तब खान य्व आँउँछिन् रे ।
भेट्न्या इशाद ल्य दियो गइ पिण्ड खाईन्,
आंउनू छईन मजि ले भनि ता बुझाईन् ॥१४॥
दोश्रो जनम् हुन्य छु माइ् अहिले तँ राज्खा,
भन्दै दुवै अलपिया पछि भो त्य्व बात्सा ।
दोश्रा जनम् त्य्व मुचुकुन्द भयो थ्य्व राजा,
मुक्ती भयो पछि त विष्णु भगत् क ताजा ॥१५॥
तस् अर्थ औंसि बइसाख क जा नुहाई,
श्राद्धैगरी जल र पिण्ड ज्व दिन्छ भाई ।
आमा घखी वियग त्यस्क कभै हुँदैन,
आमा छईन भनि त्यां स्वग ले छुँदैन ॥१६॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



तांहां थ्यखो तत्र ति चन्दनभ्राट नेरा,
चन्दागिरी भनि नुहायर भस्मगङ्गा ।
पूजा गरी निशि बिताइ न आइ नीद,
सोध्न्या बिरुप् कहन्य नेमुनि शम्भु गोद ॥१७॥
एक् दिन् सदाशिव बिमान चढेर आया,
गौरी सँगै भइ ख्व लिङ्ग त देखि पाया ।
मूर्ती ख्वरो भनि थ्यखाइ् पसिग्या यसै मा,
श्रीपार्वती ल्य त पुजिन् बहुदिन् तसै मा ॥१८॥
फर्माइ चन्दन क्व वन् बहुतै चढाइन्,
येस् पर्वतै कनत चन्दनशैल् कहाइन् ।
शम्भू त चन्दनभराट कहाइया ई,
कैलास् गइन् गउरि फेर् शिवलाइ पाई ॥१९॥
ब्रह्मानन्द कह्या क्व ब्राह्मण पछो कोही प्रभापूर मा ।
धन् पुत्रादि भया क्व त्योथियव पनी हिंड्थ्यो फकिर्सर मा ।
मागी मागि तिरथ् मह्यां परव मा खान्थ्यो न दीन्या कभैं,
छोरो त्यस्क्व मरे छ रोग न भई मुर्दा ब्वको आयव जै ॥२०॥
धिक्कार होस् शिव ! हजुर् थिति बाध्न्य भन्नू,
यौटा मजो ल्य य्व मुलूक मह्यां त कन्नू ।
चार्कोस् पशूपति थ्यखो यमदुत् न आंउन्या,
भन्छन् म भ्यां किन जह्यां सुतशोक पांउन्या ॥२१॥
मर्छू भनी कउल्व जोति थ्यखो अकाश्मा,
बोली सुन्यो शिव क्व त्यस्ल्य तह्यां अकस्मात् ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



हे विप्र ! दान् लिइ नदी कन मात्र खाइस्,
त्यै पाप ले अहिल्य पुत्र क्व शोक पाइस् ॥२२॥
पांच् भाग् लगाउनु कमाइ क्त्र खानु एक् भाग् ।
धौता र पाहुनु र यज्ञ र दान चार्भाग् ।
तब् देवता हरु सधैं करुणा ति गर्छन्,
गर्दैन ता तिन्हरु का सनतान मर्छन् ॥२३॥
हत्या न गर् लग्यर तीर्थ महां डुबा त्यो,
बांच् ला भनी शिव गया तत्र त्यो त ताज्यो ।
चोभ्यो छ्वरो तिरथ मा त्रिउँते र आयो,
मानेर शम्भु कन नांउ् नवजन्म पायो ॥२४॥
सेवा गरी पछि अहीं क्व भयो त्यत्र मुक्त,
येस्तै अरू पनि बड़ा भय आहिं युक्त ।
अब् जाउँ उत्तर भनी नइवेद्य खाया,
ताहां घ्रखी हिंड्यर द्वै ति इ चङ्गु आया ॥२५॥
श्रीकामधेनु ल्य नुहायकि हुन् इ गङ्गा,
नांउँ् नन्दिनी भनि नुहाइ् भय्व देह चङ्गा ।
यज्ञेश को गरि पुजा गय्व रात धेर,
श्रीनेमुनी ल्य महिमा गन्य उत्तिखेरै ॥२६॥
श्रीविष्णु ले अघि बडो गरि धेर्तपस्या,
ई थाप्य का शिवजि हुन् अहिं आफु बस्स्या ।
एकांश ले छँदइ छन् शिवका त साथी,
अर्को कथाह पनि सुन् तँ विरूप जाती ॥२७॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



क्वै एक् हयग्रिव भन्या क्व त यत्त थीयो ,
द्वार्पाल् भई कुब्यर को जफताग्नि लीयो ।
रोक्यो सबै कन रिसाइ निकालि पायो ,
दिग्दार भै घुमि फिरी यहि क्षेत्र आयो ॥२८॥
वार्वर्ष तक् शिव पुज्यो फलमूल खायो ,
माघ् मा तताइ जल शम्भुजि लाइ् नुहायो ।
ज्यू टुट्यको मरिगयो यहि लिङ् अँगाली ,
शिवदूत आयर लग्या त विमान हाली ॥२९॥
लौ विष्णु को गन्यर दर्शन पापपोली ,
जांउ् हिंडू मती तब त्यरीं अतिशुद्ध होली ।
येती भनीकन हिंड्या ति गुरू र चेला ,
टोखा पुग्या भन्य सपन्तिरथै क्व मेला ॥३०॥
नुहाइ पिण्डारक तीर्थ माहां ,
सांज् मा श्रीचण्डेश्वरलिङ्ग जांहां ।
पूजा सदाशिव् क्व गरो बित्यो रात् ,
सोध्धा विरूप् ले कहँदा भया बात् ॥३१॥
अघी श्रीचण्डी ले गन्यर विनिपातन् असुर को ,
गरी तप्स्या शिव् को ग्रहिं भगति ले वेकसुर को ।
प्रकट् भ्या चण्डेश्वर् भजन गरि कैलास गइथिन् ,
इतीहास् अर्को सुन् तिरिसकिन्य छ कल्मष क्व रिन् ॥३२॥
अघीं अन्धासुर् ले गन्य्व बडव तपस्या ग्रहिं बसी ,
मिल्यो अजामर् वर् त्रिलवक जित्य्व द्यौताकनकसी ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



जहीं आई धौता शिवचरण आँसूल्य त ध्वया,
रिसाइ आयो अन्धा गन्य्व शर क वृष्टी तब न्वया ॥३३॥
उब्ज्या विश्वैकर्मा गन्य पथर को वृष्टि बहुतै,
वजर्छोड्न्या इन्द्रै अरुपनि त जाइ लागन्य उतै।
लगान्या धौताले शिवकन पुकारी वर लियो,
लगान्यो देवको गन् अगनि क्व प्रयोग्ले त पचलियो ॥३४॥
छोड्यो पाशु कर्मा लाइ कस्यर जब मान्यो सुर लियो,
हँदै धौता भाग्या असुर त भयो ज्यादि बलियो।
पुकान्या शम्भू लाइ शिव खुश भया त्यो बल धखी,
प्रमथ् गन् लाइ डाक्या दइत्य गय्ब कैलाश् धखि प्यखी ॥३५॥
महात्म्यै तीर्थैं को पनि त सुनि ले हे विदुर! तँ,
मरू देश् को राजा सुनिति भन्य को हेछ भगत।
गयो द्वार्का दर्शन् गरि हरि क्व थाप्यो त परसाद्,
यका हात् ले मात्रै यमऋषि इ आया पव्यव फसाद् ॥३६॥
प्रभूको फूल् थाप्न्या पशु तँ यक हात् ले भनि त्य्व हात्,
दिया काटी तिन्ले विरहल्य त राज्यै क्व छ्वडिथात्।
अनेक् तीर्थैं डुल्थ्यो बयन सुनि आयो जहिं त्य्व भूप्,
नुहायो हात् उम्र्यो बहुत खुश भै स्नान गन्य्व खूप् ॥३७॥
बस्यो मैन्हा दिन् त्रा सपुरत भई राज्य तिर गो,
भनी ल्याया पाती तब सकल पाप् को पिर गयो।
हिंड्या ताहां देखी शिवजि क्व प्रसाद् पार्नु गरि रोट्,
पुग्या धर्मेश्वर् का नगिच तहिं गाँउ माथि लिपिकोट् ॥३८॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



जेष्ठिला धर्मगङ्गा बलाका स्व सङ्,
स्नान् गन्या ढैल्य जाँ पाप को हुन्थ्यत्र भङ् ।
रात् भरी बत्तिबाली गन्या मङ्गलै,
बात सोधूछन् जहां को ख्रखो जङ्गलै ॥३९॥
जा अघी धर्म ले पच्नि को रूप् गरीं,
लिङ्ग थापी पुज्या शम्भु को खुप् गरी ।
धर्म ले स्नान् गरी धर्मतीर्थै भयो,
स्वै जहाँ पापि मुक्ती भई स्वर् गयो ॥४०॥
बकमुख्या नाँउ् भया को किराती जहाँ,
नौल्व मिर्गै ल्वटाइ् पानि खायो तहाँ ।
पूजन्या ती वसिष्ठै ख्रखी ताजू गयो,
आय्व ज्ञान् फूल् टिपी ऋषि लाइ् दींद भो ॥४१॥
रात् भरी तिन्ल्य पूजा गन्या को ह्यन्यो,
प्रातकाल् मा शिवै का ढ्वका छयौ मन्यो ।
आइ दूत् शम्भु का झट्ट तेस्लाइ् लग्या,
साथ मा आइ् सुत्याका सबै लाइ् ठग्या ॥४२॥
सत्यजुग् का प्रभू आहिं छन् जल् शयन्,
विष्णु का गुणको कस्ल्य सक्ता बयन् ।
दर्शनै गर्न जांउ् हिंड् भनी ह्वै गया,
तां ख्रखीं फेरि गोकर्ण पुग्दा भया ॥४३॥
वाग्मती मा नुहाइ् तीर्थ पीतामहै,
पूजनै श्री प्रभू को तती काम भै!

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



बालि नीराजनै घूमदै रात् गयो ,
तां पछो वीरुपाक्षै बयन् सोधूद भो ॥४४॥
नेमुनी भन्दछन् सिङ् थपाइ् को कुरो ,
वैश्य ले श्राद्ध गर्दा भया को पुरो ।
वेश्य को पुत्र क्वै वैश्य ले बाबु को ,
भै ब्यपत्ता न पाइ् जात को आयको ॥४५॥
पिण्ड दींदा पितृ तीन्वटा आँउँदा ,
बाबु यै हो भनी क्यै न थापाउँदा ।
आइ श्रीब्रह्म ले लाइ दीया थिती ,
भाद्र का कृष्ण को औंसि थीयो तिथि ॥४६॥
यस्क्व विस्तार् सबै एक चोर् आय को ,
आक्वं चोर् देखदा मर्न्य डर् पायको ।
वन् महां फेर् लगार्दा त ज्यूपाल्य को ,
आातई डील देखी त फाल् हाल्य को ॥४७॥
भिर्गुपात् भै पन्यो उत्तिखेरै मन्यो ,
शम्भु का दूत आइ् त्योत कैलास् सन्यो ।
रावणै को त भोग् तैं चलाई सुरो ,
खाइ जल् लाइ पातीं भयो ब्रत् पुरो ॥४८॥
हिंड्य जब तहिं देखो द्वै जना बात गर्दैं ,
शिव क्व महिम सुन्दा हर्ष ले आंसु झर्दैं ।
हनु तिरथ नुहाइ् जांउ् हिंड् कपी का प्यवै मा ,
पुण्य मणिमति हन्मत् सङ् म्वतीटार् छयवै मा ॥४९॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



नुहाइ् स्वध्या तब् महिमा तहीं को ,
भन्छन् मुनी श्री हनुमानजी को ।
जन्मेर माइ् काख् बसि सूर्य देखी ,
खेलाँउन् लाइ् मागन्य भ्या उदेकी ॥५०॥
हाँसिन् अञ्जनि जाउ बाबु तिमिनै
ल्याऊ म ता पुग्दिन ,
भन्दा ऊडि गयेर रथ् पकडदा
आंख्या खोलाइ् लिन ।
रथ् वेग् मा कर खुस्कि चिउड्व ठ्वकियो
घाउ् लागि फाल्हालदा ,
ऐ हो ती त पछारिंदा ऋषि ध्यख्या
स्नान् ले त पाप् फालदा ॥५१॥
को होस् कां ध्यखि आइ् पछारिन गइस्
भन्दा ऋषी ले कह्या ,
ठूलावीर् रह्य छौ ख्व घाउ हनुको
नांउ् ले हनूमान् भया ।
यो ठांउ् भो हनुतीर्थ लिङ्ग थपना
शम्भूजिको राखि द्यौ ,
स्नान् पूजा गरन्या जहां मनुज का
जन्मान्त पाप् काटि द्यौ ॥५२॥
किष्किन्धानगरी बसाइ् हजुरकी
सुग्रीव् क काजी भई ,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



श्रीनारायण राम भै तहिं पुग्या
राम् कात साथै गई ।
राचस् कुल् कन मार्न तर्न जलधी
किम्मत् ह्वला वर् दिञौ ,
यो सूनी अभ्रसम्म स्नान गरनै
बानर् त आंउछन् दिनौ ॥५३॥
तीज् हो म्यला बांभि ल्य पावली च्यला ,
रोगी नुहावस् दिरघायु त्यो ह्वला ।
खसम् कि प्यारी ह्वलि हेलिया कि ता ,
नुहांउन्य का खुश् रहनन् श्रिराम्सीता ॥५४॥
वायव्य देश् हिंड् भनि तां ग्वखी गया ,
उत्तर्प्रयाग् शङ्खमुलै नुहाइ लिया ।
श्रीरुद्रधारा तिरथै भन्या म्यला ,
कोटीश दर्शन् गन्य सांझ को ब्यला ॥५५॥
दीयो जगाया गुण नाम गाया ,
धूपाऽक्षता चन्दन सब् चढाया ।
हांकेर पञ्चा विनिञा गन्या गित् ,
सोध्या विरूपाक्ष ल्य तां क सब् रित् ॥५६॥
बोल्छन् नेमुनि क्षेत्र शङ्खमुल यो सब् क्षेत्र मा को बडो ,
कस्तै घोर्कलमष् पनी न रहन्या पापी हञ्रोस् क्वै कडो ।
आकाश् देखि मणीमती भन्यकि हुन् श्रीजाह्नवी वाग्मती ,
पाताल् देखिइ भोगवती निकल्य की श्रीरुद्रधारा सती ॥५७॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



चौथै भूवन को ख्व तल् छ बढिया एस्मा पनी जम्बुद्विप् ,
येस्का नौटुकुरा महाँ पनित यो को सक्छ लायेर सिप् ।
देश् मध्ये पनि यो न्यपाल बिचमा फेत्रैत्र यो शङ्खमुल् ,
तारीफ् गर्न समर्थ कोछ शिवका थात्को परी जान्छ भुल् ॥५८॥

भागीरथ् क्व चतुर्गुणै छ महिमा
यस्क्षेत्र को हे विरूप् ! ,
काम् धर्माऽर्थ र मोक्ष पाउन्य जहीं
पापको त नाश् हुन्छ खूप् ।
सप्तर्षी हरु भ्या विभीषण भया
सब् को तपस्या जहां ,
तिन्कोटी र पचासलाख् तिरथ ली
श्रीजान्हवी छन् जहां ॥५९॥

श्रीकोटेश्वर को चरण्कमलजल् मिल्छ तहां क्या कहूँ ,
एक् बाहुन् तन्यको छ जा अघि क्वही यो बात जान्न्या महूँ ।
उज्जैनीपुरि को लडाउ गरि बाबू लाइ काटे छ जब् ,
गङ्गातीर् मरि फेरि ब्राह्मण भयो अपराधि भै जन्म्यन तब् ॥६०॥

बाबू मार्‍या को थियो पाप भारी ,
चोरी जारी बाटहिंड्न्या बिगारी ।
वृत्ती गर्थ्यो मन् पर्‍या को त खाई ,
वन् मा ग्या को मारि खाये छ गाई ॥६१॥

गोठालो बाहुन् ख्वजीं गाइ आयो ,
खाँदा देखी जाइ पर्‍यो मारि पायो ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



घर्मा आयो गुर्विणी मान्य्व नारी ,
स्त्रा भ्रूण् ब्रह्मै हत्य ले घेन्य्व भारी ॥६२॥
जब त बहुत पाप् ले घेन्य्व तेस्का शरीर्मा ,
चउतरफ त्य्व डुल्न्या भो त्यही पाप पीर्मा ।
फुट्यक्क सब शरिर् त्यो कुष्ट ले पीप बग्दो ,
तइपनि अपराधी त्यो अरुलाइ ठग्दो ॥६३॥
फकिर क्क सँग लागी नाघि पर्वत् नदी वन् ,
क्वहि दिन अहिं आयो देखि तेस् ले ऋषीगन् ।
जप पुजन र तर्पन् गर्न्य भ्या का बहूतै ,
फकिर ति पनि न्हाया बालुलिङ् पूज्य खूपै ॥६४॥
तँ पनि क्य ह्यरि रैछस् कस्त्व हो ठाँउ यो सुन् ,
सकल हरन्य किल्विष् जान्य छन् सब् त्यरा खुन् ।
यति भनि ति क्वटीश्वर् दर्शनै लाइ गईग्या ,
डुब्यर त्यसल्य न्हायो जातिसम्रन् भईग्या ॥६५॥
नारद् का अघिजाइ हात ज्वरदो
पीछा परी ढोग् दियो ,
आफ्ना पाप् कहँ दो घखी क्यहि भन्या
त्यो बात सब् भो लिंदो ।
वर्षैं दिन् त अटूट शङ्खमुल मा
स्नान् ले त कञ्चन् भयो ,
बाहै मास क्व फल् पृथक् गरि तहाँ
पाप् ता कटींदै गयो ॥६६॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



मङ्सिर् ले ब्वल्यको झुटा पुषल्य ता
सुन्चोन्य को पाप् गयो ,
माघ्ले भक्ष अभक्ष को शिव पुजी
फाल्गुन् ल्य मद्‌खाय को ।
चैत् ले धन् हन्य को अगम्य गम को
बैसाख ले शुद्ध भो ,
जेठ्ले चुकूलि र गालि पाप गइगो
स्त्रीहत्य आशाढ गो ॥६७॥
श्रावण् मा त नुहाइ् पिशाच् द्विज तऱ्यो
चूर्गर्भ हत्या भयो ,
गाइ् हत्या भदऊ असौज् द्विज हती
कार्तिक पितृहत्य गो ।
दर्शन् वाग्मति ले दिइन् स्तुति गऱ्यो
रुद्रानुचर् भ्यास् भनिन् ,
कोटीश्वर् दरशन् गऱ्यो शिवगणै
आई लग्या तेहि छिन् ॥६८॥
अब हिंड भनि द्वै ग्या टार बाणेश्वरै मा ,
पुगिकन गरि खुप् स्नान् बाणगङ्गा तिरै मा ।
भजन गऱ्यर राती गाइथ्यू बालि बाती ,
प्रसन विरुप को ने भन्न लाग्या ति जाती ॥६९॥
बाण् भन्न्या कहि ब्राह्मणै जहिं तप्या
यो लिङ्ग उन्ल्यै रच्या ,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



जाहीं स्नान गऱ्या र तीर्थ यत्र भयो
सन्सार् घखी ती बच्या ।
कोही एक् पछि ब्याध जाहिं बस्य को
पर्यार साथै थियो ,
रोज् रोज् आफ्नु कमाइ मासु शिव लाइ्
खान्या बखत् मा दियो ॥७०॥
बस्ता बस्ता र हिंड्दा
त्य्व शिव शिव जपीं दर्शनै नित्य गर्थ्यो ,
लाग्यो रोग् यद्दम भन्न्या
दिन दिन घट्दो ढोकई छ्यो त्य्व मर्थ्यो ।
आया शम्भूजि का गन्
लग्य शिवपुरि मा पिङ्गकेशी भई गो ,
साथीं ती नेमुनी भै
विरुप पनि त ज्ञानेश्वरै मा गई गो ॥७१॥
मयूरतीर्थै गइ न्हाइ आया ,
पूजा गरी शम्भु भजन् लगाया ।
सोद्धा विरूप्ले महिमा तहां को ,
भन्दा भया नेमुनि ज्या भया को ॥७२॥
पिर्दा दैत्य त्य देव आइ् तप गऱ्या ई लिङ् प्रकट् भ्या जहीं ,
रूप् देखी वरदान पाइ गइग्या नाच्यो मुजुर् ता तहीं ।
धौपाटन् बसन्या क्वही द्विज थियो छोरो त लाटो भयो ,
जेष्टीला इ नदी नुहाउन लग्यो दश्हा क दिन् त्यो थियो ॥७३॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



भोक् लाग्यो वा मलाई भन्य क्व जब सुन्यो
खुशि भै आहिं ल्यायो ,
श्रीज्ञानेश्वर् क्व पूजा गरन पनि लगाइ्
जल् र नैवेद्य खायो ।
खूप् ज्ञानी शास्त्र जान्न्या भइकन दुनिआ
ले पुज्या बसूथ्व एक्लास् ,
बूढो हूँदा जपी ऐ शिवजि क्व बहुनाम्
अन्त्य मा गो त्य्व कैलास् ॥७४॥
यति सुनि विरुपाक्ष ले प्रसाद् लाइ् ,
हिंड्य तब तहिं देखि पारन् खाइ् ।
पुग्य जब कइलास देखि उत्तर् ,
बउधमनि ध्यस्रीय पर्वतेश्वर् ॥७५॥
पूजा लाई ज्ञानकुण्डै नुहाया ,
घुम्दै घुम्दै शम्भुका गीत गाया ।
पाती लाया जल् र नैवेद्य खाया ,
ताहां देखी पूर्ववार्ता चलाया ॥७६॥
नेजी भन्छन् पूर्वकाल् मा हिमाल् ले ,
तप्स्या गर्दा थाप्यका भक्ति बल्ले ।
स्थूल्पाद् भन्न्या यक्ष एक् कोहि थीयो ,
राम्रो धनवान् साहई चोहरीयो ॥७७॥
आप्या राजा श्रीकुबेर् ले र आयो ,
पृथ्वी मा डुल्न्या अतीदुःख पायो ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



एक् दिन् आया श्रीकुबेर् ताञ् नुहाया ,
पूजा लाया शम्भु शम्भू कहाया ॥७८॥
यस्तो देखी स्थूलपाद् ताञ् नुहायो ,
शम्भूजी को भक्ति पूजा लगायो ।
ज्ञान् भो सन्सार् झूट देखी बस्यो ताञ् ,
शिवदूत् आई लैग्य कैलास् पर्‍यो म्याञ् ॥७९॥
एता सुनी माथ मा पाति लाया ,
गुह्येश्वरी घाट मा दोइ आया ।
खोला बिच् मा श्रीजलेश्वर् स्व मान् भो ,
तांको विस्तार् सोधन्या भन्न्य काम् भो ॥८०॥
पैह्ले तप्स्या वाग्मती ले गरीछन् ,
श्री शम्भू लाइ् पाइ भेट् पाउ् परीछन् ।
मेरा ज्यू माऽनेक जात् का मयल् ले ,
पापी को पाप् हर्नु क्यारी य्व जल् ले ॥८१॥
पूजा गर्छू नित्य जल् ले हजूर् लाइ् ,
मेरा ज्यू मा बस्नु होस् एक सुर् लाइ् ।
सूनी एती बीच जल् मा प्रकट् भ्या ,
आज्ञा गर्छन् वाग्मती लाइ खुश् भ्या ॥८२॥
चोखी होली म ज्हीं नित्य बस्ता ,
प्राणी हूनन् तीमि लाइ् छोइ् म जस्ता ।
शङ्का मान्नन् जो मयल् को तिमी मा ,
नारक्वाला का हुनन् तो त सीमा ॥८३॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



एती बोली त्यैँ जलेश्वर् डुबीग्या ,
घ्यौता ऋषी आइ वर् घेर लीग्या ।
यौटा पापी छ उहाँ फेर् तऱ्या को ,
हेवीरूपाक्ष ! महापाप् गऱ्या को ॥८४॥
बाहुन् यौटा गूरुका गाइ चह्रायो ,
यौटी गाई मारि खाजा गरायो ।
पितृ सम्झी गाइ का काट्य्व आँसू ,
बाबू लाई त्यो घखायेन मासू ॥८५॥
गूरु को धन् बाबु लाई न देखाइ ,
फेर् गोहत्या मारि वन्मा पकाइ खाइ ।
तीन् पाप् ले भो त्यो त्रिशङ्कू त दैत्य ,
बाणासुर् को पुत्र वीर् मा क सत्य ॥८६॥
उांहीं आयो वाग्मती जल् जमायो ,
घ्यौता लाई शत्रु तुल्यै ठमायो ।
जल् का बिच्मा शम्भु पूजी रमायो ,
वर्षैं बिच् मा वर्ल्य कैलास् कमायो ॥८७।

तीर्थावली यो ह्व विभूतिमाला ,
बनाउन्या हुन् हरिभक्तिवाला ।
चौसट्ठिलिङ्ग को गरि यो प्रणाम ,
अध्याय को हो दशऊँ त नाम ॥१०॥

इति श्रीकविपतञ्जलिप्रणीते 'श्रीधीरादेश पातञ्जलतीर्थावली श्रीरेयुद्धप्रकाशे' नेपालस्थचतुष्षष्टिलिङ्गमाहात्म्यवर्णनो नाम दशमोऽध्यायः ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu

## ❀ अथैकादशोऽध्यायः ❀

ताँ घखी ति द्वै गया नुहाइ उभो त दक्षिणै ,
श्रीगुह्येश्वरीश्वरै गरी पुजा प्रदक्षिणै ।
ती विरूप सोध्न लाग्य तां क त्यो सबैकुरा ,
नेमुनी ति भन्न लाग्य बात गर्न्य का पुरा ॥ १ ॥
ईश्वरी र ईश्वरै अनन्त शक्ति हुन् भनी ,
विष्णु ब्रह्म इन्द्र आदि भन्दछन् सबै मुनी ।
गर्न सक्छ को बयन् जगत् त्रि व्यापि शम्भुको ,
थोऱ्व थोऱ्व भन्दछू म लाग्न्य छ तँलाइ निको ॥ २ ॥
सत्यलोक ब्रह्म लाइ विकुराठ विष्णु लाइ मिल्यो ,
जाँ घखी त कामदेव् ल्य वर्मिली जगत् निल्यो ।
लोक मा मुनीहरू त पूज्य भै गया जहां ,
धेर्गरूँ महात्म्य क्या भगत्हरू मुगत् जहां ॥ ३ ॥
पूर्व बात भन्छु सुन् मरुत्त देशमा अघी ,
स्त्री बडी नराम्रि रैछ लोग्न्य ले छ्वड्यो बगी ।
पोइ लिन्थि ठाउँ ठाउँ त्यस्त्व लींदि भै मती ,
ल्याइत्व स्वामि मर्न गेछ गाङ्गतीर् गई सती ॥४॥
तेहि पुराय रानि भैछ तै अरू ति पापले ,
भूप ले त भिन्न खोपि गर्दिया त्थ्व राफले ।
दिक् थिई सुनी बयन् न्यपाल को त एकली ,
हींडि आइ सोधदै फकीर को त वेष ली ॥ ५ ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



जाहिं आइ गुह्यकालिघाट वाग्मती नुहाइ्,
गुह्यकालि गुह्यशम्भु को महापुजा लगाइ् ।
स्वामि वश्य होस् म्यरो चिताइ मन्महां यसो,
अर्धराति शब्द सूनि गाजलै सिंधुर् खस्यो ॥ ६ ॥
यो लगाइ जाइजा खसम् त चाकरै हुन्ना,
येस्त्व सूनि हर्षभेर फुलप्रसाद लाइ् भला ।
भोलिपल्ट भाल् सिंधुर् नजर्महां कजल् घसी,
जानु आफ्नु देश् भनी हिंडी त्यव कम्बरै कसी ॥ ७ ॥
टीक्व लांउ्नि मात्र भूप्ल्य सम्भ्यथ्यो घरी घरी,
कज्जलै सिंधूर धारि त्यो जसै नजिक्परी ।
हेप्रिये ! प्रिये ! तिमी कहां गई बस्यौ भनी,
हातजोरि पाउ्प-यो भुपालले यती भनी ॥ ८ ॥
सूनि इन्द्र लीन आय हात तान्यथ्या जसै,
हे ! नछूवौ पतिव्रता भनी र भागिग्या तसै ।
भूप साथ धेरकाल सूख भोग गर्दि भै ।
देविलोक पुग्न पाइ जुन् बखत् त्यव मर्दि भै ॥ ९ ॥
मैथिला क म्लेच्छ एक ऋषि देखि कल्यको,
वाग्मती क्व तीर्मरेर ब्रह्मयोनि झल्क्यको ।
मद्यखानु बाण हान्नु चोरि गर्नु पल्क्यको,
साथ लागि फक्किरै क फेर्नेपाल ढल्क्य को ॥१०॥
वाग्मतो डुबेर जोतिलिङ्ग देखि आय्व जै,
वर्षदिन्न क तप्ल्य शम्भु देवि देखून पाय्व जै ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



स्तोत्र गर्नि मात्र आइ शम्भु ले लई गया ,
ती त सिद्धऋषि भन्न्य नाउले बडा भया ॥११॥
हेविरूप ! जै वरी परी नुहाइ हिंड् भन्या ,
फुल् प्रसाद लाइ खाइ डुब्न्य तीर्थ ती गन्या ।
गै किरातशम्भु नेर धूप बत्ति राखदा ,
सोध्न लाग्य ती विरूप शम्भु भक्ति चाखँदा ॥१२॥
विरूपले स्नानगरी गया का ,
क्यैतीर्थ भन्छू म तहां भया का ।
किरातईश्वरर्वत दर्शनै लाइ् ,
क्मै सितै स्नान् गरनू छ तैंजाइ् ॥१३॥
तल्माथि गुह्येश्वरिघाट देखी ,
वरी परी छन् बुभनन्त भेषी ।
बहूत छन् तीर्थ त वाग्मती मा ,
नुहाउन्यका पुण्यक्व क्या छ सीमा ॥१४॥
ब्रह्मोदक् सुन्दरीखात् सरजनमतिरथ् शूलगङ्गा त चारौं ,
ब्रह्माभेद् भो अगस्ती तिरथ छइटऊँ सात सप्तर्षि पारौं ।
आठौं भो यो पशूयोनि तिरथ नवऊँ गोखुरै योगकुण्डे ,
ग्यारौं हो स्वर्णधारा क्वस्वदक तनकुण्डै ग्वरत्त्वै ह्व चौधौं ॥१५॥
कैलाश पर्वत महां क्वहि दिन् सभामा ,
ब्रह्मा हरीहर कुमार सबै भया मा ।
इन्द्रादि देव ऋषिगन् ति मरीचि आदि ,
गन्धर्व अप्सर थिया गुण गीतवादी ॥१६॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



ब्रह्मा ब्वल्या गउरि को मुखहेरि हांसी ,
हे स्कन्द ! शम्भु क्व चरित्र छ के मुनासिव् ।
केवल् उमा क्व बल हो शिवजी कहाया ,
विष्णू पनी नजरमा बसँदा निदाया ॥१७॥
हाम्रो हिसाब क्य थियो जगदम्ब हुन् ई ,
माया स्वरूप जगमा रहँदी त्रिगुन् कीं ।
सूनेर हांसि गउरी शिव मूख हेरिन् ,
रीसांउनु हुन्छ कि भनी ठुल्वसास फेरिन् ॥१८॥
सूनी रिसाइ शिव ब्वल्या ति कुमार लाई ,
जाहां ह्यरा भनि गया शिव अन्त्रधाई ।
देवादि पार्वति समेत् सब बीलखाया ,
शक्ती बडी भन्यक्व चोट् तब ताहिं पाया ॥१९॥
शम्भू त श्लेष्मवन मा भयछन् किराती ,
भाङ्ग्रो ध्वसाक गरि ठंट अनेक भांति ।
लामू जुरो कस्यर डोरि ल्य कौडि फुर्का ,
आंखा महां सिंधुर रातिग्यडी क्व भुर्का ॥२०॥
माला लगाई फुल का धनुबाण हात ,
कम्बर् कटारि खबजि मारनु मिर्गजात ।
साथी किराति भइ डूलनु आय्व मन्मा ,
हज्जार वर्ष यसरी रहनूभ्व वन्मा ॥२१॥
एक्लिङ्ग थापनु गरी जिमि मा दवाई ,
राती महां पुजनु हुन्थ्य्व सँगी धपाई ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



यो जानि गौरि पनि भेर किरातिरूप ,
त्यैं आइ पुजा गरनु भो प्रतिदीन खूप ॥२२॥
राखेक मैल्य य्व लुकाइ पुजन्या भयो को ,
आश्चर्य ले बस्य च्यवा पऱ्यको त धोको ।
देख्या किरातिनि त्स्व सुन्दरि भक्त जानी ,
प्रीती भयो बहुत दिन् शिवले न जानी ॥२३॥
द्वै जब् हराइ गयथ्या द्यवता खराया ,
खोद्दै गुह्येश्वरिजि को स्तुति गाइ कराया ,
निस्केर सब् कहि दिइन् थिय भुट्भुटी मा ,
देख्या किरातिनि किराति दुवै कुटी मा ॥२४॥
दण्डोत् गरी करज्वऱ्या द्वइ ज्ञाहिं आंउन्या ,
सब् देवता हरु बहुत् दिन दुःख पांउन्या ।
भन्दा छक्या शिव चिन्ह्या जब पार्वती लाइ ,
भुक्क्याइ छन् मकन फेरि पनी ज्हीं आइ ॥२५॥
ब्रह्माल्य उस् दिन भन्याक्वत हेछ सांचो ,
देवादि हो तिमि किराति भयेर नाचो ।
क्यै दिन् किराति भइ सब् द्यवता बस्या ज्ञै ,
धेर् दिन् पछी शिव समेत् गय ती छ्वड्या भैं ॥२६॥
एक् म्लेच्छ शुकमुख भन्या क्व थियो य्व देश् मा ,
मृग् मारि पालि परियार रह्या क्व तेस् मा ।
एक् दिन् यतै डुलन आयक्व ज्ञाहिं राती ,
पूजाऽप्सरा ल्य गऱ्य को द्यख्य्व लिङ्ग जाती ॥२७॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



लाग्यो पुजा गरन त्यो पनि भक्ति लाई ,
फ.ल् फुल् चढाउँदथ्ये चाख्यर मीठ्व पाई ।
जल् वाग्मती क्व मुखमा लिइ आइ् चढांउथ्यो ,
मासू जुठो दियर शम्भु भनी करांउथ्यो ॥२८॥
खुशी भया शिव प्रमथ्गण आइ लैग्या ,
विर्पाच्च भन्छ कसरी शिव खुश भैग्या ।
बोल्या गुरू शिव भन्या क्व यत्र मन् बिचै छन् ,
चोखो जुठो मन प्रसन्न भया खुशैछन् ॥२९॥
शम्भू किराति भइ आज् रहनू भया मा ,
ती पांच पाण्डव जुवा ख्यलि वन् गया मा ।
तीर्थाटनै गन्यर अर्जुन आहीं आया ,
स्नान् वाग्मती गरि इ शिव् पुजि हर्ष पाया ॥३०॥
एक् भाग मा बस्यर खान्थ्य किराति घेरै ,
ये खान आ परघशी भन्य उत्तिखेरै ।
चट्की ब्वल्या ति अरजुन् सुन उल्लु का बात् ,
झूठो त्य्व खान्य क्व घ्वसिस् छि किरातिको जात् ॥३१॥
क्य क्य भनि हिंड्य्व त्यो लौ भन्दई जाइ लाग्या ,
धनु लिइ अडिया ती शम्भु तेज् म्लेच्छ जाग्या ।
पन्थ्व द्वहन्व घचाघच् मारदा भ्या किराती ,
सब ति भयर घाइ् ता शम्भु थैं ग्या फिराती ॥३२॥
शिव त लिइ किरात् को रूप लड्दा ति अर्जुन् ,
लियर धनु त्य्व गाण्डिव् खुप् लिया युद्ध तर्जुम् ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



बहुत भय्त्र लडाञी तेत्ति को कांहिं नाहीं ,
मरमत गलदै ग्या भागुँ की लडनु चाहीं ॥३३॥
ब्वल्य ति अब सुनिस् भाइ् शम्भु पूजा म गर्छू ,
घरि दुइ परखी दे सामु तेरा म पर्छू ।
परखि दिय प्रभू ले ञै गऱ्या खूप पूजा ,
लडन अघि सरीग्या पार्छु भन्ठानि धूजा ॥३४॥
जब त द्यखि किराती का तिनौटा त नेत्र ,
बहुत उद्यक मान्या गुन्न लाग्या ति भित्र ।
फुल सिंधुर ज्व लिङमा लायका त्यैं द्यखीया ,
चिह्नि शिवकन त्यो बान् छोडि पाउ् पक्रिलीया ॥३५॥
स्तोत्रैगऱ्या प्रभु क्व जानिन विन्ति लाया ,
शम्भू क्व यो हुकुम भो वरदान पाया ।
म्लेच्छै थियौ तिमि अघी मरि ञै भयौ नर् ,
खुशभ्यां म तिम्द्यखि चिताय क्व माग लौ वर् ॥३६॥
दुर्योधनै वइरि मारन शस्त्र माग्या ,
पाया श्रिशम्भु द्यखि बल् फयरि वन् महांग्या ।
समचार् सबै कह्य विरूप ! युधिष्ठिरै थैं ,
यस्तो पवित्र ठुलव यो छ न्यपालको भैं ॥३७॥
हिंड तिमि अब भस्मेश्वर् न्यरा पशूपतीछ्यौ ,
डुब्यर भसमगङ्गा कुण्डमा तांहि जल्प्यौ ।
यति भनिगइ पूज्या काम् गऱ्या भक्ति भावूको ,
स्वध्यर कहन लाग्या तां भया का हिसाब् को ॥३८॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



श्रीरुद्रले अङ्ग विभूति घस्ता ,
जम्मा गन्या को भजि मा त खस्ता ।
बात्या क्व त्यो भस्म क्व पिण्ड हो यो ,
इन्लाइ् पुजी जस्ल्य त शील्यं छोयो ॥३९॥
त्यो पांउछ शम्भू क्व शरीर भाई !
शिव्दास होला कइलास जाई ।
ई भस्मगङ्गा शिवअङ्ग जल् हो ,
पाइन्छ मुक्ती शिवभक्ति बल्हो ॥४०॥
क्वै केरल् देश माहां अतिधन भयको
पुट्क्य बाहुन् थियो एक् ,
व्यापार् गर्थ्यो दिदैन्थ्यो मरि सुरनदितीर्
पाय्न फेर् बाहुनै भेष् ।
दुःखी भो त्यो अदत्ती मगनि गरि रह्यो
चोर्न्य काम् गर्न लाग्यो ,
कूट्या बांधी अरूले सहन त नसकी
काशि माहां त्य्व भाग्यो ॥४१॥
क्वै दिन् सुन्दा पुराण्मा सुबरण कि पुरी
पशुपती की छ भन्दा ,
सुन्चोरूँला भनी आइ् घरख्व तसल्य जहां
ईंट् र काठ् लाग्य धन्दा ,
माग्दै खाँदै र चोर्दै गरिकन रह्य को
चोरि फकोर् क्व कुम्लो ,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



क्या छ जा खाँ भनी त्यो जब फ्वयर ह्यान्यो
देखि वीभूति सुम्लो ॥४२॥
फोर्दै आफाल्य्व जाहीं पुछद्द भय्व त्य्व हात्–
आँगमा शीर्कन्यायो ,
फेर्गो चोर्नू र साधू हरुल्य कुट्य बहुत्
आइ जै जलूखन्यायो ।
रात्रीमा मर्द्दभो त्यो यमदुत पुग्यत्यैं
भस्म का पुण्य जोलें ,
शिवूदूत् आयेर ल्यैग्या यमदूत हटिग्या
मुक्ति पायो त्य्व चोलें ॥४३॥
अब हिंड विरुपाक्षे ! वत्सला लाइ मान ,
फिरि घुम जयमङ्गल् गौरिजीको त्य्व थान ।
सय दुइ कदमै मा छन् प्रभू भूवनेश्वर् ,
भगवति पनि त्यैं छन् भूवनेशी दिनिन् वर् ॥४४॥
यति भनि गइ दुइ् ती भक्ति लाई चढाया ,
पुजन्य सब सराजाम् गीतगाना बढाया ।
स्वधनि गन्य विरूपाक्षे ल्य तां भ्या क कूरा ,
कहनकन ति लाग्या नेमुनी ज्ञानपूरा ॥४५॥
भुवनपति भन्याका देश् द्यखी भूप आया ,
यहि मुरति प्रभू को थापि भाव् भक्ति लाया ।
वरष बिति हजारौं वर्मिल्यो राज्य माग्या ,
पछि क्वहि मुगती भै जाहिं आइ् पाप भाग्या ॥४६॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



एक्नारी त मधुश्रवा भन्यकि थी
दिल्ली महां हेविरूप् ! ,
गर्थी शम्भु पुजा बडा भगति ले
त्यो बर्त लिन्थी त खूप् ।
स्वामी मर्न गयो र माइत बसी
वेश्यात्रि को काम् थियो ,
सबूले धीगगन्य लाजूल्य भाइ्ल्य त्यसका
त्यस्लाइ ता विष् दियो ॥४७॥
चाल्पाइ् खाइ्न गई त्यत्र ता विश्हले काशी सुनी छ कथा,
सूनी वर्णन आक्क आइ् जहिं बसी सेवागरी छ अथा ।
पाटीमा बसि मागि खान्थि दिनहूँ लिप् घस् बढार्नू गरी ,
वर्षैदिन् बितदा गई त्यत्र कइलास् जाडाल्य माघ्मा मरी ॥४८॥
क्वै देश् मा भूप थीयो अरु क बुझलिन्या
कप्टि केही नभन्न्या ,
तीर्थाटन् गर्द आयो खरवरि तिरथैमा
नुहायो त धन्न्या ।
क्वै काल् मा त्यो मरीगो पछि द्विज भयको
कप्टि हूनाल्य मूढो ,
मागी खान्थ्यो तृषाई जहिं जल पियको
ज्ञानि भो मुक्ति पूँढो ॥४९॥
चार्वर्ष तक् जै बसि जै नुहायो ,
पूजा गऱ्यो जैं शरिरै चढायो ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



त्यो मर्कटानन् भन्यको त बाहुन् ,
कैलास् गयो त्यस्त्व अरु न पाउन् ॥५०॥
अब् हे विरुपाक्ष ! नजीक जाहीं ,
जांउ् रुद्रगारेश्वर शम्भु थांजी ।
श्रीरुद्रस्तानोदक कुण्ड तीर्थ ,
छ तां गरौं स्नान् सब पाप गीर्छ ॥५१॥
एती भनी वाग्मति मा नुहाया ,
श्रीशम्भुका मन्दिर मा ति आया ।
भारी पुजा भो नइवेद्य लाया ,
विस्तार तां को तब ता बताया ॥५२॥
पशुपति प्रभुजी ले मन्दिरै का इ मालिक् ,
भनिकन त बनाया मानु आफ्नै क्व शालिक् ।
तब त इ शिव रुद्रागारईश्वर् कहाई ,
भुगति मुगति दिन्छन् पापलाई बहाई ॥५३॥
अघि क्वहि त किराती को त सर्दार् रहेछ ,
बहुत सँग किराती ली शिकार् गर्न गेछ ।
फउज उछिनि धर्मेश्वरक्वं देखे छ पूजा ,
ऋषि हरु ल्य गऱ्या को देखि नैवेद्य बूजा ॥५४॥
बध्यर त्य्व त गईगो देख्य फौज्ले पछी तात्र् ,
भ्यट्यर पछि स्वध्या त्यो शङ्कु भन्न्या थञी भयात्र् ।
घ्यखिन भन्यर मासूलीइ वन् बाहिरै भो ,
भ्यट्यन फिरि त्य्व लश्करलें त आफूना घरैगो ॥५५॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



जब त ग्वखन आंखा त्यस्ल्य यक्लै परीगो ,
ग्वखिन भन्य क्व पापले जोति आंख्को मरीगो ।
ग्वय्यर क्वहि ढिजैले हात्समाइ् त्राहिं ल्यायो ,
पृथिवितल पडीहो शङ्कु ले दुःख पायो ॥५६॥
दिन प्रति गित गांउथ्या आइ गन्धर्व त्राहीं ,
भजन सुन्यर शिव्को कानले नेत्र नाहीं ।
शिव ! हर ! त्रिपुरारे ! नेत्रले गाहन्न पार्‍यो ,
भन्यर शिवजिका यै लिङ्ग त्यस्ले मुसार्‍यो ॥५७॥
यस्वगरि रहँदामा त्र्याय्व कार्त्तिक् क्व पून्र्या ,
सब क्वहि गइ बाती बाल्य त्यो तांहिं कून्र्या ।
त्र्यरुसित गरि मङ्नी त्यस्ल्य बत्ती जगायो ,
शिवजि क्व स्तुति गायो रात्रि मा स्वप्न पायो ॥५८॥
यस् कुराडका जल्ल्य तँ पूछ नेत्र ,
फक्कीर बोल्यो सपना क्व भित्र ।
पूजारि थैं विन्ति गरी मगायो ,
जल् नेत्र लायो तब तेज आयो ॥५९॥
देख्यो चार्तिर ग्वोलका ति त लहर् मन्मा बहुत् भो रहर् ,
शम्भूको त गरेर ताहिं त्र्यरचन् एक् वर्ष त्रै आठ् पहर् ।
शम्भू खूश भई दिया डमरु शूल् ठूलो भगत् भै गयो ,
अन्त्यै कालमहां बडाउ त सबैले त्यो त कैलास् गयो ॥६०॥
त्र्यब हिंड विरुपाक्ष ! वासुकी थान जाऊँ ,
पहिल्य तिन क्व पूजा लाइ चौसट्ठि जानू ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



अरुपनि बहुतै छन् लिङ् नेपाल् मा अनन्त,
ऋषि र द्यवल्य थाप्या का थ्नरै जा कहिन्छ ॥६१॥
ब्रह्मेश्वर् विष्णु ईश्वर्
विधि हरि क थपाइ् उग्र ईश्वर् शुलीले,
इन्द्रेश्वर् इन्द्र ले फेर्
रवि ल्य त अरकेश्वर् फ्यरी चन्द्रजी ले।
अग्नी ले यम्ऋती ले
वरुण प्रभृति ले स्कन्द वायू कुबेर् ले,
श्रीलम्बोदर् ल्य एस्तै
अरु पनि शिवलिङ् थाप्य का छन् त धेलैं ॥६२॥
विश्वेश्वर् ले काशि देखी त आई,
थाप्या का छन् लिङ्ग एक् तांहिं भाई !।
तेत्तीस् कोटी मन्तिरै दच्छिणै छन्,
ढोकाभित्रै पसन्य मात्रै द्यखिन् छन् ॥६३॥
ऋषेश्वर् छन् पाल्लुङ् अउर जलकेश्वर् जलुश्यनी,
हिरण्येश्वर् सुन्थान् त्यकु बिच कुलेश्वर् प्रभु पनी।
आशापुर् व्याहावर् बउँडु बरुणेश्वर् प्रभु भया,
सबै गोखूरेश्वर् ह्यरन भनि सांगा परि गया ॥६४॥
यस्तै अनेक् देवऋषी हरु ले,
लिङ् थाप्य का छन् बहुतै परी ले।
यो पाशुपत् च्चेत्र ह्व शम्भुजी को
तपस्य गर्न्या हरुलाई नीको ॥६५॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



अनन्त छन् लिङ्ग जहां दव्याका ,
एक् तील का मन्तिर एक् रह्या का ।
तसर्थ आ मर्न्य स्व नर्क छैन ,
सन्सार मा त्यो फयरि फर्क दैन ॥६६॥
ई वाग्मती मा बहु सङ्गमै छन् ,
एकेक ताँ तीर्थ बडा खुपै छन् ।
विस्तार गर्छूं डुबि आ विरूप ! ,
संपूर्ण होला तब पुण्य खूप ॥६७॥

—— ❀ ——

तीर्थावली यो ह्व विभूतिमाला ,
बनाउन्या हुन् हरिभक्तिवाला ।
चौसठ्ठिलिङ् को त गर्न्यां बखान ,
एघारऊँ अध्यय हो स्व जान ॥१०॥

—— ❀ ——

इति श्रीकविपतञ्जलिप्रणीते 'श्रीधीरादेश पातञ्जलतीर्थावली श्रीश्युद्धप्रकाशे' नेपालस्थचतुष्षष्टिलिङ्गमाहात्म्यवर्णनो नामैकादशोऽध्यायः ।

समाप्ता च चतुष्षष्टिलिङ्गयात्रा ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu

## अथ द्वादशोऽध्यायः

### मङ्गलाचरणम्

शम्भु का चरण् म पऱ्यां शरण्,
प्रार्थना गऱ्यां वाग्मती मरण्।
श्लोक पढ्न्य का पापको हरण्,
सुनन्या पनी भक्ति मा तरुन्॥

### श्रीवाग्मतीयात्राप्रारम्भः

अब ति कहन लाग्या तीर्थ सब् वाग्मती का,
बहुत धरम दीन्या अन्त्यकाल् का गती का।
हिमवत महिमा का ग्रन्थ मा जत्ति लेख् छ,
इ तिरथ गरन्या जन् अन्त्य मा स्वर्ग देख् छ॥ १॥
शिवमुख ब्रखि आइन् वाग्मती नाउँ पाइन्,
रहन्य जति न्यपाल् का प्राणिको पाप् बहाइन्।
गुणल्य त्रिपथगा का तुल्य भै जस् बढाइन्,
दिन प्रति फजिरी मा गर्न पाऊँ म गायन्॥ २॥
चार्बाहु मा अभय अङ्कुश वर् र डोरी,
नाना प्वसाक गहना त्रिनयन् ति गोरी।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



श्रीपशूपती सँग रह्या कि ति वामकाख् मा ,
ध्यान् गर्छु यस्त्व जननी क्व म भक्ति चाख् मा ॥ ३ ॥
जानू पहोल्य व्रति भै कटुवाल् दहै मा ,
सङ्कल्प गर्नु र पुजा गरि त्यैं रहै मा ।
ध्यान् प्रार्थना गऱ्यर वाग्मति को नुहांउनू ,
त्यो सेतु तीर्थ हरिहर् पुजि पुरय पाउनू ॥ ४ ॥
माझै दहै भितर छ दुरगा क्व तीर्थ ,
त्यैं व्याघ्रपद् तिरथ छ दुरगेश्वरै छ ।
गोपालकेश्वर क्व तीर्थ तहीं उपर्छ ,
ताहीं नुहाइ् शिवपुजन् वहिं गर्नु पर्छ ॥ ५ ॥
नारान् क्व जल् मिलि त दाम्दर तीर्थ पांच ,
दामोदरेश्वर पुजी अघितीर नाच ।
सर्वौषधी रस तिरथ् टहुदह् मिली भो ,
पूजा गरी अउषधेश्वर तां घखी गो ॥ ६ ॥
श्रीसिद्धिनायक अगाडि गणेशतीर्थ ,
विघ्नेशशम्भु पुज पारि अनन्त तीर्थ ।
पूजा अनन्तशिवको गरि वारि आऊ ,
श्रीचक्र तीर्थ पथरान्तर जल् नुहाऊ ॥ ७ ॥
प्रद्युम्नेश्वर को त पूजन गरी त्यै माथि जाऊ सरी ,
जांहां हालयर फाल मुक्त हुइन्या भृगुपात् ह्व ताहां मरो ।
मुक्तेश्वर् पुजि गल्छिनाघ्यर गई प्रभावती सङ्ग मा ,
रामेश्वर् पुज त्यो प्रमोद् तिरथ मा विभूतिलाउ् अङ्ग मा ॥८॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



ताँ देखी गइ माथि सङ्गम भ्यटी निर्मल् तिर् मा नुहाउ्,
पूजा निर्मलशम्भु को गरि फिरी दोस्रा नदी सङ्ग जाउ्।
इन्द्रेश्वर् पुजि इन्द्रतीर्थ परछी फेर् पञ्चनद् तीर्थ जाइ्,
टेकूस्नान् गरि पञ्चलिङ्ग शिव को पूजागरुन् भक्तिलाइ्॥९॥

कालमोचन त हो टुकुचा सङ्,
कालपाश क्व जहां त हुन्या भङ्।
कुम्भ्यश्वर् क्व जल आउँन्य ठाऊँ,
जाइ मृत्युजय घाट नुहाऊँ॥१०॥

कुम्भेश्वर् पुजि पारि रुद्रमति का
सङ्गम् सहोदर्बधै,
मोचन्तीर्थ नुहाइ बाण्शिव पुजी
भन् माथि जाउ् सर्वदै।
सङ्गम् मा त मनोहराजि क्व जहां
प्रयाग को फल् दिन्या,
कुम्भेश्वर् पुज शङ्खमुल् तिरथ मा
स्नान् गर्न्य कैलास् लिन्या॥११॥

आहीं प्रयाग क्व बरोबर पुण्य मिल्न्या,
पाप् का त राशि यहि जन्म क्व आहिं जल्न्या।
लाखौं पनी त अपराधि विमुक्त हुन्छन्,
यौटी विमुक्त भयकी कथहा कहिन्छन्॥१२॥

एक् दैत्य शङ्ख ल्य तपस्य गरी तरेथ्यो,
धेर्काल सम्म तहिं हे क्वहि काल् मरेथ्यो।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



तब् शङ्खमूल भनि तीर्थ बडो छ साहै,
स्नान् गर्न पाउँनु बडा धर्मै त्य गाहै ॥१३॥
वैशाल् बडी नगरि मा कोहि धर्मभक्त,
भन्न्या थियो सुजन, नारि थियी अभक्त।
राम्री अतीथिइ त्स्व माधवका भन्न्या की,
वेश्या महां बहुत श्रेष्ट भनी गन्या की ॥१४॥
हाव् भाव् कटाक्ष गरदीं परलाइ देखी,
लात्मार्दथ्यो पुरुष त्यो मन राखि सेखी।
वाराहि थान गइ त्यो महरा तरेर,
पूजागरी छ बहुतै सरदाम् गरेर ॥१५॥
बस् होस् म्यसो पति भनी ढ्वगदी कराई,
प्रत्यक्ष भै वर दिइन् तहिं निल्वराही।
घर् आइ प्रसाद दिइ शीर महां छरी जल्,
लाटो कमान्व भइगो रिस को गयो बल् ॥१६॥
मन् पर्ढ लोग्न्य लिन लागि गरी कमाई,
नाना प्वसाक गहना पहिरी रमाई।
कर्दम् भन्या क्व क्वहि पूरुषले य्व देखी,
त्यस्का प्वई गन्यछ पाटि माहां त लेखी ॥१७॥
सम्चार पाइ तस क्व स्वामि गयेछ हेर्न,
टीका गनी कनत लाग्य छ आफु कोर्न।
जम्मा गरेछ भय पांच्सय काम्य ओष्ट,
आङ्मा चिलायर ह्यन्यो तब देख्व कुष्ट ॥१८॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



शम्भू ल्य गौरि कन ठूलि मचाहिं तीमी ,
भन्दीय को छ त्यहि नीति जगत् को जीती ।
पाप् हर्छ स्वास्नि क्व रिसाउँन्य लाइ भन्छन् ,
तस अर्थ स्वास्नि हरु लाइ त जान्न्य मान्छन् ॥१९॥
क्वै दिन् सुनी छ महिमा तहिं शङ्खमुल् को ,
जां क्यार भन्न्य मनमा तब आग्य भुल् को ।
स्वास्नी क्व फौज् लिइ गई मनमा लिई यो ,
रानी हुँऊँ हिंडि गई सब पाप् बिलीयो ॥२०॥
डूबी त्य्व सङ्गम महां मनमा य्त्र आई ,
सब् दान् गरूँ इ गहना कपडा छ्वडाई ।
हातै उठाइ गरि दान् द्विजको गरी मान् ,
धेर् द्विज् प्रसन्न भइ आइ गयो त वीमान् ॥२१॥
कैलास मा गइ त्य्व शोक ल्य त्यस्क भर्ता ,
तप्स्या निमित्त मृग्वदक् गय्व तीर्थ तब्ता ।
चोला छ्वडी गय्व बहूत तपस्य गर्दा ,
कैलास मा पुगन्य भो पछि त्यो त मर्दा ॥२२॥
त्यो माधवी पनि त दासि भयेर शिव् की ,
हज्जार दश् वरष तक् गिरिजा कि नीकी ।
फेर्जन्म पायर प्रभावति हून आई ,
प्रद्युम्न रानि हुन त्यै धरमै ल्य पाई ॥२३॥
श्री शम्भु कोटि मनि तीर्थ छ रुद्रधारा ,
तिनके पुजागरि हराउँन्य पापसारा ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



अम्रावती तिरथ ताँ द्यखि माथि भन्छन् ,
शक्रेश्वरै पुजि भगत् हरु मुक्त हुन्छन् ॥२४॥
तां देखि माथि फिरि चालिस हात जाई ,
विम्लावती छ विमलेश्वर पर्छि भाई ! ।
झन्माथि निर्मलवती शिव निर्मलेश्वर् ,
त्यै माथि वायु क तिरथ् शिव ता क्टेश्वर् ॥२५॥
योग् कुण्डै न्यर योगकुण्ड तिरथै योगेश्वरै शम्भुछन् ,
झन्माथी मणितीर्थ वाग्मति महां चूडेश्वरै पूज्य हुन् ।
वायोश्वर् स्वझ्व हो प्रयागतिरथै दर्शन् तिनै को गरुन् ,
पीठीका द्यखि पूर्वपीठ तिरथै इच्छावलोकेश हुन् ॥२६॥
त्रिविक्रम् अगाडी त्रिविक्रम् ह्व तीर्थ ,
पुजा गर्नु वामेश्वरै को त पर्छ ।
सुवर्णौ नदी सङ् तिरथ् स्वर्ण भन्न्या ,
सुवर्णेश्वरै को पुजा गर्नु धन्न्या ॥२७॥
ब्रह्मतीर्थ तहिं मास्तिर होला ,
लिङ्ग पूजनु मशान्शिवभोला ।
तीर्थ क्षत्रिय त झन् गइ माथी ,
खड्गशम्भु पुज वेल क पाती ॥२८॥
राजेश्वरी तीर्थ तिनै क्व आगे ,
राजेशलिङ्गै पुजि पाप भागे ।
उमापतीं तीर्थ उमापतीश्वर् ,
तीकों बडोलिङ्ग त होस् तहाँ भोर् ॥२९॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



विष्णूतीर्थ अलिक् उभोतिर गई विशाल मूर्त्ती स्वभ्का ,
पूजा वैष्णव शम्भु को अलि उभो श्रीमङ्गलागौरिघाट् ।
मङ्गल्तीर्थ छ मङ्गलेश्वर पुजी आकाशभैरव् न्यरा ,
आकाशतीर्थ स्वनाम शम्भु पुजनू पाप् जाव मन्नू म्यरा ॥३०॥
वत्सलै न्यर त वत्सल तीर्थ ,
वत्सलेश्वर पुजी जन तर्छ ।
पूर्वतट् क्वस्वद तीर्थस्यवा गर् ,
बावरी छ जहिं पूर्व क तीर् तर् ॥३१॥
तैं माथी छ सुभाग्यतीर्थ पुलतल् सौभाग्यशम्भू पुजी ,
पश्चिमतट् छ कुबेर तीर्थ स्वहि शिव् तैं माथि गौरीशजा ।
गौरीतीर्थ भयो तहीं उपर गो मृगोदकै तीर्थ भो ,
पारी खर्वरि तीर्थ ज्योतिशिव छन् जल् बीचमा जो गयो ॥ ३२॥
आर्या तीर्थ त्रिवेणि पश्चिम तटै चर्णोदकै मिल्न्य ठांउ् ,
नारायण् क्व छ तीर्थ तैं क्यहि उभो शम्भू क्व छ तेहि नांउ् ,
पावन् तीर्थ तहीं उपर् शिव त छन् सिद्धेश्वरै नाउँका ,
पर्वत् मन्तिर छ अगस्त्य तिरथै त्यै नाउँ शिव् ठाउँका ॥३३॥
निलकण्ठेश्वर ताँहिं माथि तिरथै त्यै नाउँको त्यैं न्यरा ,
नागेश्वर् शिव पूज्नु मास्तिर गई वासूकि तीर्थै पुरा ।
गोपुर्तीर्थ छ गोपतीश शिव छन् गूफा मनी तीर्पुगुन् ,
फाल्नेरा भृगुपात तीर्थ तहिं छ श्रीरुद्रगारेश हुन् ॥३४॥
त्रैलोक्येश्वर छन् तहीं उपरमा देव्घट्ट भन्न्या छ ठांउ् ,
माथी ब्रह्मसहस्र तीर्थ शिवछन् ब्रह्मेश भन्न्या छ नांउ् ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



ऊपर् विष्णुसहस्र विष्णु कइलास् श्रीवैष्णवेश् शम्भु भ्या ,
आगे तीर्थ सहस्र तीर्थ परछी देवेश कैलास् भया ॥३५॥
तांहीं ऊपर सूर्यका मुरति छन् ढुङ्गामहां लेख्यका ,
तास् अर्केश्वर सूर्यभाग तिरथै फेचन्द्रमा देख्यका ।
चन्द्रेश्वर्पुजि चन्द्रभाग् तिरथ भो द्वै तीर्थ सङ्गै ति छन् ,
कैलास् का मनकामना पिठ मनी मन्कामना तीर्थभन् ॥३६॥
मन्कामनेश्वर पुजी तहिं देखि पूर्व ,
श्रीपर्वतेश्वर भनी जिह्वलोल तीर्थ ।
श्रीगौरिघाट गइ मान्नु अनन्ततीर्थ ,
तांहीं किरात शिव लाइ त पुज्नु पर्छ ॥३७॥
भैरव्कुण्ड न्यरा भईरव तिरथ् श्रीभैरवेश्वर्पुजी ,
गुह्येशी क्ष स्वभ्भा जलेश तिरथै जल्मै जलेश्वर्बुभी ।
श्रीगुह्येश्वरि तीर्थ तांहि नजिकै त्यैं नाउँ शम्भूजि छन् ,
घाट्का मूख विनायकेश्वरजि छन् यै नाउँको तीर्थ भन् ॥३८॥
माथी का खहन्या न्यरा पशुगणै
हो तीर्थ एक्पाद शिव् ,
वन्कै छयौ शल्यषमान्त तीर्थ तिहिं छन्
सर्वेश सब् का त जिव् ।
अर्का नद् सँग ताम्रचूड् तिरथ छ
ताम्रेश्वरै शम्भु छन् ,
दुइ् पाउ् माथि हरेश शम्भु उतरै
वाहिन् बडा तीर्थ भन् ॥३९॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



तैं माथी गइ चैल शम्भुजि पुजी चैला नदो सङ्गमा ,
चैलू गङ्गा तिरथै नुहाइ् अघिसरो वन्छयौ नदी छन् जहां ।
हत्यामोचन तीर्थमा गर पुजा कीलेश्वरै शम्भुको ,
डांडा मा कइलास शम्भु पुजि कैलास् तीर्थ पर्छ निको ॥४०॥
तैं माथि गल्छि नपुगी हिमवत् छ तीर्थ ,
हीमेश्वरै शिव पुजी अघि सर्नु पर्छ ।
आया कि पश्चिमवयखी नदि विष्णुपद् हो ,
श्रीविष्णुपद् शिव पुजी गल्छी न्यरा गो ॥४१॥
भृगपात् तीर्थ र चक्रशम्भुपरछी गल्छी भितर् चन्द्रशिव् ,
चन्द्रै तीर्थ नुहाइ् तहीं भितर जाइ् आदित्यशिव् लाइ दीप् ।
गोकर्णेश्वर पूजि साम्न्यतिनको नूहाउ् त्यही तीर्थमा ,
बिस् हाथ् मास्तिरताज् छ उत्तर गया द्यो पिण्ड पाप् चीर्छ जां ४२
गयाजिको यो महिमा भयाको ,
उत्तर्गया यो भनि नांउ् रह्याको ।
पितामहै तीर्थ बडो अथाहा ,
खुश् हून्य छौ लौ सुन क्यै कथाहा ॥४३॥
कुण्डीन देश्मा क्वहि रैछ वेश्या ,
पाई छ छोरो तसले अश्लेष्या ।
आमा मरी गै छ तुरुन्त फेरी ,
पायेछ दुख् साह्न्व विपत्ति घेरी ॥४४॥
क्वै स्त्री ल्य पाली क्वहि दिन् पछाडी ,
मरी गई त्यो पनि फेरि छाडी ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



मागेर खान्या भय्व जब् त्य्व बालो ,
थोरै थ्वरै दी दुनिञा ल्य पाल्यो ॥४५॥
संस्कार् न भ्याको अनि नाउँ नाहीं ,
जात् को ठ्यगान् छैन बव्या क ताहीं ।
लामा थिया दाँत र दन्त्य भन्थ्या ,
ठाँठ् पारि हिंड्थ्यो पनि उल्लु गन्थ्या ॥४३॥
यो वेश्यको पुत्र भन्या को सुन्दा ,
जात्को ब्यपत्ता परि ठूल्व धन्दा ।
देशै छूवडी दन्तुर जाँढ भो त्यो ,
जोगी मुनी लाइ् ख्वजदो भयेथ्यो ॥४७॥
गङ्गाजिका तीर भ्यटाय्व मूनी ,
श्रीब्रह्म का सुत् पुलहा ति मूनी ।
सेवा गरीं चाकरि ले रिझायो ,
आफ्नू दरद् सब् तिनलाइ् बुझायो ॥४८॥
बाबू म्यराको रह्यछन् ऋषीश ! ,
जात्को ब्यपत्ता म भञा त खिस्स ।
समाधि ले जान्नु हजूर हुन्छ ,
कृपा गरीयोस् त बहूत गुन्छ ॥४९॥
आज्ञा मुनी को भय्व यो त बातं ,
नेपाल उत्तर् गय वै छ जा तँ ।
गोकर्ण मा विश्रव मूनि बस् छन् ,
तांहां गई ताप त्यश ति नश् छन् ॥५०॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



यो बात् सुनी दन्त्य गयो न्यपाल् मा ,
चोह्नो ऋषी लाइ धरम् क्व चाल् मा ।
विस्तार् गर्‍यो सब् कुरव माथि देखी ,
पाउ् मा पर्‍यो कत्ति न राखि सेखी ॥५१॥
बोल्या ऋषी अब् त्यन्व बाबु जान्नु ,
मैले भन्याको तजिले त मान्नू ।
उत्तर्गया श्राद्ध तँ गर् पका भात् ,
त्यो खानलाइ् जस्ल्य पसारला हात् ॥५२॥
प्रोहित् तिनै भ्या गरि भारि सर्दाम् ,
कुश्यौंसि मा श्राद्ध क गर्न्य भो काम् ।
अप्सव्य ले पिण्ड जसै समायो ,
पितृ क हुल् तिन् तिर बाट आयो ॥५३॥
हाल् मूख मा तिल् मिस्य को त्व्व पानी ,
दे पिण्ड हात् मा तँ भ्यरो त नानी ।
म वर्षदिन् तृप्त हुन्या छु भन्थ्यो ,
आर्को ब्वल्यो यो त्यन्व कैह्नय हुन्थ्यो ॥५४॥
ले बाबु दे पिण्ड म हूं पिता ता ,
आमा त्यरी को म भञा विधाता ।
छोरो लिन्यो लौ ह्यर यस्त्व पार्को ,
यो पिण्ड खान्या क हुन्या छ आर्को ॥५५॥
आर्को ब्वल्यो क्या तिमि पिण्ड खाउ्ला ,
पसार् न हात् बेस्गरि शास्ति खाउ्ला ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



स्वास्नी म्यरी निश्चय यस्कि आमा ,
गर्छौं क्य हा ! द्वै तिमि खानधामा ॥५६॥
मेरो छ्वरो यो भन्य्व एउटा ले ,
द्वै आइ् घिचर्हात लगाइ् निकाले ।
उन्को पऱ्यो फेर् घिच्रश र घिच्री ,
मेरो छ्वरो हो तँ त बाइह निकूली ॥५७॥
एस्तो लडाञ् तिन् पितृ को तहां भो ,
चौका सराजाम खराप मा गो ।
आश्चर्य दिक् मान्यर वैश्य भन्छ ,
हे गुर्ज्यु ! क्या एस्त्व उपद्र हुन्छ ॥५८॥
ऋषी ब्वल्या यो झगरा पितर् को ,
तँ लाइ भो यो अधिकै फिकर् को !
ब्रह्माजि लाइ् गर्द छु यो म बिन्ती ,
नराख् तँ आज् यो झगरा क्व गिन्ती ॥५९॥
एती भनी विश्वव ले पुकाऱ्या ,
ब्रह्माजि लाइ् भक्ति ल्य ताहिं झाऱ्या ।
आकाश देखी त ब्वल्या चतुर्मुख् ,
अन्तर् बुझी तेस्कन ता गई खुश् ॥६०॥
आमा त्यरी वैश्य कि हो त छोरी ,
विहा गऱ्यो वैश्य ल्य हात जोरी ।
सङ्गम् न भै त्यो मऱ्व, तेरि आमा ,
माइ् तै बढो वैंस पुरा नभ्यामा ॥६१॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



पश्चिम् दिशा देखि त आयको यो ,
वै वैश्य हो सिन्दुर सांहिना को ।
आमा त्यरी रांडि लग्यो द्विजैले ,
वैंसले त मत्ताभइगैथि जैले ॥६२॥
त्यो आयको पूर्व दिशा क बाहुन् ,
ई द्वैवटा पिण्ड न खान पाउन् ।
निकाल् दियो यस्लय पछी बुढीमा ,
ते तँ थिईनस् यस का भुँडीमा ॥६३॥
वेश्या भई तब् पछि तेरि माता ,
यैं वैश्य ले राखि भयो विधाता ।
दक्षिण् दिशा देखि ह पितृ आयो ,
पिता त्यही हो निध्व पिण्ड खायो ॥६४॥
म आइ तेरो ख निसाफ छीन्या ,
पितृ खुस्याउला अहिं पिण्ड दीन्या ।
एती भनी ब्रह्मजि ता गई ग्या ,
दक्षिण् क्व फौज् पिण्ड लिन्या भई ग्या ॥६५॥
कूटी लगाऱ्या पुरबीय पश्चिमा ,
जात् को ठ्यगान् भो तब दीय्व दक्षिणा ।
टीको प्रसाद् विश्रव हात् क्व लायो ,
खुसी भई त्यो नइवेद्य खायो ॥६६॥
त्यो पानि पिण्डै लय प्रसन्न भ्या का ,
ति पितृ आकाश महां गया का ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



आशीष् दिंदा भ्या तस वैश्य लाई ,
कैलास मा जान विमान पाई ॥६७॥
हे पुत्र ! तँले गरि मुक्त हुन्छौं ,
आशीष् तँलाई सब हामि दिन्छौं ।
बातसा मिलास् पद्‌वि बहूत बांच्यास् ,
गोकर्णजी का तँ अगाडि नाच्यास् ॥६८॥
मरी मनू भै यकहत्तरी जुग् ,
गोकर्ण का भक्ति महां नभै चुक् ।
कैलास को तँ हुन्यछस् प्रमथूगन् ,
आशीष् दिञौ हामिलय जाउ अब् भन् ॥६९॥
यती भनी स्वर्ग गया ति पितृ ,
बीदा भई दन्तुर गो निफिक्री ।
आशीष ले भै गयत्र बादशाहा ,
हज्जारवर्ष् राज्य गऱ्यो अथाहा ॥७०॥
दियो छूवरा लाइ त्यव राज्य सबू जबू ,
सरासरै त्यो त ग्वकर्ण आइ् तबू ।
धेरैतपस्या गरि पिण्ड दीयो ,
त्यै पुण्य ले दिव्यशरीर लीयो ॥७१॥
उत्तर्गया देखि त हात दश्मा ,
गदाधरै तीर्थ छ पुण्य जस्मा ।
त्यै माथि दश् हात् छ पिताम तीर्थ ,
वसूशिवादित्यश मान्नु पर्छ ॥७२॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



ताञ् नेरा नदि सङ्ग चरव्यश पुजी श्रीचन्द्रभागू तीर्थ हो ,
माथिल्ला नदि सङ्ग नारद तिरथ् नार्देश पूजी गयो ।
सप्तर्षीश्वर साँघु छेउ पुजनू सप्तर्षिका तीर्थ छन् ,
अलिक् माथि त खेचरेश्वर पुजी कपोत्गिरी तीर्थभन्न् ॥७३॥
उत्तर्वाहिनि कान्तिभैरव पुजी त्यै नांउ् नुहाइ् तीर्थ को ,
छह्रा मन्तिर ता वराह तिरथै त्यै नाउ् शिवैं पूजि गो ,
छह्रै का मनि कुण्ड भैरवजि को श्रीभैरवेश्वरपुजी ,
छह्रा वाग्मति धार तीरथ नुहाउ् शम्भू शृगालेश् बुझी ॥७४॥
माथी जायर सुन्दरेश्वर् पुजी श्रीसुन्दरी तीर्थमा ,
नाग्मत् सङ् विमलाम्बु तीरथ पुजी विम्लेश शम्भू जहां ।
अल्लिक् माथि त कामधेनु तिरथै अनन्त तीर्थैं महां ,
ठूलो छ दह ता अनन्तशिवको पूजागरिन्छ जहां ॥७५॥
विमान् जस्तो ढुङ्गो अपसरस को तीर्थ तहिं हो ,
गँधर्वेश्वर् पूजी बहुत दुरगै सङ्गम ज्व हो ।
अगस्ती तीर्थैं हो त्यहि तिरथ नांउ् ले शिवपुजी ,
ज्व वाग्धारा ब्रह्मा सरस्वति तिरथ् सत्शिव बुझी ॥७६॥
श्री सूर्यकेतु नृपती क्वहि दिन् थिया ताञ् ,
दुख् पाइ शम्भु क्व तपस्य गऱ्या पऱ्यो झाञ् ।
शम्भू खुशी भयर वर्दिनलागदा मा ,
मुख् देखि वाग्मति वह्या कि जगत् कि आमा ॥७७॥
एती गरी भगत ले त नुहाउ् सचैल ,
सतरुद्र शम्भु पुज जाइ उपर् त्य्व शैव ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



होम् गर्नु गाइ दिनु ब्राह्मण लाइ् खुवाई ,
योग् कुण्ड जाउ् मणिचुडेश्वर तात्र् नुहाई ॥७८॥
योगेश्वरै पुजि नहाउनु योगधारा ,
जन्मान्तरै क्व पनि जान्छ त पाप सारा ,
माइ् तारिणी क्व दरशन् फिरि नेमुनी को ,
आउ् सुस्त चांगु तिर लागनु खूप नीको ॥७९॥
त्रैलोक्यनाथ प्रभुको गरि प्रेम भक्ति ,
जाउ् गुह्यकालि तब शम्भु कि हुन् ज्व शक्ति ।
दण्डोत् लगाउ् पशुपती विरुपाक्ष ! हेरी ,
यात्रा सकीय्व घर जाउ् तब उनि खेरी ॥८०॥
यति कह्य विरुपाक्षै लाइ जब् नेमुनी ले ,
गरन गन्य ति यात्रा वाग्मती को गुनीले ।
सक्यर जब ति आया गुर्ज्यु लाइ् ढोगलाया ,
गुरुमुख छ्वखि तिन्ले तब् त आशीष पाया ॥८१॥
बस्छौ तिमी अब कहां भनि सोधदा मा ,
बाबू म्यरा पशुपती इ नदो त आमा ।
यै ब्रह्मनाल बिच बस्छु भन्या क्व सूनी ,
श्रीतारिणी चरण सेवनग्या ति मूनी ॥८२॥
अब् तीर्थयात्र क्व विधान क्यही कहन्छू ,
सब् शास्त्र मा भय क्व मात्र छ्वखाइ भन्छू ।
साथी र खर्च भरिया सरजाम राख्नू ,
साफों व्यला छ्वरन लाइ त जैसि डाकनू ॥८३॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



ख्व तीर्थ यात्रक्व विधान म लाग्यँ भन्न,
भारी न बोकि अरुको त न खाइ अन्न ।
सात् पांच तीन छ्वडनू अधिका त रात,
स्त्रीसङ्ग मुण्डन भयो दुद खान्य बात ॥८४॥
एकूदन्तको गरि पुजा गुरुलाइ मानी,
तीर्थेश दिक्पति पनी पुज मुख्य जानी ।
श्रद्धा बहूत गरि सबूथ्वक हूनु दानी ।
क्रोध् लोभ मोह छ्वडन्या लिइ हाल बानी ॥८५॥
वैराग्यै मनमा त निस्पृह भई साधू सँगै मा लिई,
कोस्भर् गै कन चौर् गरी व्रतधरी मृग्चर्म धर्न्या भई ।
हात् मा कौन्डल पात्र साफि सजिलो निर् आंख्य लौहो लिनू ।
हे गोविन्द ! मुरारि ! माधव ! भनी श्रीशम्भु मा मन् दिनू ॥८६॥
पैदल् ल्य पूर्णफल मिल्छ सवार्ल्य आधा,
जूता लगाइ चउथाइ अपराधि गाडा ।
काम् ले गया त्यसरि चाकरि ले अठौंद् छ,
तेसै पुग्यो भन्यपनी फल केहि पांउ छ ॥८७॥
जो रोगी वाग्मती का जलबिच पगदी
प्राण् त्यजोस् अन्त्यकाल् मा,
जोगी को पद्वि पाओस् मलिनजन पनी
फेर् न आवस् ग्व जाल् मा ।
धाता हेरू पनी यस् मरण क्व त बयन्
गर्द छन् राखि आशा,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



शूरा पूरा भगत् को त क्य गरनु बयन्
पुग्छ झट् शम्भु पासा ॥८८॥

तीर्थावली यो ह्व विभूतिमाला ,
बनाउन्या हुन् हरिभक्तिवाला ।
यात्रा ल्यख्याँ वाग्मति को त मैले ,
अध्याय ता बाह्रउँ भो य्व ऐल्हे ॥१२॥

इति श्रीकविपतञ्जलिप्रणीते 'श्रीधीरादेश पातञ्जलतीर्थावली श्री३युद्धप्रकाशे' श्रीवाग्मतीयात्रावर्णनो नाम द्वादशोऽध्यायः ।

❀ तीर्थावली समाप्ता ❀

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu

# अथ त्रयोदशोऽध्यायः

## ❋ व्रतावलीप्रारम्भः ❋

तिन् कोटी र पचासलाख् तिरथ छन् भन्छन् भरतखण्ड मा ,
मुख्यै मुख्य गनी ग्रवल् पनि त तेत्तीछन् य्व ब्रह्माण्ड मा ।
तिन्का भेद् पयरि यत्ति छन् इ सबको अवकर्ष नेपाल हो ,
ईश्वर् को य्व सबै तशेस् भनि जगत् लाइ् दीय को जाल हो ॥ १॥

वर्त तीर्थ दुइ धर्म क बाटो ,
तर्छ थोरइ पनी गरि लाटो ।
नाउँ क्यै ल्यख्यँ मत्रोल्य तीर्थ का ,
केहि नाउँ अब भन्छु वर्त का ॥ २॥

ब्रह्मा ले सृष्टि गर्दा
पहिल्य त य्व चइत् शुक्ल पक्षै कुदाया ,
आदित्वार् पैल्ह्य को जोग्
नक्षतर र तिथी पूर्व सूर्यै उदाया ।
तब् त्यो दिन् वर्षबन्धन्
वरष वरष मा ब्रह्म पूजाज्व गर्छन् ,
सुन्नन् ज्योतर्विदै का
मुख ग्रखि बरषाफल् ति पाप् देखि तर्नन् ॥ ३॥

आरोग्यव्रत् गरनु त्यै दिन सूर्य पूजी ,
विद्या स्व व्रत् पनि त्यसै दिन ब्रह्म पूजी ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



सम्वत्सरै क्व गरनू लिइ नाउँ पूजा ,
हुन्छन् तिलकव्रत ल्य कल्मष को त धूजा ॥ ४ ॥
सौभाग्यै शयन भन्या क्व व्रत् तृतीया ,
गौरी लाइ् पुज्य र ढला चढाइ लीया ।
फेर् त्यै दिन् हुन्य ह्व अरुन्धती क्व वर्त ,
पूजोत्सव् गरनु सबै तिनै क्व पर्छ ॥ ५ ॥
द्वितीया त हो बुद्ध औतार् जयन्ती ,
तृतीया त उत्तम् मनू की भइन् तीं ।
हरी को त मत्स्यावतार् पञ्चमी भो ,
दुवै वर्त ई द्वै तिथी मा लिनू भो ॥ ६ ॥
अष्टमी दशत्रि देवि पुजा जाम् ,
भोलिपल्ट नवमी पुजन् राम् ।
कामदा भनि यकादशि को नाम् ,
त्रोदशीव्रत लिई पुजनू काम् ॥ ७ ॥
वैशाख कृष्ण कि वरूथिनि विष्णु तीथी ,
यै औंसि मातृ तिरथै पुग यै छ तीथी ।
वैशाख शुक्ल तृतिया इति अक्षया हुन् ,
त्रेतायुगादि परशू भय राम त्यै दिन् ॥ ८ ॥
गङ्गोत्पत्ति ह्व सप्तमी पुज तिनै एकादशी माधवी ,
नर्सिंहै क्व चतुर्दशी गर पुजा यै पूर्णिमा चण्डिको ।
नावैं हो अपरा यकादशि क्व यो जो ज्येष्ठ कृष्णै गयो ,
आयो शुक्ल क्व पञ्चमी तिथि महा पञ्चाग्नि को व्रत् भयो ॥ ९ ॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



षष्ठी अरण्य कह्यकी पुजिन्या कुमार्छन्,
यो वायुधानि भनि अष्टमि वर्त पार्छन् ।
दशमी पुजा दशहरा क दशावतार,
एकादशी निरजला क त वर्तपार ॥१०॥
कूर्मावतार क ग्व द्वादशि वर्त धर्नू,
ई इन्द्र सावरणि हुन् मनु पूर्न्य भन्नू ।
सावित्रि को व्रत गरुन् वट पूर्वकी को,
यै पूर्णिमा गइ ज्व पुज्दछ लाग्न्य नीको ॥११॥
आषाढ कृष्ण कि यकादशि योगिनी भ्या,
यै शुक्ल ठाकुर रथोत्सव को द्वितीया ।
वैवस्वतै मनु भया दशमी तिथी पाइ,
एकादशी हरिशयन् क्षिरसागरै जाइ ॥१२॥
गोपद्म व्रत् हरि क्व हुन्छ यही तिथीमा,
तेहौं तिथी विजय पार्वति व्रत् क्व सीमा ।
यो ब्रह्म सावरणिहो मनु आदि पूर्णा,
व्रत् कोकिला गुरु पुजा पनि ज्याहिं कर्ना ॥१३॥
रौद्रेऽकैं ल्यख भूमिरज् र करकट् संक्रान्ति कान्डार् पुजी,
ज्ये लेख्नू नदिरज् नुहाउनु नदिमा हूंदैन ज्याहां बुझी ।
चातुर्मास्य क्व व्रत् हरीशयनका दिन्मा प्रतिज्ञा गरी,
पूजा पाठ पुराण क्यै छ्वडनु भो ई चार मैन्हा भरी ॥१४॥
श्रावण् कृष्ण त कामिका हरि तिथी घन्टाकरण् चौधऊँ,
रोट् व्रत् शम्भु पुजी त शुक्ल प्रतिपत् दुर्वास्गणेश् चौथऊँ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



तिर्तीया गरि स्वर्ण गौरि क्व व्रतै नाग् को पुजा पञ्चमीं ,
विष्णूकी तिथि पुत्रदा इ कहिइन् पूर्णा त ऋष् तर्पणी ॥१५॥
सङ्कष्ट चौथि ह्व गणेश क्व भाद्रकृष्ण ,
श्रीशीतला व्रत ह्व सप्तमि मा त बस्न ।
वृत् हो दशाफल र कृष्ण क्व जन्म मान्नू ,
द्वै अष्टमी वृत पुजा हरि को ग्व जान्नू ॥१६॥
यै दत्त सावर्णिमनू तिथी हो ,
अजा त एकादशि नाम थीयो ।
मन्वादि रैवत् क्व त औंसि जान ,
मन्त्रै पढी ञै गइ कुश तान ॥१७॥
अब् भाद्र शुक्ल क्व कहन्छु म वर्तमाला ,
बलूराम वर्त क्व जयन्ति द्वितीय होला ।
हर्तालिका ह्व तृतिया पऱ्य देखि हस्त ,
व्रत् गर्नु हस्त गउरी क्व तहीं प्रसस्त ॥१८॥
ञै गर्नु कोटीश्वरि को त वर्त ,
तामस् मनू येहि तृतीय पर्छ ।
श्रीसिद्धिनायक् व्रत चौथि पाई ,
नहेर तेस् दीन त चन्द्र लाई ॥१९॥
ऋषी पुजा गरनु पञ्चमि को त वर्त ,
षष्ठीं क्व गर्नु व्रत श्रीललिता क्व पर्छ ।
श्रीसूर्य पूजनु अहीं कपिला भनेर ,
मुक्ताभरण् व्रत् ग्व सप्तमि शिव् पुजेर ॥२०॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



जेष्ठा क्व व्रत् पुज तिनै दुरवाष्टमी मा ,
प्रारम्भ जै गर महालच्छिमी व्रतै मा ।
एकादशी त परयावरतन् भन्या की ,
यो द्वादशी त प्रभु वामनजी भया की ॥२१॥
जै हुन्छ इन्द्र क्व पुजा त उठाइ धोज ,
तिन् रात गोव्रत गरी जहिं गाइ पूज ।
गौरीजि को कदलि वर्त चतुर्दशा यो ,
जै व्रत् अनन्त क्व त डोर् पनि रात्र लीयो ॥२२॥
अपर् पत्त को श्राद्ध आरम्भ पुर्न्या ,
उमा श्रीमहेश्वर् क्व व्रत् जाहिं गर्न्या ।
महालच्छिम व्रत् अष्टमी इन्दिरा ग्यार् ,
कल्पादी त्रयोदश् अमाश्राद्ध को पार् ॥२३॥
पैल्हे आश्विन शुक्ल को तपन्यवा नव्रात्र आरम्भ भो ,
घट् थापन् त्यहि दिन् द्वितीय ह्यर जुन् षष्ठी निमन्त्रण् गयो ।
ल्यायो सप्तमि पत्रिका गरि पुजा महाष्टमी द्यो बली ,
स्वायम्भू मनु नौमि दश्मिविजया पापाङ्कुरा व्रत् भली ॥२४॥
कोजाग्रतै व्रत् ह्व ग्व पूर्णमासी ,
जूआ ख्यली रात बिताउ हांसी ।
कार्तिक् व्रतारम्भ जहीं ल्यखिन्छ ,
तर्यो यहां पांच् रित को ग्यखिन्छ ॥२५॥
घट् थापना देखि त शक्तिवाला ,
गाणपत् चउथ् देखि ग्व वर्त लेला ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



पापङ्कुशा वैष्णव शैव पून्याँ ,
संक्रान्ति ली सौर क्व वर्त गन्याँ ॥२६॥
बृहत् गौरी व्रत् हो तृतियतिथि एकादशि रमा ,
त्रयोदश् यमपञ्चक् यम पुजि ट-यो नर्क पिरमा ।
चतुर्दश् नर्क्याँ हो कुकुर पुज राज् हो बलि क्व यो ,
अमा गाई पूजा लच्छिमि पुज राती जब भयो ॥२७॥
गन्यो दीप् को माला वृष पुजन जाला त प्रतिपत् ,
गवर्धन् को पूजा गरि ख्यलनु जूवा त हतपत् ।
द्वितीया भाइ पूजा दिदि घर यमूना यम पुजी ,
कुभिराडो दान् गर्नू नवमि युग सत्यादि ह बुझी ॥२८॥
हरिब्बधनि यकादश् भीष्मपञ्चक् लगाई ,
मनुभय स्वन्वचिष् ता द्वादशी तीथि पाई ।
चतुरदशि त वैकुण्ठै हरीं को त वर्त ,
सकिय्व चतुरमासै पूर्णिमा भन्नु पर्छ ॥२९॥
वैतरणीं व्रत पूजनु गाई ,
उत्पति का त यकादशि पाई ।
सद्विहि छर्न चतुर्दशि जानू ,
मार्गवदी तिथि हैन य्त्र सानू ॥३०॥
मार्गशुक्ल कि त मोक्षदा भनी ,
धान्न्य पूज् पुरणिमा महाधनी ।
पौष कृष्ण सफला यकादशी ,
औंसि गौरि क्व त यो व्रतै बसो ॥३१॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



पुत्रदा पउष शुक्ल यकादश् ,
चात्तुषे मनु ह आदि तहीं बस् ।
षट्तिला कहिय्व माघवदीमा ,
शुक्ल पत्त कि यकादशि भीमा ॥३२॥
गौरी पुजा गर चतुर्थि य्व वर्त लीई ,
श्रीपञ्चमी सरस्वती कि त वर्त थोई ।
ईसुन्दषष्ठि रवि सावरणी क्व आदी ,
सातौं तिथी भय्व अरु व्रत छन् त ज्यादो ॥३३॥
रथ् सप्तमी य्व अचला अनि पुत्र नांउ् हो ,
तिन् नाउँका व्रत पनी रवि पूजनै हो ।
भीष्माष्टमी तिनजि लाइ त गर्नु तर्पन् ,
स्वस्थानि को वरत पूणम मा त गर्छन् ॥३४॥
फाल्गुन कृष्ण विजया त एकादशी हुन् ,
शिव्रात्रि चौधउँ तिथी शिवको महापुन् ।
द्वापर्युगादि अउँसी अब शुक्लपत्त ,
होला पुजागरनु अष्टमि मा त पर्छ ॥३५॥
एकादशी पनि त आमलकी भन्याकी ,
हो द्वादशी त विजया हरि पूजियाकी ।
यो रुद्रसावरणि को मनुआदि पूर्ण ,
होला जलाउन्य विधी पनि ज्ञाहि कर्ना ॥३६॥
वसन्तादि हो कृष्णपत्ते परेवा ,
वराहा जयन्ती नवौं तीथि पेवा ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



यकादशूतिथी पापमोचन् क्व पात्र ,
पुजी भद्रकाली अउँस् अश्वयात्र ॥३७॥
मल्मास शुक्ल कमला त यकादशी छन् ,
कामदा भन्याकि पनि कृष्ण कि पक्ष की हुन् ।
बाहौं महिन् गरन्य वर्त म केहि भन्छू ,
सामान्य व्रत् सब निखार्न त काँप्व सक्छू ॥३८॥
कपर्दी विनायक् क्व चौथो सधैं व्रत् ,
पऱ्या आइतवार् दूरवा को गणेश् व्रत् ।
सबै शुक्ल षष्ठी कुमार्वर्त हुन्छ ,
रवी सप्तमी सूर्यको व्रत् गरिन्छ ॥३६॥
बुधाष्टमी बुध पुजा दशमी त आशा ,
पर्दोषको वरत द्वादशि दुःखनाशा ।
आदित्य व्रत् रवि क्व वार् सउँवार्क्व वर्त ,
श्रीशम्भु पार्वतिक्व पूजन गर्नु पर्छ ॥४०॥
मङ्लवार पुज मङ्गल लाई ,
बाँभि ले गरि य्व व्रत् छ्वन्व पाई ।
औंसि सोमवति भ्या पुज पीपल् ,
बालवैधव क्व जोग् हुन्य निस्फल् ॥४१॥
अष्टमी व्रत सधैं दुइ पक्ष ,
देविको गरि हविष्य क्व भक्ष ।
पर्छ षै क्व पनि त वार् शनि पर्दा ,
मात्र गर्न्य क्वहि छन् व्रतगर्दा ॥४२॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



व्यतीपात व्रत् तेहि जोग्मा गरिन्छ ,
अनासन् क्व व्रत् जैल्य आफू मरिन्छ ।
महिन्भर् महिन्भर् त चान्द्रायणै हो ,
नसक्ता तसट्टा सधैं बाहुनै भो ॥४३॥
संक्रान्ती दश् प्रकार्का व्रत लिनु परन्या
नाम् न म्यासी कहन्छू ,
भोग् रूप् तेज् धान्य आयू मन्वरथ सउभाग्
औविशोक् लवण ताम्बुल् ।
सब्मा पूजा रवीको व्रत बसि द्विज लाइ
खान द्यो मीठ्व अन्न ,
जुन् जुन् मा ज्या दिनू पर्छ सब ति कुन्व ता
क्रमसितै लाग्यँ भन्न ॥४४॥
फल् चामल् भोग माहाँ
सुन घिउ रुपमा तेजमा दीप दीनू ,
धान् धान्यै आयुमा घ्यू
दुधदिनु त धरी काँस को पात्र लिनू ।
मनूरथ्मा गुड् र सौभाग्
चिज दिनु तस मा लवण ताम्बुल् त्यही द्यौ ,
तिल् सुन् गाइ द्यौ विशोक् मा
सब तिर चल्य को सत्यनारान् पुजील्यौ ॥४५॥
लाख् फुल् लाख प्रदच्छिणा फ्यरि त्यती गर्न्या नमस्कार भो ,
त्यत्ती बालन्य बाति चार् वरत ई पूर्याइ सक्यो पारगो ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



आषाढ् देखि त आश्विनान्त गन्यको स्वस्तीक व्रत् पुज् हरि,
आश्विन् शुक्ल रवी षष्ठी अचल तक् दाना व्रतै पुज् रवि ।४६॥

श्रावण् अन्त्य क्व शुक्रवार वर लक्ष्मी-
को पुजा व्रत् यही,
मलमास् मा पुरुषोत्तमै कन पुजी
व्रत् लीनु मास् को सहो।
पापाङ्कुश् अखि बोधिनी तलक को
मासोपवास् क्या बयन्,
धारणापारनं भन्या क्व चार्महिन एक्
दिन् खाइ् नखाइ् ली शयन् ॥४७॥

एकादशी व्रत् तुलसी रँगाइ,
श्रीकृष्ण का पाऊ क्व भक्ति लाई।
शालग्रामि धाम् विष्णुसहस्र नाम्को,
गीताजि पढ्नू त यही मुकाम् को ॥४८॥

गङ्गाजि को जल् अविमुक्ति को थल्,
गायत्रि माता जपना क्व जो बल्।
ब्राह्मण् क्व मान् सून क्व दान् इ बाह्र,
संसार् समुद्रै अखि लांउन्य पार ॥४९॥

एकादशी वर्त छ तेह जात्को,
निषेध आहां छ बहूत भात्को।
और् वर्तता पारण ले सकिन्छ,
एकादशी खाय पर्नी रहीन्छ ॥५२॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



एक् भक्ती हविषी रही दशमिमा यक्लै सुती भूमिमा ,
प्रातः स्नान गरी पिपल् हरि पुजी एकादशी दीनमा ।
बाजा पाठ् पुज नाच गीत ल्य गरी निन्द्रा न छ्वै रात् बितोस् ,
पारन् द्वादशि भित्रमा द्विज पुजी वैकुण्ठ तेस् ले जितोस् ॥५१॥

निर्हार् वायुअहार् र पञ्चगव्य क्यै
घ्यू पेट् भरी पानि पो ,
दुद् तिल् फल् छ्वडि भात् हविष्य यक छाक्
भातै यकै छाक भो ।
सब् थोक् दिन् भरि खाइ् नियम् नभय को
वर्तैंछु भन्न्या पनी ,
कान्छो वर्त यकादशी क पनि यो
भन्छन् सबै ती मुनी ॥५२॥

ब्रत्मा बड़ो मुख्य छ ब्रह्मचर्य्या ,
तेस्मा पनी छोड्नु छ मुख्य पर्यार् ।
त्यसमा प्रसङ्गै पनि आठ जात् छ ,
बचयानो ता व्रत पुण्य लान्छ ॥५३॥

सुन्नू भन्नू ख्याल गर्नू र ह्यर्नू ,
कच्पच् बोल्नू आंटनू और चल्नू ।
भिड्नू आठ्जात् योगि मैथून भन्छन् ,
ब्रत्मा निम्मा छोडिन्या मा इ गन्छन् ॥५४॥

गाहो पर्दा आठ् ल्य व्रत् भङ् हुंदैन ,
जल् फल् मूल् दुद् ई निषेधूमा लिंदैन ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



आज्ञा ब्राह्मण् को गुरु को र घीऊ ,
ओष्ती एती खाइ् व्रती राख जीऊ ॥५५॥
व्रत् गर्न् बाहै महिना छ ठूलो ,
जन्मान्त का पाप क्व हुन्छ धूलो ।
नसकन्य ले चार्महिना क्व लीयो ,
सक्कै न ता कार्त्तिक गर् बलीयो ॥५६॥
व्रतत्यो कार्तिक को अती अति ठुलो पुण्यै क्व लांउन्या कुलो ,
प्रातःस्नान गरी हरी पुजन ले पाप् को गन्यांउछ धुलो ।
बांकी आठ् घरि रातका भजन ले एक् छाक खांदा महां,
तुल्सी पूजनले त कार्तिक क्व च्युत् संपूर्ण हुन्छ जहां ॥५७॥
कार्त्तीकमा दीप क्व लाइ तांती ,
माघ्मा नदीस्नान फजीर जाती ।
बैशाख् बट्टवा कन दीइ ठण्डा ,
वैकुण्ठको वास मिलोस् अखण्डा ॥५८॥
व्रतमा बडो बारनु पर्छ चार ,
सांचो बचन् आमिष मुख् न पार ।
शुची हुन् भैकन ब्रह्मचारी ,
चार्थोक ई सब् व्रतमा छ भारी ॥५९॥
ईश्वर्प्रीति गरी चतुर्महिनभर् क्यै छोडनू भक्तले ,
क्यै गर्न् तसको कहन्छु क्यहि फल् व्रत् गर्न् रिति सक्कले ।
कार्त्तिक्मा गइ साङ्ग्य गर्नु तसको दान् गर्नु त्यस्तै कुरो,
सब् थोक्मा पनि खान दीनु द्विज लाइ व्रत् त्यस्ल्य हुन्छ पुरो ६०

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



गुड्ले सुन्दर सोर तेल ल्य त ज्यू ध्यूलेत खुस्स्याल् हला ,
सन्तान् बढ्द छ फलूल्य खाइ भुटि कुटी सन्तान होला भला ।
खोर्सानी त नखाइ शत्रु मरनन् दै दुद्ल्य गोलोक् मिलोस् ,
ढुङ्गामा भजिमाऽथवा जत्र त सुतोस् वैकुण्ठ जाई हिलोस् ॥६१॥
राजो हुन्छ त्य्व खालि खाइ भजिमा
मासू छ्वडी योगि होस् ,
विष्णू पूजन्य निरोग् न बोल्न्य हुकुमी
पानै छ्वडी भोगि होस् ।
साग् पात् छ्वड्न्य मिठाइ खान्य त्य्व हला
कुर्त्तैत्रफल् पात् क्व भात् ,
एक् छाक् ले मिललाऽग्निहोत्र क्रत फल्
अन्नदान ले स्वर्ग थात् ॥६२॥
ढुङ्गा महां खाइ प्रयाग को फल् ,
एकान्तरोपास विकुण्ठ को बल् ।
गङ्गा क्व फल् रौं नख पालि पाउला ,
पूजा ह्यरी अप्सर लोक जाउला ॥६३॥
विष्णूका मन्दिरै मा लिप घस गरनू ढोग मात्रै दिनू भो ,
छूनू वत्ती दिनू भो परिक्रम गरनू हेर्न मात्रै पनी गो ।
एकाग्रे वर्त गर्न्या पचरंग भरन्या देखि विष्णू खुशी छन् ,
क्या पाईन्छ भनू म व्रत पुरण भया विष्णु सब् थोक दिन्छन् ॥६४
ज्यामिर् कुभिण्डो उखु रात्व मूला ,
भींडा मुसूरो अमिली र अम्ला ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



सेतो मुला चार्महिना व्रती ले,
नखानु छैनन् हरिखुस् यतोले ॥६५॥
एक् शाक व्रत भन्न्य बडो गनिन्छ,
चारै महिन् चार् छुवडनू भनिन्छ।
श्रावण् क्व साग् दै भदऊ न चाख्या,
असोज दुद् कार्तिक मा दुपात्या ॥६६॥
साग् भन्नु जो हो तरकारि को जात्,
जस्ले रुचाई कन ख्वाउँन्या भात्।
त्यो हुन्छ दश् जात् मुनि ले भनिन्छन्,
तिन्का त नांउ् तप्सिल मा गनिन्छन् ॥६७॥
पात् फुल् मुण्टा फल् टुसा बोट सिङ्गै,
आंख्ला बोक्रा और् जरा ढाक्न्य रिङ्गै।
यस्ता दश् जात् को ज्व खान् अचार,
तर्कारी होस् साउनै पैल्ह्य बार ॥६८॥
पात् खाईन्या कर्कलो ओर्ज्लूको,
ज्यूह्या सांखूल्या गँध्या खूप् हलूको।
ढकूहा भन्न्या पद्म चाल्नू जरिङ्गो,
हाल्नू खट्टा वीष तेस्को मरीगो ॥६९॥
फुल्मा क्वैराल् साकिनू फर्सि बूङ्गो,
सीमल् टट्लो काहुली को त थुङ्गो।
एस्तै धेरै जात छन् देश देश्मा,
जानी बूझी छोडनू पर्छ त्यसमा ॥७०॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



मराटा फर्सी सिप्लिकान् बोडि काभ्रो ,
चिराडे भोले डौंठ्य नांउ् भ्या क्क निभ्रो ।
यस्तै जात्का पालुवा हेरु लीनू ,
तर्कारी ई सांउ्न मा छोडि दीनू ॥७१॥
फल्का साग भिंडा घिरौंल्व फरसी कांक्रो निभारो क्यरा ,
मैदल् रामृत्वरञा र ग्रांप कन्यला खोर्सानिका जात् घ्यरा ।
कट्हर् पर्वर रामभिंडा र अमला लौका कुभिन्डो भयो ,
यस्तै धेर्तरकारि हुन्छ फलको दोगान मा हेर्नगो ॥७२॥
टुसांउ्न्य न्यूहो र टुसा कुहीलो ,
खिरौंल्व तामा ग्रनि काल्व न्यूहो ।
आंखूला ह्ल ठ्वट्न्या ब्वकन्या चिचिराडा ,
बोटै सबै खाइन्यछन् ग्रछन्दा ॥७३॥
मेथी चौंसूर तोरी धनिञु र लुहुँड्या
सूप मूला र रायो ,
पालुङ्गो प्याज जीरी लसुन र बनराइ्
हुर्हुन्या गन्ध ग्रायो ।
फापर् केराउ् गिन्यारी लट्य ब्यथु भृंगराज्
रात्वमाट्या भन्याको ,
एस्तै साग् छन् अनेक् जात् मुलुक मुलुकमा
सम्मय का ई गन्याको ॥७४॥
मूल् खाइन्या आलु पिंडालु बन्तरुल् ,
भ्यागुर् मुला प्याज् तिमिलो र ग्रोर्कमल् ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



अदुवा हलेदा प्रतृती इ भन्छन् ,
अचार तर्कारि सबै इ बन्छन् ॥७५॥
बेह्कर्या भन्न्या त च्याऊ
पथर क त सिवाली प्रभृती कहिन्छ ,
भिन्नै भिन्नै अनेक् जात्
वन परवत मा देश देश् मा रहन्छ ।
दाल् खाइन्या सीमि बोडी-
हरु क अन्यक जात् हुन्छ तर्कारि काँचो ,
तर्कारी छोड्नु भन्न्या
व्रत विषय हुँदा यो पनी छोड्नु साँचो ॥७६॥
दै दुद् छोड्न्या भाद्र आश्विन् द्विमैन्हा ,
दै छोड्दा मा यो मही खान् न हून्या ।
बासी दुद् त्यो हैन दै स्वाद् न हूवा ,
दुद् छोड्दा मा खान हूँदैन खूवा ॥७७॥
दुइ्पात्या छोड्न्या अनी कार्तिकै हो ,
दुइ्पात्या भन्न्या त जन्मै द्यखी हो ।
त्यस्को नीधो पाजिदैन भनरे ,
टूसाऊन्या लेख्त छू म गनेर ॥७८॥
टूसा खान्या जात भो धान् मकै गौं ,
आलू पींडाल अदूवा कती कौं ।
ओलभो केरा और् क्यराऊ पनी हो ,
जांची खानू आहिं यत्ती गनीयो ॥७९॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



व्रत्मा खानु हविष्य हो व्रत सक्री पूजा गरी देव को ,
ब्राह्मण् ब्राह्मणि को पुजा न गरि ता हूँदैन व्रत्ता नीको ।
आमिष् छोड्नु खानु वर्त दिनमा हविष्य भन्छन् सबै ,
तस्कारण् म हविष्य आमिष पनी क्यै केहि लेख्छु तबै ॥८०॥

मङ्सीर्मा पाक्न्य सेतो
न उसिन्य क्वत धान् कूल्व लाग्न्या गहाको ,
राम्रो नाऊँ भया को
मुगि जउ जुन्यलो कागुनू नांउ् पऱ्याको ।
साना केराउ दुइ् जात्
अमिलि र अमला आंप हर्रो र केरा ,
पिप्ला अद्वा र नीरा
गहुँ कटहर आलू पिंडाल् क्व घेरा ॥८१॥

सागूमा वेथू कटान्या हिलम्वच भनिन्या
ह्यूँदको साग जाती ,
साठ्याधान् भो नरीवल् लबलि भन्य क्व साग्
देशमाऽनेक तांती ।
नुन्मा सामुद्र सिन्धू भजिसि बकरि दुद्
गाइ को दै पनी हो ,
खूदो बाहेक् उखूजात् घिउ भक्ष तिन् को
यो हविष्यै कहीयो ॥८२॥

आमिष् भन्छू डव्या को
दुइ च्वटि क्व पकाइ् पाक्य को बासि अन्न ,

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



कोदो मुस्लो रहर्भो
गहत सब जतो माष का जात् गन्न ।
भींडा तेल् पाथ्यतोर्यूं
लउक्व र ग्वलकांकी र कांको लसुन् भो ,
खिर्खिन्नो भोव्यनुन् भो
द्विजलय ब्यच्यक्व रस् सीपि पोलेर चुन् भो ॥८३॥
सागमा चिल्ली र तुलसी
अफिम क पनि साग् रातगाजर् मुला दुइ् ,
पोपीका चक्रवर्ती
नृप गिरि र पलाण्डू र पान् और् अचार उइ् ।
खोबूडोला का न बगून्या
जल पुँगिफल ज्यामिर् पकायो त आफू लाइ् ,
इन् लाइ् आमीष भन्छन्
ऋषि हरु त सबै ताम्र मा गोरसै जाइ् ॥८४॥
आमिष् हविष्य द्यखि बाहिक जत्ति चिजछ ,
कवै देशमा क्यहिकुरो चलनै लय मिल्छ ।
जो जो चल्या क्व कुल देश र काल जानी ,
व्रतमा लिनू छ्वडनु काम गरुन् त ज्ञानी ॥८५॥
व्रत्गर्न पाइ तिथिले रविको उदाउन् ,
सांजमा पुजा भय त अस्त तिथी कुदाउन् ।
शुक्लाऽष्टमी उदय सांजक्व कृष्ण लीनू ,
दुइदिन् पऱ्या व्रत पछिल्लव दिने क्व दीनू ॥८६॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



श्रीरामचन्द्रक्व जनम् ऋषिपञ्चमी भो,
मध्याह्न लागन्य अनन्तचतुर्दशी गो।
शिवरात्रि कृष्ण क्व जनम् अनि लक्ष्मिपूजा,
आधरातिलागन्य गरछन् अघि का त बूढा ॥८७॥
श्रीराम कृष्ण क्व जनम् हरितालिका तिन्,
शिवरात्रिको व्रत समेत नखानु चार्दिन्।
बालो बुढो वछ्यनमा पन्य को त रोगी,
पाप् लागदैन इनलाइ नृपती र जोगी ॥८८॥
एकादशी क्व व्रतमा त बहुत् विचार्छ,
टूट्या बट्या पनि त शैव् अघि दीन पार्छ।
वैष्णव् ल्य गर्नु त दुवादशि लाइ छोई,
द्वै को पनी त फल कत्ति फरक् न होई ॥८९॥
रात् बांकी घरि चार् घखी दशमिमा एकादशी लागदा,
त्यस्लाइ सल्य भनिन्छ वर्त नलिई वर्ताहु ले भागदा।
खाली द्वादशि मा उपासन बसी पारन् त्रयोदश् पनी,
पच्पन्ने घरि नाघ्यकी कन बुढा भन्छन् इ सल्ल्यै भनी ॥९०॥

व्रतावली यो व्रत को त माला,
बनाउन्या हुन् हरिभक्तिवाला।
तीर्थावली अन्त्य क्व वर्तमाला,
अध्याय ता तेह्रउँ होइ जाला ॥१३॥

इति श्रीकविपतञ्जलिप्रणीते 'श्रीधीरादेश पातञ्जलतीर्थावली श्री३युद्धप्रकाशे' व्रतविषयको नाम त्रयोदशोऽध्यायः।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu

१

## ❀ अथ प्रार्थना ❀

मैले ख्व वर्णन गऱ्यां क्यहि शास्त्र हेरी ,
क्यै लौकिकी कुऱ्व पनी थपियोत फेरो ।
बर्गत्र बुद्धि म्यऱ्व होइन यो ल्यखाई ,
आफैं बसी हृदय मा त दियो घखाई ॥ १ ॥
नाऊँ हजूर क र ठाउँ हजुर् डुल्या को ,
श्रीभक्तवत्सल भई कन कात्र् भुल्या को ।
यो सम्झि सम्झि लिन लाइ ल्यख्यां बही मा ,
नाना मुनी हरुल्य बात् गऱ्य का सही मा ॥ २ ॥
बेहोश् भत्रा हजुरका र इ भक्त का नांउ् ,
लेखूँ भनी अघि सऱ्यां ति पवित्र का ठाँउ् ।
तालव्य दन्त्य बढुवा घटुवा र छोटो ,
राखीन क्यै पनि हिसाब् मुरधन्न्य मोटो ॥ ३ ॥
पद् छोडि अक्षरत उल्ट्व गऱ्यां क्यहो ठांउ् ,
छन्दै मिलाउन भनी फरमाइ् लित्रा नांउ् ।
माला बनाइ तिरथावलि धर्म फुल् का ,
पाउमा चढाऽय भइ कायल यो मुचुल् का ॥ ४ ॥
प्वांख् नाऽऽयको चिडइ माइ् समझोस् जसोरी ,
बाल् वत्स भोकिय क रामदछ त्यो जसोरो ।

---

१—यस्को कठिनस्थल मा अङ्क द्वारा त्यैं मन्तिर संक्षिप्त टिप्पणी भये को छ । सं०

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



परदेश् खसम् तरुणि दिल् प्रभु ! जस्त्व धांउछ ,
दर्शन् न पाइ म्यःत्व मन् त्यहि दुःख पांउछ ॥ ५ ॥
मुख् ढाकि चुप्प नजिकै जननी ल्य बस्ता ,
हा ! पर्छ चार्तिर खसाल्यर आंसु सस्ता ।
जस्तो त्य्व बाल भुल्य को म पनी हजूर् को ,
त्यैस्तै अलत्र पन्यं नाथ ! न मान्नु भर्को ॥ ६ ॥
पालन् प्वसन् गन्यँ हजूर क्व काम् सघाई ,
स्त्री पुत्र हेरु जिउले परिसर्म पाई ।
काम् मा म्यशति भयनन् संग मा गयेनन् ,
अन्यान्य भो प्रभु ! विराग भयो म्यशे मन् ॥ ७ ॥
एही शरिर् पनि इह्रेरु द्यखी बचाई ,
राम्रो लगाइ सुख दी मिठ्व अन्न ख्वाई ।
पाल्या क्व ता प्रभु ! भयो अहिले त घांडो ,
पाप् पुण्य आर्जन बनाय क्व हेछ भांडो ॥ ८ ॥
तेरो कमाइ तँ भ्वगेस् भनि आफु लेख्न्या ,
बेहक् क्व पाप ग्व भयो अब को ह्व छेक्न्या ।
साथ्का अरी[१] ल्य पिन्यको न त कोहि देख्न्या ,
रोया न सुन्न्य प्रभु ! क्वै हिंडिग्या न छेक्न्या ॥ ९ ॥
क्या हो बिजाञि प्रभु ! मैल्य निसाफ पाइन ,
मन्लाइ न दीय पछि लौ गुणनाम गाइन ।

१—अरी = ६शत्रु ( काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य )

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



अख्त्यार् थियेन मन कायम गर्नु मेरा ,
कायम् न होस् भन्यर इन्द्रिय का इ घेरा ॥१०॥
साथ् मा न जान्य कुन्व सब् म्यन्व हो भनाई ,
ब्वांसा भऱी गरन्यभ्या परियार् कनाई ।
पाप् सब् ब्वकाइ् दिय प्रभो ! मुखिया बनाई ,
यमदूत आउँन्य बखत् क्व द्यला मलाई ॥११॥
यस्को सहाय अरुछैन भनी हजुर्लें ,
मेघ् जस्त्व दिन्छ जल नाच् गरदा मुजुर्लें ।
तेस्तै कृपा न भय ता म गई गञा खेर् ,
नांउ् लीन सक्न्य हुन्य छैन प्रभो ! म ता फेर् ॥१२॥
पल्नू म सक्तिन भन्या कि निकाल् दिनू होस् ,
जांलां यघार[1] परियार् छूवडि यो छ सन्तोष् ।
खातिर् जमा कि त मिलोस् यमदूत् फयला मा ,
पर्नू मञील्य न परोस् मरन्या ब्यला मा ॥१३॥
बीदा हुँदा म यमराज् सित आहिं आंउ्दा ,
केवल् हरी म भजुँला भनि जन्म पांउ्दा ।
ऐल्हे त यो विषय लाइ् दिनु भो मलाई ,
क्या भन्नु अन्मजिल्य फेर् यमलोक जाई ॥१४॥
मन् बुद्धि भ्या इ दुइ बादि र प्रत्यबादी ,
बुद्धी कनै दिय छ मन् ल्य लात खांदी ।

१—यघार = मन और दश इन्द्रिय ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



ग्वाहा[१] मलाइ दिनु भो मइ आफु[२] साक्षी ,
छिन्नै सकीन झगडा प्रभु ! म्यां क लाक्षी ॥१५॥
घर्[३]भित्र को य्व तयदात् गरनै न पाई ,
प्यादा कडा न छ्वडन्या सँग दश्[४] इ आई ।
बुद्धी स्व कयै थियत्र प्यवा लिय सब् हवाला ,
क्या हो बिजात्र् प्रभु ! म्यरो किन म्यां म हाला ॥१६॥
मेरा भँडार[५] बिच जायर आफु लुकन्या ,
म्यट्नू भनी हजुर लाइ्म त बाइ्हदुकन्या[६] ।
सर्वस्व लीबक्केसियोस् बरु यो कमाई ,
चाकर् हुँला बरु य्व वन्[७] न डुलू रमाई ॥१७॥
वैल्हे पनी ऋषि हरू नउद्धारपाल्या[८] ,
देखेर चुप्प रहि वन् बिच फालहाल्या ।
भाग्या धुरी[९] घ्वखि भनी समचार सुन्छू ,
बर्गत् भईन म्यन्व क्या गरुँ नाथ रुन्छू ॥१८॥
बानो भन्या हजुरको किन यस्त्व साहो,
देखाउन्या सजिल्व बाट्व गराइ गाहो ।

---

१- ग्वाहा म० =जीवात्मा । २—आफु सा० = परमात्मा । ३—घर्= शरीर । ४—दश्=दश इन्द्रिय । ५-भंडार=हृदयगुफा । ६—बाइ्हदुकन्या =देहाभिमानी । ७—घन्=संसार । ८- नउद्धारपाल्या =नवछिद्रेन्द्रिय का देवता । ९—धुरी =ब्रह्मरन्ध्र ।

समझी मलाइ सुख दिन्छु भनेर लाउँन्या ,
जत्ती भ्यलात्रिच्व गऱ्यो वइराग्य आंउन्या ॥१६॥
गाली गऱ्यो र शिशुपाल लय मुक्ति दीयौ ,
पाउ् मा पऱ्याक मयुरध्वज चोरि लीयौ ।
स्वामी तुल्याँउछु भनि [1]आइ् बिइजत् भयो हाइ् ,
क्या पाँउन्य हूँ प्रभु ! म नाउँ हजूर का गाइ् ॥२०॥
लाग्यो निको भन्य म देख् छु हजूर लाई ,
भैग्या [2]ति सेठ कनिका मुठि एक खाई ।
बासी जुठा फल दिई [3]बुदि साथ आई ,
[4]विष् ख्वाउन्या पनि क्य हा ! गति धाइ्क पाई ॥२१॥
[5]साभा महां पनि प्वसाक् भइ बस्नु भ्येथ्यो ,
[6]त्यो शूद्रिणीपति नरक् मतिले गयेथ्यो ।
एक् चोटि नाउँ लियमा अरुथैं त आंउन्या ,
हा पर्छु म हरबखत् दरशन् न पांउन्या ॥२२॥
खुसभ्या हजुर् [7]शितल हून्य कराहि मुल्का ,

---

१- आइ् = सूर्पनखा आये की थी । २—ति=सुदामा । ३—बुढ़ि=शबरी ।
४—विष्ख्वाउन्या = पूतना । ५—साभामहाँ=द्रौपदीचीरहरण मा ।
६—शूद्रिणीपति = अजामिल । ७— शितल० = सुधन्वालाई ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



[1]दैत्येन्द्र माथि हथियार् भय वृष्टि फुल् का ।

[2]मेघ् वायु आइ् प्रलयकाल क पात्झरेन ,

उद्धार गर्नु भ्यन्व क्या प्रभु ! मन्परेन ? ॥२३॥

[3]पृथ्वी क दान् गन्यथ्य मान् किन लीदियौ सान् ,

आँउछन् प्रभू भन्यथ्य्व [4]माकल को लियौ ज्यान् ।

[5]नीमकूहराम् कन दियौ किन राज्य पूरा ,

खूशी हजुर्कन गरांउन्य बुझीन कूरा ॥२४॥

प्राण् का बरोबर ति [6]पांचूल्य क्य हा ! कुहयावन् ,

साक्षात् [7]श्वशुर् ल्य किन पायन भोगून त्योधन् ।

भेट्ता संधै किन सुन्यौ [8]फुफुका ति गन् गन् ,

हे नाथ ! कत्ति पनि जानिन आफुको मन् ॥२५॥

बागूदान् भया कि [9]अरु लाइ हन्यौ [10]ति कन्या ,

जाउ् प्वैल पालन म सक्तिन कैल्य भन्न्या ।

---

१—दैत्येन्द्र=प्रह्लाद । २—मेघ्०=वृन्दावन मा । ३ पृथ्वी०=बलि । ४—माकल=बालि । ५—नीमक्हराम्=विभीषण । ६—पांच्=पाण्डव । ७—श्वशुर्=सत्राजित । ८—फुफु=कुन्ती । ९=अरु=शिशुपाल । १०—ति कन्या=रु·क्मणी ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



कामता हजूरल्य गऱ्या क म देख्छु ठिक्कै ,
सम्झन्छु झल् झलि र मन् खुशि हुन्छ निक्कै ॥२६॥

[१]बन्कर् कि छोरि पनि घर्वटिनी भईथिन् ,
[२]बाङ्गी बुढी पनि हजूर क साथ् गईथिन् ।
काम् सम्झँदा हजुर को किन लाज लाग्न्या ,
जत्तो [३]पियान्व गऱ्य को सब चीज [४]भाग्न्या ॥२७॥

[५]स्त्रीभ्येर सब् [६]इजतदारहरू छकायौ ,
तेस्तै रुवांउन्य भय गोपि क्य हा ! फकायौ ।
ठूलो निसाफि भइ गर्न्य हजुर् त पाप,
सम्झन्छु क्या न ह म्यरा त हरांउ छ ताप ॥२८॥

तिन् शूल लो निन्वगि भिक्षुक नांउ् महेश ,
नामै पवित्र रहनू छ मशान देश ।
'समदृष्टि हूँ' भनि भया किन नेत्र तीन ,
यस्तो चरित्र भन्य मैल्य हजुर् ! बुझीन ॥२९॥

पर्यारता हजुर का मत देख्छु [७]चार ,
गांस् हालँदा ख्यरि त मूख क्य हा ! ति [८]तेह ।

---

१—बन्कर् कि छोरि=जाम्बवती । २—बुढ़ी=कुब्जा । ३—पियान्व=स्त्री, धन इत्यादि । ४—भाग्न्या=नाशहुन्या । ५—स्त्रीभ्येर=मोहिनीरूपले । ६—इजतदार=दैत्य, देवता, (शिव) । ७—चार=शिव, उमा, गणेश, कुमार । ८—तेह=शिव को ५ मुख, उमा को १ मुख, गणेश को १ मुख, कुमार को ६ मुख ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



यौटी ति पत्थरसुता[१] बबुरा गरुन् क्या,
छक् पर्छु भीखल्य हजूर क्व पेट् भरुन् क्या ॥३०॥
नाऊँ मुढो गुरु हजुर् घ्यखि छैन पूंढो,
कामदेव पोलन्य पियारि क्व साथि ढूढो ।
अमृत् दिन्या भगतलाइ् भइ वीषधारी,
मैले बुझीन य्व चरित्र हजुर् क्व भारी ॥३१॥

एक् चक्र रथ् कन त हांकन्यछ लिंडूका[२],
हिंड्नू ब्यबाट्वल्य[३] संधै लुकनू ब्यलूका ।
रोज् रोज् घुमी गगन पुग्नु उही ठ्यगाना,
नाथ्का चरित्र क्व म सक्तिन गर्नु गाना ॥३२॥
ऐश्वर्य दिन्छु तिमि[४] लाइ् हुन आउ नारी,
भन्थ्योर तेस्कन[५] लडेर दियौ त मारी ।
देवी "म हूँ" भन्यर मर्द क्व काम गर्न्या,
जानीन यो चरित मुक्त हुन्या ति[६] मर्न्या ॥३३॥
एक् डल्ल्व माट्व निलि यो पृथिवी[७] घ्यखायौ[८],

१—पत्थरसुता = पार्वती । २—लिंडूका = अरुण । ३—ब्यवाट्व = आकाश । ४—तिमि = देवी । ५—तेस्कन = शुम्भकन । ६—ति = हजूर बाट मरे का दुष्ट हरू । ७—यो पृथिवी = ब्रह्माण्ड । ८—घ्यखायौ = यशोदाहरुलाई ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



१
हज्जारऊँ द्विज अघाउँन साग खायौ ।
२
एक् वस्त्र मा पस्थर धोति कत्र खात् लगायौ ,
कस्का कय गुन् ल्य प्रभु ! खिल्लत कस्त्व पायौ ? ॥३४॥
३
घांस् खाइ् रह्यौ वरष दिन् अनि ब्रह्मछल् मा ,
४
पौरी ख्यली पिउनु भो किन बीष जल् मा ।
आमाल्य खान दिय का चिजता ल्यखीन ,
क्यै चिज् चढाइ पनि खुश् त हुन्या घखीन ॥३५॥
५
बञ्शा तपस्वि ल्य पियार् गरि माग्य माया ,
माया रहेन छ हजुर्सित शास्ति खाया ।
क्षण् मा त सात् कलप डूलि रह्या ति जल् मा ,
क्या मागु तेस्तइ म हुन्छु कि नाथ ! छल् मा ॥३६॥
पट् मूर्ख गोप हरु ले वइकुण्ठ देख्या ,
पुण्यात्म नृग् कन क्षपाञ्च हुनू ख लेख्या ।
६
त्यो मुक्त भो कृपण भिक्षुक दान् न दीई ,
एस्तै हुँला भनि बुझीन म काम लीई ॥३७॥
प्रत्यक्ष देख्यर म खुश् हुन्य हैन भन्न्या ,

१—हज्जारउँ द्विज = शिष्य सहित दुर्वासा । २—एक वस्त्र मा = द्रौपदी को
३—घाँस् खाइ् रह्यौ = स्वयं गाईहरू भै रहनू भो । ४—पौरी० = कालीनाग
दमन गर्दा । ५—बञ्शा तपस्वि = मार्कण्डेय । ६—कृपण = कदरी ब्राह्मण ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



मारीयका ति अरजुन्ल्य मनुष्य धन्न्या ।
देखी हजूर कन सब् वइकुण्ठ जान्या ,
आज्ञा सुनी हजुर को म उदेक मान्न्या ॥१८॥

[२] पांच् वर्ष का ह्यरुल्य जां भन्य्व वैं द्यखिन्छौ ,
व्यापक् भनी सकल शास्त्र महां ल्यखिन्छौ ।
बाइूहै भितर् किन न पाउँनु मैल्य देखून ?
हार् मान्य छन् चितरगुप्त ल्य पाप लेखून ॥३९॥
पेट् मा बसनूज्यलि पनी जल मा गयेर ,
एकाग्र नाम जप्यथ्यां तपसी भयेर ।
होस्ता थियो लछ्यरि बाइ्ह तुल्याइ लाटो ,
यस्तो म्यहेर् किन भयो वरदान् क्व साटो ॥४०॥

एकै त्य्व [२] "इन्दिवर" नेत्र कहन्छ काला ,
नाक् जान्न्य खुशूबि त म्वलायम जान्न्य छाला ।
एस्तै अनेक रित रूप ल्य चिन्धछन् क्वै ,
चिन्ह्यां हजुर्कन म्यरा त छईन मन् यै ॥४१॥
नाना स्वरूप लिन लायर नाच हेर्‍यौ ,
भुट्टा प्वसाक ल्य अचेत गरेर बेह्‌यौ ।
खान् दियौ विषय शुद्धि हराउन्य सुलें ,
खुशूभ्या न हेर्नु बरु नाच म्यरो हजुर् ले ॥४२॥

१—पांच् वर्ष का=प्रह्लाद, ध्रुव आदि । २—इन्दिवर=नीलकमल लाई ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



बाल् काल मा ख्यल्वड्व मा वय मा अयस् मा,
वार्धक्य मा धरनु भो मन तृष्णवश् मा।
कुन् चाकरी शिक्षि वकूस भयथ्यो ख्व चोला,
खेर् गो उसै किन रिसाउँन भ्या ख्व होला ॥४३॥
नांउ् राखनु भो पहिल्य आफनु दीननाथ,
होस् हेन की अघि मजस्त्व प्व लाग्न्य साथ।
पाल्नू प्र्यो कित निकाल्नु प्र्यो मलाई,
गाह्रो न माननु प्रभू! पख्व यो बह्लाई ॥४४॥
नाऊँ हजूर ख्व बडो छ हजूर देखी,
सांचो म गर्छु बिनती लिनु होस् त लेखो।
नांउ्ता दिसक्त छ ब्वलाउनि मात्र मुक्ति।
खूशी हजूर्कन गराउन्य पाइ्न जुक्ती ॥४५॥
जस् देखि रिस् उठ्यत सम्पनु हुन्छ प्यारी[1],
खुश्भ्या निकालि दिन्य[2] पर्पंरियार हारी[3]।
उल्टा हजुर्कन जगत् किन गर्छ सेवा,
मैलाइ मात्र रु चाहिन्य हो त्स्व पेवा ॥४६॥
ज्यूँदा घ्यवाइ दिनु भो मुखमा मन्या का[4],
लाई दिन् भयथ्स्व यमपुर मा सन्या का[5]।

१– प्यारी=माया। २– निकालि दिन्य=मोक्षगरिदिने। ३ – पर्पंरियार हारी=मायिक जंजाल हरण गरेर। ४–मुखमा मन्याका=परीक्षित। ५ यमपुर मा सन्या का=श्रीकृष्ण का गुरु संदीपनाचार्य का पुत्र।

मायालु अर्जुन क्व मन् सुनि ज्ञान् भ्व साह्रो ,
बुझ्नू हजूर क्व चरित्र क्य यस्त्व गाह्रो ॥४७॥
न बुझिकन चरित्रै किन् ल्यखिस् भन्नु होला ,
मत हजुर चरण का धूलि को नित्य भोला ।
शिशु हरु क्व न जानी बोल्य को बोलि तोता ,
सुनि जसरि अती सुख् हुन्छ मन् बाबु को ता ॥४८॥
मकन पनि हजुलैं कान्छ्व जानी गणेश् को ,
अति लडिक्व य्व मेरो झोप छोड्या क्व केश् को ।
ज्यत्य म्यत्य ब्वल्यको यो जानि तोता ब्वलाई ,
हजुर च्वरण सामिप् नित्य मीलोस् मलाई ॥४९॥

इति श्रीकविपतञ्जलिप्रणीते 'श्रीधीरादेश पातञ्जलतीर्थावली श्री३युद्धप्रकाशे' प्रार्थना ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu

## तीर्थावली महिमा

अब य्व तिरथमाला सुन्न्य चाला म भन्छू,
तिरथ क निहुँले यो विष्णु का नाम गन्छू।
हरि हर रवि देवी एक रूप् भिन्न चाला,
जस्वतिर मन जाला भन्नु यै तीर्थमाला ॥ १ ॥
तीर्थावली य्व बन्य को हरिनाम माला,
जस् भक्त पूरुष गला लडकाइ जाला।
और् भूषणादि क बड्यात्रि हुन्या छ हाला,
छाती महां बसन्य छन् प्रभुनन्दलाला ॥ २ ॥
सुन्दा बयन् प्रभुजि का त चरित्र चाली,
सम्झेर मूर्ति हरिकी अतिदिव्य काली।
यो बुद्धि ले विषय को अभिमान फाली,
सब् थोक विर्सिन्य हवस् घरको त जाली ॥ ३ ॥
तब् सुन्नु भन्नु प्रभुको य्व चरित्र गुन्नू,
और् काम का ति बकवाद नहाक सुन्नू।
जुन् मा गया मन भन्या हरि हुन्छ झल्मल्,
सन्सारको फिरि परोइन योत अल्मल् ॥ ४ ॥
सुन्दा प्रभूल्य गन्यको त्य्व चरित्र नाऊँ,
मन् ले दुरुस्त गरि त्यो वन पानि ठाऊँ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



जीवै वहीं पुण्य भजी जब लाग्न जाला,
तेस्ता पुरुषलय ग्व भक्ति क रस् ग्व खाला ॥ ५ ॥
कान् बाट यो प्रभु चरित्र क धान्व लाग्वस्,
तेल् हाल्य भैं अरु इ इन्द्रिय चाल भागोस् ।
छाती महाँ जब चरित्र ग्व नाचून लागूला,
सन्सारको सकल दुःख तबै ग्व भागूला ॥ ६ ॥
भन्दै लग्योर जब गद्गद हुन्छ बानी,
आँखा भरी तब मगन् क्व भरोस् त पानी ।
आङ्मा पनी रउँ लहर् ति हउन्त ठाडा,
तब् यो प्रभू क दरसन् हुन्य छैन टाढा ॥ ७ ॥
सुन्दा हरी चरित ठाउँ र गाउँ नाऊँ,
मन्मा चलोस् रहर जाउँ कि जाउँ जाऊँ ।
यो भक्त लाइ् वर दिन्या मुख् देखन पाऊँ,
यस्तो गरी सुन्य ग्व मिल्द छ ब्याज साऊँ ॥ ८ ॥
सुन्दा चरित्र हरि को अनि तीर्थमाला,
रोज् रोज् बढीकन ग्व मन् जस को त जाला ।
स्वर्गादिको पनि त भोग् किन हेर्छ तेस्ले,
श्रीकृष्णका चरण माझन्य हुन्छ केश्ले ॥ ९ ॥
जावो त्य्व अश्व ग्वलिन्या पनि जग्य कर्म,
फेर् आइ यै भव महाँ फिरि पर्छ मर्म ।
वन्मा बसी घसि खशानि क्य दुःख खानू,
तीर्थावली सुनि तुरुन्त विकुण्ड जानू ॥१०॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



प्रात् मा उठेर कित भन्नु बहूत जाती ,
की जागरन् प्रभृति मा त बसेर राती ।
की गांउनु भक्त क्व त वृन्द लियेर साथी ,
तब् कृष्णचन्द्र झलकाइ हुन्या छ छाती ॥११॥
नाना प्रकार क्व त छन्द जहाँ ल्यखीयो ,
काव्यै न पढ्न्यल्य यत्र भन्न कठिन् घखीयो ।
उसमा पनी दिरघ ह्रस्व मिलायनौता ,
बांच्नै न सक्न्य सित आउनु हुन्न घौता ॥१२॥
अर्थै बुझ्नैन हरिको कथहा बुझ्नैन ,
ठावैं बुझ्नैन तसको महिमा बुझ्नैन ।
पाठै क्व मात्र रमणीय सुनेर बोली ,
जाइ् जान्छ चित्त सबको हरिमा अमोली ॥१३॥
दान् गर्नलाइ पनि धन् जिउ झैं ज्व ठान्छन् ,
ज्यूधन् क्व खर्च धखि जो न त तीर्थ मान्छन् ।
केवल् उपस्थरसनेन्द्रिय सुखूव खान्छन् ,
तेस्ता पनी तिरथ नाम् सुनि मुक्त जान्छन् ॥१४॥
सूनोस् भनोस् अघि पछी अतिदोल लाई ,
सम्झोस् प्रभू चरित ई हरिनाम गाई ।
प्राणान्त को बखत मा जब जान्छ यो मन् ,
तब् कृष्णका दुत क्व साथ् गरला त्यव गन्मन् ॥१५॥
आज्ञा वृथा गरन्य बाप् जननी क्व भारी ,
भाइ् बन्धु धर्म युवतीकन पूँढ्व सारी ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



जारी ज्वरी द्युत र घात् गरन्या ज्व जन् छन् ,
तेस्ता पनी तिरथनाम् सुनि मुक्त हुन्छन् ॥१६॥
मद् खान्य मान्र्य द्विज गुर्युवती ज्व ल्यावस् ,
सुन् चोर्न्य इन्क सँग बस् उठ जस्ल्य पावस् ।
ई पञ्च पातकि महाँ गणना भया का ,
तीर्थावली सुनि विकुण्ठ निधो गया का ॥१७॥
भुत् प्रेत डाकिनि पिशाच् जिउ माथि लागोस् ,
जस्का त तेस् पिरल्य भोक् तृष निद्र भागोस् ।
आवृत्ति एक सुनन् हरि को चरित्र ,
पिर्जाइ सन्च्व हुन्य छ तसकात भित्र ॥१८॥
पीरोस् कसै कनत शत्रुल्य पेचमारी ,
नाना फसाद परि दुःख हवस् त भारी ।
एक् चोटि यो हरि चरित् सुनि तीर्थमाला ,
आपत्ति सब् तसक्व एक् छिन मा त जाला ॥१९॥
राज् काजका जनल्य काम क्यही विगार्ला ,
झगडा महां त्य्व अथवा परिबन्ध हार्ला ।
आवृत्ति एक् सुनि ल्यवस् तिरथावली को ,
झगडा जिती नृपति को हुन जान्छ नीको ॥२०॥
आवस् ज्वरो कसलाइ हउन् सरीर ,
लागेर घाउ् बह कपाल् दुखि पाइ पीरा ।
एक् दुइ् शतक् सुनि ल्यवस् यक्र चित्तलाई ,
पीडा सबै हरण हुन्छ सुन्यौ ह्य भाई ! ॥२१॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



कन्यालय रामञ्व वर पाउन्य मनूलय सुनूली ,
तेस्तै पुरुषूलय क्वहि कन्न्य क्व पांउन धुनूली ।
बांभ्फीलय पाउंनु छ्वरो भनि सुन्न आंउनन् ,
आफ्नू चितायक्व कुरो सब जल्दि पांउनन् ॥२२॥
जो जो ज्यज्या बढियकाम क्व राखि इच्छा ,
थापनन् हरीचरित कान महांत भिक्षा ।
पांउछनू अवश्य भनि यो गन्य को ह शिक्षा ,
श्रीरामनाम द्यखि अर्क्व छईन दीक्षा ॥२३॥
श्रीव्यासपुत्र प्रभु श्रीशुकदेवजीले ,
सब् शास्त्र को रस पिता द्यखि जसूल्य नीले ।
सिद्धान्त बात कह्य छनू नृपलाइ् पछाड़ी ,
नाम् कीर्तनै कलि क्व मुख्य छ और छाडी ॥२४॥
दोषूको भकारि कलिको गुण एक् छ भारी ,
जो क्वै ज्यक्यै गरन्य होस् जन चोरि जारी ।
श्रीकृष्ण को स्मरण गर्न्य हवस् बखत् मा ,
सन्सार सङ्ग छ्वडि पुग्द छ " तखत् मा ॥२५॥
लम्बोदर् नगधर् प्रभू वृषभपर् शुम्भादिको सेखिहर् ,
यस्तै श्रीदिनकर् निशाशितलकर् जो छूव्यका जगत भर् ।
उनूकै पाउकमल् धरी हृदय मा तीर्थावली लेखियो ,
जा देखी पुँढव लेखून शक्तिन भनो सम्पूर्ण जै देखियो ॥२६॥
सम्वत् ख्व उन्नैसय एकचालीस् ,
भन्थ्या सबै यो किन तैल्य थालिस् ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



रोज् रोज् बनांउदा बहुदीन लाग्या ,
"शुभम् समाप्तम्" भयव अब् घवाग्या ॥२७॥
लालित्यपत्तन पुरी हरि की करीया ,
सारी प्रभावति मनोहर उत्तरीया ।
सम्चार श्रीपशुपती क्व लिग्याय जस्ती ,
श्रीवाग्मती सनमुखै भइ श्राइ पस्ती ॥२८॥
तिन् लिङ्ग तिन् नयन भैं प्रभु का त जांहां ,
धारा सुवर्ण क्व तिलक् झति यस्त्व कांहां ।
पाउन् श्वभा क्वटकुनदृल्य जहां दिया को ,
शोभा न्यपाल क्व सबै जसले लिया को ॥२९॥
सुन् चांदी काठ पत्थर् ह्यरु अवर जुहार्
चित्रका काम गर्न्या ,
लेखन्या पढ्न्या र हेर्न्या वषति क्व पनि काम्
पाटि राखेर कोर्न्या ।
यस्ताऽनेकै गुणी जस् नगर बिच रही
देश प्रख्यात हुन्छन् ,
यस्ता लालित्यपुर्को कति गरुं म बयन्
जल् मिठो धेर गुन् छन् ॥३०॥
यस्ता पुरी वरिपरी बहु गांउं थीया ,
ईमाड्वलै भनि त मुख्य महां ज्व लीया ।
त्यैं वास हो म्यज्व पतञ्जलि हो ख्व नांऊं ,
श्रीकृष्ण भक्त हरु लाइ खुस्यांउन् पाऊं ॥३१॥

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



आठ् दिशू ति योगिनि त काञ्चि भ्रुती रह्या का ,
मद्गाउँ कान्तिपुर देखि बडी भया की ।
भूपाल को जहिं रह्या छयि सिंहआसन् ,
इन्द्रादि हेरु पनि गर्न्यथिया ति बासन् ॥३२॥
श्रीमत्स्यनाथ प्रभु ले गरदा चलाई ,
जुन् पुर् श्वभा छ्यखिन्य धपूधपि सब् ब्वलाई ।
नर् नारि को छयि चलाइ खुस्याल् मुहार ,
भूषण् महां जव्य क्व देखिन्य सब् जुहार ॥३३॥
मीठा जल् का त धारा बिच बिच पुर मा
छन् ति साहा ढ्गानी ,
दे दुदु साग् पात् अनेक् जात् सब चिज बिज को
लायकी हो ज्व खानी ।
जौन् चिज् लालित्यपुर् मा छइन भनियला
स्वर्ग पाताल जावस् ,
काशी काश्मेर् ठ्यलायत् कहिं डुल्य पनि क्वै
खोजि गर्दा न पावस् ॥३४॥
यो लेखियो कृष्णजि को त गीत ,
ठांउ् ठाउँ मा खुस्कि गयो ह्व रीत ।
सज्जन् ल्य बिग्र्या क्व सच्यांउनु होला ,
जान्न्या हरूको म शिशू हुँ भोला ॥३५॥
घौता र ठाउँ वन पानि र ब्रह्मकुल् का ,
जम्मा गरी कन त नाउँ थुँगार फुल् का ।

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



प्रेम् भक्ति सुत् ल्य बिनवट् गरि दिव्य चाला ,
श्रीकृष्ण का चरण मा धन्यँ ‡तीर्थमाला ॥३६॥

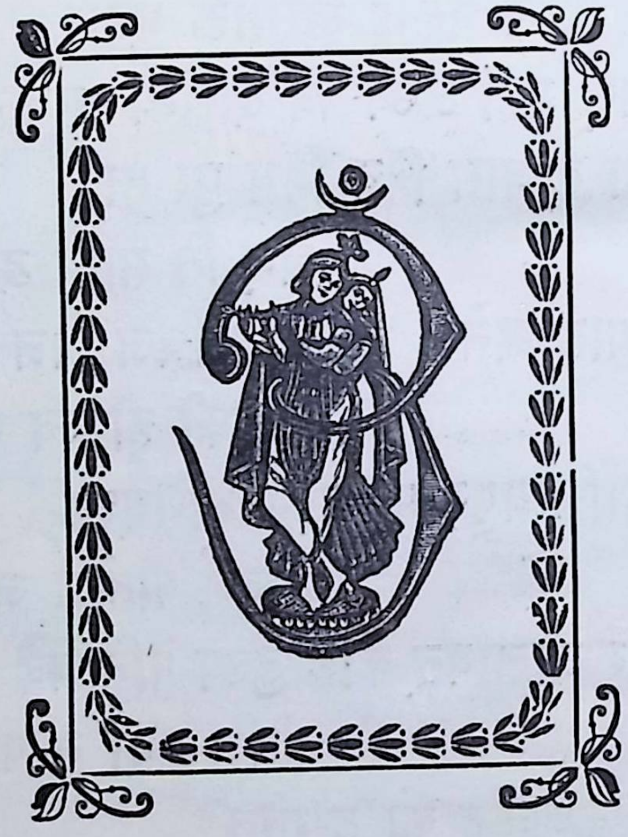

‡ "ती" यहीं सम्म ग्रन्थ प्राप्त भो । सं०

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu

# निवेदन

नेत्र ले भेटे सम्म को अशुद्ध लाई शुद्ध गरी मन्तिर लेखिएको छ। जहाँ थोरै अनुमान ले शुद्ध पढन सकिन्छ त्यो लेखिएको छैन। कहीं कहीं हल् चिन्ह ( ् ) अलिक पर अनुस्वार चिन्ह ( ं ) जस्तो भया को छ। कहीं 'क्व' अक्षर 'वव' जस्तो हुन गये को छ। मसी थोरै लागे र धेरै अक्षर स्पष्ट भये का छैनन्।—संशोधक।

# शुद्धि-पत्र।

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| १ | ७ | डख्याका | डख्यका |
| ३ | ७ | नृसिहै | नृसिंहै |
| „ | १० | हाउ | हाउ् |
| ४ | २० | वाह् हे | वाह् हे |
| ६ | ५ | नक्षत्रकल्यै | नक्षत्रकल्पै |
| „ | १७ | युधिष्ठि | युधिष्ठिर् |
| „ | १८ | वार | वीर |
| १० | ४ | परिक्षत् | परीक्षित् |
| १० | ११ | जाग्नू | जान्नू |
| „ | १३ | कच्छ | कच्छप |
| „ | २० | क्षत्रादि | क्षेत्रादि |
| ११ | २ | सब | सब् |
| „ | ११ | सदा शिव | सदाशिव |
| १२ | २ | रिसलय भरि | रिस लत्रभ र |
| „ | ४ | रोवत् | रोस्वत् |
| „ | १८ | त दाही | ति दाहो |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| १२ | २० | देखाई | देखाइ |
| १३ | ६ | मत्य | स्यत्य |
| „ | ७ | न बोलि गैग्या, | सगन् गईग्या |
| „ | ६ | देखि | द्यखि |
| „ | २० | थ | थैं |
| १४ | ७ | भा | भो |
| १६ | २१ | जटा | लटा |
| „ | २२ | तेरा | मेरा |
| १७ | ७ | सो | सोर् |
| „ | १८ | अगनि | अगनी |
| „ | „ | अघी | हगी |
| „ | २० | ताञ | ताञ् |
| १८ | ६ | च पटायो | चट्पटायो |
| „ | १३ | चौपट्टै | चौपट्टै |
| १६ | २ | रह्याको | रह्याक |
| „ | ६ | औक्रर्म | और्कर्म |

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| १६ | ११ | मलाइ | मलाइ् |
| " | १६ | त्वविउंतोस् | त विउँतोस् |
| २० | ३ | अङ्गालीकन | अँगालीकन |
| २१ | १ | छ्वरी | छ्वपी |
| " | २ | फेर्शभु | फेर्शंभु |
| " | ५ | पूर्व | पूर्व- |
| २२ | १ | नाउ् | नाँउ् |
| " | १० | तलातल | तलातल् |
| २४ | १ | वण्ड | खण्ड |
| " | ६ | तभामा | सभामा |
| " | १५ | अधः | अन्धः |
| " | " | मरूद्वधा | मरुद्वृधा |
| २५ | १५ | पर्वतादी | पर्वतादि |
| " | २२ | कोल्लक | कोल्लक |
| " | " | कुशतिमान् | शुक्रतिमान् |
| २७ | १२ | त्व्य | त्यत्र |
| " | १४ | जात्र | जात्रु |
| २८ | ६ | दुनीया | दुनीञा |
| " | १४ | छत्रपाटयक | छत्रपटियक्ष |
| २६ | १ | फलगु | फल्गु |
| " | २ | फेरि | फ्यरि |
| " | ८ | ओषवाग्नि | ओषधाग्नि |
| " | १२ | पार्नु | गर्नु |
| ३१ | ५ | मरिकिन | मरिकन |
| " | १४ | गरने | खवजन्या |
| " | १८ | आचमन् | आच्मन् |
| " | १६ | याज्ञवलक्य | याज्ञवल्क्य |
| ३२ | ७ | भीमणिवर्गि-केश्वर | भीमणिकर्णिकेश्वर |
| " | ६ | वराह प्रभू | वराहा प्रभू |
| ३२ | ११ | ध्रुवेश्वर | ध्रुवेश्वर् |
| ३३ | ६ | ति | त |
| ३५ | १२ | ती | ताँ |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ३६ | १४ | भू ेश्वरै | भूनेश्वरै |
| " | १८ | तीरथै | तिरथै |
| " | २० | दरदशन् | दरशन् |
| ३७ | १३ | राजा | राधा |
| ३८ | ६ | शिझंकाया | शिर्भुकाया |
| ३६ | ४ | लाइ | लाइ् |
| " | ६ | मधड्वककिलो | मधूड्ववकिलो |
| ४० | १६ | मण्डल | मण्डल् |
| " | २० | छ | छै |
| ४१ | ३ | विमलकुण्ड | विमल्कुण्ड |
| ४२ | ६ | ताहि | ताँहिं |
| ४३ | ७ | रास | रास् |
| ४४ | १६ | कल्यानरा् | कल्यानराय् |
| ४५ | ११ | यमलार्जन | यमलार्जुन |
| ४६ | २१ | ठाकुर्की | ठाकुर्का |
| ४७ | १ | फ्यव | फ्यन्व |
| " | ११ | चरणै | चरणै |
| " | १२ | आत | अति |
| " | १३ | त्व्य | त्यत्र |
| ४८ | १ | तृतीया | तृतीयो |
| " | २१ | सुकुण्ड | क्ष कुण्ड |
| ४६ | ५ | गुपत | गुपत् |
| " | ११ | देवी | देवि |
| ५० | ६ | गदिन्या | गर्दिन्या |
| " | १० | निश् | दिश् |
| " | १७ | त | तैं |
| " | १६ | आपाण्डु केश्वर | श्रीपण्डु केश्वर |
| ५१ | ४ | हरू | हरू |
| " | २० | सियाराम् | सिताराम् |
| ५२ | १६ | बहुत्साद् | बहुत्स्वाद् |
| ५३ | ७ | शिझंकावस् | शिर्भुकावस् |
| ५४ | १२ | सात्केरि | सात्फेरि |
| " | १३ | साध्यमृत्तीर्थ | साध्यामृत्तीर्थ |

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ५६ | १५ | भन्या | भन्या |
| ,, | १७ | पावर्ती | पार्वती |
| ५७ | १३ | त्व्य | त्व्य |
| ,, | १७ | विश्वेश्वाशव | विश्वेश्वरशिव |
| ५८ | १ | ज्यू व | ज्यूह् व |
| ,, | ६ | वाजभ्र | वाजभ्रु |
| ५८ | १४ | इच्छा मरू केश | इच्छामरूकेश |
| ५६ | १२ | केदार केशी | केदारकेशी |
| ६० | २ | यक वीरा | यकवीरा |
| ,, | ५ | जलान्धर् | जालन्धर् |
| ,, | १० | मल्ला महा कालि देवी | मल्लामहा-कालिदेवी |
| ६१ | २ | गस्यन्य | गरन्य |
| ,, | ५ | दुग्व | दुग्ध |
| ,, | ७ | तल्व | तल्लव |
| ,, | १५ | राज्गहे | राज्गृहे |
| ,, | ,, | कूह | कूह् |
| ,, | ८ | भृमालिनी | भूमालिनी |
| ६२ | २० | नृप् | राज् |
| ,, | १५ | कुरा | कुश |
| ६४ | १६ | सतृजिह्वेश्व संदा शिव् | सतृजिह्वेश्व संदाशिव् |
| ,, | २१ | दाइहु | दाइ् हु |
| ६५ | ७ | खास | खसि |
| ,, | १८ | पिशाचे· श्वर्पंजी | पिशाचेश्वर्पुजी |
| ६७ | १० | विन्ध्यवासोनि | विन्ध्यवासीनि |
| ६८ | ५ | बिछमा | बिछमा |
| ७० | ८ | देखा | देखी |
| ७२ | १५ | केहा | केही |
| ,, | २१ | गर्नू | गर्नु |
| ७३ | २१ | चादिशा | चार्दिशा |
| ७४ | ३ | हन् | हुन् |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| ७४ | १६ | बिच बिच | बिच बिच का |
| ,, | २१ | मछिन्द्रना् | मछिन्द्रनाथ् |
| ७६ | १ | टुडाल् | टुँडाल् |
| ७७ | ८ | स्नान | स्नान् |
| ७८ | १ | श्रीकाला | श्रिकाला |
| ,, | २ | गर्न | गर्नु |
| ,, | ७ | वासूदेव् | वासूदेव् हुन् |
| ७९ | २ | सिंधु लिप्रे | सिंधुलर्य लिप्रे |
| ८० | २२ | पिप्लरुख | पिप्लरुख् |
| ८१ | २० | त्व्य | त्व्व |
| ,, | २२ | दलहै | दुलहै |
| ८२ | ७ | त्व्य | त्व्व |
| ,, | ८ | ठाउ् | ठाँउ् |
| ८३ | ३ | दुलोही | दुलोहो |
| ८४ | १३ | दलैले | दुलैले |
| ,, | २१ | सिन्धु ह्रौं | सिन्धुह्रौं |
| ८५ | ११ | यस्न पस्कनु | यस्क्न पस्नु |
| ,, | १४ | भृप् | भूप् |
| ८६ | ६ | आँउछु | आँउ्छु |
| ,, | १३ | दूलहिलय | दुलहि लय |
| ,, | १५ | दूलहि | दुलहि |
| ,, | ,, | मूख | मूख |
| ,, | २० | पस्न | पस्न |
| ८८ | १६ | नेपाली | नेपालस |
| ९० | १५ | पाचमान्या | पाँचमान्या |
| ९१ | ३ | वुग्मता | वुग्मती |
| ,, | ८ | वृषताक्ष्य | वृष ताक्ष्य |
| ९२ | ६ | पन्या | पन्यो |
| ९५ | ३ | रुंप्यर | संप्यर |
| ,, | १२ | मन् गा | मन् गो |
| ९८ | १२ | गर्न् | गर्नू |
| ९९ | ८ | काप् | कोप् |
| १०० | २ | त्व्य | त्व्व |

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| १०० | २ | अत्रार्ता | अचार्ता |
| „ | ११ | रथमा | रथ्मा |
| १०१ | ६ | मोत | मोज |
| „ | १० | ले वुँ | लेखुँ |
| „ | ११ | घा ल | घवल |
| १०२ | १३ | सानागांउ | सानागांउ् |
| „ | „ | धुलिखेल् | धुलिखेल् |
| „ | १५ | ठयवो | ठयचो |
| „ | २१ | थरमथलि | धरमथलि |
| १०३ | ३ | मझिगांउ् | मच्छिगांउ् |
| १०३ | ८ | मालिगांउ | मालिगांउ् |
| १०५ | १३ | थिया | थीया |
| „ | ८ | ध्यू | घ्यू |
| „ | १४ | रजस्तमो गुण | रजस्तमोगुण |
| „ | „ | चड़ी | चढी |
| १०६ | १३ | कुशल | कुशल् |
| १०८ | १ | ला | लौ |
| „ | ११ | ता | ताँ |
| १०९ | २२ | विसे | विषे |
| ११० | १४ | स्वरुप | स्वरूप् |
| „ | १६ | अनुप | अनुप् |
| „ | २० | स्यवा | स्यखी |
| १११ | ८ | पोस | पोस् |
| ११४ | ११ | मरूँ | मरुँ |
| ११५ | ८ | भनि | भनी |
| ११८ | ७ | वेल | वेल् |
| ११९ | ७ | राजवृक्ष | राज्वृक्ष |
| १२१ | ३ | फुल | फुल् |
| „ | ४ | थृथिर | थूथिर |
| „ | ८ | भान | भनि |
| „ | १८ | कल्याङकुरुङ् | कल्याङ्कुरुङ् |
| „ | १९ | डांफया | डाफय |
| १२३ | १० | हार | हरि |
| १२३ | १३ | छुन | छुन् |
| „ | १९ | मेरा | मेरो |
| „ | ४ | सू व | सूख |
| „ | १३ | अनेक | अनेक् |
| १२४ | ५ | एक कुमारी | एक् कुमारी |
| „ | १४ | दिया | दिया |
| „ | १५ | बनचन | बचन |
| १२५ | १२ | घा | घौ |
| „ | १६ | जहां | आहां |
| „ | १७ | ढाक | ढाक् |
| १२६ | ४ | हृद | हद्द |
| „ | १२ | प्रद्युम्न | प्रद्युम्न |
| १२७ | १५ | यस्ता | यस्तो |
| „ | १७ | होस | होस् |
| १२८ | १२ | चन्द्र भाग | चन्द्रभागा |
| १३० | १७ | दर्शन | दर्शन् |
| „ | २० | पशुलाइ् | पशुलाइ |
| १३१ | ३ | नाघा | नाघी |
| „ | १० | सुख्कन | मुख्कन |
| १३३ | ११ | ताराजा | ताराजी |
| १३४ | ४ | त्वय | त्यव |
| „ | ११ | वक्षुयाई | वक्षुयाइ |
| १३५ | | षष्ठोऽध्यायः | सप्तमोऽध्यायः |
| „ | ८ | तपले | तप्ले |
| „ | १७ | कौशिक्ती मरि | कौशिक्तीमंरी |
| १३६ | ६ | स्नान | स्नान् |
| „ | ८ | गरत्या | गत्या |
| „ | १६ | पाइ | पाई |
| १३९ | १० | पर्सद | पर्साद |
| १४० | ५ | लड्ययो | लड्थ्यो |
| „ | २१ | द्रोणार्वत् | द्रोणपर्वत् |
| „ | २२ | श्रीविकटेश्रै | श्रीविकटेश्वरै |
| १४१ | ६ | त्वय | त्यव |

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu



| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| १४१ | १७ | ल्व्य | ल्य्व |
| १४२ | ५ | लपट् | लम्पट् |
| १४५ | ८ | पनि | पनी |
| ,, | १० | शोलो | खोलो |
| ,, | ,, | सराय | सराप |
| १४६ | १ | मन् | मनू |
| ,, | १३ | हिड | हिंड |
| ,, | १८ | गृहार | गूहार |
| ,, | १९ | नूहाइ् | नूहाइ् |
| ,, | २० | मास् | मास् |
| ,, | २२ | ादया | दिया |
| १४८ | २१ | त्व्य | त्य्व |
| १४९ | १ | त्व्य | त्य्व |
| ,, | ३ | त्व्य | त्य्व |
| १५० | ४ | व पाँइ | वर्पाइ |
| १५१ | २ | तोर्थडुलि | तीर्थडुलि |
| ,, | ,, | पु या | पुग्या |
| ,, | ५ | जल्शो | जल्दी |
| १५३ | ३ | गरो | गरी |
| १५५ | ३ | श्रो | श्री |
| ,, | ४ | र तनकाग्ति | रतनकान्ति |
| १५६ | ७ | आत्र् | आध् |
| ,, | ९ | घिि | घिसि |
| ,, | १० | दोडन्य | दौडन्थ |
| ,, | ११ | भगतिल्ले | भगतिले |
| ,, | ,, | हातले | हातल्य |
| १५८ | १ | घोता | घौता |
| १५९ | ३ | अघे | अघी |
| १६१ | १४ | भक्ता | भक्ती |
| १६४ | ८ | सब | सब् |
| ,, | २२ | श्रीकातिकेय | श्रीकार्तिकेय |
| १६६ | २० | सका | सकी |
| १६८ | १३ | सर | रस |
| १६९ | १० | जाग् | जाग् |
| १७१ | १७ | हिंड्यो | हिंड्या |
| ,, | १९ | चरल्य | वरल्य |
| १७३ | ८ | खाई | खाइ |
| ,, | ११ | मणीह्रद | मणिह्रद |
| १७४ | ८ | तिइ | ति |
| ,, | ११ | भाव् | भाव |
| ,, | १८ | दिन | दिन् |
| १७५ | १ | विभृति | विभूति |
| १७८ | १२ | गैम् | गैन् |
| १७९ | १ | मर्नू | मर्नू |
| १८३ | ७ | जागरण | जागरणा |
| ,, | ११ | भूतभवा | भुतभवा |
| ,, | २२ | हात | हात् |
| १८४ | १० | जान्थ्या | जान्थ्यो |
| ,, | ११ | म्लेच्छ | म्लेच्छ |
| १८५ | २० | खयला | खयल्या |
| १८७ | ९ | उस्या | उठ्या |
| ,, | ११ | ध्यास | ध्यास् |
| ,, | २० | डुबो | डुबी |
| १८९ | १५ | चूठा | चूठी |
| ,, | २२ | जल् धार | जल्धार |
| १९३ | ११ | प्रक्षिन् | प्रदक्षिन् |
| ,, | १९ | पीसी | पसी |
| १९४ | ७ | तब | तब त |
| ,, | ९ | मान्या | मान्यो |
| १९७ | २२ | घे् | घेर् |
| २०० | १२ | हित्य | हत्य |
| ,, | १५ | त्व्य | त्य्व |
| २०१ | ५ | खोद् | खोद्दै |
| ,, | १० | धैर्वर्ष | धेर्वर्षे |
| २०२ | १ | दिन प्रभु | दिन् प्रभू |
| २०३ | २१ | कउल्व | कउल्य्व |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| २०४ | ६ | बिउँते र | बिउँतेर |
| २०५ | १४ | श्री | श्रि |
| २०७ | १६ | सबे | सबै |
| २०८ | १४ | आतई | आर्तिई |
| २१० | १० | सीता | सिता |
| २१३ | १२ | कार्तिक | कार्तिक् |
| २१७ | १६ | लिङ | लिङ् |
| २१६ | १ | गुह्यका-लिघाट | गुह्यकालिघाट |
| २१६ | २ | गुह्यराम्भु | गुह्यशम्भु |
| ,, | १० | कज्र्लै | कज्जलै |
| २२२ | १६ | शुकमुख | शुक्मुख |
| २२४ | २ | लडनु | लड्नु |
| २२५ | ६ | लिङ | लिङ् |
| २२७ | ७ | धिगगन्थ | धिग्गन्थ |
| २२८ | १ | विरुपाक्ष | विरूपाक्ष |
| २२६ | १ | घखन | घख्यन |
| २३५ | १ | तिर | तिरथ् |
| २३६ | २ | जीतो | जीमी |
| २३६ | २१ | श्री शम्भुकोटि | श्रीशम्भुकोटि |
| २३७ | १० | पूर्वपीठतिरथै | पूर्वपीठतिरथैं |
| २३८ | २ | वैष्णव शम्भु | वैष्णवशम्भु |
| ,, | १० | गौरीशजा | गौरीशजी |
| २४५ | २० | जस्ता | जस्मा |
| २४६ | ६ | शिवैं | शिवै |
| २४७ | ३ | नहाउनु | नुहाउनु |
| २४८ | २१ | घाता | धौता |
| २५० | ३ | पयरि | फयरि |
| ,, | ,, | सबका | सबको |
| २५२ | ६ | सावराणि | सावरणि |
| २५४ | ७ | चतुर्दशा | चतुर्दशी |
| ,, | १५ | पापाङ्कुश | पापाङ्कुशा |

| पृष्ठ | पंक्ति | अशुद्ध | शुद्ध |
|---|---|---|---|
| २५५ | १ | पापङ्कुशा | पापाङ्कुशा |
| २५६ | ११ | तर्न् | तर्पन् |
| ,, | १२ | पूणम | पूर्णिम |
| ,, | १३ | फाल्गून | फाल्गून |
| २५७ | २१ | पर्छं षै | पर्छषै |
| २५६ | ५ | पुरुषोतमै | पुरुषोत्तमै |
| ,, | १३ | सहस्र नाम् | सहस्रनाम् |
| २६१ | ३ | गर्न् | गर्नु |
| २६५ | १ | प्रतृती | प्रभृती |
| २६६ | १२ | पिंडाल् | पिंडालू |
| २६७ | २ | जात् | जात |
| ,, | १० | अचार | अचार् |
| ,, | ११ | का | को |
| २६८ | १४ | सल्य | सल्ल्य |
| २७० | ६ | गयेनन | गयेनन् |
| २७१ | ५ | प्रभा | प्रभो |
| ,, | ६ | मलाई | मनाई |
| ,, | ११ | पल्नू | पाल्नृ |
| २७२ | २ | क | म |
| | | २ | १ |
| २७८ | ४ | पांच | पांच |
| | | ३ | २ |
| ,, | १२ | इन्दिवर | इन्दिवर |
| २७६ | ३ | वक्स | वकस् |
| २८१ | १५ | गया | गयो |
| २८२ | ६ | ख्व | प्व |
| ,, | ११ | हरी चरित | हरिचरित |
| ,, | १३ | मुख् देखन | मुख देखन् |
| ,, | १६ | पत्रलिन्या | पत्रलन्या |
| २८४ | १६ | कसलाइ | कसइलाइ |
| २८७ | ७ | खुस्यालू | खुस्याल् |
| ,, | २२ | त | ति |

* शमस्तु *

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu

CC-0. Nepal Sanskrit Academy, Kathmandu